इँगलैंड का इतिहास

(पटना-विश्वविद्यालय के नये 'सिलेबस' के अनुसार)

लेखक

शिवचन्द्र कपूर

एम० ए०, बी० ईडी० (एडिनबरा)

[प्रोफ़ेसर बेणीप्रसाद, एम० ए०, पी-एच० डी०, डी० एस-सी० (लन्दन) लिखित प्रस्तावना-सहित]

संशोधित संस्करण

प्रकाशक

बिहार पब्लिशिंग हाउस, पटना

मूल्य २)

भूमिका

मेरा विचार है कि इतिहास की पुस्तकों में, विशेषतया उनमें जो स्कूल के विद्यार्थियों के लिए लिखी जावें, बहुत-सी घटनाओं की भरमार करने की चेष्टा करना केवल निष्फल ही नहीं, किन्तु विद्यार्थियों के लिए स्पष्ट रूप से हानिकारक है। १४, १५ वर्ष के बालकों के लिए, जो एक ऐसे देश का इतिहास पढ़ते हैं जहाँ की सभ्यता हमारे देश से बिलकुल ही दूसरे ढंग की है, केवल इतना काफ़ी है कि उनको उन प्रसिद्ध तथा महत्त्वपूर्ण घटनाओं का ज्ञान हो जाय जिनका उस देश के इतिहास पर विशेष रूप से प्रभाव पड़ा है। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में इतिहास के विषय का रूप धीरे-धीरे बदलता जा रहा है और यह विचार फैलने लगा है कि केवल बहुत-सी घटनाओं के तिथिक्रम को कंठ कर लेना इतिहास के अध्ययन का कोई अंश नहीं है। इतिहास के अध्ययन का वास्तविक लाभ तभी हो सकता है जब घटनाओं के परस्पर सम्बन्ध तथा उनके मनुष्यमात्र के जीवन पर प्रभाव की ओर विशेष ध्यान दिया जाय। जिन घटनाओं के देशवासियों के जीवन पर प्रभाव को पाठक अच्छी तरह न समझें उनका जानना या न जानना दोनों बराबर हैं।

इसी विचार को सामने रखकर पुस्तक के संशोधन में नई घटनाओं की संख्या बढ़ाने की बिलकुल चेष्टा नहीं की गई है। विशेष ध्यान इसी ओर रखा गया है कि घटनाओं का ऐतिहासिक महत्त्व पाठक अच्छी तरह समझ सकें। इसलिए घटनाओं का उल्लेख विषय-क्रम के अनुसार किया गया है और उन सब घटनाओं को, जिनका परस्पर सम्बन्ध है, एक ही स्थान पर लाने की चेष्टा की गई है। परन्तु फिर भी तिथिक्रम का उल्लंघन भी केवल आवश्यकतानुसार ही किया गया है और विद्या-

थियों के विशेष सुभीते के लिए प्रत्येक परिच्छेद के अंत में मुख्य-मुख्य तिथियों की सूची दे दी गई है।

यह पुस्तक हाई स्कूलों के लिए लिखी गई है और इसलिए इसमें इँगलैण्ड के इतिहास का केवल इतना ज्ञान देने की चेष्टा की गई है जितना कालिज में पहुँचने से पहले विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। हाई स्कूल की परीक्षा के लिए शिक्षा का माध्यम मातृभाषा हो जाने पर भी प्रश्नपत्र अभी अँगरेज़ी ही में आते हैं; इसलिए प्रत्येक खण्ड के अन्त में जो प्रश्नावलियाँ दी गई हैं, उनको अँगरेज़ी ही में देना उचित समझा गया, जिससे परीक्षा के लिए तैयारी करनेवाले विद्यार्थी प्रश्न-पत्रों का ढंग समझ सकें।

ट्रेनिंग कालिज,
आगरा
१५ अप्रैल, १९३५

शिवचन्द्र कपूर

विषय-सूची

पहला भाग

प्राचीन तथा माध्यमिक इँगलैंड का इतिहास

पहला खण्ड

चौथा परिच्छेद

अँगरेज़ों के प्राचीन राजे...२७-४१

(१) एल्फ्रेड तथा डेन जाति के आक्रमण

(२) एल्फ्रेड के उत्तराधिकारी तथा डेनों की विजय

(३) नार्मन-विजय

पाँचवाँ परिच्छेद

आँग्ल-सेक्सन इंगलैंड की सभ्यता. ४२-४७

(१) राजनीतिज्ञ संस्थायें

(२) सामाजिक दशा

दूसरा खण्ड

माध्यमिक इँगलैंड तथा नार्मन और प्लैंटेजनेट काल...४९-१२६

पहला परिच्छेद

दूसरा परिच्छेद

तीसरा परिच्छेद

चौथा परिच्छेद

पाँचवाँ परिच्छेद

छठा परिच्छेद

सातवाँ परिच्छेद

आठवाँ परिच्छेद

नवाँ परिच्छेद

दूसरा परिच्छेद

दूसरा भाग

'आधुनिक' इंगलैंड का इतिहास

पहला खण्ड

चौथा परिच्छेद

पाँचवाँ परिच्छेद

छठा परिच्छेद

सातवाँ परिच्छेद

आठवाँ परिच्छेद

दूसरा खण्ड

स्टुअर्ट शासन तथा राजनीतिक आन्दोलन का काल ...७७-१८४

पहिला परिच्छेद

दूसरा परिच्छेद

चार्ल्स प्रथम...९२-११०

तीसरा परिच्छेद

इँगलैंड में प्रजातन्त्र तथा संरक्षित राज्य...१११-१२०

छठा परिच्छेद

विलियम और मेरी; तथा रानी एन...१४५-१५६

(१) अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति

सातवाँ परिच्छेद

विलियम और मेरी; तथा रानी एन...१५७-१६६

गृह स्थिति

(२) जेकोबाइट विद्रोह

(३) वाल्पोल का मन्त्रित्व

(४) जॉन वेस्ली तथा मेथोडिस्ट दल

(५) आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध

(६) विलियम पिट तथा सप्तवार्षिक युद्ध

दूसरा परिच्छेद

अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध

तीसरा परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय तथा छोटा पिट...२१६-२२६

(फ़्रांस की राज्यक्रान्ति तथा आयरलैंड से संयोग)

(१) छोटा पिट तथा फ्रांस की राज्यक्रान्ति का युद्ध

(२) छोटा पिट तथा आयरलैंड से संयोग

चौथा परिच्छेद

जार्ज तृतीय तथा नेपोलियन से युद्ध···२२७-२३८

पाँचवाँ परिच्छेद

छठा परिच्छेद

बारहवाँ परिच्छेद

सम्राट जॉर्ज पञ्चम तथा योरपीय महायुद्ध...३१९-३४८

(१) योरपीय महायुद्ध

(२) युद्ध के पश्चात् की राजनीतिक समस्यायें

चित्र-सूची

पहला भाग

चित्र पृष्ठ

दूसरा भाग

चित्र | पृष्ठ

चित्र पृष्ठ

वंशावलियाँ

पहला भाग

दूसरा भाग

ब्रिटिश टापुओं की प्राकृतिक विशेषतायें

भूगोल और इतिहास का घनिष्ठ सम्बन्ध—इतिहास और भगोल का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध है। देश की प्राकृतिक दशा पर ही देश-वासियों की रहन-सहन, राजनीति, बल-बुद्धि आदि की बहुत-सी बातें निर्भर होती हैं। संसार में अब तक जितनी बड़ी-बड़ी जातियाँ हो गई हैं या इस समय वर्तमान हैं, यदि हम उनके देश के भूगोल का अध्ययन करें, तो हमें पता चलेगा कि वहाँ कुछ न कुछ प्राकृतिक विशेषतायें अवश्य थीं या हैं। प्राचीन काल की प्रसिद्ध जातियाँ प्रायः उपजाऊ देशों में रहने के कारण ही उन्नतिशील हो सकी थीं। मिस्री लोगों ने नील नदी के मैदान में, एसीरियनों ने दजला और फ़रात नदियों के मैदान में, चीनियों ने यांगटिसीकांग और ह्वांगहो नदियों के मैदान में, और भारतवर्ष के प्राचीन आर्यों ने सिन्धु और गङ्गा-यमुना के मैदान में रहने के कारण ही इतनी उन्नति की थी। इसलिए ब्रिटिश जाति का इतिहास पढ़ने से पहले यह जान लेना अत्यन्त आवश्यक है कि उसके देश की क्या-क्या प्राकृतिक विशेषतायें हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण एक इतने छोटे टापू के रहनेवाले, जो इतना बड़ा भी नहीं है जितना बड़ा कि पंजाब का सूबा है, आज समस्त भूमण्डल के लगभग $\frac{1}{4}$ भाग को अपने अधीन किये हुए हैं।

स्थल गोलार्द्ध का केन्द्र – स्थल गोलार्द्ध का चित्र देखने से पता चलता है कि ब्रिटिश टापू इस गोले के बिलकुल केन्द्र पर है। यहाँ
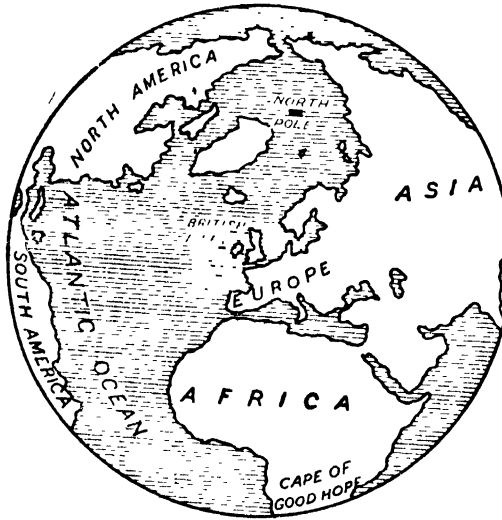
ग्रेट-ब्रिटेन—स्थल गोलार्द्ध का केन्द्र

से लोग संसार के समस्त भागों में बहुत सहज में पहुँच सकते हैं। इसी कारण संसार के व्यापारिक मार्गों का भी यह टापू केन्द्र है; और इसी लिए यहाँ के निवासी समस्त भूमण्डल के साथ बहुत सुभीते से व्यापार कर सकते हैं। ब्रिटिश टापुओं के पूर्व में योरप का महाद्वीप है, जो आजकल की सभ्यता का उद्गम माना जाता है। पश्चिम में अमेरिका का धनी महाद्वीप है; उत्तर में बाल्टिक सागर है जो उत्तर-पश्चिमी योरप के व्यापार का केन्द्र है, और दक्षिण में रूम सागर का प्रसिद्ध फाटक जिब्राल्टर है, जहाँ से पूर्वीय देशों को रास्ता गया है। सोलहवीं शताब्दी से पहले इस द्वीपवालों के लिए उन्नति करने का अवसर न था; परन्तु नये देशों का ज्ञान प्राप्त होने और नये समुद्री मार्गों के खुलने से इस द्वीप

में बसनेवाली जाति का भाग्य उदय हो गया। प्राचीन तथा माध्यमिक काल में स्थल-मार्गों तथा छोटे-छोटे समुद्रों-द्वारा ही व्यापार होता था। इस कारण रूम सागर तथा बाल्टिक सागर के तटवाली जातियाँ ही उस समय योरप में सबसे अधिक मालदार थीं। परन्तु वर्तमान काल में जब एटलांटिक तथा पैसिफ़िक महासागर संसार के व्यापार के मुख्य मार्ग बने हुए हैं, योरप में ब्रिटिश टापू और एशिया में जापान उन्नतिशील हो रहे हैं।

द्वीप-देश—ब्रिटिश जाति की उन्नति का एक मुख्य कारण यह भी है कि उसका देश एक द्वीप है। अन्य देशों के इतिहास में यह प्रायः देखा जाता है कि देश की सीमा के प्रश्न पर पड़ोसी देशों से अनेक बार युद्ध होते हैं। परन्तु एक द्वीप-देश में प्राकृतिक समुद्री सीमा होने के कारण इस प्रकार के बखेड़े नहीं होते। द्वीप-देश को विदेशी जातियों के आक्रमण का भी अधिक भय नहीं रहता। इतिहास बतलाता है कि योरप में बेल्जियम, पोलैंड आदि देशों के निवासी विदेशी आक्रमणों के कारण कभी सुख और शान्ति से न रह सके। परन्तु ब्रिटिश द्वीप के निवासियों को इस बात का गर्व है कि आधुनिक काल में हमारे देश पर वैरियों का कभी आक्रमण न हो सका। द्वीप-निवासिनी होने के कारण ब्रिटिश जाति को अपनी समुद्री शक्ति बढ़ाने का भी अच्छा अवसर मिला; और वर्तमान काल में ब्रिटिश साम्राज्य का मुख्य आधार इस जाति का बढ़ा-चढ़ा समुद्री बल ही माना जाता है। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि विदेशी जातियों से युद्ध होने के समय ब्रिटेन की समुद्री शक्ति ने ही उसकी रक्षा की। कई बार फ्रांस तथा स्पेनवालों ने इस द्वीप पर आक्रमण करने की चेष्टा की; परन्तु इस प्रकार के प्रयत्न कभी सफल न हो सके।

वर्तमान काल में छोटे-छोटे समुद्री भागों पर अधिकार जमाने के लिए राष्ट्रों में भयङ्कर युद्ध होते हैं। जिस देश में समुद्र-तट नहीं होता वहाँवालों को उन्नति करने का बहुत कम अवसर मिलता है। इस युग

ग्रेट-ब्रिटेन और आयरलैंड का प्राकृतिक मानचित्र

में तो व्यापार ही जातियों की उन्नति का एक-मात्र साधन है; और बिना अपना समुद्र-तट हुए विदेश से व्यापार करने में बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। परन्तु ब्रिटेन-द्वीप का कोई भाग समुद्र तट से सत्तर मील से अधिक दूरी पर नहीं है। इसी से समझ लेना चाहिए कि ब्रिटिश जाति के लिए समुद्री व्यापार में उन्नति करने के कितने साधन प्रस्तुत हैं।

योरपीय महाद्वीप और ब्रिटिश टापुओं के बीच में केवल डोवर का छोटा-सा जलडमरूमध्य (Strait of Dover) है। यदि ये टापू योरपीय महाद्वीप से इतने निकट न होते, तो योरप में जो कुछ जाग्रति हुई उसका इन पर कुछ भी प्रभाव न पड़ सकता। परन्तु प्रकृति की ऐसी कृपा है कि द्वीप होने का लाभ उठाते हुए भी इन टापुओंवाले योरप की सभ्यता के प्रकाश से वञ्चित न रहे।

सुरक्षित बन्दरगाह—ब्रिटिश टापुओं की तटीय बाह्य रेखा (Coast Line) टेढ़ी-तिरछी है और वहाँ समुद्र की शाखाएं स्थल में घुसती चली गई हैं। इसी कारण वहाँ बहुत-से सुरक्षित बन्दरगाह बन सके। भारतवर्ष की भाँति समुद्र-तट सपाट होने से बन्दरगाह बनाने में बड़ी कठिनता होती है। सपाट तट के बन्दरगाहों पर तूफ़ान आदि का पूरे वेग से प्रभाव पड़ता है; परन्तु स्थल में घुसी हुई समुद्र की शाखाओं पर इन आपत्तियों का अधिक प्रभाव नहीं पड़ता; और इसी कारण जिन देशों की बाह्य रेखा टेढ़ी-तिरछी होती है, वहाँ के बन्दरगाहों में तूफ़ान आदि के समय भी जहाज़ सुरक्षित रह सकते हैं। भारतवर्ष के प्रसिद्ध बन्दरगाह बम्बई में यही विशेषता है कि उसके निकट समुद्र का तट कुछ थोड़ा-सा स्थल की ओर घुसा हुआ है। ब्रिटिश टापुओं में ऐसे बहुत-से सुरक्षित बन्दरगाह हैं, जिनसे ब्रिटिश जाति के व्यापार में बहुत सुभीता होता है।

आब-हवा—ब्रिटिश टापुओं की आब-हवा ठण्डी है और इस कारण वहाँ के निवासी फुरतीले तथा उद्यमी होते हैं। गर्म देशों के

निवासी प्रायः आलसी हो जाते हैं; परन्तु ठण्डे देशों में रहनेवाले इस दोष से बचे रहते हैं। परन्तु साथ ही यह बात भी है कि वहाँ रूस या साइबेरिया की भाँति इतनी अधिक ठण्ढक भी नहीं पड़ती कि साल में छः महीने समस्त देश बर्फ़ से ढका रहे और उस काल में सारे कारबार स्थगित करने पड़ें। अमेरिका में मैक्सिको की खाड़ी से शुरू होकर एटलांटिक महासागर में गर्म पानी की एक धारा (Gulf Stream) बहती है; और पश्चिमी हवायें इस धारा को ब्रिटिश-तट तक बहा लाती हैं। इसी गर्म धारा की कृपा से इँगलैंड में सरदी कभी इतनी नहीं बढ़ने पाती कि असह्य हो जाय। सारे बन्दरगाह साल के बारह महीने खुले रहते हैं; और देश का कारबार साल भर तक सब ऋतुओं में बिना किसी रुकावट के जारी रह सकता है।

ब्रिटिश टापुओं में मौसिम सदा सुहावना रहता है। साल के हर महीने में आकाश में बादल रहते हैं। भारतवर्ष की तरह वहाँ वर्षा की कोई विशेष ऋतु नहीं है। वहाँ हर महीने में कुछ दिन वर्षा होती रहती है, जिससे बारहों महीने बराबर वहाँ के पूर्वीय भाग के खेतों को पानी मिलता रहता है।

खनिज और कृषि-पदार्थ—ब्रिटिश टापुओं की धरती उपजाऊ है; परन्तु आबादी बहुत घनी होने के कारण वहाँ के लोगों का अपने देश की खेती से पूरा नहीं पड़ता; और उन्हें भारतवर्ष, अमेरिका तथा आस्ट्रेलिया से अन्न मँगाना पड़ता है। इन टापुओं की प्रधान सम्पत्ति खनिज पदार्थ है। इँगलैंड के उत्तरी तथा पश्चिमी भाग में पत्थर के कोयले की बहुत-सी खानें हैं; और सबसे बड़ी उपयोगी बात यह है कि उन्हीं के आस-पास लोहा भी मिलता है। वर्तमान युग में मशीनों आदि के लिए इन्हीं दोनों वस्तुओं की विशेष आवश्यकता होती है। लोहे से मशीनें बनती हैं, जो पत्थर के कोयले से चलाई जाती हैं। ब्रिटिश टापुओं में इतने कारख़ाने इसी कारण बन सके कि वहाँ लोहा और कोयला ख़ूब मिलता है। आजकल जिस देश में ये दोनों

वस्तुएँ नहीं होतीं, वहाँ के निवासियों को कारख़ाने आदि खोलने में बड़ी कठिनाइयाँ होती हैं। पिछले योरपीय महायुद्ध के समय जर्मनी और फ्रांस में एल्सेस और लोरेन के लिए बहुत झगड़ा हुआ था; क्योंकि इन प्रान्तों में कोयले की खानें हैं और आजकल यही काला कोयला, जो दो सौ वर्ष पहले बेकार समझा जाता था, बहुत ही उपयोगी हो रहा है।

रुई, ऊन तथा लोहे के कारख़ाने—ब्रिटिश टापुओं में सैकड़ों बड़े-बड़े पुतलीघर हैं। उत्तर-पश्चिमी भाग विशेषतया सूती कपड़े के कारख़ानों के लिए प्रसिद्ध हैं। देश में कपास नहीं होती और इसलिए भारतवर्ष, मिस्र तथा अमेरिका से मँगाई जाती है। लैंकाशायर (Lancashire) प्रान्त में हर साल लाखों करोड़ों रुपयों का सूती कपड़ा बनता है और विदेशों को भेजा जाता है। सूत कातने के लिए वहाँ एक प्राकृतिक सुभीता यह है कि आबहवा नम है और इसलिए तार अच्छा निकलता है। भारतवर्ष के बम्बई तथा अहमदाबाद आदि नगर भी इसी सुभीते के कारण सूती कपड़ों के कारख़ानों के केन्द्र बन सके हैं। लैंकाशायर प्रान्त आजकल ब्रिटिश-टापुओं का सबसे धनी भाग है; और सूती कपड़ों के कारख़ानों की कृपा से वहाँ आये दिन सैकड़ों करोड़पति होते हैं। हमारे देश में जो बढ़िया सूती कपड़े आते हैं, वे अधिकतर लैंकाशायर के पुतलीघरों के ही बने होते हैं। इस प्रान्त का मुख्य नगर मैंचस्टर (Manchester) और मुख्य बन्दरगाह लिवरपूल (Liverpool) है। अँगरेज़ी में एक कहावत है—"जो विचार आज लैंकाशायर प्रान्त में उत्पन्न होते हैं, उन्हें कल समस्त इँगलैंडवाले मानने लगते हैं।" इसका अभिप्राय यही है कि वहाँ के धनिक निवासियों का देश के विचारों पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

ऊनी कपड़े के सबसे बड़े कारख़ाने लीड्स (Leeds) में हैं। ब्रिटिश द्वीप सदा से उनके लिए प्रसिद्ध है। प्राचीनकाल में देश की स्त्रियाँ ही चरखों पर ऊन कात लेती थीं और उसी से कपड़ा बनता था।

प्राचीन तथा माध्यमिक काल में, जब इस देश में पुतलीघर आदि कुछ नहीं थे, यहाँ का बहुत-सा ऊन फ्रान्स के फ़्लैंडर्स (Flanders) प्रान्त को भेज दिया जाता था, जो उस काल में भी ऊनी कपड़ों के लिए प्रसिद्ध था। पर आजकल देश में ही ऊनी कपड़ों के कारख़ाने इतने बढ़ गये हैं कि ब्रिटेन की भेड़ों के ऊन से पूरा नहीं पड़ता, और आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण-अफ्रीका से कच्चा ऊन मँगाना पड़ता है, जिसके सुन्दर ऊनी वस्त्र बनाकर देशान्तर को भेजे जाते हैं।

लोहे के भी बहुत-से कारख़ाने हैं। इँगलैंड का मध्य भाग लोहे के कारख़ानों के धुएँ के कारण ही "काला देश" (Black Country) कहलाता है। इस प्रान्त का मुख्य नगर बरमिंघम (Birmingham) है, जहाँ लोहे का सब प्रकार का सामान तैयार होता है। कुछ दूर पर शेफ़ील्ड (Sheffield) है जो तलवार, चाक़, क़ैंची, उस्तरे आदि के लिए प्रसिद्ध है।

व्यापार—देश में सहस्रों पुतलीघरों का होना इस बात का सूचक है कि इँगलैंड का व्यापार आजकल बहुत बढ़ा-चढ़ा है। व्यापार की ही कृपा से इस देशवाले इतने धनी हुए; और इसी की कृपा से इस जाति ने समस्त भूमण्डल में फैलकर इतना बड़ा साम्राज्य स्थापित किया। नेपोलियन अँगरेज़ों को "दूकानदारों की जाति" (Nation of Shopkeepers) कहा करता था। यह वाक्य कटु अवश्य है; परन्तु यदि विचारपूर्वक देखा जाय, तो वास्तव में ब्रिटिश जाति की उन्नति का प्रधान आधार उनका व्यापार ही है। यदि अपने व्यापार पर कभी किसी प्रकार का आघात होता है, तो उस आघात को ब्रिटिश जाति वैसा ही समझती है, जैसे कोई उसके देश पर आक्रमण करता हो। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि अन्य राज्यों से सन्धि करते समय इन लोगों को सबसे बड़ी चिन्ता इसी बात की रहती है कि हम व्यापार के लिए विशेष सुभीते प्राप्त कर लें या व्यापार के कुछ अच्छे केन्द्र हमारे अधीन हो जायँ।

आबादी—जब से देश का व्यापार बढ़ा, तब से यहाँ की आबादी भी बराबर बढ़ती गई। प्राचीन काल में देश के पूर्वीय तथा दक्षिणी भाग ही अच्छे समझे जाते थे; परन्तु वर्तमान काल में देश की सबसे घनी आबादी उत्तरी तथा पश्चिमी भाग में कोयले की खानों के आस-पास है। देश में ग्रामों की अपेक्षा नगर अधिक हैं, क्योंकि अब कृषि यहाँ का प्रधान उद्यम नहीं है। नगरों के पूर्वीय भाग में प्रायः नीची श्रेणी के लोग बसते हैं, क्योंकि वहाँ दक्षिण-पश्चिमी हवायें सदा चला करती हैं, जिनसे पुतलीघरों का धुआँ पूरब ही की ओर पहुँचता है। नगर के पश्चिमी भाग में धुआँ बहुत कम पहुँचता है; और इसलिए धनिक लोग प्रायः पश्चिमी भाग में ही रहना पसन्द करते हैं।

स्काटलैंड—स्काटलैंड और इँगलैंड के बीच में पहाड़ियाँ हैं, जो शीवियट हिल्स (Cheviot Hills) कहलाती हैं। इन्हीं पहाड़ियों के कारण ये दोनों देश बहुत काल तक एक दूसरे से अलग रहे। माध्यमिक काल में दोनों में परस्पर युद्ध भी ख़ूब हुए; और ट्यूडर-काल तक दोनों देशों की जातियों में वैरभाव चलता रहा। परन्तु जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा, जेम्स प्रथम के समय में दोनों देशों के राज-सिंहासन मिलकर एक हो गये; और इसके एक शताब्दी बाद दोनों की पार्लिमेंटों के भी मिल जाने से इँगलैंड और स्काटलैंड एक संयुक्त राज्य में सम्मिलित हो गये। स्काटलैंड के बहुत-से भाग पहाड़ी हैं; और उन पहाड़ी भागों में भेड़ें पालने का काम ख़ूब होता है। पहाड़ी प्रान्तों के निवासी हाईलैंडर (Highlanders) कहलाते हैं; और वे बहुत परिश्रमी तथा साहसी होते हैं। अँगरेज़ी सेना के गोरे अधिकतर स्काटलैंड के हाईलैंडर ही होते हैं। स्काटलैंड के मुख्य नगर एडिनबरा (Edinburgh) और ग्लास्गो (Glasgow) हैं, जहाँ इँगलैंड के नगरों की तरह बहुत-से पुतलीघर हैं।

आयरलैंड—आयरलैंड द्वीप आइरिश सागर (Irish Sea) के द्वारा ब्रिटेन-द्वीप से पृथक होता है। आयरलैंड में पहाड़ियाँ समुद्र-तट

के आस-पास हैं, और इसलिए देश का पानी बहकर समुद्र में नहीं जा सकता। इस कारण वहाँ दलदलें बहुत हैं, जिनसे देश का बहुत-सा भाग बेकार हो गया है। समुद्र-तट की पहाड़ियाँ पानी बरसानेवाली हवाओं को अन्दर नहीं आने देतीं; और इसलिए वहाँ वर्षा भी सन्तोष-जनक नहीं होती। ये प्राकृतिक कठिनाइयाँ और त्रुटियाँ आयरलैंड की उन्नति के मार्ग में बहुत बाधा डालती हैं।

आयरलैंड के निवासी पक्के कैथोलिक हैं, और इसी कारण "धर्म-सुधार" (Reformation) के पश्चात् उनकी इँगलैंडवालों से कभी न बनी। इँगलैंड के शत्रुओं ने इससे लाभ उठाया; और कई बार उन्होंने आयरलैंड की जनता को उत्तेजित करके देश में विद्रोह करा दिया। सन् १८०१ में आयरलैंड भी इँगलैंड और स्काटलैंड के संयुक्त राज्यों में मिला लिया गया; परन्तु इँगलैंड की प्राटेस्टेंट सरकार के प्रति आयरलैंडवालों की सहानुभूति कभी न हो सकी। पूरी एक शताब्दी तक आयरलैंड में स्वराज्य के लिए आन्दोलन होता रहा। अभी कुछ वर्ष हुए आयरलैंड के प्रश्न का इस प्रकार निबटारा हुआ है कि उत्तरी भाग, जिसमें प्राटेस्टेंटों की प्रधानता है, ब्रिटिश-संयुक्तराज्य (United Kingdom) में सम्मिलित रहेगा और दक्षिणी भाग को, जिसके निवासी अधिकतर कैथोलिक हैं, आइरिश फ्री स्टेट (Irish Free State) का नाम देकर स्वराज्य दे दिया गया है।

पहला भाग

प्राचीन तथा माध्यमिक इँगलैंड का इतिहास

पहला खण्ड

प्राचीन इँगलैंड तथा नार्मन विजय के पूर्व की दशा

पहला परिच्छेद

प्राचीन ब्रिटेन तथा रोमन जाति का राज्य

प्राचीन निवासी—ब्रिटिश टापुओं के सबसे प्राचीन निवासी काले रङ्ग के असभ्य मनुष्य थे, जो धातुओं तक से परिचित न थे और जो पशुओं की खाल ओढ़कर और कच्चा मांस खाकर निर्वाह करते थे। ईसा से लगभग सात सौ वर्ष पूर्व एक नई गोरे रङ्ग की जाति ब्रिटेन द्वीप और आयरलैंड में आकर बस गई और उसने प्राचीन असभ्य निवासियों को निकाल बाहर किया। यह नई जाति कैल्ट (Celts) नाम से प्रसिद्ध है और इसकी कई शाखायें थीं। आयरलैंड में बसनेवाली शाखा स्काट (Scotts), ब्रिटेन के उत्तरवाली शाखा पिक्ट (Picts) और ब्रिटेन के दक्षिणवाली शाखा ब्रिटन (Britons) कहलाती थी। इन शाखाओं में ब्रिटनों की संख्या अधिक थी और उन्हीं के नाम पर इस द्वीप का नाम ब्रिटेन (Britain) पड़ा।

ब्रिटन जाति की सभ्यता तथा धर्म—ब्रिटनों की सभ्यता बिलकुल साधारण थी। उनका मुख्य उद्यम खेती करना था। उनकी सबसे बड़ी पूँजी भेड़ें और गायें समझी जाती थीं। वे लोग धातुओं से परिचित थे, लोहे के हथियार बनाते थे और चाँदी-सोने के गहने पहनते थे। एशियामाइनर के निवासी, जो उस काल में समुद्र के व्यापार के लिए प्रसिद्ध थे, इस द्वीप से टीन इत्यादि लेने आया करते थे और उसके बदले में यहाँवालों को प्रायः वस्त्र दे जाते थे। इन्हीं विदेशी व्यापारियों से सम्बन्ध होने के कारण समुद्र-तट के निकट बसनेवालों में सभ्यता के कुछ लक्षण पाये जाते थे, परन्तु द्वीप के भीतरी निवासी अभी तक जङ्गली थे और अपने शरीर को रँगे हुए और पशुओं की खाल ओढ़े फिरा करते थे।

ब्रिटनों में सूर्य, चन्द्रमा, जल, अग्नि इत्यादि प्राकृतिक पदार्थों की पूजा होती थी, परन्तु अच्छी तरह सभ्य न होने के कारण वे अपने देवताओं को प्रसन्न करने का केवल यही एक साधन जानते थे कि उनके सम्मुख मनुष्यों की बलि चढ़ाई जाय। वे लोग कुछ वृक्षों को भी बहुत पवित्र समझते थे और पुरोहितों के अतिरिक्त उन्हें कोई न काट सकता था। यह पुरोहित ड्रूड (Druids) कहलाते थे और उनका समाज में बड़ा मान होता था। ड्रूड उन लोगों के शिक्षक तथा वैद्य भी होते थे और वही उनके आपस के झगड़ों का निबटारा कर दिया करते थे।

जूलियस सीज़र के आक्रमण—ईसा से लगभग आधी शताब्दी पूर्व उस काल के प्रसिद्ध रोमन साम्राज्य का प्रसिद्ध योद्धा जूलियस सीज़र (Julius Cæsar) फ्रांस को विजय करने का प्रयत्न कर रहा था। उस समय फ्रांस में बसनेवाली जाति भी कैल्ट जाति ही की एक शाखा थी और इसलिए सजातीय होने के कारण ब्रिटेन-निवासी भी कभी-कभी फ्रांसवालों की सहायता के लिए पहुँच जाते थे। इस सहायता को रोकने के लिए जूलियस सीज़र ने दो बार सेना लेकर ब्रिटेन द्वीप पर चढ़ाई की जिससे यहाँवाले इतने भयभीत हो गये कि उन्होंने फिर फ्रांसवालों की सहायता के लिए जाने का साहस न किया। जूलियस सीज़र का यह अभिप्राय न था कि इस द्वीप में रोमन राज्य स्थापित किया जाय। उसके आक्रमण का महत्त्व केवल यही है कि उसने इस द्वीप का विस्तृत वर्णन लिखा है, जिससे यहाँ की प्राचीन ब्रिटन जाति के रहन-सहन का पता चलता है।

रोमन राज्य की स्थापना—जूलियस सीज़र के आक्रमण के लगभग एक शताब्दी बाद रोमनों ने इस द्वीप को जीतकर रोमन साम्राज्य में मिला लेने का प्रयत्न आरम्भ किया। सन् ४३ में रोमन सम्राट् क्लाडियस (Emperor Claudius) ने इस द्वीप पर चढ़ाई करने के लिए बहुत बड़ी सेना भेजी। ब्रिटनों ने बड़ी वीरता से इस सेना से युद्ध किया, परन्तु उनके लिए सुसज्जित रोमन सिपाहियों के सामने

ठहरना कठिन था। द्वीप का दक्षिणी भाग रोमनों के अधीन हो गया और इस प्रकार यहाँ रोमन राज्य का प्रारम्भ हुआ। द्वीप में रोमन राज्य की उत्तरी सीमा नियत करने के लिए एक कई मील लम्बी दीवार बनवाई गई, जिसके खँडहरों के चिह्न आज तक विद्यमान हैं।

रोमन राज्य का प्रभाव—दक्षिण ब्रिटेन में रोमन राज्य लगभग साढ़े तीन सौ वर्ष तक रहा। इस काल में पाँच रोमन सम्राट् स्वय इस द्वीप की सैर करने आये। सम्राट् की ओर से शासन करने के लिए एक गवर्नर नियुक्त करके भेजा जाता था। रोमनों ने इस द्वीप में सभ्यता फैलाने का भी बहुत कुछ प्रयत्न किया। जङ्गल और दलदलें साफ़ की गई और अब यहाँ सुन्दर नगर दीख पड़ने लगे। देश के भिन्न भिन्न भाग मे आने-जाने की सुविधा के लिए पक्की सड़कें बनवाई गईं जिनसे व्यापार की उन्नति हुई। द्वीप में खेती खूब होती थी और रोमन सेना की रसद के लिए प्रायः यहाँ से अनाज भेजा जाता था। ब्रिटनों के ड्रूइड पुरोहित निकाल बाहर किये गये और यहाँ के निवासी रोमन देवताओं की पूजा करने लगे। सम्राट कांस्टेनटाइन (Emperor Constantine) के राज्यकाल में जब रोमन साम्राज्य में ईसाई-मत को राजधर्म मान लिया गया तब ब्रिटन द्वीप में भी ईसाई-धर्म का प्रचार आरम्भ हुआ। द्वीप में एक ब्रिटिश चर्च* स्थापित किया गया, जहाँ के पादरियों ने जाकर पास के आयरलैंड द्वीप में भी ईसाई-मत को फैलाया।

परन्तु इन सब लाभों के साथ-साथ एक परतंत्र जाति हो जाने के कारण ब्रिटनों को बहुत-सी हानि भी हुई। रोमन शासक ब्रिटनों को एक पराजित जाति समझते थे और उनको देश के शासन में कभी उच्च स्थान न देते थे। इस कारण ब्रिटनों में आत्मगौरव, साहस तथा वीरता

---

*वर्तमान समय के वेल्ज़ और आयरलैंड के चर्च की उत्पत्ति इसी रोमन-काल के ब्रिटिश चर्च से मानी जाती है।

के गुण धीरे-धीरे लुप्त हो गये और, जैसा कि हम अगले परिच्छेद में बतलावेंगे, रोमन सेनाओं के देश से चले जाने के बाद ब्रिटन जाति इतनी बलहीन थी कि एक दूसरी विदेशी जाति ने आकर सुगमतापूर्वक द्वीप पर अपना अधिकार जमा लिया।

रोमन राज्य का अन्त (४१०)—पाँचवीं शताब्दी के आरम्भ में रोमन साम्राज्य पर बहुत से शत्रुओं के आक्रमण हो रहे थे। ऐसे सङ्कट के समय में रोमनों को स्वयं रोम की रक्षा के लिए सेनाओं की बहुत आवश्यकता थी। इसलिए रोमनों ने ब्रिटेन द्वीप से अपनी सब सेनायें हटा लीं और सन् ४१० में सम्राट् होनोरियस (Emperor Honorious) ने यह घोषणा कर दी कि द्वीपनिवासी अब अपना प्रबन्ध स्वयं करें। इस समय से इस द्वीप में रोमन राज्य का अन्त हुआ।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

ईसा से ५५ वर्ष पूर्व—जूलियस सीज़र का पहला आक्रमण।
ईसा से ५४ वर्ष पूर्व—जूलियस सीज़र का दूसरा आक्रमण।
सन् ४३—रोमन राज्य का प्रारम्भ।
सन् ४१०—रोमन राज्य का अन्त।

दूसरा परिच्छेद

अँगरेज़ जाति का आगमन

रोमनों के पश्चात् ब्रिटेन की दशा—रोमन सेनाओं के हट जाने के पश्चात् ब्रिटन जाति बड़े सङ्कट में पड़ गई। द्वीप के उत्तर में बसनेवाली पिक्ट और आयरलैंड की स्काट जातियों ने ब्रिटनों के देश पर धावा मारना शुरू किया। बहुत काल तक परतन्त्र रहने के कारण ब्रिटन बिलकुल शक्तिहीन हो गये थे। इस कारण वे इन धावों को रोकने का कोई प्रबन्ध न कर सके। उन्होंने रोमनों को भी अपनी दर्द-भरी कहानी (Groans of the Britons) लिखकर भेजी, परन्तु रोमन अपने ही देश की रक्षा में इतने लगे हुए थे कि वे ब्रिटनों को कोई सहायता न भेज सके।

एक नई जाति का द्वीप में प्रवेश (४४९)—रोमनों की सहायता से निराश होकर ब्रिटनों ने डेनमार्क के उत्तर में बसनेवाली जूट जाति (Jutes) को अपनी रक्षा के लिए बुलाया। सन् ४४९ में जूट जाति के दो सरदार होरसा (Horsa) और हेंगेस्ट (Hengest) ब्रिटेन द्वीप में थेनेट (Thanet) नामक स्थान पर आकर उतरे। द्वीप में प्रवेश पाते ही जूटों ने ब्रिटनों ही को भगाना शुरू किया और धीरे-धीरे वे स्वयं पूर्वीय भाग में बसने लगे। इस प्रकार ब्रिटनों ही के निमन्त्रण द्वारा एक नई जाति को इस द्वीप पर अधिकार जमा लेने का अवसर मिल गया।

अँगरेज़ों का द्वीप में फैलना—जूटों की सफलता देखकर उनकी पड़ोसी जातियों अर्थात् आंग्लो (Angles) और सेक्सनों (Saxons) ने भी ब्रिटेन द्वीप पर धावे मारना और यहां पर बलपूर्वक अपना निवास-

स्थान बनाना आरम्भ किया। आंग्ल, सेक्सन और जूट ये तीनों जातियाँ ट्यूटन जाति (Teutonic Race) की शाखायें थीं। उनका अपना आदि देश जर्मनी तथा डेनमार्क उस काल में उजाड़ हो जाने के कारण उन्होंने ब्रिटेन की उपजाऊ भूमि में बसना अच्छा समझा। प्राचीन ब्रिटन जाति द्वीप के पूर्वीय तथा दक्षिणी भागों से निकाल बाहर की गई और इन भागों में इन नई जातियों ने अपना अधिकार जमा लिया। ब्रिटनों को द्वीप से निकालने में इन नई जातियों को पूरे डेढ़ सौ वर्ष लगे और इस काल में दोनों जातियों में कई बार घोर युद्ध भी हुए। इस काल के पश्चात् केवल द्वीप के पश्चिमी भाग की पहाड़ियों में ब्रिटनों के घर बच रहे और यह भाग वेल्ज़ (Wales) कहलाने लगा क्योंकि ब्रिटन जाति वेल्श (Welsh) नाम से भी पुकारी जाती थी।

जूट, आंग्ल तथा सेक्सन सजातीय तो थे ही। अब एक ही द्वीप में बस जाने के कारण वे परस्पर इतने हिल-मिल गये कि उनमें कोई अन्तर न रहा। इन्हीं तीनों उपजातियों के मिलने से "अँगरेज़ जाति" (The English) बनी जो उस काल से बराबर इस द्वीप में बसी हुई है। इन उपजातियों में आंग्लो की संख्या अधिक रही और उन्हीं के नाम पर इस द्वीप के दक्षिणी अर्धभाग का नाम इँगलैंड Eng-land) पड़ा।

उसी समय के लगभग आयरलैंडवाली स्काट जाति (Scotts) द्वीप के उत्तरी भाग में आकर बस गई। धीरे-धीरे उस भाग के प्राचीन और नवीन निवासी अर्थात् केल्ट जाति की पिक्ट और स्काट उप-जातियाँ आपस में हिल-मिलकर एक हो गईं। स्काटों के नाम पर द्वीप का उत्तरी अर्धभाग स्काटलैंड (Scotland) कहलाने लगा।

अँगरेजों के आगमन का प्रभाव—जूट, आँग्ल और सेक्सन निर्दयी, लड़ाके और लूटमार के शौक़ीन थे। अपने आदि निवास-स्थान में उनको प्रायः ग्रामीण जीवन ही की आदत थी। इस कारण इन उपजातियों से मिलकर बननेवाली प्राचीन अँगरेज़ जाति में भी यही सब लक्षण प्रधान

रहे। अँगरेज़ों ने रोमन काल के नगरों इत्यादि का नाश कर डाला और उनके आने के समय से द्वीप में रोमन सभ्यता के चिह्न लुप्त होने लगे। प्राचीन अँगरेज़ ईसाई-धर्म के अनुयायी न थे। इसलिए उन्होंने गिरजाघरों को भी तोड़ डाला और इस प्रकार ईसाई-धर्म भी जिसका रोमन काल में इस द्वीप में प्रचार हो गया था, यहाँ से ग़ायब हो गया। थोड़े से प्राचीन नामों के अतिरिक्त इँगलैंड में रोमन प्रभाव के
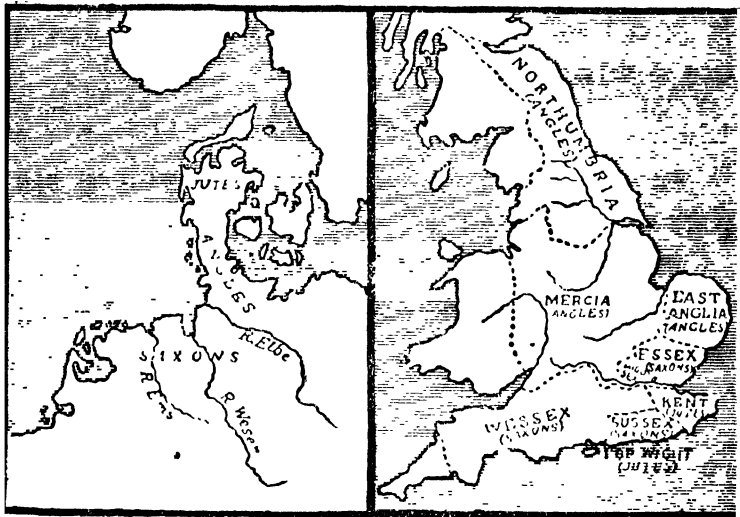
अँगरेज़ों का आगमन

चिह्न कुछ भी बाक़ी न रहे। अँगरेज़ों के आगमन के समय से यहाँ एक नये ही ढङ्ग की सभ्यता आरम्भ हुई, जिसे "आंग्ल सेक्सन सभ्यता" (Anglo-Saxon Culture) कहते हैं। वर्तमान अँगरेज़ी भाषा तथा शासन-पद्धति की उत्पत्ति इसी सभ्यता से मानी जाती है। हम इस सभ्यता के उत्थान का विस्तारपूर्वक वर्णन पाँचवें परिच्छेद में करेंगे।

प्राचीन अँगरेज़ी रियासतें—प्राचीन अँगरेज़ों में छोटी-छोटी टोलियों के अलग-अलग सरदार होते थे। धीरे-धीरे इस जाति में राजाओं की प्रणाली आरम्भ हुई और देश में बहुत-सी छोटी-छोटी रियासतें स्थापित हो गईं। कुछ समय के पश्चात् छोटी-छोटी रियासतों के मिल जाने से बड़ी-बड़ी रियासतें बनने लगीं। सातवीं तथा आठवीं शताब्दी में इँगलैंड सात बड़ी रियासतों में विभक्त था, जो "सप्तराज्य" (Heptarchy) के नाम से प्रसिद्ध हैं। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि इन सातों रियासतों के मिलने से इँगलैंड में किस प्रकार एकच्छत्र राज्य की स्थापना हुई।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् ४१० से ४४९ तक—ब्रिटेन जाति की स्वतन्त्रता का काल (रोमन राज्य के पश्चात्)।

सन् ४४९—"अँगरेज़ी विजय" का प्रारम्भ।

सन् ४४९ से ५८६ तक—अँगरेज़ों के "सप्तराज्य" की स्थापना का काल।

तीसरा परिच्छेद

ईसाई-धर्म का प्रचार

अँगरेज़ों का प्राचीन धर्म—रोमनकाल में ब्रिटेन द्वीप में ईसाई-मत का प्रचार हो चुका था, परन्तु अँगरेज़ों के आने पर यह मत बिलकुल लुप्त हो गया। प्राचीन अँगरेज़ ईसाई-मत के बड़े विरोधी थे। वे भी प्राचीन ब्रिटनों की भाँति सूर्य, चन्द्रमा इत्यादि की उपासना करते थे और इन्हीं प्राचीन देवताओं के नाम पर अँगरेज़ी भाषा में सप्ताह के दिनों के नाम बने हैं।*

आगस्टाइन-द्वारा ईसाई-मत का प्रचार—अँगरेज़-जाति में ईसाई-मत के प्रचार की कथा बड़ी सुन्दर है। एक समय रोम के प्रसिद्ध पोप ग्रीगरी (Gregory) ने कुछ अँगरेज़ बालकों को रोम के बाज़ार में बिकते हुए देखा। उनकी सुन्दरता तथा भोलेपन का ग्रीगरी पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उसने यह निश्चय कर लिया कि उसके निवासस्थान ब्रिटेन द्वीप को, जहाँ पहले भी ईसाई-मत का प्रचार हो चुका था, फिर से ईसाई बनाया जाय। पोप की पदवी प्राप्त करते ही ग्रीगरी ने आगस्टाइन (Augustine) को कुछ और पादरियों-सहित इँगलैंड में ईसाई-धर्म का प्रचार करने के लिए भेजा। सन् ५९७ में उसी थेनेट के स्थान पर, जहाँ डेढ़ सौ वर्ष पहले अँगरेज़ों की पहली टोली आकर उतरी थी, आगस्टाइन भी आकर उतरा। उस समय इँगलैंड कई छोटी-छोटी रियासतों

---

* जो लोग ईसाई-धर्म को नहीं मानते उन्हें ईसाई लोग हीदिन (Heathen) कहते हैं।

एथेलबर्ट के दरबार में ईसाई धर्म का प्रचार

में विभक्त था। आगस्टाइन ने केन्ट (Kent) के राजा एथेलबर्ट (Ethelbert) के दर्बार में जाकर ईसाई-धर्म की महिमा बतलानी शुरू की। एथेलबर्ट का विवाह पहले ही एक फ्रांसीसी ईसाई राजकुमारी से हो चुका था इसलिए उसने शीघ्र ही ईसाई-मत को स्वीकार कर लिया और उसकी अधिकांश प्रजा भी ईसाई हो गई। आगस्टाइन को केन्टर्बरी के स्थान पर चर्च बनाने की आज्ञा दे दी गई और वह उसका पहला बड़ा पादरी (First Archbishop of Canterbury) नियत हुआ। अँगरेज़ों का सबसे प्रथम चर्च होने के कारण ही आजकल भी केन्टबरी के चर्च का इँगलैंड में बहुत मान होता है और उसका बड़ा पदारी समस्त इँगलिश चर्चों का अधिष्ठाता माना जाता है।

ईसाई-मत का फैलना—केंट से ईसाई-मत इँगलैंड के अन्य भागों में फैलना शुरू हुआ। एथेलबर्ट की कन्या का विवाह नार्थम्ब्रिया (Northumbria) के राजा एडविन (Edwin) के साथ हुआ और वह अपने साथ पालिन (Paulins) नामक एक पादरी को लेती गई। पालिन ने एडविन को ईसाई बनाया और नार्थम्ब्रिया में ईसाई मत का प्रचार किया। वह यार्क का पहला बड़ा पादरी (First Archbishop of York) नियत हुआ। केन्टबरी के चर्च के बाद इँगलैंड में दूसरे नम्बर पर यार्क ही के चर्च का आदर होता है।

नार्थम्ब्रिया की पड़ोसी रियासत मर्सिया (Mercia) के राजा पेंडा (Penda) को ईसाई धर्म पसन्द न आया। वह प्राचीन धर्म का कट्टर पक्षपाती था और उसने ईसाई धर्म के फैलने में तरह तरह की बाधायें डालीं। एक युद्ध में उसने एडविन को निहत किया और इस घटना के बाद नार्थम्ब्रिया में ईसाई-धर्म लुप्त होने लगा। परन्तु थोड़े ही दिनों बाद पेंडा स्वयं एक युद्ध में मारा गया और उसकी मृत्यु के पश्चात् ईसाई-धर्म का कोई शक्तिशाली विरोधी बाक़ी न रहा। एडन (Aidan) नामक एक आयरलैंड के पादरी ने आकर नार्थम्ब्रिया में फिर से ईसाई-धर्म फैलाया। मर्सिया राज्य के निवासियों ने भी इस मत को स्वीकार

कर लिया और धीरे-धीरे समस्त इँगलैंड ईसाई-धर्म का अनुयायी हो गया।

ह्लाइटबी की धर्मसभा (Synod of Whitby) (६६४)—इँगलैंड में दो प्रकार के पादरियों द्वारा ईसाई-मत का प्रचार हुआ। एक तो रोम के पादरी जो आगस्टाइन के साथ आये थे और दूसरे आयरलैंड के पादरी जो एडन के साथ आये थे। रोम और आयरलैंड के चर्च अलग अलग ढंग के थे और दोनों में कुछ धार्मिक विधियों में भी भेद था। इस प्रकार समस्त इँगलैंड में एक धर्म फैल जाने पर भी दो भिन्न-भिन्न ढंग की रीतियाँ प्रचलित रहीं। इस भेद को हटाने के लिए सन् ६६४ में ह्लाइटबी (Whitby) के स्थान पर एक बड़ी धर्म-सभा (Synod) बुलाई गई, जिसका सभापति नार्थम्ब्रिया का राजा आसवी (Oswy) था। आयरलैंड तथा रोम दोनों चर्च की विधियों पर वादविवाद सुनने के पश्चात् राजा आसवी ने रोमन चर्च के पक्ष में व्यवस्था दी और यह निश्चित हो गया कि इँगलैंड के सारे चर्च रोमन ढंग ही का अनुकरण करेंगे।

यह एक बड़ा महत्त्वपूर्ण निर्णय था। इसके द्वारा इँगलैंड का रोम से सम्बन्ध हो गया, जो उस काल में सभ्यता तथा कला-कौशल का केन्द्र था और जहाँ की रीतियों को अधिकांश योरप में माना जाता था। यदि इँगलैंडवालों ने आयरलैंड के चर्च का अनुकरण किया होता, तो उनमें जातीय एकता का विकास होना कठिन था, क्योंकि आयरलैंड के चर्च में छोटे-छोटे बहुत-से समुदाय हैं और वे भली भाँति संगठित नहीं हैं।

थियोडोर द्वारा अँगरेज़ी चर्च का संगठन—ह्लाइटबी की धर्म-सभा के चार साल बाद थियोडोर (Theodor) नामक एक प्रसिद्ध यूनानी विद्वान् केन्टबरी का बड़ा पादरी नियत हुआ। उसने अँगरेज़ी चर्च का रोमन ढंग के अनुसार सङ्गठन किया और चर्च के कर्मचारियों की श्रेणियाँ बना दीं। प्रत्येक मुहल्ले में एक पुरोहित (Priest) होता

था और सारे पुरोहित नगर या ज़िले के पादरी (Bishop) के अधीन होते थे। सारे पादरी प्रान्त के बड़े पादरी (Archbishop) के अधीन होते थे और रोम का पोप समस्त चर्च का अधिष्ठाता माना जाता था।

देश के भिन्न-भिन्न भागों में मठ (Monastery) स्थापित किये गये, जिनमें रहनेवाले साधु (Monk) और साध्वी (Nun) यह प्रण करते थे कि विवाह इत्यादि के सांसारिक बखेड़ों में न पड़कर अपना समस्त जीवन धर्म-प्रचार तथा दीन दुखियों की सहायता में व्यतीत करेंगे। मठों-द्वारा ईसाई-मत की शिक्षा फैलने के अतिरिक्त देश-वासियों का उपकार भी बहुत हुआ। प्रत्येक मठ के साथ अस्पताल, पाठशाला और छोटा-सा पुस्तकालय रहता था और वहीं ग़रीब तथा अपाहिजों के लिए अन्नक्षेत्र का भी प्रबन्ध होता था।

चर्च का उत्तम प्रभाव—ईसाई-मत के फैलने का इँगलैंड के निवासियों पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। अँगरेज़ अभी तक निर्दयी तथा लड़ाके होते थे, परन्तु ईसाई-धर्म की उच्च शिक्षाओं ने उनके जीवन को उपयोगी तथा शान्तिमय बना दिया। चर्च के सङ्गठन से देश-वासियों में एकता के भाव का अंकुर लगा। धार्मिक एकता ने राजनीतिक एकता के लिए रास्ता साफ़ किया और अलग-अलग रियासतों के स्थान पर समस्त इँगलैंड में एकच्छत्र राज्य स्थापित होने में इससे बड़ी सहायता मिली। चर्च ही के द्वारा इँगलैंड में विद्या का प्रचार हुआ। अँगरेज़ी भाषा का सबसे प्रथम कवि कीडमन (Cædmon) तथा इँगलैंड के धार्मिक इतिहास (Ecclesiastical History) का प्रसिद्ध लेखक माननीय बीड (Venerable Bede) दोनों मठों के अधिष्ठाता थे। राज्य के उच्च पदों में भी प्रायः चर्चवालों ही की प्रधानता रहती थी। प्राचीन इँगलैंड का सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ डंसटन (Dunstan) केंटरबरी का बड़ा पादरी था। कई शताब्दी तक चर्च और राज्य में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध बना रहा।

इस प्रकार चर्च ने अँगरेज़ों को जीवन का उच्च आदर्श सिखलाया, उनमें जातीयता का भाव उत्पन्न किया और देश-सेवा के लिए प्रसिद्ध कवियों, विद्वानों तथा राजनीतिज्ञों को तैयार किया।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् ५९७—आगस्टाइन का इँगलैंड में आगमन तथा केन्ट राज्य में ईसाई-मत का प्रचार।

सन् ६२७—पालिस-द्वारा नार्थम्ब्रिया में ईसाई-मत का प्रचार।

सन् ६५५—ईसाई-मत के विरोधी राजा पेंडा की मृत्यु।

सन् ६६४—व्हाइटबी की धर्म-सभा।

सन् ६६८—थियोडोर का कैंटबरी का बड़ा पादरी नियत होना।

—

चौथा परिच्छेद

अँगरेज़ों के प्राचीन राजे

(१) एल्फ्रेड तथा डेन जाति के आक्रमण

"सप्तराज्य" (The Heptarchy)—प्राचीन काल में इँगलैंड सात छोटे-छोटे राज्यों में विभक्त था, जिनमें कभी एक और कभी दूसरे राज्य की शक्ति प्रधान हो जाती थी। जिस राज्य की शक्ति अधिक होती थी उसके शासक को अन्य राज्य अपना पूज्य मान लेते थे और वह "ब्रिटेन का मुख्य राजा" (Bretwalda) कहलाने लगता था। केंट (Kent) राज्य के शासक एथेलबर्ट (Ethelbert) के विषय में, जिसने सबसे पहले ईसाई मत को ग्रहण किया, हम पहले ही लिख चुके हैं। उसका दामाद नार्थम्ब्रिया का राजा एडविन (Edwin of Northumbria) भी अपने समय का बड़ा प्रसिद्ध शासक हुआ। तीसरा राज्य, जिसने खूब उन्नति की, मर्सिया (Mercia) का था। मर्सिया के राजा पेंडा (Penda) ने ईसाई-मत के प्रचार में बहुत बाधा डाली। मर्सिया का दूसरा प्रसिद्ध राजा ओफ़ा (Offa) हुआ, जिसने वेल्ज़ में बसनेवाली प्राचीन ब्रिटन जाति से अपने राज्य को सुरक्षित रखने के लिए एक बहुत बड़ी खाई खुदवाई। ओफ़ा की इस खाई (Offa's Dyke) के चिह्न अब तक विद्यमान हैं।

एकच्छत्र राज्य की स्थापना—मर्सिया के पतन के पश्चात् वेसेक्स (Wessex) राज्य का सितारा चमका। इस समय तक अन्य राज्य बिलकुल शक्तिहीन हो चुके थे और डेन जाति के आक्रमण शुरू हो जाने के कारण देश में एकच्छत्र राज्य की आवश्यकता भी बहुत थी।

ऐसी स्थिति में वेसेक्स के राजा एग्बर्ट (Egbert) ने सुगमतापूर्वक अपनी शक्ति बढ़ा ली और धीरे-धीरे समस्त इँगलैंड ने उसे अपना सम्राट् स्वीकार कर लिया। इस प्रकार सन् ८२६ में इँगलैंड में एकच्छत्र राज्य की स्थापना हुई।

महान् एल्फ्रेड (८७१-६०१)—एग्बर्ट के राजवंश का सबसे प्रसिद्ध राजा उसका सबसे छोटा पोता एल्फ्रेड हुआ। एल्फ्रेड ने अपना समस्त जीवन अपनी प्रजा के हितचिन्तन में व्यतीत किया। उसके नाम को आज तक अँगरेज़ बड़े गौरव से याद करते हैं। वह परिश्रमी, विद्वान्, साहसी, वीर तथा योग्य राजनीतिज्ञ था और अपने उत्तम गुणों के कारण "महान् एल्फ्रेड" (Alfred the Great) के नाम से प्रसिद्ध है।

डेन जाति के आक्रमण—एल्फ्रेड के राज्याभिषेक के समय डेन जाति के इँगलैंड पर ख़ूब आक्रमण हो रहे थे। डेन (Danes) डेनमार्क तथा नार्वे देशों के रहनेवाले थे और उन्हें वाइकिंग्स (Vikings) भी कहते हैं। वे वास्तव में अँगरेज़ों के सजातीय थे, परन्तु अभी तक ईसाई नहीं हुए थे। उन्होंने ईसाई देशों में जाकर लूट-मार करना अपना उद्यम बना लिया था और वे अँगरेज़ों से इसलिए बहुत घृणा करते थे कि वे अपने प्राचीन निवासस्थान से जाकर ब्रिटेन द्वीप में बसने पर ईसाई-धर्म ग्रहण कर चुके थे। डेन बड़े वीर मल्लाह होते थे और उनकी पाँच फ़ीट लम्बी भारी कुल्हाड़ी की मार ग़ज़ब की होती थी। वे पहले केवल लूट मार के लिए इँगलैंड पर आक्रमण करते थे, परन्तु धीरे-धीरे अब उन्होंने देश में बसना भी शुरू कर दिया था।

वेडमोर की सन्धि (८७८)—एल्फ्रेड के राज्यकाल में डेन जाति के प्रसिद्ध नेता गथरम (Guthrum) ने इँगलैंड पर भारी आक्रमण किया। एल्फ्रेड ने बड़ी वीरता से डेनों का मुक़ाबला किया, परन्तु अन्त में उसने समझ लिया कि भलाई इसी में है कि उनसे बटवारे की सन्धि कर ली जाय। सन् ८७८ में एल्फ्रेड ने गथरम से वेडमोर की सन्धि

महान् एल्फ़्रेड

(Treaty of Wedmore) की, जिसके अनुसार इँगलैंड का उत्तरी तथा पूर्वी भाग गथरम के और पश्चिमी तथा दक्षिणी भाग एल्फ्रेड के अधीन रहा। इसके अतिरिक्त गथरम ने अपने साथियों-सहित ईसाई होना स्वीकार कर लिया। अँगरेज़ तथा डेन सजातीय तथा पड़ोसी देशों के रहनेवाले तो थे ही; अब धर्म एक हो जाने से दोनों में परस्पर घृणा का भाव भी दूर हो गया और धीरे-धीरे दोनों प्रेमभाव से इँगलैंड में रहने-सहने लगे।

डेनों से बँटवारे की सन्धि कर लेना एल्फ्रेड के गूढ़ राजनीतिज्ञ होने का परिचय देता है। वह जानता था कि डेनों को बिलकुल देश से निकाल देना असम्भव है। सन्धि के समय आधे इँगलैंड के राज्य पर सन्तोष करके उसने वास्तव में समस्त इँगलैंड को डेनों के अधीन होने से बचा लिया। हम बतलावेंगे कि एल्फ्रेड के उत्तराधिकारियों ने अवसर पाकर शेष भाग भी डेनों से जीत लिया और इस प्रकार एल्फ्रेड की उत्तम राजनीति ने इँगलैंड की बड़े सङ्कट के समय रक्षा की।

एल्फ्रेड के सुधार—डेनों के आक्रमणों का उपाय करने के अतिरिक्त एल्फ्रेड ने देश में बहुत-से सुधार भी किये। उसे यह देखकर बड़ा कष्ट होता था कि अँगरेज़ अपने प्राचीन निवासस्थान में वीर मल्लाह होने पर भी ब्रिटेन में बसने पर समुद्र-कला बिलकुल भूल गये थे। उसने समझ लिया कि द्वीप-निवासियों के लिए समुद्र-कला में निपुण होना ही उनकी रक्षा का एकमात्र साधन है। उसने बड़े जहाज़ बनवाये और इस प्रकार ब्रिटेन की वर्तमान जगत्-प्रसिद्ध जहाज़ी सेना (Navy) की नींव डाली। इसी जहाज़ी सेना के भरोसे अँगरेज़ आजकल भूमण्डल के एक चौथाई भाग पर शासन कर रहे हैं।

एल्फ्रेड का मत था कि प्रजा के हित की चेष्टा करते रहना ही राजा का कर्तव्य है। उसने देश के नियमों में बहुत कुछ सुधार किया और क़ानून की उत्तम किताबें तैयार कराईं जिससे सब लोग जान सकें कि किन नियमों-द्वारा देश के न्यायालयों का काम चलता है।

एल्फ्रेड विद्या का भी बड़ा प्रेमी था। उसके दर्बार में विद्वानों का बड़ा मान होता था। उसने प्रजा के हित के लिए बहुत-सी प्राचीन पुस्तकों का अँगरेज़ी में अनुवाद कराया। वह स्वयं बहुत बड़ा विद्वान् था और बहुत-सी उत्तम पुस्तकें उसने स्वयं लिखीं। एल्फ्रेड के राज्यकाल की सबसे प्रसिद्ध रचना "एंग्लो-सेक्सन इतिहास" (Anglo-Saxon Chronicle) है। यह अँगरेज़ों का अपनी भाषा में सबसे प्राचीन इतिहास है और नार्मन विजय के पूर्वकाल की घटनाओं के लिए यही प्रामाणिक पुस्तक मानी जाती है।

एल्फ्रेड ने चर्च में भी बहुत कुछ सुधार किया। डेनों के बरबाद किये हुए गिर्जाघर फिर से बनवाये गये। इसके अतिरिक्त बहुत-से नये मठों की स्थापना की गई। उसकी राजकन्या स्वय एक मठ की संरक्षिका बनी। एल्फ्रेड पादरियों के जीवन को उच्च कोटि का आदर्श जीवन बनाने की सदा चेष्टा करता रहा और उसने अयोग्य तथा दुराचारी पादरियों को चर्च से निकाल बाहर किया।

इस प्रकार एक वार योद्धा, गूढ़ राजनीतिज्ञ, समाज-सुधारक, देश-हितैषी, योग्य विद्वान्, धार्मिक नेता, किसी भी दृष्टि से हम एल्फ्रेड के जीवन की समालोचना करें; हम पावेंगे कि वह प्रत्येक अङ्ग में पूर्ण था और इसलिए वह "महान् एल्फ्रेड" कहलाने का पूर्णतया अधिकारी है।

(२) एल्फ्रेड के उत्तराधिकारी तथा डेनों की विजय

एडवर्ड (९०१-९२५, "अँगरेज़ों का प्रथम राजा"— एल्फ्रेड की मृत्यु के पश्चात् उसका लड़का एडवर्ड (Edward, the Elder) राजा हुआ। जिस भाग पर डेनों ने अधिकार जमा लिया था उसको एडवर्ड ने लड़कर फिर वापिस ले लिया। इस प्रकार उसकी शक्ति अधिक बढ़ गई और उसने "अँगरेज़ों के राजा" King of

the English) की उपाधि ग्रहण की। सेक्स के राजवंश का लगभग ७० वर्ष पूर्व ही समस्त इँगलैंड में एकच्छत्र राज्य स्थापित हो चुका था, परन्तु एडवर्ड से पहले सब राजे अपने को केवल "वेसेक्स का राजा" ही कहते थे। एडवर्ड पहला राजा हुआ जिसने अपनी उपाधि-द्वारा इँगलैंड में एकच्छत्र राज्य की घोषणा की।

शान्तिप्रिय एडगर (९५९-९७५)—एडवर्ड के पोते एडगर ने अपने राजवंश की प्रतिष्ठा और भी अधिक बढ़ा दी। उसके विषय में एक कथा प्रचलित है कि छः छोटे राजाओं ने उसकी नौका को डी नदी के पार खेया था। कथा चाहे अक्षर-अक्षर सत्य न हो, परन्तु इससे यह भली भाँति विदित होता है कि एडगर का आस-पास के प्रान्तों पर पूर्णतया अधिकार जमा हुआ था। उसने अपने राज्य में बसनेवाले डेनों तथा स्काटलैंड के पड़ोसी राजा से सदा मेल रखा और इसी लिए वह "शान्तिप्रिय एडगर" (Edgar the Peaceful) के नाम से प्रसिद्ध है।

डंसटन धार्मिक राजनीतिज्ञ—एडगर का प्रधान मन्त्री डंसटन (Dunstan) नामक एक प्रसिद्ध पादरी था। एडगर ने उसे कैंटबरी का बड़ा पादरी (Archbishop of Canterbury) भी बना दिया था और इस प्रकार चर्च तथा राज्य दोनों में वह सबसे ऊँचे पदों को सुशोभित करता था। डंसटन बड़ा योग्य राजनीतिज्ञ था और उसी ने एडगर को शान्तिप्रिय नीति का अवलम्बन करने का परामर्श दिया था। डंसटन ने चर्च में भी बहुत-से सुधार किये। इस समय बहुत-से नये नये मठों की स्थापना हुई और मठों के साधु अपनी विद्वत्ता तथा निःस्वार्थ सेवा के कारण उच्च कोटि के जीवन के आदर्श माने जाने लगे। इसी कारण बड़े-बड़े पदों पर इन्हीं साधुओं को नियुक्त करने की प्रथा धीरे-धीरे बढ़ने लगी।

अयोग्य शासक एथेलरेड (९७९-१०१६)—एडगर ने अपनी मृत्यु पर दो पुत्र छोड़े। बड़ा पुत्र शीघ्र ही मार डाला गया और

इसके पश्चात् छोटा पुत्र एथेलरेड राजा हुआ। एथेलरेड सदा नीच लोगों की सङ्गत में रहता था और वह राजकार्य के लिए सर्वथा अयोग्य था। इसी कारण वह इतिहास में "अयोग्य राजा एथेलरेड" (Ethelred the Unready)* कहलाता है। उसकी निर्बलता से लाभ उठाकर डेनों ने, जिनके आक्रमण एल्फ्रेड के राज्य-काल से बिलकुल बन्द हो गये थे, अब फिर इँगलैंड पर धावे मारना शुरू किया। इस समय तक डेनमार्क और नार्वे में बड़े राज्य स्थापित हो चुके थे और डेन अब केवल लुटेरे ही नहीं, किन्तु सुसज्जित सैनिक थे। एथेलरेड उनका मुक़ाबला न कर सका और अपनी प्रजा पर एक विशेष प्रकार का कर (Danegeld) लगाकर उसने उन्हें धन देकर लौटा देने की चेष्टा की। अँगरेज़ों की निर्बलता देखकर और धन पाने की लालच से डेन अब प्रतिवर्ष धावे मारने लगे। यह देखकर एथेलरेड ने यह आज्ञा दे दी कि जितने डेन इँगलैंड में बसे हुए हैं, सब मार डाले जायँ। इस आज्ञा का ब्राइस नामक साधु के उत्सव के दिन पालन किया गया और यह घटना "ब्राइस के उत्सव का हत्याकाण्ड" (Massacre of St. Brice's Day) के नाम से प्रसिद्ध है।

इस हत्याकाण्ड का समाचार पाकर डेनों के राजा स्वेगन (Swegen) ने भारी सेना लेकर अँगरेजों से बदला लेने के लिए इँगलैंड पर आक्रमण किया। डेनों के आते ही एथेलरेड देश छोड़कर भाग निकला और बहुत दिन तक इधर-उधर भागता फिरा। अन्त में इँगलैंड लौटने पर अँगरेज़ों का यह अयोग्य तथा निर्बल राजा शीघ्र ही परलोक सिधारा।

डेनों की विजय तथा राजा कैन्यूट—एथेलरेड की मृत्यु के पश्चात् उसके पुत्र एडमंड (Edmund) ने डेनों का मुक़ाबला शुरू

* Unready—Without Rede or Good Council-(अच्छी सलाह को न माननेवाला)।

किया। स्वेगन की भी मृत्यु हो चुकी थी और अब उसका पुत्र केन्यूट (Canute) डेनों का राजा था। एडमड* ने बड़ी वीरता से केन्यूट के विरुद्ध युद्ध किया और उसको खूब छकाया। परन्तु समय अँगरेज़ों के प्रतिकूल होने के कारण इस वीर योद्धा को शीघ्र ही मौत ने उठा लिया। एडमड के मरते ही केन्यूट सुगमतापूर्वक इँगलैंड का राजा बन बैठा और इस प्रकार सन् १०१७ में अँगरेज़ डेन जाति के अधीन हो गये।

केन्यूट ने विदेशी राजा होने पर भी अँगरेज़ों का बहुत उपकार किया। वह डेनमार्क तथा नार्वे के बड़े देशों का राजा था और इँगलैंड उसके राज्य का केवल एक प्रान्त था। उसने इँगलैंड के भूतपूर्व राजा एथेलरेड की विधवा से विवाह कर लिया और डेनों तथा अँगरेज़ों के प्रति समता का व्यवहार करने की चेष्टा की। उसने बहुत-से अँगरेज़ों को बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त किया और उसके राज्यकाल में इँगलैंड-निवासियों को यह ध्यान भी न रहा कि हम एक विदेशी राजा के अधीन हैं।

सेक्सन राज्य की पुनः स्थापना—केन्यूट की मृत्यु के पश्चात् उसके दो पुत्रों ने, एक दूसरे के बाद, इँगलैंड में राज्य किया; परन्तु वे दोनों बड़े अत्याचारी तथा निर्बल थे। दूसरे पुत्र की मृत्यु होने पर अँगरेज़ों ने सुगमतापूर्वक विदेशी राजा के स्थान पर अपने भूतपूर्व राजा एथेलरेड के पुत्र को, जो "साधु एडवर्ड" (Edward the Confessor) के नाम से प्रसिद्ध है, अपना राजा बना लिया। इस प्रकार सन् १०४२ में लगभग २५ वर्ष के बाद इँगलैंड में डेनों के विदेशी राज्य का अन्त हुआ और सेक्सन राज्य की पुनः स्थापना हो गई।

(३) नार्मन-विजय

"साधु एडवर्ड" (१०४२-१०६६)—"साधु एडवर्ड" ने पूरे २४ वर्ष राज्य किया। वह "साधु एडवर्ड" (Edward the

* वह अपनी वीरता के कारण "वीर एडमड" (Edmund Ironside) के नाम से प्रसिद्ध है।

Confessor) इसलिए कहलाता है कि उसे धार्मिक विषयों का अच्छा ज्ञान था और उसका जीवन भी मठों के साधुओं की भाँति पवित्र था। परन्तु वह राज्यकार्य में सर्वथा अयोग्य था और उसका काम सदा चापलूस दर्बारियों के भरोसे चलता था। राजा होने के स्थान पर यदि एडवर्ड किसी चर्च का अधिष्ठाता होता तो कहीं अच्छा था। उसने सेंट पीटर के सम्मानार्थ वेस्टमिंस्टर में एक बहुत बड़ा गिर्जा बनवाया जो आजकल वेस्टमिंस्टर एबे (Westminster Abbey) के नाम से प्रसिद्ध है। वहाँ इँगलैंड के राजाओं का राज्याभिषेक संस्कार होता है और बहुत-से राजाओं तथा देश के अन्य महापुरुषों की उसी में समाधियाँ भी बनी हुई हैं। लगभग दो सौ वर्ष बाद हेनरी तृतीय ने एडवर्ड की बनाई हुई इमारत में बहुत कुछ परिवर्तन कर दिया और उसके स्थान पर एक सुन्दर गौथिक ढङ्ग (Gothic Style) की इमारत बनवा दी जो आज तक विद्यमान है।

दर्बार में नार्मनों का ज़ोर—"साधु एडवर्ड" की माता नारमंडी की राजकुमारी थी और स्वयं उसका पालन-पोषण बहुत दिन तक अपनी माता ही के देश में हुआ था। नारमंडी फ्रांस के उत्तरी भाग का नाम है। उस प्रान्त में बसनेवाले वास्तव में डेनों के सजातीय थे और इसी लिए वे नार्थमैन* तथा नार्मन (Normans) कहलाते थे। परन्तु अब उनकी एक पृथक् ही जाति बन गई थी और उन्होंने फ्रेंच भाषा तथा फ्रांस के रहन-सहन के ढङ्ग को ग्रहण कर लिया था; नारमंडी का राजा फ्रांस के राजा के अधीन माना जाता था परन्तु वास्तव में उसकी शक्ति अपने स्वामी से कहीं बढ़कर थी।

राजा होते ही "साधु एडवर्ड" ने अपने दर्बार में नार्मनों को भरना शुरू किया। वह नार्मनों को अपना सम्बन्धी समझता था और उनकी फ्रेंच भाषा तथा उनके आचार-व्यवहार उसे बहुत पसन्द थे।

* नार्थमैन का अर्थ है उत्तरी प्रदेश के रहनेवाले

अपनी प्रजा अर्थात् अँगरेज़ों के प्रति उसका इतना प्रेम न था और राज्य तथा चर्च के सारे बड़े-बड़े पद उसने नामनों ही को दे रखे थे।

अंगरेज़ी पार्टी का नेता गार्डविन—"साधु एडवर्ड" के राजा होने पर अँगरेज़ बहुत प्रसन्न हुए थे कि डेनों के विदेशी राज्य के स्थान पर उनके भूतपूर्व राजा एथेलरेड के पुत्र को राज्य मिल गया। परन्तु दर्बार में अब एक दूसरी विदेशी जाति अर्थात् नार्मनों का ज़ोर बढ़ते देखकर उनमें बड़ा असन्तोष फैलने लगा। गाडविन (Godwin) नामक एक शक्तिशाली अँगरेज़ी नवाब ने अँगरेज़ों का नेता बनकर विदेशी नामनों का दर्बार में विरोध करना शुरू किया और राजा को इस बात पर बाध्य करने की चेष्टा की कि राज्य तथा चर्च के बड़े पद देशवासी अँगरेज़ों ही को मिलने चाहिएँ।

इस बात पर राजा और गार्डविन में ख़ूब झगड़ा चला। अवसर पाकर राजा ने गार्डविन तथा उसके कुटुम्ब को देशनिकाला दे दिया और उनकी जायदाद छीन ली। बहुत दिन तक गार्डविन इधर-उधर मारा-मारा फिरा; परन्तु अन्त में "साधु एडवर्ड" उसको वापिस बुलाने और उसकी जायदाद लौटा देने पर बाध्य हुआ; क्योंकि देशवासी गार्डविन के लिए प्राण तक न्यौछावर करने को तैयार थे और उन्होंने उसके पक्ष में बहुत बड़ा आन्दोलन खड़ा कर रखा था। इँगलैंड लौटने के थोड़े ही दिन बाद देश-हितैषी गार्डविन परलोक सिधारा।

विलियम आफ़ नारमंडी—इस समय नारमंडी का राजा बहादुर विलियम था, जो माता के नाते से "साधु एडवर्ड" का भाई भी लगता था। एडवर्ड के दर्बार में नामनों का ज़ोर बढ़ते देखकर विलियम बहुत प्रसन्न हो रहा था। वह बहुत दिन से इँगलैंड के राजसिंहासन पर ताक लगाये बैठा था और सोचता था कि नार्मनों का ज़ोर बढ़ते रहने से उसे अपने मनोरथ की सिद्धि में बड़ी सुविधा होगी। जिस समय गार्डविन को देश-निकाला हो गया था, विलियम एडवर्ड से भेंट करने के लिए इँगलैंड आया। एडवर्ड के कोई सन्तान न थी और विलियम

ने फुसलाकर उससे यह वचन ले लिया कि अपनी मृत्यु के पश्चात् मैं तुमको अपना उत्तराधिकारी नियत करूँगा।

कुछ समय बाद विलियम को एक दूसरा सुन्दर अवसर और मिला। गाडविन के पुत्र हेरोल्ड (Harold) का जहाज़ प्रतिकूल हवा के कारण नारमंडी के एक बन्दरगाह में पहुँच गया। विलियम ने उसे पकड़वा बुलाया और उसे यह वचन देने पर बाध्य किया कि मैं तुम्हें "साधु एडवर्ड" का उत्तराधिकारी नियत होने में सहायता दूँगा। अपने पिता गाडविन की मृत्यु के पश्चात् अब हेरोल्ड ही अँगरेज़ों का नेता था। इसलिए उससे यह वचन प्राप्त कर लेने पर विलियम की मनोरथ-सिद्धि की आशायें अच्छी तरह दृढ़ हो गईं।

हेरोल्ड का राजा बनना तथा उसकी कठिनाइयाँ—जनवरी सन् १०६६ में "साधु एडवर्ड" की मृत्यु हुई। उसके ई सन्तान न थी। ऐसी परिस्थिति में अँगरेज़ों ने यही उचित समझा कि हेरोल्ड (Harold) को, जिसके पिता गाडविन ने देश की इतनी सेवा की है और जो स्वयं इस समय देश का जातीय नेता था, राजा बनाया जाय।

राजा होने पर हेरोल्ड को बहुत-सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। देश के अन्य नवाब तथा बड़े ज़मींदार उससे डाह करने लगे और स्वय उसका सगा भाई एक घरेलू झगड़े के कारण उसका जानी दुश्मन हो गया। इसके अतिरिक्त नारमंडी के राजा विलियम के आक्रमण का भय हर घड़ी बना रहता था। विलियम बहुत दिन से इँगलैंड का राजा होने के मनसूबे बाँध रहा था और वह कभी चुप होकर बैठनेवाला न था।

विलियम का आक्रमण तथा नार्मन-विजय—हेरोल्ड को पहले घरेलू वैर-भाव का मज़ा चखना पड़ा। उसके भाई ने नार्वे के राजा की सहायता से इँगलैंड के उत्तरी भाग पर चढ़ाई कर दी। हेरोल्ड अपनी पूरी सेना लेकर उत्तर को रवाना हुआ और स्टेमफ़ोर्ड ब्रिज (Stamford Bridge) के युद्ध में उसने अपने भाई तथा नार्वे के राजा को बुरी तरह परास्त किया।

इसी बीच में विलियम ने अवसर पाकर इँगलैंड के दक्षिणी भाग पर धावा बोल दिया। उसने घोषणा की कि "साधु एडवर्ड" के वचनानुसार मैं उसका उत्तराधिकारी हूँ और स्वयं हेरोल्ड मेरे उत्तराधिकार को स्वीकार कर चुका है। हेरोल्ड बड़ी शीघ्रता से दक्षिण की ओर रवाना हुआ और दोनों सेनाओं में १४ अक्टूबर सन् १०६६ को सेन्लेक हेस्टिंग्स (Senlac Hastings) के स्थान पर घमासान युद्ध हुआ। इँगलैंड के बहुत-से नवाबों ने डाह के कारण हेरोल्ड का साथ न दिया और उसको केवल अपने भरोसे ही विलियम का मुक़ाबला करना पड़ा।
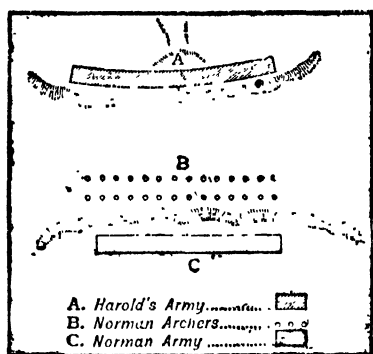
हेस्टिंग्स का युद्ध

अँगरेज़ी सेना पैदल थी, परन्तु नार्मन घोड़ों पर सवार थे और उनके साथ बहुत-से धनुर्धारी योद्धा भी थे। हेरोल्ड ने बड़ी वीरता से जी तोड़कर दुश्मन का मुक़ाबला किया; परन्तु एक तीर के लगने के कारण उसकी मृत्यु हो गई और यह समाचार पाकर उसकी शेष सेना रणक्षेत्र छोड़कर भाग निकली।

नार्मनों की पूरी विजय हुई। अँगरेज़ों ने समझ लिया कि अब भलाई इसी में है कि विलियम को राजा स्वीकार कर लिया जाय। २५ दिसम्बर सन् १०६६ को "साधु एडवर्ड" की बनाई हुई वेस्टमिंस्टर एबे में विलियम का राज्याभिषेक संस्कार हुआ और उसका इँगलैंड का राजा बनने का हार्दिक मनोरथ पूरा हो गया। इस प्रकार अब सेक्सन राज्य का अन्त हुआ और उसके स्थान पर नार्मन-राज्य की स्थापना हो गई।

नार्मन-विजय के कारण—हेरोल्ड वीर पुरुष तथा साहसी योद्धा था, परन्तु अन्य अँगरेज़ी नवाबों ने एक विदेशी आक्रमण के समय में

डाह के मारे उसका साथ न दिया। स्वयं उसी के भाई ने घरेलू वैर-भाव के कारण इँगलैंड के उत्तरी भाग पर चढ़ाई की जिससे विलियम के दक्षिणी भाग में सुगमतापूर्वक अपनी सेना पहुँचा देने का खुला मैदान मिल गया। वास्तव में नार्मन आक्रमण के समय अँगरेज़ों में फूट पड़ी हुई थी और विलियम का जातीय रूप से मुक़ाबला नहीं किया गया। "साधु एडवर्ड" ही के समय से नार्मन-विजय के लक्षण प्रस्तुत हो गये थे और अब अँगरेज़ों के स्वतंत्रता के एकमात्र रक्षक हेरोल्ड के पराजित होने पर इँगलैंड-निवासी विलियम आफ़ नारमंडी को अपना राजा स्वीकार करने पर बाध्य होना पड़ा

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

(क) प्राचीन सेक्सन राजा

सन् ८०२—८३९ *एग्बर्ट	(Egbert)
" ८३९—८५८ एथेलवूल्फ	(Ethelwulf)
" ८५८—८६० एथेलबेल्ड	(Ethelbald)
" ८६०—८६६ एथेलबर्ट	(Ethelbert)
" ८६६—८७१ एथेलरेड प्रथम	(Ethelred I)
" ८७१—९०१ *महान् एल्फ्रेड	(Alfred the Great)
" ९०१—९२५ *बड़ा एडवर्ड	(Edward the Elder)
" ९२५—९४० एथेल्सटन	(Ethelstan)
" ९४०—९४६ एडमंड प्रथम	(Edmund I)
" ९४६—९५५ एडरेड	(Edred)
" ९५५—९५९ एडवी	(Edwy)
" ९५९—९७५ *शान्तिप्रिय एडगर	(Edgar the Peaceful)
" ९७५—९७८ शहीद एडवर्ड	(Edward the Martyr)
" ९७८—१०१६ *अयोग्य शासक एथेलरेड	(Ethelred the Unready)

सन् १०१६　　*वीर एडमड　　(Edmund Ironside)

(ख) डेन जाति के राजा

„ १०१६—१०३७ *केन्यूट　　(Canute)

„ १०३७—१०४० हेरोल्ड हेयरफुट　(Harold Harefoot)

„ १०४०—१०४२ हारडिकेन्यूट　　(Hardicanute)

(ग) सेक्सन-राज्य की पुनः स्थापना

„ १०४२—१०६६ *"साधु एडवर्ड" (Edward, the Confessor)

„ १०६६　　*हेरोल्ड; गाडविन का पुत्र　(Harold son of Godwin)

२५ दिसम्बर सन् १०६६—नार्मन-राज्य का प्रारम्भ।

नोट—मुख्य-मुख्य राजाओं के नाम पर यह चिह्न (*) लगा हुआ है।

वंशावली नम्बर १

आँग्ल-सेक्सन राजाओं की वंशावली
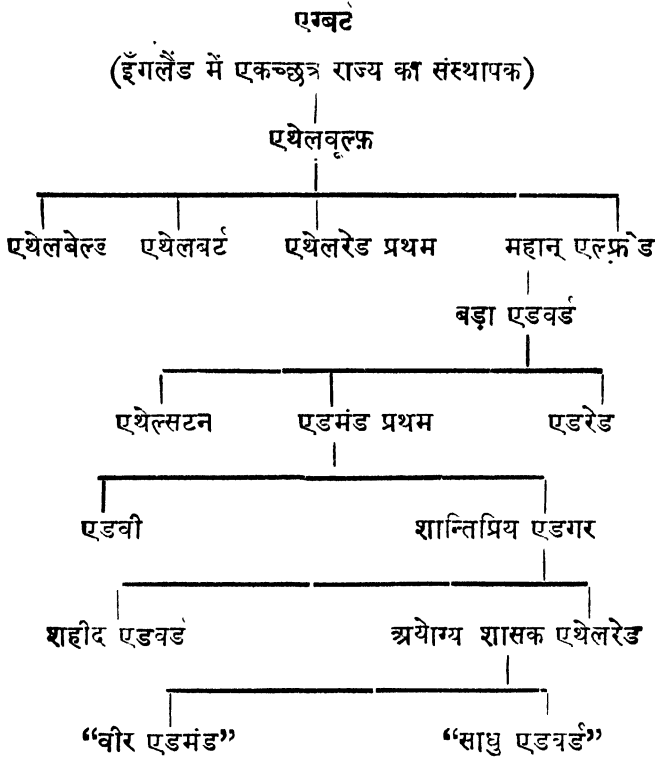
नोट—आँग्ल-सेक्सन-काल का अन्तिम राजा हेरोल्ड (जिसको पराजित करके विलियम ने नार्मन-राज्य की स्थापना की) राजवंश से न था। वह जातीय नेता होने के कारण राजा चुन लिया गया था।

पाँचवाँ परिच्छेद

आँग्ल-सेक्सन इँगलैंड की सभ्यता

(१) राजनीतिक संस्थायें

राजा अर्थात् जाति का नेता—अँगरेज़ों में पहले छोटी-छोटी उपजातियों के अलग-अलग सरदार होते थे। परन्तु देश में राजनीतिक एकता के बढ़ने तथा एकच्छत्र राज्य की स्थापना के परिणाम-स्वरूप उनमें राजाओं की प्रणाली आरम्भ हुई। राजा जाति का नेता होता था और उसका मुख्य कर्तव्य अपनी प्रजा की रक्षा करना तथा सेना लेकर शत्रु का मुक़ाबला करना माना जाता था। राजा का पद वास्तव में जाति के चुनाव पर निर्भर था, परन्तु सब राजा प्रायः वेसेक्स के राजवंश ही में से चुने जाते थे। राजा की मृत्यु होने पर उसी के बड़े पुत्र को प्रायः राजा बना दिया जाता था, परन्तु यदि वह अल्पायु तथा अयोग्य हो तो राजवंश के किसी दूसरे व्यक्ति को राजा चुन लिया जाता था। राजा एल्फ्रेड अपने पिता का सबसे छोटा पुत्र था। राजा हेरोल्ड का वंशीय अधिकार की दृष्टि से राजसिंहासन पर लेश-मात्र भी हक़ न था। परन्तु वे दोनों अपनी योग्यता के कारण राजा चुने गये थे।

विटान अर्थात् प्राचीन पार्लिमेंट—राजा को राज्यकार्य में विटान (Witenagemoot) की सलाह मानना अत्यन्त आवश्यक था। विटान को वर्तमान पार्लिमेंट का प्राचीन रूप समझना चाहिए। उसको देश की प्रतिनिधि सभा नहीं कहा जा सकता, क्योंकि उसके सदस्यों का प्रजा-द्वारा निर्वाचन नहीं होता था। उसकी सभाओं में राज्य के

प्रधान कर्मचारी, बड़े नवाब तथा ज़मींदार और बड़े पादरी सम्मिलित होते थे और उसका रूप वर्तमान पार्लिमेंट की लार्ड-सभा (House of Lords) की तरह था। राजा का निर्वाचन करना विटान ही का अधिकार था। विटान ही युद्ध तथा सन्धि की स्वीकृति देती थी, देश के लिए क़ानून बनाती थी और राज्य के अन्य आवश्यक प्रश्नों का निबटारा करती थी। योग्य तथा शक्तिशाली राजाओं पर विटान का अधिक दबाव रहना कठिन था, परन्तु फिर भी वह शासनप्रणाली का एक प्रधान अंग मानी जाती थी

स्थानीय स्वराज्य तथा न्यायक्रम—अँगरेज़ों में स्थानीय स्वराज्य की प्रथा प्राचीन काल ही से चली आती है। आँग्ल-सेक्सन-काल में भी स्थानीय प्रश्नों का निबटारा स्थानीय सभाओं-द्वारा ही होता था। प्रत्येक नगर में एक "नगर-सभा" (Townmoot) होती थी, जो नगर का प्रबन्ध करती थी और प्रत्येक नागरिक को उसमें सम्मिलित होने का अधिकार था। कई नगर मिलाकर एक "शतकुटुम्ब*" (Hundred) बनता था, जिसका प्रबन्ध "शतसभा" (Hundredmoot) करती थी। "शतसभा" में प्रत्येक नगर के चार प्रतिनिधि तथा बड़े ज़मींदार सम्मिलित होते थे और उसे साधारण अपराधियों को दण्ड देने का भी अधिकार था। कई "शतकुटुम्बों" को मिलाकर एक प्रान्त बनता था, जिसका प्रबन्ध "प्रान्तीय सभा" (Shiremoot) करती थी। "प्रान्तीय सभा" में प्रत्येक नगर के चार प्रतिनिधि, प्रत्येक "शतकुटुम्ब" के बारह प्रतिनिधि तथा राज्य के प्रधान कर्मचारी सम्मिलित होते थे और उसको बहुत बड़े अधिकार प्राप्त थे। "प्रान्तीय सभा" प्रान्त का सबसे बड़ा न्यायालय मानी जाती थी और बड़े अपराधियों को दण्ड देने तथा जायदाद इत्यादि के झगड़ों का निबटारा करने का केवल उसी को अधिकार था।

---

* इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि प्रत्येक "शतकुटुम्ब" में लगभग सौ कुटुम्बों की बस्ती होती थी।

अपराध के दण्ड की प्रथा भी बड़ी अनोखी थी। यदि बारह माननीय पुरुष अभियुक्त के निर्दोषी होने की शपथ खाने को तत्पर हो तो उसका निर्दोष होना सिद्ध मान लिया जाता था। यदि नहीं, तो उसको गर्म कोयलों पर चलना या खौलते पानी में हाथ डालना पड़ता था और उसका निर्दोष वा अपराधी सिद्ध होना उसके घाव तीन दिन में अच्छे होने पर निर्भर होता था। प्रत्येक अपराध (हत्या तक के भी) के दण्ड में प्रायः जुर्माना लिया जाता था, जिसका थोड़ा या अधिक होना हानि पहुँचे हुए मनुष्य की हैसियत पर निर्भर होता था। आधा जुर्माना राज्यकोष में जाता था और शेष अर्धभाग हानि पहुँचे हुए मनुष्य के कुटुम्ब को मिल जाता था।

सेना—इँगलैंड के प्राचीन राजाओं के पास कोई स्थायी सेना न होती थी। सारे देशवासियों को सैनिक विद्या सिखाई जाती थी और आवश्यकता पड़ने पर इस "जन-सेना" (Fyrd or Militia) ही से काम लिया जाता था। राजा के कुछ विशेष सर्दार (King's Thegns) भी होते थे, जिनको थोड़े-से सिपाही सदा तैयार रखने के लिए राज्य की ओर से कुछ भूमि दे दी जाती थी। जहाज़ी सेना पहले बिलकुल न थी; परन्तु राजा एल्फ्रेड के समय से "अँगरेज़ी जहाज़ी सेना" (English Navy) का प्रारम्भ हो गया था।

(२) सामाजिक दशा

देश की दशा—प्राचीन अँगरेज़ों को किसानों और गड़रियों की जाति समझना चाहिए। कृषि तथा भेड़ पालना ही उनके मुख्य उद्यम थे, और इसलिए वे प्रायः ग्रामों ही में रहते थे। उस समय समस्त इँगलैंड में कोई बीस लाख से अधिक निवासी न थे और केवल दो-चार इने गिने स्थान ही नगर कहे जा सकते थे। सिक्कों का रिवाज चल चुका था, परन्तु अधिकतर वस्तु के बदले वस्तु बदलने ही से थोड़ा-बहुत व्यापार होता था।

आँग्ल-सेक्सन काल के मकान बड़े भोंड़े और लकड़ी के बने हुए होते थे, जिनकी छतों में धुआँ निकलने के लिए छेद कर दिया जाता था। उस समय किवाड़ों में शीशेदार खिड़कियाँ नहीं होती थीं और रोशनी आने का केवल यह प्रबन्ध किया जाता था कि दीवारों में कहीं-कहीं छेद छोड़ दिये जाते थे। वस्त्र भी मोटे-झोटे ही होते थे और घरो में स्त्रियाँ कपड़ा बनाने के लिए स्वय ही चर्खे पर सूत या ऊन कात लिया करती थी।
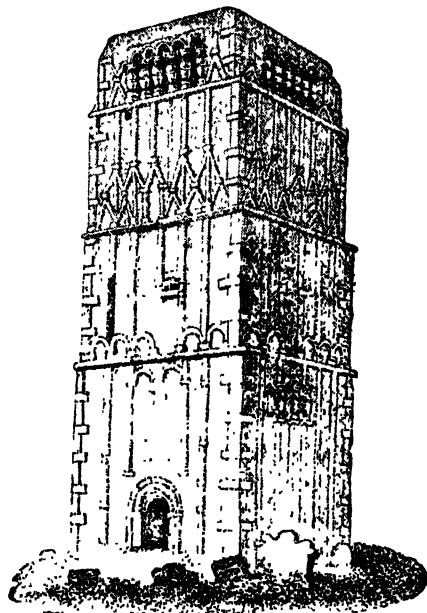
आँग्ल-सेक्सन-काल की वास्तु-विद्या

सामाजिक श्रेणियाँ— उस काल में भूमिपति होना ही नागरिकता का मुख्य लक्षण माना जाता था, क्योंकि भूमिपतियो ही के विषय में यह विश्वास हो सकता था कि यदि उनसे कोई अपराध भी हुआ तो उनसे उसका जुर्माना सुगमतापूर्वक वसूल हो सकेगा। जिनके पास भूमि नहीं होती थी उनको किसी भूमिपति के आश्रय में रहना होता था, जो उनके सदाचार के लिए उत्तरदायी ठहराया जाता था। नागरिकों की दो मुख्य श्रेणियां होती थीं। एक "उच्च नागरिक" (Eorls), इस श्रेणी में केवल बड़े ज़मींदार ही सम्मिलित हो सकते थे। दूसरे "साधारण नागरिक" (Ceorls), इस श्रेणी में अन्य नागरिक सम्मिलित होते थे। समाज में सबसे नीची श्रेणी "दासो" (Thews or Villeins) की मानी जाती थी। दास अधिकतर द्वीप के प्राचीन पराजित निवासी

अर्थात् ब्रिटन जाति के लोग होते थे और उनके अतिरिक्त ऋणी तथा अपराधी नागरिक भी कभी-कभी दण्ड के रूप में अपनी श्रेणी से च्युत करके दास बना दिये जाते थे।

चर्च का प्रभाव—प्राचीन काल में चर्च का भी राजनीतिक तथा सामाजिक दोनों क्षेत्रों में बड़ा प्रभाव था। मठों से देश-वासियों का बड़ा उपकार होता था। मठों में अपाहिजों तथा निस्सहायों को शरण मिलती थी और वहाँ रोगियों की चिकित्सा का भी प्रबन्ध रहता था। केवल मठों के साधु तथा पादरी ही उस काल में शिक्षित दीख पड़ते थे और जो कुछ थोड़ा-बहुत विद्या का प्रचार प्राचीन इँगलैंड में था वह उन्हीं के द्वारा हुआ था। वही लोग उस काल में राज्य के प्रधान पदों को सुशोभित किये हुए थे और इस प्रकार चर्च ही को उस काल की सभ्यता का केन्द्र समझना चाहिए।

प्राचीन साहित्य—इन्हीं पादरियों तथा साधुओं-द्वारा अँगरेज़ी साहित्य का प्रारम्भ हुआ। अँगरेज़ी का सबसे प्राचीन कवि कीडमन (Cædmon) माना जाता है, जो पहले एक गड़रिया था और बाद में ह्वाइटबी के मठ का अधिष्ठाता हो गया। गद्य-लेखकों में सबसे उच्च स्थान येरो के बीड (Venerable Bede) नामक साधु का है, जिसका लिखा हुआ "धार्मिक इतिहास" (Ecclesiastical History) अब तक बहुत प्रामाणिक माना जाता है। बीड प्राचीन इँगलैंड का सर्वश्रेष्ठ विद्वान् हुआ है। उसकी अधिकतर रचनायें लैटिन भाषा में हैं, परन्तु उसने कई पुस्तकें प्राचीन अँगरेज़ी में भी लिखी हैं। इसके अतिरिक्त एल्फ्रेड के राज्यकाल में विद्या के प्रचार के लिए बहुत कुछ प्रयत्न किया गया। हम बतला चुके हैं कि एल्फ्रेड ने बहुत-सी उत्तम पुस्तकें तैयार कराईं और कुछ स्वयं भी लिखीं, जिनमें "ऑग्ल-सेक्सन-इतिहास" (Anglo-Saxon Chronicle) सबसे प्रसिद्ध है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् ६६४—कीडमन का ह्वाइटबी में आगमन।
,, ७३५—माननीय बीड की मृत्यु।
,, ८६७—एल्फ्रेड द्वारा अँगरेज़ी जहाज़ी सेना की नींव।
,, ९६०—डन्सटन का केन्टर्बरी का बड़ा पादरी नियत होना।

——

दूसरा खण्ड

माध्यमिक इँगलैंड तथा नार्मन और प्लैंटेजनेट काल

पहला परिच्छेद

(१) नार्मन राज्य तथा फ़्यूडेलिज़्म की स्थापना

(१) "विजयी" विलियम तथा फ़्यूडेलिज़्म

(१०६६-१०८७)

नार्मन विजय की पूर्ति—हेरोल्ड को हेस्टिंग्स के युद्ध में पराजित करके राजसिंहासन पाने के कारण, विलियम इतिहास में "विजयी" विलियम (William, the Conqueror) के नाम से प्रसिद्ध है। हेस्टिंग्स की विजय से इँगलैंड का दक्षिणी तथा पूर्वी भाग विलियम के अधीन हो गया था, परन्तु उत्तरी तथा पश्चिमी भागों के अँगरेज़ अभी तक उसका मुक़ाबला करने को तत्पर थे। इँगलैंड के शेष भाग को अपने अधीन करने में विलियम को पूरे चार वर्ष लग गये। हीयरवार्ड (Hereward the Wake)* नामक एक अँगरेज़ सर्दार ने एली (Isle of Ely) के छोटे-से द्वीप में अपने साथियों को एकत्र करके अन्त तक विलियम का मुक़ाबला किया। परन्तु सन् १०७१ में वह भी विलियम को राजा स्वीकार करने पर बाध्य हुआ और इस प्रकार समस्त इँगलैंड में नार्मन राज्य की स्थापना हो गई।

इँगलैंड में फ़्यूडेलिज़्म का प्रारम्भ—"विजयी" विलियम अपने को "साधु एडवर्ड" का नियमानुसार उत्तराधिकारी समझता था। उसने यह घोषणा की कि जितने अँगरेज़ों ने मेरे विरुद्ध शस्त्र उठाये हैं

* Wake = Watchful (हीयरवार्ड सदा चौकन्ना रहने के कारण इस नाम से पुकारा जाता था)।

"विजयी" विलियम का राज्याभिषेक

अथवा मेरे राजसिंहासन प्राप्त करने में किसी भी प्रकार की बाधा डाली है उन सबकी जायदादें राज-द्रोह के अपराध में छीन ली गई। उसने ये छीनी हुई जायदादें अपने नामन साथियों को दे दीं और इँगलैंड में उसी ढंग की ज़मींदारी आरम्भ की जो उस काल में समस्त योरप में प्रचलित थी। ज़मींदारी की इस नई प्रथा को फ़्यूडेलिज़्म (Feudalism) कहते हैं और इसको भली भाँति समझ लेना चाहिए।

प्रत्येक ज़मींदार को इस शर्त पर भूमि दी जाती थी कि उसके बदले में उसको अपने स्वामी की सहायता के लिए कुछ सेना सदा तैयार रखनी होगी। राजा की ओर से जिनको भूमि मिलती थी वे "बड़े भूमिपति" (Tenants-in-chief) कहलाते थे और उनको राजा की सहायता करने की शपथ खानी होती थी। बड़े भूमिपति, अपनी ओर से, अपनी जायदाद के कुछ भाग दूसरों को दे देते थे, जो "छोटे भूमिपति" (Mesne Tenants) कहलाते थे और जो अपने बड़े भूमिपतियों की सहायता करने की शपथ खाते थे। अपने असामियों पर भूमिपतियों का बहुत दबाव होता था, यहाँ तक कि प्रत्येक असामी को अपने पुत्र पुत्रियों का विवाह करने के लिए भी अपने स्वामी की स्वीकृति प्राप्त करनी होती थी। भूमिपतियों की बस्तियाँ मेनर (Manor) कहलाती थीं। प्रत्येक मेनर में भूमिपति की एक कचहरी (Manorial Court) होती थी, जिसमें या तो वह स्वयं या उसकी ओर से उसका कोई कर्मचारी असामियों के झगड़ों का निबटारा करता था।

स्वतंत्र भूमिपतियों के अतिरिक्त अन्य निवासी "दास" (Serf) समझे जाते थे, जिनकी स्थिति आँग्ल-सेक्सन-काल के विलेन (Villein) से बहुत कुछ मिलती थी। प्रत्येक जायदाद के साथ थोड़े से दास रहते थे, जो जायदाद के साथ ही पशुओं की भाँति बेच भी दिये जाते थे। अपनी जायदादें छिन जाने के कारण नामन-काल में बहुत से अँगरेज़ों की स्थिति केवल "दासों" ही की-सी रह गई थी।

विजयी विलियम का राज्य

(सफ़ेद भाग)

विलियम के फ़्यूडेलिज़्म-सम्बन्धी सुधार—फ़्यूडेलिज़्म में सबसे बड़ा दोष यह था कि सेना एकत्र करने के लिए राजा बिलकुल भूमिपतियों के आश्रित रहता था। आपत्ति के समय सेना की आवश्यकता पड़ने पर राजा "बड़े भूमिपतियों" से सहायता माँगता था और बड़े भूमिपति अपने अधीन "छोटे भूमिपतियों" द्वारा सेना एकत्र करके भेजते थे। इस प्रकार "छोटे भूमिपतियों" का राजा से कोई सम्बन्ध न था। वे "बड़े भूमिपतियों" ही को अपना स्वामी मानते थे और उन्हीं की आज्ञा का पालन करते थे। यदि बड़े भूमिपति राजा को सहायता न दें अथवा उसके विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दें तो, ऐसी स्थिति में, राजा बड़ी कठिनाई में पड़ जाता था।

इस दोष को दूर करने तथा भूमिपतियों को अपने वश में रखने के लिए विलियम ने फ़्यूडेलिज़्म की प्रथा में कई सुधार किये। उसने सेलिसबरी (Salisbury) के स्थान पर सब श्रेणियों के भूमिपतियों की एक विराट् सभा की और छोटे तथा बड़े दोनों प्रकार के भूमिपतियों से यह शपथ ली कि हमारी सब जायदादों का वास्तविक स्वामी राजा है और इसलिए हमारा प्रथम कर्तव्य सदा यही रहेगा कि राजा की सेवा तथा भक्ति से कभी मुख न मोड़ें। इस शपथ-द्वारा राजा का छोटे भूमिपतियों से भी सीधा सम्बन्ध हो गया। अब स्थिति यह हो गई कि सब श्रेणियों के भूमिपतियों का प्रथम स्वामी राजा होने लगा। बड़े भूमिपतियों का अपने अधीन छोटे भूमिपतियों पर अधिकार बना रहा, परन्तु बड़े भूमिपतियों के राजा के विमुख हो जाने पर उसके छोटे भूमिपति उसका साथ देने को बाध्य न थे, क्योंकि सेलिसबरी की शपथ (Salisbury Oath) के अनुसार उनका प्रथम कर्तव्य राजा के प्रति होता था।

इसके अतिरिक्त विलियम बड़े भूमिपतियों की जायदादों को एक ही स्थान पर नहीं रहने देता था। उनको भिन्न-भिन्न स्थानों में जायदादें देता था, जिससे कोई भी भूमिपति देश के किसी एक विशेष भाग में अधिक शक्तिशाली न होने पावे।

विलियम के इन सुधारों ने इँगलैंड के फ़्यूडेलिज़्म को फ़्रांस इत्यादि अन्य योरपीय देशों के फ़्यूडेलिज़्म से भिन्न ढङ्ग का बना दिया। फ्रांस में बड़े भूमिपति इतने शक्तिशाली हो गये थे कि उन्होंने कई शताब्दियों तक राजा को अपने हाथों का खिलौना बना रखा, परन्तु इँगलैंड में विलियम ने भूमिपतियों को खूब क़ाबू में कर लिया और इसी कारण वह एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करने में सफल हो सका।

डोम्सडे बुक—इसके बाद विलियम ने बड़े परिश्रम से समस्त इंगलैंड की भूमि की पूरी तरह जाँच कराई, जिससे राजा को लगान देने में भूमिपति धोखा न दे सकें। इस जाँच में भूमिपति का नाम तथा उसकी जायदाद का पूरा ब्यौरा लिखा जाता था। यहाँ तक कि उसके हल, बैल, घोड़े, भेड़ इत्यादि की भी संख्या लिखी जाती थी। जिस किताब में इस जाँच की रिपोर्ट लिखी गई वह 'डोम्सडे बुक' (Domesday Book) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि उसका ब्यौरा प्रलय के दिवस के दैवी न्याय की तरह प्रमाणित था। इस किताब के दो भाग हैं और इसकी एक प्रति लन्दन के Public Record Office में अब तक विद्यमान है। उसके पढ़ने से माध्यमिक इँगलैंड की आर्थिक दशा का पूरा ज्ञान हो सकता है।

विलियम की धार्मिक नीति—विलियम ने चर्च को भी अपने दबाव में लाने की चेष्टा की। अँगरेज़ी पादरी निकाल बाहर किये गये और उनके स्थान पर नार्मनों को नियुक्त किया गया। विलियम ने इटली के लेन्फ्रेक (Lanfrac) नामक एक विद्वान् साधु को केन्टबरी का बड़ा पादरी बनाया। ग्यारहवीं शताब्दी में यह लहर फैल रही थी कि चर्च सांसारिक बखेड़ों से अलग रहे और राज्य से पृथक् करके उसको स्वतन्त्र संस्था बना दिया जाय। विलियम भी चर्च को एक पृथक् संस्था बनाने का समर्थक था और उसने इँगलैंड में पादरियों को अपने अलग "धार्मिक न्यायालय" (Ecclesiastical Courts) बनाने की आज्ञा दे दी। परन्तु वह चर्च पर अपना दबाव कम करने को तैयार

न था। धार्मिक न्यायालयों को क़ानून बनाने के लिए उसकी स्वीकृति आवश्यक थी और बिना उसकी अनुमति के इँगलैंड के पादरी रोम के पोप से पत्र-व्यवहार नहीं कर सकते थे।

"विजयी" विलियम की मृत्यु—सन् १०८७ में "विजयी" विलियम की मृत्यु हुई। इँगलैंड में एक शक्तिशाली राज्य स्थापित करना उसी का काम था। उसके राज्य में प्रायः नार्मनों ही को बड़े पद मिले हुए थे, परन्तु अँगरेज़ों के प्रति भी उसका व्यवहार कठोर न था। मृत्यु-शय्या पर उसने यह वसीयत की कि मेरा राजसिंहासन मेरे बड़े लड़के राबर्ट को न मिले, क्योंकि उसके कई बार भूमिपतियों को भड़काकर विद्रोह खड़ा कर देने के कारण विलियम उससे घृणा करने लगा था। उसने इँगलैंड के राजसिंहासन का उत्तराधिकारी अपने दूसरे पुत्र को बनाया जो विलियम रफ़स (William Rufus) के नाम से प्रसिद्ध है। इस वसीयत के अनुसार "विजयी" विलियम की मृत्यु के पश्चात् विलियम रफ़स इँगलैंड का राजा हुआ और राबर्ट को केवल नारमंडी की नवाबी पर संतोष करना पड़ा।

(२) "विजयी" विलियम के उत्तराधिकारी

विलियम रफ़स (१०८७-११००)—"विलियम रफ़स" (William Rufus) अर्थात् "लाल विलियम" का यह नाम इसलिए पड़ा कि उसके बालों का रङ्ग लाल था। वह अपने पिता की भाँति शक्तिशाली राजा हुआ; परन्तु वह कठोर तथा निर्दयी था और उसके आचरण भी ठीक न थे। बड़े नार्मन ज़मीदारों को वश में रखने के लिए उसको अँगरेज़ों की सहायता लेनी पड़ती थी। इसलिए उसको अँगरेज़ों की कभी-कभी चापलूसी करनी पड़ती थी। उसको अपने बड़े भाई राबर्ट (Robert) का भी सदा भय लगा रहता था कि वह चढ़ाई करके कहीं उसका सिंहासन न छीन ले। कुछ समय पीछे राबर्ट एशिया

माइनर के "धर्म-युद्ध" (Crusade)* में भाग लेने को रवाना हुआ और चलते समय कुछ धन के बदले अपनी नारमंडी की नवाबी को भी विलियम रफ़स ही के पास गिरों रख गया। इस प्रकार रफ़स को एक भारी चिन्ता से छुट्टी मिल गई।

एन्सलेम तथा चर्च और राज्य के झगड़े का प्रारम्भ--ग्यारहवीं शताब्दी के इस आन्दोलन का कि चर्च को राज्य से पृथक् करके उसको स्वतंत्र संस्था बनाया जाय, यह परिणाम हुआ कि दोनों संस्थाओं में झगड़ा चलने लगा। रोमन सम्राट् और रोम के पोप में कई प्रश्नों पर झगड़ा हुआ, जिसका कई शताब्दियों तक कोई निबटारा न हो सका। इँगलैंड के राजाओं को भी कई बार चर्च के अधिकारियों से झगड़ा करना पड़ा। विलियम रफ़स ने कई वर्ष तक केन्टबरी के बड़े पादरी के पद को ख़ाली रखा और उसकी आय स्वयं लेता रहा। अन्त में उसने एन्सलेम (Anslem) नामक एक प्रसिद्ध विद्वान् को उस पद पर नियुक्त किया। एन्सलेम पहले ही जानता था कि राजा से मेरी न पटेगी। अपनी नियुक्ति के समय उसने कहा था "लोग मुझ कमज़ोर बुड्ढी भेड़ को एक जवान अड़ियल साँड़ के साथ बाँधे देते हैं।" शीघ्र ही रफ़स और एन्सलेम का इस प्रश्न पर विवाद चलने लगा कि पादरी राजा के अधीन हैं वा रोम के पाप के। धीरे-धीरे रफ़स ने एन्सलेम को इतना तङ्ग करना शुरू किया कि बेचारा इँगलैंड छोड़कर चल दिया और रफ़स के शेष राज्यकाल में वह बराबर देश के बाहर ही रहा।

हेनरी प्रथम (११००-११३५)--सन् ११०० में शिकार † खेलते हुए जङ्गल ही में विलियम रफ़स की मृत्यु हुई। राबर्ट (Robert)

---

* इन युद्धों का यह आशय था कि जेरोसलम इत्यादि ईसाइयों के तीर्थ-स्थानों को मुसलमान तुर्कों के अधिकार से स्वतंत्र किया जाय। ईसाई राजा इन युद्धों में भाग लेना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते थे।

† नार्मन राजा शिकार के बड़े शौक़ीन थे। उन्होंने ख़ास अपने

अभी तक "धार्मिक युद्ध" से वापिस न आया था। ऐसी परि-स्थिति में "विजयी विलियम" का सबसे छोटा पुत्र हेनरी प्रथम (Henry I) के नाम से इँगलैंड तथा नारमंडी दोनों देशों का राजा हो गया। "धार्मिक युद्ध" से लौटने पर राबर्ट ने अपनी नारमंडी की नवाबी वापस माँगी और इँगलैंड के राजसिंहासन के लिए भी अपना उत्तराधिकार जतलाना शुरू किया। परन्तु हेनरी प्रथम ने उसे शीघ्र ही पराजित कर दिया और राबर्ट को अपना शेष जीवन अपने कनिष्ठ भ्राता के बन्दीगृह में काटना पड़ा।

हेनरी प्रथम का न्यायपूर्ण राज्य—हेनरी का जन्म इँगलैंड ही में होने के कारण अँगरेज़ी प्रजा भी उसको विदेशी राजा नहीं समझती थी। उसने अपना विवाह स्काटलैंड के राजा की पुत्री मेटिल्डा (Matilda) से किया जिसका अपनी माता-द्वारा प्राचीन अँगरेज़ी राजा एल्फ्रेड के राजवंश से भी सम्बन्ध था। इस कारण अँगरेज़ उससे और भी प्रसन्न हो गये। हेनरी ने एन्सलेम को भी इँगलैंड में वापिस बुला लिया और चर्च से मित्रता रखने की चेष्टा की। इसके अतिरिक्त उसने एक "स्वतन्त्रता-पत्र" (Charter of Liberties) प्रकाशित किया, जिसमें उसने तीन उत्तम धारणायें कीं—(१) चर्च के पदों को ख़ाली न रखा जायगा और उनकी आय राजा कभी न लेगा। इससे चर्चवाले बहुत प्रसन्न हुए। (२) भूमिपतियों से अनुचित कर वसूल न किये जायँगे। इससे सारे भूमिपति राजा के सहायक हो गये। (३) "साधु एडवर्ड" के राज्यकाल के नियमानुसार राज्यक्रम का संचालन किया जायगा। इससे समस्त देशवासी, विशेषतया अँगरेज़ी प्रजा-जन, बहुत सन्तुष्ट हो गये।

शिकार खेलने के लिए बड़े-बड़े जङ्गल सुरक्षित कर रखे थे। यदि कोई दूसरा उनमें शिकार मारे तो उसे दंड देने के लिए विशेष प्रकार के न्यायालय (Forest Courts) बने हुए थे।

हेनरी प्रथम "न्याय का सिंह" (Lion of Righteousness) कहलाता है। उसने देश के न्यायालयों में सुधार करके उनको राजकीय संस्था बनाने की चेष्टा की। भूमिपतियों की कचहरियों के स्थान पर उसने "राजकीय न्यायालय" (Royal Courts) स्थापित किये, जिनके पदाधिकारी राजा की ओर से नियुक्त किये जाते थे। उसने कुछ दौरा करनेवाले न्यायाधीश (Itinerant Judges) भी नियत किये, जिससे प्रजा के अपने स्थानों पर ही न्याय प्राप्त करने की सुविधा हो जाय। इसके अतिरिक्त हेनरी ने "राजकीय कोष-विभाग" (Royal Exchequer) की स्थापना की, जिसमें कर इत्यादि का हिसाब रहता था और जिसके पदाधिकारी राजकोष की देख-भाल करते थे।

हेनरी प्रथम तथा एन्सलेम का समझौता—हेनरी के राज्य-काल में वही पुराना प्रश्न फिर खड़ा हुआ कि पादरी राजा के अधीन हैं या रोम के पोप के। एन्सलेम चर्च की स्वतंत्रता का पूर्ण पक्षपाती था और वह चर्च पर राजा के अधिकार के स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं होता था। अन्त में हेनरी प्रथम तथा एन्सलेम ने यह समझौता कर लिया कि धार्मिक क्षेत्र में समस्त पादरी अपने धार्मिक गुरु अर्थात् रोम के पोप ही की आज्ञा मानें; परन्तु उनके पास चर्च-सम्बन्धी जायदादें होने के कारण उनको अन्य भूमिपतियों की तरह राजा का भी अधिकार स्वीकार करना पड़ेगा और उसके सम्मुख राजभक्ति की शपथ खानी होगी। चर्च के पदाधिकारियों का चुनाव पादरी लोग स्वयं करते थे, परन्तु यह निश्चित हो गया कि यह चुनाव राजदर्बार में तथा राजा के सभापतित्व में हुआ करेगा। इस समझौते से थोड़े दिन तक काम चला, परन्तु चर्च और राज्य के वास्तविक झगड़े का निबटारा करना इतनी सरल समस्या न थी। हम बतलावेंगे कि इस प्रकार का झगड़ा "धर्मसुधार" (Reformation) के काल तक बराबर चलता रहा और इसके निबटारे में कई शताब्दियाँ लग गईं।

———

वंशावली नम्बर ४

नार्मन राजाओं की वंशावली

"विजयी विलियम" (१०६६-१०८७)

राबर्ट (नारमंडी का नवाब)

"लाल विलियम" (१०८७-११००)

हेनरी प्रथम (११००-११३५) = मेटिल्डा (स्काटलैंड की राजकुमारी)

- राजकुँवर विलियम (जो "सफ़ेद जहाज़" में डूब गया)
- मेटिल्डा (जिसने स्टेफ़ेन के विरुद्ध राज-सिंहासन के लिए युद्ध किया)
  - **हेनरी द्वितीय** (पहला प्लैंटेजनेट राजा)

राजकुमारी एडेला
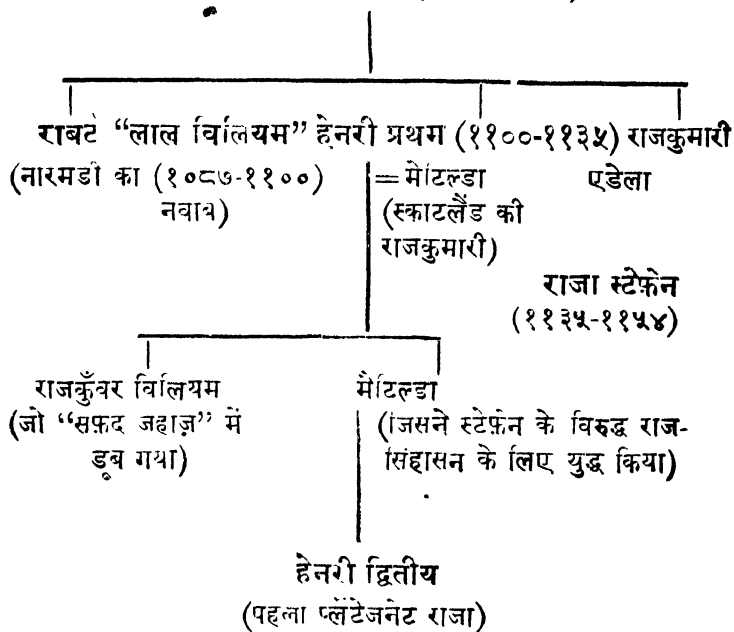
- **राजा स्टेफ़ेन** (११३५-११५४)

राजा स्टेफ़ेन (११३५-११५४)—सन् ११३५ में हेनरी प्रथम की मृत्यु हुई। इसका इकलौता पुत्र नारमंडी से इँगलैंड आते हुए राह में "सफ़ेद जहाज़" (White Ship) में डूब गया था। ऐसी परिस्थिति में हेनरी प्रथम ने अपनी पुत्री मेटिल्डा* (Matilda) को अपनी उत्तराधिकारिणी नियत किया था और सर्दारों से उसे रानी स्वीकार करने

---

* मेटिल्डा की माता का (जिसका नाम भी मेटिल्डा था) एल्फ़्रेड के राजवंश से सम्बन्ध था (देखो वंशावलियाँ नंबर २ और ३)।

की शपथ भी ले ली थी। परन्तु सर्दार वास्तव में एक स्त्री को राज-सिंहासन देना पसन्द नहीं करते थे। इसलिए हेनरी प्रथम की मृत्यु होने पर उन्होंने मेटिल्डा के स्थान पर हेनरी प्रथम के भानजे स्टेफ़ेन (Stephen) को इँगलैंड का राजा उद्घोषित किया।

स्टेफ़ेन और मेटिल्डा का गृहयुद्ध—स्टेफ़ेन के राजा हो जाने पर मेटिल्डा ने उसके विरुद्ध युद्ध ठान दिया। बड़े भूमिपतियों तथा सर्दारों में से किसी ने एक, और किसी ने दूसरे, पक्ष की सहायता की और इस प्रकार देश में एक भीषण गृहयुद्ध आरम्भ हुआ, जो पूरे उन्नीस वर्ष तक चलता रहा। भूमिपतियों ने इस अवसर से बड़ा लाभ उठाया। उन्होंने सैकड़ों निज के क़िले बनवा डाले और कभी एक और कभी दूसरे पक्ष को सहायता देकर अपनी शक्ति ख़ूब बढ़ा ली।

इस उन्नीस वर्ष के काल (Nineteen Long Winters) में साधारण प्रजा की बड़ी बुरी दशा थी और उसको भूमिपतियों के हाथों तरह-तरह के अत्याचार सहने पड़ते थे। देश के इस गड़बड़ को देखकर लोग कहते थे कि "ईसा और उसके साधुगण सो रहे हैं" और देशवासियों के संकट के निवारण का कोई उपाय नहीं हो सकता।

अन्त में वेलिंगफ़ोर्ड की संधि (Treaty of Wallingford) के अनुसार दोनों पक्षों में समझौता हो गया। यह निश्चित हुआ कि अपने जीवनकाल तक स्टेफ़ेन राजा रहे; परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् मेटिल्डा का पुत्र राजसिंहासन का उत्तराधिकारी हो।

नार्मन काल का अंत—इस समझौते के थोड़े ही दिन बाद स्टेफ़ेन परलोक सिधारा और मेटिल्डा का पुत्र हेनरी द्वितीय (Henry II) के नाम से राजा हो गया। हेनरी द्वितीय के राज्याभिषेक के समय से एक दूसरा राजवंश शुरू होता है, जिसे प्लेंटेजनेट वंश (Plantagenet) कहते हैं।

इस प्रकार सन् ११५४ में नार्मन राज्य का अन्त हुआ और उसके स्थान पर प्लेंटेजनेट वंश के राज्य की स्थापना हो गई।

(३) नार्मन राज्य का प्रभाव

अँगरेज़ों की स्थिति पर प्रभाव—नार्मन राज्य के स्थापित होने पर अँगरेज़ों की जायदादें छीन ली गईं, और उनमें से अधिकांश को नार्मन भूमिपतियों का "दास" (Serf) बनना पड़ा। फ़्यूडेलिज़्म (Feudalism) की प्रथा शुरू हो जाने के कारण राज्य में भूमि-पतियों ही की प्रधानता रहती थी। अँगरेज़ों के पास भूमि न होने के कारण उनको राजनीतिक तथा सामाजिक किसी क्षेत्र में भी उच्च स्थान प्राप्त करने का अवसर नहीं था। परन्तु नार्मन राजाओं का अँगरेज़ों के प्रति व्यवहार सदा अच्छा रहता था। इसका विशेष कारण यह था कि अँगरेज़ी प्रजा ही की सहायता के भरोसे राजा अपने नार्मन भूमि-पतियों को वश में रख सकता था। धीरे-धीरे नार्मनों और अँगरेज़ों में विवाह-सम्बन्ध भी होने लगे और इस प्रकार कुछ काल में दोनों जातियाँ हिल-मिलकर एक-सी हो गईं।

आँग्ल-सेक्सन संस्थाओं में परिवर्तन—(क) स्वेच्छाचारी राजा—नार्मन राजा राष्ट्र के अधिष्ठाता होने के अतिरिक्त देश के समस्त भूमिपतियो के स्वामी (Feudal Lord) भी होते थे। नार्मन काल में राजा की शक्ति अधिक बढ़ गई। केवल बड़े भूमिपतियों ही का राजा पर थोड़ा-बहुत दबाव हो सकता था; परन्तु नार्मन राजा शक्ति-शाली तथा योग्य शासक हुए और उन्होंने इन भूमिपतियों को अच्छी तरह अपने वश में कर रखा था। केवल स्टेफ़ेन के राज्यकाल में गृहयुद्ध का कारण भूमिपतियों को मनमानी करने का अवसर मिला।

(ख) विटान के स्थान पर ग्रेट काउंसिल—आँग्ल-सेक्सन काल की विटान (Witan) के स्थान पर अब ग्रेट काउंसिल (Great Council) थी। ग्रेट काउंसिल के सदस्यों के लिए, यह आवश्यक था कि उनको राजा की ओर से भूमि मिली हो, परन्तु जो लोग विटान में सम्मिलित हुआ करते थे अधिकतर वही ग्रेट काउंसिल के भी सदस्य

होने लगे, क्योंकि चर्च के बड़े पादरी तथा राज्य के प्रधान कर्मचारी प्रायः बड़े भूमिपति ही होते थे।

नार्मन राजाओं ने भूमिपतियों को इतना वश में कर रखा था कि नार्मन काल में ग्रेट काउंसिल का राजा पर बस नाममात्र ही दबाव रहता था। पूरी ग्रेट काउंसिल की बैठकें भी बहुत कम होती थीं। हेनरी प्रथम ने उसकी एक उपसमिति नियत कर दी थी, जिसकी बैठकें सदा राजा ही के सभापतित्व में होने के कारण वह "राजकीय परिषद्" (Curia Regis or King's Court) के नाम से प्रसिद्ध हो गई। साधारणतया यह राजकीय परिषद् नामक उपसमिति ही राजकार्य्य का संचालन करती थी और पूरी ग्रेट काउंसिल को केवल विशेष अवसरों पर सम्मिलित किया जाता था।

(ग) राजकीय न्यायालयों का प्रारम्भ—फ़्यूडेलिज़्म की प्रथा शुरू होने पर भूमिपतियों ने अपनी निज की कचहरियाँ (Feudal or Manorial Courts) बना ली थीं जिनमें वे अपने असामियों के झगड़ों का निबटारा करते थे। इन कचहरियों को आँग्ल-सेक्सन काल की Town Moot और Hundred Moot के स्थान पर समझना चाहिए। आगे चलकर हेनरी प्रथम ने देश के समस्त न्यायालयों को राजकीय संस्था बनाने का प्रयत्न किया। प्रान्तीय न्यायालयों (County Courts)* के पदाधिकारियों को उसने स्वयं नियुक्त करना शुरू किया और भूमिपतियों की कचहरियों की शक्ति कम करने के आशय से उसने "दौरा करनेवाले न्यायाधीश" (Itinerant Judges) नियुक्त किये जो छोटे-छोटे गाँवों तक में पहुँचते थे।

(घ) चर्च का राज्य से पृथक् होना—आँग्ल-सेक्सन काल में चर्च और राज्य में बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था; परन्तु नार्मन काल में चर्च

* आँग्ल सेक्सन काल में County Courts को Shire Moots कहते थे।

नार्मन काल की वास्तुविद्या

को राज्य से पृथक् करके उसको एक स्वतन्त्र संस्था बनाने की लहर फैली हुई थी। इस काल में पादरियों ने अपने अलग "धार्मिक न्यायालय" (Ecclesiastical Courts) स्थापित किये जहाँ "धार्मिक नियमों" (Canon Law) द्वारा न्याय होता था। इसका यह परिणाम हुआ कि चर्च और राज्य में विविध प्रश्नों पर झगड़ा चलने लगा, जिसका कई शताब्दियों तक कोई निश्चित निबटारा न हो सका।

नार्मन सभ्यता—नार्मनों को वास्तु-विद्या (Architecture) से बड़ा प्रेम था। नार्मन काल में बहुत-से गिरजाघर तथा मठ नये ढङ्ग से बनाये गये और भूमिपतियों ने सुन्दर गढ़ (Castles) तैयार किये। इमारत के मज़बूत तथा सुरक्षित होने की ओर विशेष ध्यान दिया जाता था। खम्भे बहुत भारी और महराबें नोकदार होती थीं और खिड़कियाँ बहुत थोड़ी और छोटी-छोटी रखी जाती थीं। नार्मन लोग दाढ़ी-मूँछें मुँड़ाये रहते थे और स्त्री तथा पुरुष दोनों ही रंग-बिरंगे वस्त्र पहनते थे। चर्च की भाषा लैटिन (Latin) ही बनी रही और उच्च श्रेणी के विद्वान् भी अपनी रचनाओं में प्रायः इसी भाषा का प्रयोग करते थे। परन्तु नार्मनों के आने से राजकार्य तथा दर्बार में अब फ्रेंच (French) भाषा बोली जाने लगी। नार्मन काल में सभ्य समाज की भाषा भी फ्रेंच ही मानी जाती थी और अँगरेज़ी (English) का प्रयोग केवल किसानों तथा ग़रीब आदमियों में होता था।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १०६६-१०८७—"विजयी" विलियम (William, the Conqueror)

" १०७१—हीयरवार्ड (Hereward, the Wake) की पराजय तथा नार्मन-विजय की पूर्ति।

" १०८६—डोम्सडे बुक (Domesday Book) का तैयार होना।

सन् १०८६—"धार्मिक न्यायालयों" (Ecclesiastical Courts) की स्थापना।

" १०८७-११००—"लाल विलियम" (William Rufus)

" १०९३—एन्सलेम (Anslem) का केन्टबरी का बड़ा पादरी नियत होना।

" ११००-११३५—हेनरी प्रथम (Henry I)।

" ११००—हेनरी का "स्वतन्त्रता-पत्र" (Henry I's Charter of Liberties)।

" ११३५-११५४—राजा स्टेफ़ेन (King Stephen)।

" ११५३—वेलिंगफ़ोर्ड की सन्धि (Treaty of Wallingford) तथा स्टेफ़ेन और मेटिल्डा के गृह-युद्ध का अन्त।

वंशावली नम्बर ३

प्लैंटेजनेट तथा एंज्विन वंश की उत्पत्ति

नोट— इस वंशावली से यह विदित होता है कि प्लैंटेजनेट राजवंश का अँगरेज़ों के प्राचीन राजा एल्फ्रेड के राजवंश से सम्बन्ध था।

दूसरा परिच्छेद

हेनरी द्वितीय तथा टामस बेकेट

हेनरी द्वितीय (११५४-११८९)—हेनरी द्वितीय का राजवंश प्लेंटेजनेट (Plantagenet) इसलिए कहलाता है कि उसका वंशीय चिह्न एक पीले रङ्ग का फूल था, जिसे लैटिन भाषा में Planta Genista कहते हैं। इस राजवंश को एंज्विन (Angevins) भी कहते हैं, क्योंकि हेनरी द्वितीय का पिता फ्रांस के अंजू प्रान्त का नवाब (Count of Anjou) था। हम बतला चुके हैं कि हेनरी द्वितीय की नानी अर्थात् हेनरी प्रथम की स्त्री मेटिल्डा राजा एल्फ्रेड के वंश की थी। इस प्रकार हेनरी द्वितीय की उत्पत्ति प्राचीन अँगरेज़ी राजवंश से हुई और इसी लिए अँगरेज़ उसे विदेशी राजा नहीं समझते थे और उसके प्रति हार्दिक राजभक्ति रखते थे।

इँगलैंड के अतिरिक्त हेनरी द्वितीय के राज्य में फ्रांस का भी बहुत-सा भाग शामिल था। उसे अपनी माता की ओर से नारमंडी (Normandy), पिता की ओर से अंजू (Anjou) और अपनी स्त्री एलीनर (Eleanor) के जहेज़ में एक्वीटेन (Acquitaine) के प्रान्त मिले थे। शीघ्र ही उसके पुत्र का विवाह ब्रिटेनी (Britanny) की उत्तराधिकारिणी से हो जाने के कारण उस प्रान्त पर भी उसका आधिपत्य हो गया। इस प्रकार फ्रांस ही में उसकी शक्ति फ्रांस के राजा से भी कहीं बढ़कर थी। हेनरी द्वितीय ने अवसर पाकर स्काटलैंड के राजा को अपना आधिपत्य स्वीकार करने पर बाध्य किया और कुछ समय पीछे आयरलैंड के सर्दारों ने भी उसको "आयरलैंड का स्वामी" (Lord of Ireland) मान लिया।

बड़े भूमिपतियों को वश में करना तथा सेना का प्रबन्ध— हेनरी द्वितीय शक्तिशाली तथा योग्य शासक था। उसके राजा होते ही स्टेफ़न के राज्यकाल की गड़बड़ी का अन्त हो गया। वही भूमिपति, जो
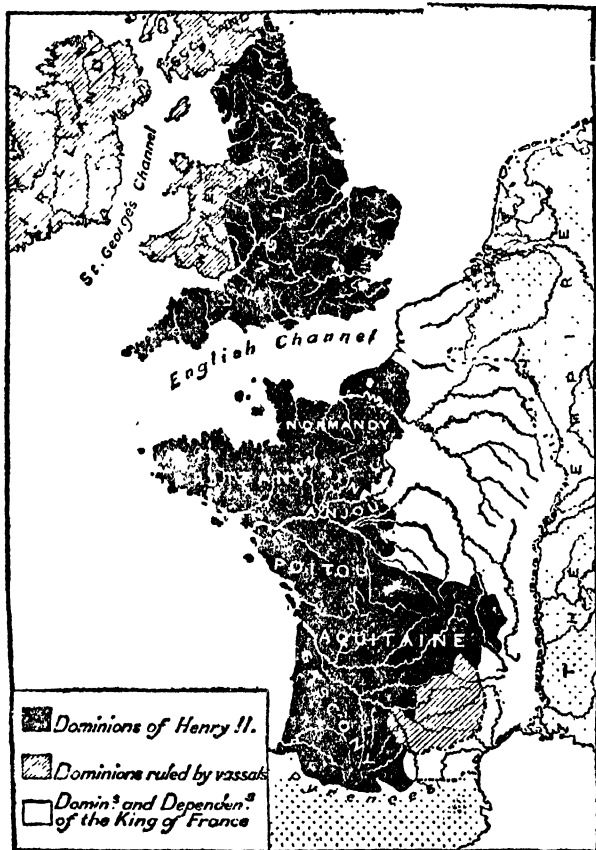
हेनरी द्वितीय का राज्य

स्टेफ़न के राज्यकाल में देश में आफ़त मचाये हुए थे, हेनरी द्वितीय के सामने थरथर काँपते थे। जिन भूमिपतियों ने बिना राजा की आज्ञा

के गढ़ बनवा लिये थे उन्हें वे गढ़ तोड़वा देने पड़े। हेनरी द्वितीय यह चाहता था कि राजा को सेना के लिए भूमिपतियों के भरोसे न रहना पड़े; क्योंकि वे प्रायः काफ़ी सैनिक नहीं भेजते थे और उनके भेजे हुए सैनिकों से चालीस दिन से अधिक काम भी नहीं लिया जा सकता था। उसने यह प्रथा शुरू की कि भूमिपति सैनिकों के बदले राजा को धन दे दिया करें। यह धन Scutage कहलाता था और इससे राजा स्वयं अच्छे सैनिक भरती कर सकता था। इसका यह परिणाम हुआ कि राजा के पास अच्छी सेना रहने के कारण उसकी शक्ति अधिक बढ़ गई और भूमिपतियों का सैनिकों से कोई सम्बन्ध न रहने के कारण उनकी प्राचीन शक्ति धीरे-धीरे घटने लगी।

इसके अतिरिक्त हेनरी द्वितीय ने आँग्ल-सेक्सन काल की "जनसेना" (Fyrd of Militia) को भी फिर से तैयार किया और उसने यह आज्ञा दे दी कि प्रत्येक नागरिक को हथियार रखने चाहिएँ, जिससे वह आवश्यकता पड़ने पर राजा की सहायता तथा देश की रक्षा कर सके।

ज्यूरी की प्रथा का प्रारम्भ—हेनरी द्वितीय ने देश के न्यायालयों में भी बहुत कुछ सुधार किया। उसने अपने नाना हेनरी प्रथम के राज्य-काल की "दौरा करनेवाले न्यायाधीशों" (Itinerant Judges) की प्रथा को फिर से शुरू किया, जिससे प्रजा को अपने स्थानों पर ही न्याय प्राप्त करने की सुविधा हो जाय। राजकीय न्यायालयों के बढ़ने से भूमिपतियों के न्यायालय (Feudal Courts), जिनमें वे अपने असामियों के झगड़ों का निबटारा किया करते थे, धीरे-धीरे बेकार हो गये।

हेनरी द्वितीय ही के राज्यकाल से ज्यूरी की प्रथा (Trial by Jury) का प्रारम्भ होता है, जिसको आजकल भी अँगरेज़ों की स्वतन्त्रता का प्रधान अंग माना जाता है। एक राजनियम (Assize of Clarendon) द्वारा हेनरी द्वितीय ने यह आज्ञा दी कि प्रत्येक

मुक़दमे में स्थानीय बारह नागरिकों को, साक्षी के रूप में, बुलाया जाय। ये बारह नागरिक जाँच करके अथवा अपने व्यक्तिगत अनुभव से मुक़दमे के विषय में न्यायाधीश को परामर्श देते थे। इस प्रकार न्याय अब केवल एक ही व्यक्ति पर निर्भर नहीं रहा और प्रजा को यह सन्तोष होने लगा कि उन्हीं के पड़ोसियों के परामर्श के अनुसार मुक़दमों का निर्णय होता है।

बेकेट तथा चर्च और राज्य का झगड़ा—भूमिपतियों को वश में करने के पश्चात् हेनरी द्वितीय ने चर्च को भी अपने दबाव में लाना चाहा। इस आशय से उसने अपने परम मित्र टामस बेकेट (Thomas Becket) को कैंटर्बरी का बड़ा पादरी नियत किया। बेकेट अब तक राजा का मंत्री था और उसने राजशक्ति को बढ़ाने में बहुत सहायता दी थी। हेनरी को आशा थी कि बेकेट की सहायता से मैं चर्च को भी सुगमतापूर्वक अपने वश में कर सकूँगा। परन्तु चर्च का पदाधिकारी होते ही बेकेट के स्वभाव में परिवर्तन हो गया। उसने मंत्री के पद से त्यागपत्र दे दिया और सांसारिक सुखों को छोड़कर वह साधुओं की भाँति तपस्या इत्यादि में मग्न रहने लगा। वह चर्च के अधिकारों का पूर्ण पक्षपाती हो गया और उसने चर्च और राज्य के झगड़े में बड़े जोश से भाग लिया।

ग्यारहवीं शताब्दी की इस लहर का, कि चर्च को राज्य से पृथक् करके उसको एक स्वतन्त्र संस्था बना दिया जाय, यह परिणाम हुआ कि पादरियों ने अपने अलग "धार्मिक न्यायालय" (Ecclesiastical Courts) स्थापित कर लिये थे। पादरियों का न्याय केवल इन्हीं न्यायालयों में हो सकता था और राजकीय न्यायालयों का उनके ऊपर कोई अधिकार नहीं था। हेनरी द्वितीय का यह विचार था कि न्यायक्षेत्र में सब प्रजा के प्रति एक ही ढंग का व्यवहार होना उचित है। इसलिए उसने यह चेष्टा की कि अपराधी पादरियों को भी राजकीय न्यायालयों के ही द्वारा दंड मिलना चाहिए। वह धार्मिक न्यायालयों के दिये हुए

दंडों को काफ़ी न समझता था, क्योंकि वे अपराधियों से नाममात्र तपस्या कराके या उन्हें पदच्युत करके ही छोड़ देते थे और उनमें फाँसी वा लम्बी क़ैद के दंड कभी नहीं दिये जाते थे। हेनरी ने एक राजनियम (Constitutions of Clarendon) प्रकाशित किया, जिसमें उसने चर्च और राज्य के परस्पर सम्बन्ध को निश्चित रूप देने की चेष्टा की। उसकी मुख्य धारायें ये थीं—(१) राजकीय न्यायालयों को अधिकार है कि वे अपराधी पादरियों को दंड दें। (२) बिना राजा की अनुमति के किसी मुक़दमे की अपील रोम के पोप के पास न भेजी जाय। (३) पादरियों के पास जायदादें होने के कारण उनको भी साधारण भूमिपतियों की भाँति राजभक्ति की शपथ खानी होगी। बिना राजा की आज्ञा के कोई पादरी देश के बाहर नहीं जा सकेगा।

बेकेट इन धाराओं को कभी स्वीकार नहीं कर सकता था। उसका कहना था कि इसके स्वीकार कर लेने से चर्च फिर स्वतन्त्र संस्था नहीं रह सकेगा। चर्चवालों का मत था कि पादरी केवल ईश्वर तथा उसके प्रतिनिधि रोम के पोप के अधीन हैं और इसलिए उनकी गणना साधारण प्रजा में नहीं हो सकती। परन्तु हेनरी भी अपनी बात पर दृढ़ था कि न्यायक्षेत्र में पादरी तथा अन्य प्रजा सबके साथ एक ही-सा व्यवहार होना चाहिए। इस प्रश्न पर हेनरी द्वितीय तथा बेकेट में ख़ूब विवाद चला और चर्च और राज्य के पुराने झगड़े ने अब भयङ्कर रूप धारण कर लिया।

हेनरी से तङ्ग आकर बेकेट इँगलैंड छोड़कर चल दिया और पूरे छः वर्ष तक विदेश में रहा। सन् ११७० में उसका हेनरी से कुछ समझौता-सा हो गया और वह इँगलैंड लौट आया। परन्तु आते ही चर्च और राज्य के परस्पर सम्बन्ध के विषय में दोनों में फिर झगड़ा चलने लगा। अन्त में झगड़ा इतना बढ़ गया कि एक दिन क्रोध में आकर हेनरी ने खुले दर्बार में कह दिया, "क्या मेरे नमक खानेवाले सब इतने साहस-हीन हैं कि उनमें से कोई भी इस झगड़ालू पादरी से मेरा पीछा नहीं छुड़ा

बेकेट का वध

सकता !" हेनरी ने ये शब्द क्रोध में कहे थे, तुरंत उसके चार सर्दारों ने उनका अक्षर-अक्षर पालन किया। वे तुरन्त कैंटर्बरी पहुँचे और ख़ास उसी के गिर्जाघर की सीढ़ियों पर बेकेट को मार गिराया। इस प्रकार चर्च की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए बेकेट ने अपने प्राण निछावर किये।

राज्य पर चर्च की विजय—बेकेट शहीद प्रसिद्ध हो गया और उसकी समाधि पर यात्रियों का मेला लगने लगा। स्वयं हेनरी द्वितीय ने उसकी मृत्यु पर शोक प्रकट किया और उसकी समाधि पर जाकर घोर तपस्या की, जिससे उसे एक साधु की हत्या का पाप न लगने पावे। बेकेट के शहीद हो जाने से उसका पक्ष इतना दृढ़ हो गया था कि राजा को हार माननी पड़ी और उसी हेनरी द्वितीय को, जिसके सम्मुख शक्तिशाली भूमिपति थर्राते थे, चर्च के सामने झुकना पड़ा। इस प्रकार राज्य पर चर्च की विजय हुई और लगभग तीन शताब्दियों तक पादरियो के अलग धार्मिक न्यायालय बने रहे और उन्होंने रोम के पोप के अतिरिक्त किसी को अपना स्वामी नहीं माना। इस परिस्थिति में "धर्मसुधार" (Reformation) के काल तक कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ।

मुख्य-मख्य तिथियाँ

सन् ११५४ से सन् ११८६ तक—हेनरी द्वितीय।

" ११५९—भूमिपतियों से सैनिक सेवा के स्थान पर धन (The Scutage) लेने की प्रथा का प्रारम्भ।

" ११७०—टामस बेकेट का वध।

" ११६६—ज्यूरी की प्रथा (Trial by Jury) का प्रारम्भ।

तीसरा परिच्छेद

"वीर" रिचर्ड प्रथम तथा "धार्मिक युद्ध"

"वीर" रिचर्ड प्रथम (११८९-११९९)—हेनरी द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र "रिचर्ड प्रथम" (Richard I) के नाम से राजा हुआ। रिचर्ड का जन्म फ्रांस में हुआ था और वह वहीं रहना पसन्द करता था। अपने दस वर्ष के राज्यकाल में वह केवल दो बार इँगलैंड आया। अपने राज्य के फ्रांसवाले भाग में रिचर्ड स्वयं शासन करता था और इँगलैंड में शासन करने के लिए वह अपना एक प्रतिनिधि (King's Justiciar) नियत कर देता था। रिचर्ड प्रतिनिधि-द्वारा भी इँगलैंड पर सफलतापूर्वक राज्य कर सका। इससे विदित होता है कि उसके पिता हेनरी द्वितीय ने शासनक्रम को इतना अच्छा बना दिया था कि राजा की अनुपस्थिति में भी उसके संचालन में कोई बाधा नहीं पड़ती थी। रिचर्ड वीर सैनिक तथा साहसी योद्धा था। अपनी वीरता के कारण वह इतिहास में "वीर रिचर्ड" (Richard, the Lion-hearted) के नाम से प्रसिद्ध है।

"धार्मिक युद्ध" में भाग—रिचर्ड प्रथम के राज्यकाल की मुख्य घटना उसका "धार्मिक युद्ध" (Crusade) में भाग लेना है। ये धार्मिक युद्ध एशिया माइनर (Asia Minor) में होते थे और इनका यह उद्देश्य था कि यीसू मसीह की जन्मभूमि अर्थात् जेरोसलम (Jerusalem) इत्यादि ईसाइयों के तीर्थस्थानों को मुसलमानों के अधिकार से, जो ईसाई यात्रियों को बहुत सताते थे, स्वतन्त्र किया जाय। योरप के समस्त राजा इन युद्धों में भाग लेना अपना धार्मिक कर्तव्य समझते थे।

पहला "धार्मिक युद्ध" सन् १०९५ में हुआ था जिसमें "विलियम रफ़स" के बड़े भाई राबर्ट आफ़ नार्मंडी ने भाग लिया था*। पहले तथा दूसरे युद्ध का यह परिणाम हुआ था कि जेरोसलम में ईसाई-राज्य स्थापित हो गया था; परन्तु थोड़े ही समय के बाद मुसलमानों के शक्तिशाली राजा सलादीन (Saladin) ने जेरोसलम पर फिर अधिकार जमा लिया। मुसलमानों के विरुद्ध युद्ध करने के लिए अब तीसरा धार्मिक युद्ध (Third Crusade) आरम्भ हुआ; जिसमें सबसे अधिक योरपीय राजाओं ने भाग लिया। "वीर" रिचर्ड प्रथम ने इस युद्ध में बहुत यश प्राप्त किया और वह कई बार जेरोसलम के बिलकुल निकट पहुँच गया। परन्तु उसके सहकारी राजाओं ने मारे डाह के उसे बहुत कम सहायता दी। परिणाम यह हुआ कि रिचर्ड जेरोसलम पर अधिकार नहीं जमा सका। उसको केवल इतने पर सन्तोष करना पड़ा कि उसने सलादीन से यह सन्धि कर ली कि ईसाई यात्रियों के तीर्थ-स्थानों में आने-जाने में किसी प्रकार की बाधा नहीं डाली जायगी।

रिचर्ड की मुसीबतें---"धार्मिक युद्ध" में रिचर्ड का फ़्रांस के राजा से बहुत झगड़ा हो गया था। इसलिए एशिया से इँगलैंड लौटने के लिए रिचर्ड ने फ़्रांस में होकर सीधे मार्ग से जाने के स्थान पर जर्मनी में होकर जाना चाहा। परन्तु इस मार्ग से जाने में भी वह सङ्कट से नहीं बच सका। जर्मनी का सम्राट् भी उससे भीतरी डाह रखता था और उसने उसे अपने एक सर्दार-द्वारा पकड़वाकर अपने बन्दीगृह में डाल दिया। रिचर्ड को कई महीने बन्दीगृह में रहना पड़ा। अन्त में जब इँगलैंड-निवासियों ने बहुत-सा धन भेजा तब, उसके बदले, जर्मनी के सम्राट ने उसे मुक्त किया। मुक्त होने के बाद रिचर्ड ने कई बार फ़्रांस के राजा से युद्ध किया; परन्तु इन युद्धों का कोई विशेष परिणाम नहीं हुआ। इसी बीच में सन् ११९९ में, जब रिचर्ड अपने ही

---

* देखो पृष्ठ ५८।

एक विद्रोही सर्दार के क़िले का घेरा डाले हुए था, उसके एक तीर लगा और वह परलोक सिधारा।

धार्मिक युद्धों का प्रभाव—"धार्मिक युद्धों" के कारण समस्त योरप में युद्ध का उत्साह तथा धार्मिक जोश दोनों फैले। बहुत-से झगड़ालू नवाब इन युद्धों में भाग लेने के लिए एशिया माइनर चले जाते थे और इस प्रकार उनके राजाओं को उनसे छुटकारा मिल जाता था। इन युद्धों का मुख्य प्रभाव यह हुआ कि पश्चिमी देशों को पूर्वीय सभ्यता के देखने का अवसर मिला, जो उस काल में बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। धीरे-धीरे पाश्चात्य देशों में पूर्वीय सभ्यता का प्रवेश होने लगा, जिससे उनको बहुत लाभ हुआ। इन्हीं युद्धों के कारण पूर्वीय तथा पश्चिमी देशों के बीच में नये-नये व्यापारिक मार्ग खुले। परन्तु यह सब लाभ विशेषतया रूमसागर (Mediterranean Sea) के तटवाले देशों ही को हुए और इँगलैंड, दूर होने के कारण, इनसे बहुत कुछ वञ्चित रहा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् ११८९—"वीर" रिचर्ड प्रथम का राज्याभिषेक।
" ११९०–११९४ -रिचर्ड प्रथम का "धार्मिक युद्ध" में भाग।
" ११९९—रिचर्ड प्रथम की मृत्यु।

वंशावली नं० ४
प्लैंटेजनेट (एंजिवन) राजाओं की वंशावली

हेनरी द्वितीय
(११५४–११८९)

- रिचर्ड प्रथम (११८९–११९९)
- राजकुमार जॉफ्रे (मृत्यु ११८६)
  - राजकुमार आर्थर (जिसको १२०३ में राजा जॉन ने मरवा डाला)
- राजा जॉन (११९९–१२१६)
  - हेनरी तृतीय (१२१६–१२७२)
    - एडवर्ड प्रथम (१२७२–१३०७)
      - एडवर्ड द्वितीय (१३०७–१३२७)
        - एडवर्ड तृतीय (१३२७–१३७७)
          - युवराज ब्लैक प्रिंस (मृत्यु १३७६)
            - रिचर्ड द्वितीय (१३७७–१३९९)
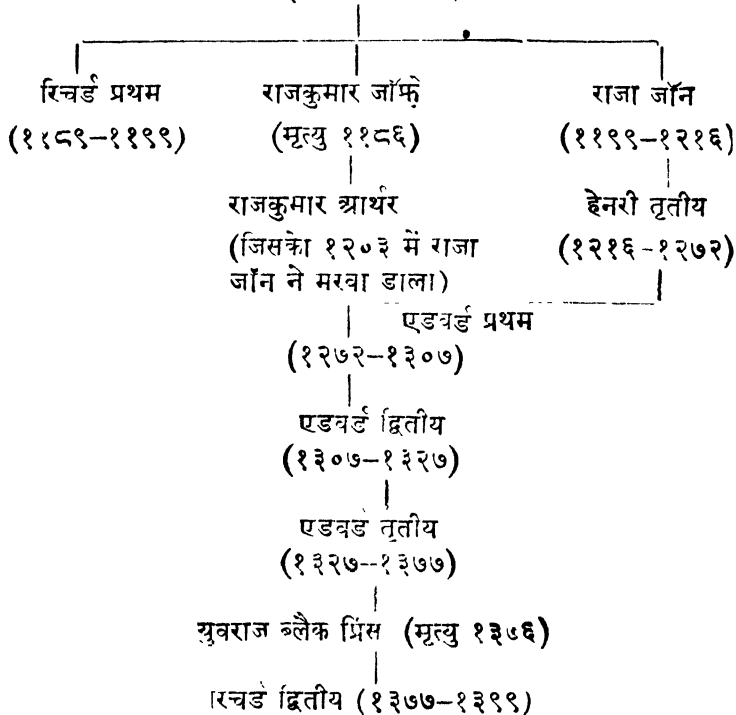
नोट १ --रिचर्ड प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसके भतीजे आर्थर को राजसिंहासन मिलना चाहिए था। परन्तु आर्थर के अल्पायु होने के कारण रिचर्ड प्रथम के सबसे छोटे भाई जॉन को राजा बनाया गया। कुछ वर्ष बाद राजा जॉन ने आर्थर को मरवा डाला।

२—युवराज ब्लैक प्रिंस का अपने पिता से एक वर्ष पूर्व ही देहान्त हो चुका था। इसलिए उसे राजा होने का अवसर नहीं मिल सका।

चौथा परिच्छेद

राजा जॉन तथा "महास्वतन्त्रता-पत्र"

राजा जॉन (११९९—१२१६)—"वीर" रिचर्ड प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका सबसे छोटा भाई जॉन (John) राजा हुआ। वास्तव में इस समय राजसिंहासन का उत्तराधिकारी जॉन के बड़े भाई का पुत्र आर्थर (Prince Arthur of Britanny) होना चाहिए था; परन्तु अल्पायु होने के कारण ग्रेट काउंसिल ने उसे राजा बनाना अनुचित समझा। जॉन स्वार्थी, नीच, निर्दयी, कायर तथा मिथ्यावादी था। उसने कई बार अपने पिता हेनरी द्वितीय के विरुद्ध षडयन्त्र रचे थे और अपने बड़े भाई रिचर्ड प्रथम के "धार्मिक युद्ध" में चले जाने पर, उसकी अनुपस्थिति में, धोखे से राजसिंहासन लेने की चेष्टा की थी। जॉन के राज्यकाल में तीन बड़े झगड़े हुए और तीनों ही में उसको नीचा देखना पड़ा।

नारमंडी तथा अंजू का हाथ से निकलना—थोड़े ही दिनों में जॉन की प्रजा उसके बुरे शासन से तंग आ गई। विशेषतया उसकी फ्रांस के प्रान्तोंवाली प्रजा उससे घोर घृणा करने लगी। ऐसी परिस्थिति में फ्रांस के शेष भाग के राजा फ़िलिप द्वितीय ने फ्रांसीसी प्रजा का पक्ष लेकर जॉन के विरुद्ध युद्ध ठान दिया और उसको राजसिंहासन से हटाकर छोटे आर्थर को राजा बनाने की चेष्टा की। जॉन ने तुरन्त ही आर्थर को बन्दीगृह भेज दिया और वहीं उसका वध भी कर डाला। इस नीच कार्य्य के कारण जॉन के प्रति घृणाभाव और भी बढ़ गया और बहुत कम सर्दारों ने युद्ध में उसका साथ दिया। थोड़े ही समय में फ्रांस के राजा ने नारमंडी, अंजू

इत्यादि प्रान्तों पर अपना अधिकार जमा लिया और जॉन के पास फ़्रांस में अब गेस्कनी के एक छोटे-से प्रान्त को छोड़कर कुछ भी नहीं रहा। जॉन ने इन खोये हुए प्रान्तो को पुनः प्राप्त करने की कई बार चेष्टा की, परन्तु वह सफल नहीं हो सका और सन् १२१४ में बोवाइंस (Bouvines) के युद्ध में फ़्रांस के राजा फ़िलिप द्वितीय ने उसे इस बुरी तरह परास्त कर दिया कि उसको पूर्णतया निराश होकर बैठ रहना पड़ा। फ़्रांस में अपने पूर्वजों के राज्य को खो बैठने के कारण जॉन "John the Lackland" कहलाने लगा।

फ़्रांसवाले प्रान्तों के हाथ से निकल जाने के कारण जॉन की बहुत मानहानि हुई। परन्तु उसकी अँगरेज़ी प्रजा का इससे एक तरह से लाभ ही हुआ। अब तक नामन तथा प्लेंटेजनेट (एंज्विन) राजाओं का ध्यान इँगलैंड तथा फ़्रांस देशों में बँटा रहता था और वे इँगलैंड को अपने साम्राज्य का केवल एक भाग समझते थे। परन्तु अब उनकी मनोवृत्ति में परिवर्तन हो गया और वे इँगलैंड ही को अपना देश समझने लगे। नामनों, एंज्विनों तथा अँगरेज़ों में विवाह-सम्बन्ध होने लगे थे। अब उनकी परस्पर घनिष्ठता और भी बढ़ गई और वे सब पूर्णतया "अँगरेज़" जाति में मिलकर एक हो गये।

पोप से झगड़ा--इसके बाद जॉन का चर्च से झगड़ा शुरू हुआ। केन्टरबरी के बड़े पादरी का चुनाव पादरी लोग स्वयं करते थे, परन्तु एन्सलेम तथा हेनरी प्रथम के समझौते* के अनुसार यह चुनाव राजा के सभापतित्व में होने लगा था और इसलिए राजा की भी उसमें अनुमति रहती थी। इस बार राजा जॉन तथा पादरी सहमत नहीं हो सके और दोनों ने केन्टबरी के बड़े पादरी के पद के लिए अलग-अलग नाम रोम के पोप की अन्तिम स्वीकृति के लिए भेजे। पोप ने दोनो में से किसी को पसन्द नहीं किया और स्टेफ़ेन लेंग्टन (Stephen Langton) को अपनी ओर

* देखो पृष्ठ ६०।

से उस पद पर नियत कर दिया। स्टेफ़ेन लेंग्टन की योग्यता में कोई संदेह नहीं हो सकता था परन्तु पोप की इस नियुक्ति को स्वीकार कर लेने से भविष्य के लिए एक बुरी प्रथा बन जाती। इसलिए जॉन ने आज्ञा दे दी कि लेंग्टन अपना पद ग्रहण करने के लिए इँगलैंड में न आने पावे।

परन्तु जॉन जैसा कायर राजा पोप से झगड़ा करने में कदापि सफल नहीं हो सकता था। पोप ने आज्ञा प्रकाशित की कि इँगलैंड में सब धार्मिक संस्कार कुछ काल के लिए बन्द कर दिये जावें*। इससे देशवासियों को बड़ी कठिनाई हुई, क्योंकि इस काल में विवाह इत्यादि कोई शुभ कार्य नहीं हो सकता था। इसके बाद पोप ने यह घोषणा कर दी कि राजा जॉन ईसाई-मत से पतित है† और राजसिंहासन का अधिकारी नहीं है। फ्रांस के राजा को पोप के दर्बार से यह आज्ञा भेजी गई कि इँगलैंड पर आक्रमण करके पतित जॉन को राजसिंहासन से हटा दे। ऐसी परिस्थिति में जॉन को दबना पड़ा और उसने मारे भय के पोप से क्षमा-प्रार्थना की। उसने केन्टर्बरी के बड़े पादरी के पद पर स्टेफ़ेन लेंग्टन की नियुक्ति को स्वीकार कर लिया और पोप के एक प्रतिनिधि के सम्मुख अपने समस्त राज्य को पोप के अर्पण कर देने की शपथ खाई। इस प्रकार अपनी कायरता के कारण धार्मिक क्षेत्र के अतिरिक्त राजनीतिक क्षेत्र में भी जॉन पोप के अधीन हो गया और उसको कर के रूप में प्रतिवर्ष बहुत-सा धन पोप के कोष के लिए भेजना स्वीकार करना पड़ा। इस समय से पोप का इँगलैंड पर बहुत अधिकार बढ़ गया, जिसके कारण भविष्य के लिए बहुत-सी नई समस्यायें तैयार होने लगीं।

"महास्वतन्त्रता-पत्र" (१२१५)—बड़ा पादरी स्टेफ़ेन लेंग्टन इँगलैंड में आते ही जाति का नेता बन गया। जॉन के बुरे शासन के कारण देशवासियों का असंतोष दिन पर दिन बढ़ता जाता था और बड़े भूमि-

---

* ऐसी आज्ञा को Interdict कहते हैं।

† ऐसी आज्ञा को Excommunication कहते हैं।

पति तथा ग्रेट काउंसिल के सदस्य उसके अत्याचार से छुटकारा पाने का उपाय सोच रहे थे। अन्त में स्टेफ़ेन के नेतृत्व में बड़े भूमिपतियों ने यह निश्चय किया कि राजा के निरंकुश शासन के रोकने के लिए कुछ राजनैतिक सिद्धान्त बनाये जायँ और जॉन को उन्हें स्वीकार करने पर बाध्य किया जाय। हेनरी प्रथम के "स्वतन्त्रता-पत्र"* के आधार पर एक नया स्वतन्त्रता-पत्र तैयार किया गया जो अपने महत्त्व के कारण "महास्वतन्त्रता-पत्र" (Magna Charta) के नाम से प्रसिद्ध है।

राजा जॉन का "महास्वतन्त्रता-पत्र" पर हस्ताक्षर करना

जॉन ने पहले टालमटोल की, परन्तु भूमिपतियों को अपनी बात पर दृढ़ देखकर उसने समझ लिया कि मुझे दबना ही पड़ेगा। १५ जून सन् १२१५

* देखो पृष्ठ ५९।

को रनीमेड (Runnymede) के स्थान पर जॉन ने "महास्वतन्त्रता-पत्र" पर हस्ताक्षर कर दिये।

"महास्वतन्त्रता पत्र" लैटिन भाषा में लिखा गया था और वह अब तक लन्दन के अजायबघर (British Museum) में रखा हुआ है। उसकी ६३ धाराओं में चार मुख्य हैं—(१) किसी स्वतन्त्र नागरिक को बिना नियमानुसार अपराध सिद्ध हुए किसी प्रकार का दंड नहीं दिया जायगा। (२) ग्रेट काउंसिल (Great Council) में सम्मिलित होने के लिए बड़े भूमिपतियों तथा बड़े पादरियों को राजा की ओर से निमंत्रण भेजे जायँगे। (३) ग्रेट काउंसिल की स्वीकृति के बिना राजा भूमिपतियों से नये कर वसूल नहीं कर सकेगा। (४) चर्च को एक स्वतन्त्र संस्था माना जायगा और उसके अधिकारों पर किसी प्रकार का हस्तक्षेप नहीं किया जायगा।

जॉन के "महास्वतन्त्रता-पत्र" से इँगलैंड के वर्तमान "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) का आरम्भ माना जाता है। यह पहला राजनियम है, जिसमें राजा की शक्ति की सीमा बाँधने तथा देशवासियों के अधिकारों को निश्चित करने की चेष्टा की गई। इससे ग्रेट काउंसिल का रूप निश्चित हो गया और उसके अधिकारों को राजनियम-द्वारा स्वीकृत कर लिया गया। धीरे-धीरे ग्रेट काउंसिल "पार्लिमेंट" (Parliament) के नाम से पुकारी जाने लगी। "पार्लिमेंट" शब्द का अर्थ है वह स्थान जहाँ किसी विषय पर विचार तथा वाद-विवाद हो। परन्तु पार्लिमेंट अभी भूमिपतियों तथा बड़े पादरियों ही के हाथ में थी और उसमें साधारण नागरिकों को कोई स्थान नहीं था।

राजा जॉन की मृत्यु—कुछ दिन तक जॉन ने "महास्वतन्त्रता-पत्र" की धाराओं का पालन किया, परन्तु अवसर पाकर उसने यह घोषणा कर दी कि मुझे विवश करके हस्ताक्षर कराये गये हैं, इसलिए मैं "महास्वतन्त्रता-पत्र" को मानने के लिए बाध्य नहीं। ऐसी परिस्थिति में

भूमिपतियों ने फ्रांस के युवराज को इँगलैंड में बुलाया और उसकी सहायता से अत्याचारी तथा मिथ्यावादी जॉन को राजच्युत करने की चेष्टा की। परन्तु इसी बीच में १६ अक्टूबर सन् १२१६ को जॉन की मृत्यु हो गई।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् ११९९—१२१६—राजा जॉन।

„ १२०४—नारमंडी तथा अंजू का हाथ से निकलना!

„ १२१३—जॉन का इँगलैंड को पोप के अर्पण करने की शपथ खाना।

„ १२१४—बोवाइन्स का युद्ध।

„ १२१५—"महास्वतन्त्रता-पत्र" (Magna Charta)।

—

पाँचवाँ परिच्छेद

हेनरी तृतीय तथा साइमन डा मांटफ़ोर्ड

(हाउस आफ़ कामन्स का प्रारम्भ

हेनरी तृतीय (१२१६—१२७२)—जॉन की मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र "हेनरी तृतीय" (Henry III) के नाम से राजा हुआ। राज्याभिषेक के समय हेनरी तृतीय केवल नौ वर्ष का बालक था। फ़्रांस का युवराज, जिसको भूमिपतियों ने अत्याचारी जॉन को राजसिंहासन से हटाने के लिए बुलाया था, अभी तक इँगलैंड में मौजूद था, परन्तु जॉन की मृत्यु हो जाने पर इँगलैंड-निवासियो को फ़्रांसीसियों की सहायता की कोई आवश्यकता नहीं रही। फ़्रांस के युवराज का अब सबने साथ छोड़ दिया और उसे निराश होकर अपने देश को लौट जाना पड़ा।

हेनरी तृतीय का बुरा शासन—जब तक हेनरी तृतीय अल्पायु रहा, उसके मंत्रियों ने राज्य का संचालन किया। बड़ा होने पर उसने स्वयं राजकार्य सँभाला, परन्तु वह अपने पिता जॉन से भी अधिक बुरा शासक निकला। उसने अपनी माता तथा स्त्री के सम्बन्धियों को, जो विदेशी थे, बड़े पदों पर भरना शुरू किया। वह स्पष्ट रूप से "महा-स्वतन्त्रता-पत्र" की धाराओं का उल्लङ्घन करने लगा और उसने कई प्रकार के अनुचित राजकर लगाना शुरू किया। यह दशा देखकर देश-वासी तथा भूमिपति सबमें असंतोष फैलने लगा और वे यह विचार करने लगे कि राजा के निरंकुश शासन को रोकने का कोई स्थायी उपाय निकालना चाहिए।

साइमन डी मांटफ़ोर्ड तथा "पागल पार्लिमेंट"—शीघ्र ही असन्तुष्ट भूमिपतियों को साइमन डी मांटफ़ोर्ड (Simon De Montford) नामक एक योग्य नेता भी मिल गया। साइमन वास्तव में विदेशी था, परन्तु उसने इँगलैंड को अपना देश बना लिया और उसकी हृदय से सेवा की। उसका विवाह हेनरी तृतीय की बहन से हुआ था, परन्तु सम्बन्धी होने पर भी उसने अत्याचारी राजा के विरुद्ध आन्दोलन करना अपना कर्तव्य समझा।

सन् १२५८ में हेनरी ने कर स्वीकृत कराने के लिए आक्सफ़ोर्ड के स्थान पर पार्लिमेंट की बैठक की। भूमिपतियों को राजा पर अविश्वास होने के कारण वे पार्लिमेंट में शस्त्रों से सुसज्जित होकर आये। इसी लिए राजा के समर्थक उसको "पागल पार्लिमेंट" (Mad Parliament) बतलाने लगे। साइमन के नेतृत्व में इस पार्लिमेंट ने एक नई शासन-प्रणाली तैयार की जो "Provisions of Oxford" के नाम से प्रसिद्ध है और हेनरी तृतीय को उसे स्वीकार करने पर बाध्य किया। इस प्रणाली के अनुसार सब विदेशी बड़े पदों से हटा दिये गये और पन्द्रह सदस्यों की एक कार्य्यकारिणी समिति (Council of Fifteen) बनाई गई, जिसको राज्य के संचालन का भार सौंपा गया। इस प्रकार राजा को अब राजकार्य से कोई विशेष सम्बन्ध नहीं रहा और इसी कार्य्यकारिणी समिति के द्वारा देश का शासन होने लगा।

राजा तथा भूमिपतियों का युद्ध (The Barons War)—कुछ दिन तक हेनरी तृतीय ने आक्सफ़ोर्ड की नई शासन-प्रणाली का पालन किया, परन्तु अवसर पाकर वह उसका भी उल्लंघन करने लगा और फिर वही पहले की तरह राजकार्य में गड़बड़ी मचने लगी। यह देखकर साइमन तथा उसके सहायक भूमिपतियों ने राजा के विरुद्ध शस्त्र उठाये और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए युद्ध शुरू किया। हेनरी तृतीय को बहुत कम सहायक मिल सके और ल्यूस के युद्ध (Battle of Lewis) में उसको पूरी हार माननी पड़ी। साइमन ने राजा तथा

युवराज एडवर्ड को क़ैद कर लिया और कार्य्यकारिणी समिति का नेता होने की हैसियत से उसने अब स्वय राजकार्य का संचालन शुरू किया।

पार्लिमेंट में जनता के प्रतिनिधियों का प्रवेश (१२६५)—साइमन ने बड़ी योग्यता से शासन किया। उसका मत था कि पार्लिमेंट केवल भूमिपतियों तथा बड़े पादरियों ही की सभा नहीं होनी चाहिए और उसमें साधारण जनता के प्रतिनिधियों को भी स्थान मिलना आवश्यक है। सन् १२६५ में उसने पार्लिमेंट की एक बैठक की, जिसके सदस्यों का निर्वाचन एक नये सिद्धान्त पर होने के कारण उसका राजनीतिक इतिहास में बड़ा महत्त्व है। इस पार्लिमेंट में साइमन ने भूमिपतियों तथा बड़े पादरियों के अतिरिक्त प्रत्येक प्रान्त से दो सर्दारों (Kinghts) और प्रत्येक नगर से दो नागरिकों (Burgesses) को प्रतिनिधि के रूप में बुलाया। यह पहला अवसर था कि साधारण जनता के प्रतिनिधियों को बड़े भूमिपतियों तथा बड़े पादरियों के साथ पार्लिमेंट में स्थान मिला।

अब तक पार्लिमेंट केवल धनिक लोगों की मडली (Aristocratic Body) थी, परन्तु साधारण नागरिकों का उसमें प्रवेश होने से उसने जाति की प्रतिनिधि सभा (Representative Assembly) का रूप धारण कर लिया। साइमन ने कुछ नगरों तथा प्रान्तो से, जो उसके पक्ष के विरोधी थे, प्रतिनिधियों को नहीं बुलाया था परन्तु फिर भी यह मानना पड़ेगा कि वह पहला राजनीतिज्ञ था जिसने साधारण जनता को राज्य के संचालन में भाग लेने का अवसर दिया। सन् १२६५ ही की पार्लिमेंट से वर्तमान हाउस आफ़ कामन्स (House of Commons) की उत्पत्ति समझी जाती है और साइमन को हाउस आफ़ कामन्स का संस्थापक (Creator of the House of Commons) माना जाता है। परन्तु पाठकों को यह नहीं भूलना चाहिए कि साइमन की पार्लिमेंट में भूमिपति (Barons), बड़े पादरी (Clergy) तथा साधारण प्रतिनिधि (Commons), सब एक ही स्थान पर सम्मिलित हुए थे। पार्लिमेंट दो भागों अर्थात् हाउस आफ़ लार्ड्स (House of

Lords) और हाउस आफ़ कामन्स (House of Commons) में अभी विभक्त नहीं हुई थी।

साइमन का पतन—साइमन अधिक समय तक शासन नहीं कर सका। उसके सहकारी उससे डाह रखने लगे और बहुत-से भूमिपतियों ने धीरे-धीरे उसका साथ छोड़ना शुरू किया। उसकी शक्ति दिन पर दिन घटती गई और उसके पतन के लक्षण प्रस्तुत होने लगे। इसी बीच में युवराज एडवर्ड किसी तरकीब से बन्दीगृह से भाग निकला और सेना लेकर उसने साइमन के हाथ से शासनकार्य्य छीनने के लिए युद्ध ठान दिया। ईवशाम (Evesham) के युद्ध में साइमन परास्त हुआ और युद्ध क्षेत्र ही में जनता के अधिकारों के इस प्रसिद्ध समर्थक ने वीरता से लड़ते हुए अपने प्राण न्योछावर किये।

साइमन को परास्त करके युवराज एडवर्ड ने अपने पिता को बन्दीगृह से मुक्त किया और इस प्रकार हेनरी तृतीय अब फिर राज्य करने लगा। परन्तु मुक्त होने के थोड़े ही वर्ष बाद वह परलोक सिधारा और युवराज एडवर्ड "एडवर्ड प्रथम" (Edward I) के नाम से राजा हो गया।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन १२१६ १२७२—हेनरी तृतीय।
,, १२५८—आक्सफ़ोर्ड की शासनप्रणाली।
,, १२६४—ल्यूस का युद्ध।
,, १२६५—साइमन की पार्लिमेंट।
,, १२६५—साइमन की पराजय तथा मृत्यु।

—

छठा परिच्छेद

एडवर्ड प्रथम तथा "आदर्श पार्लिमेंट"

एडवर्ड प्रथम (१२७२—१३०७)—एडवर्ड प्रथम वीर योद्धा तथा योग्य राजनीतिज्ञ था। वह सत्यवादी था और उसे इस बात का गौरव था कि मैंने अपने वचन के विरुद्ध कभी कोई कार्य नहीं किया। उसी के राज्यकाल में पहली बार वेल्ज़ तथा स्काटलैंड को जीतकर इँगलैंड के राज्य में मिला लेने की चेष्टा की गई। अपनी योग्यता तथा वीरता के कारण वह प्लैंटेजनेट राजवंश का सर्वश्रेष्ठ राजा (The Greatest of the Plantagenets) माना जाता है।

एडवर्ड प्रथम ने "युवराज" होने ही के काल में अपनी वीरता का परिचय दे दिया था। उसी ने साइमन को परास्त करके अपने पिता हेनरी तृतीय को बन्दीगृह से मुक्त किया था। लोग समझते थे कि साइमन की मृत्यु के पश्चात् उसका जनता के प्रतिनिधियों को पार्लिमेंट में सम्मिलित करने का कार्य स्थायी नहीं रह सकेगा। परन्तु यद्यपि एडवर्ड प्रथम साइमन का शत्रु था; किन्तु वह उसकी नीति को पसन्द करता था और उसने अपने राज्यकाल में साइमन के राजनीतिक सिद्धान्तों के आधार पर पार्लिमेंट के रूप को सदा के लिए निश्चित कर दिया।

"आदर्श पार्लिमेंट" (१२९५)—एडवर्ड प्रथम को स्काटलैंड तथा फ्रांस से युद्ध करने के लिए प्रायः धन की आवश्यकता पड़ती रहती थी। गूढ़ राजनीतिज्ञ होने के कारण उसने समझ लिया कि विदेशी युद्ध में सहायता लेने तथा अपनी शक्ति को स्थायी बनाने के लिए उसको प्रजा की सब श्रेणियों की सहानुभूति प्राप्त करना बहुत उपयोगी

होगा। यही सोचकर एडवर्ड प्रथम ने सन् १२९५ में पार्लिमेंट की एक बैठक की जो इतिहास में "आदर्श पार्लिमेंट" (Model Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि भविष्य की पार्लिमेंट इसी नमूने पर बनाई गई। इस पार्लिमेंट में बड़े भूमिपति, बड़े पादरी, प्रत्येक प्रान्त तथा नगर से दो-दो प्रतिनिधि और छोटे पादरियों के प्रतिनिधि बुलाये गये थे। इस प्रकार यह पहली पार्लिमेंट थी जिसमें देश की सब श्रेणियों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

यह पार्लिमेंट साइमन की बुलाई हुई सन् १२६५ वाली पार्लिमेंट से भी बढ़कर रही। साइमन ने छोटे पादरियों के प्रतिनिधियों को नहीं बुलाया था और कई ऐसे प्रान्तों तथा नगरों को भी छोड़ दिया था जहाँ के निवासी उसकी नीति के विरोधी थे। परन्तु एडवर्ड प्रथम की "आदर्श पार्लिमेंट" पूर्णतया जाति की प्रतिनिधि सभा थी और राजा के निमन्त्रण-द्वारा एकत्र होने के कारण उसका महत्त्व भी अधिक था।

"आदर्श पार्लिमेंट" में साइमन की पार्लिमेंट की भाँति सब श्रेणियों के सदस्य एक ही स्थान पर सम्मिलित हुए थे। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि कुछ समय बाद छोटे पादरियों ने अपने प्रतिनिधि भेजना बन्द कर दिया और शेष पार्लिमेंट धीरे-धीरे दो भागों में विभक्त हो गई; एक हाउस आफ लार्ड्स (House of Lords) जिसके सदस्य बड़े पादरी तथा बड़े भूमिपति होते थे और दूसरा हाउस आफ कामन्स (House of Commons) जिसमें प्रान्तों तथा नगरों के प्रतिनिधि सम्मिलित होने लगे।

"महास्वतंत्रता-पत्र" का पुनः प्रकाशित होना (Confirmatio Cartarum)—राजा जॉन के "महास्वतन्त्रता-पत्र" (Magna Charta) में देशवासियों के कुछ अधिकारों को निश्चित कर दिया गया था, परन्तु उसके बाद भी कई बार उसकी धाराओं का उल्लंघन किया गया था। इसलिए भूमिपतियों ने अनुरोध किया कि उसको फिर से राजा की ओर से प्रकाशित किया जाय। सन् १२९७

में एडवर्ड प्रथम ने भी ऐसा करने की स्वीकृति दे दी और जॉन का "महास्वतन्त्रता-पत्र" एक राजनियम के रूप में पुनः प्रकाशित किया गया। इस बार उसमें कुछ नई धारायें भी जोड़ दी गईं। जॉन ने केवल यह वचन दिया था कि राजा बिना पार्लिमेंट की स्वीकृति के भूमिपतियों से कोई नया कर वसूल नहीं करेगा। इस बार इस सिद्धान्त को और भी स्पष्ट कर दिया गया कि राजा को प्रत्येक नये कर के लिए (चाहे उसका भूमिपतियों से सम्बन्ध हो चाहे अन्य प्रजा से) पार्लिमेंट की स्वीकृति लेना आवश्यक है। इस प्रकार पार्लिमेंट को बहुत बड़ा अधिकार मिल गया क्योंकि राज्य के संचालन के लिए राजा को प्रायः नये करों की आवश्यकता पड़ती रहती है।

जॉन के "महास्वतन्त्रता-पत्र" पर हस्ताक्षर करने तथा एडवर्ड प्रथम के उसके पुनः प्रकाशित होने की स्वीकृति देने, इन दोनों घटनाओं में ८२ वर्ष का अन्तर है। यह ८२ वर्ष का काल पार्लिमेंट के उत्थान के इतिहास में बड़ा महत्त्वपूर्ण माना जाता है; क्योंकि इसी काल में पार्लिमेंट का रूप निश्चित हुआ तथा उसके वर्तमान अधिकारों की नींव पड़ी।

एडवर्ड प्रथम के दो महत्त्वपूर्ण राजनियम—पार्लिमेंट में साधारण जनता के प्रतिनिधियों का स्थान स्थायी करने के अतिरिक्त एडवर्ड प्रथम ने बहुत-से उत्तम राजनियम भी बनाये, जिनमें दो विशेषतया महत्त्वपूर्ण हैं। (१) उसने यह आज्ञा दे दी कि बिना राजा की स्वीकृति के भूमि को इस प्रकार बेचा या दान न दिया जाय कि वह चर्च तथा अन्य किसी सस्था के हाथ में पहुँच जाय। इसकी इसलिए आवश्यकता पड़ी कि चर्च तथा अन्य संस्थाओं की भूमि एक तरह से "मुर्दा हाथों" (Mortmain) में पहुँच जाती थी क्योंकि उससे राजा को धन तथा सेना इत्यादि की सहायता मिलने की कोई आशा नहीं रहती थी। (२) उसने यह नियम बना दिया कि यदि कोई भूमिपति चाहे तो यह वसीयत कर सके कि उसकी भूमि कुटुम्ब के केवल सबसे बड़े उत्तराधिकारी ही को मिले।

ऐसी भूमि Entail कहलाती थी। इस नियम से बहुत-से भूमिपतियों ने लाभ उठाया क्योंकि इससे उनकी भूमि के, भिन्न-भिन्न उत्तराधिकारियों में बँटकर, छोटे-छोटे भाग हो जाने का डर नहीं रहता था। सबसे बड़े उत्तराधिकारी को सारी भूमि मिल जाती थी, जिससे वह अपने कुटुम्ब की मर्यादा तथा प्रतिष्ठा को स्थायी रख सकता था। इससे एक लाभ यह भी हुआ कि बड़े उत्तराधिकारी के अतिरिक्त कुटुम्ब के अन्य लोगों को अपनी जीविका के लिए कोई दूसरा धन्धा करना पड़ता था। इस प्रकार एक ही कुटुम्ब में कोई भूमिपति और कोई साधारण उद्यम करने-वाले होने लगे। इससे इँगलैंड में ऐसे अनुचित भाव उत्पन्न नहीं हुए कि भूमिपति अपने को साधारण जनता से पृथक् समझ बैठें या उनके प्रति किसी प्रकार की घृणा करने लगें। इससे इँगलैंड में समस्त प्रजा की समता (Equality of all citizens) के सिद्धान्त के फैलने में बड़ी आसानी हुई।

मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १२७२—एडवर्ड प्रथम का राज्याभिषेक।
,, १२७९—Mortmain का नियम।
,, १२९०—Entail का नियम।
,, १२९५—"आदर्श पार्लिमेंट" (Model Parliament)।
,, १२९७—"महास्वतन्त्रता-पत्र" का पुनः प्रकाशित होना (Confirmatio Cartarum)।

सातवाँ परिच्छेद

स्काटलैंड की विजय की निष्फल चेष्टा

(एडवर्ड प्रथम और एडवर्ड द्वितीय)

पार्लिमेंट का रूप निश्चित करने के अतिरिक्त एडवर्ड प्रथम के राज्यकाल में वेल्ज़ तथा स्काटलैंड को भी विजय करने की चेष्टा की गई, जिसका अब हम वर्णन शुरू करते हैं।

वेल्ज़ की विजय—वेल्ज पहाड़ी देश है और उसके निवासी अधिकतर प्राचीन ब्रिटनों (Britons) की सन्तान हैं। अभी तक इँगलैण्ड के किसी राजा ने उसको पूरी तरह विजय करने की चेष्टा नहीं की थी। "विजयी विलियम" ने केवल इतना किया था कि अपने कुछ सर्दारों को, जो Lords Marcher कहलाते थे, वेल्ज़ की सीमा पर भेज दिया था और उनको यह लालच दिया था कि जो कुछ भूमि वे विजय करेंगे वह उन्हीं की रहेगी। इस समय वेल्ज़ का राजा ल्यूलिन (Prince Llewlyn) बड़ा शक्तिशाली हो गया था और उसने अँगरेज़ी भूमिपतियों को इँगलैंड के राजा के विरुद्ध भड़काना भी शुरू कर दिया था। यह देखकर एडवर्ड प्रथम ने भारी सेना लेकर वेल्ज़ पर चढ़ाई की। पहले ही युद्ध मे ल्यूलिन की शक्ति क्षीण हो गई और दूसरे युद्ध में वह तथा उसका भाई डेविड दोनों मारे गये। सन् १२८२ में एडवर्ड प्रथम ने वेल्ज़ को अपने राज्य में मिला लिया और इँगलैंड की भाँति उसको भी शासनकार्य के लिए प्रान्तों (Shires) में विभक्त कर दिया। वेल्ज़ ही के एक गढ़ में एडवर्ड प्रथम के बड़े पुत्र का जन्म हुआ, जिसको उसने प्रिन्स आफ़ वेल्ज़ (Prince of Wales) की

उपाधि दी। उसी समय से यह प्रथा चली आती है कि इँगलैंड के राजा का सबसे बड़ा पुत्र अर्थात् युवराज प्रिन्स आफ़ वेल्ज़ कहलाता है।

इस प्रकार वेल्ज़ इँगलैंड के अधीन हो गया, परन्तु लगभग ढाई सौ वर्ष तक वह शासनकार्य में इँगलैंड से पृथक् ही माना जाता था। आगे चलकर सन् १५३६ में हेनरी अष्टम (Henry VIII) ने वेल्ज़ को पूर्णतया इँगलैंड में मिला लिया और उस समय से वेल्ज़ के प्रतिनिधियों को पार्लिमेंट में भी स्थान मिल गया।

एडवर्ड प्रथम तथा स्काटलैंड के राजसिंहासन का प्रश्न— वेल्ज़ विजय करने के थोड़े ही दिन बाद एडवर्ड प्रथम को स्काटलैंड को भी विजय करने का एक सुन्दर अवसर मिल गया। सन् १२८९ में स्काटलैंड के राजा एलेक्ज़ेन्डर तृतीय (Alexander III) की मृत्यु हुई। उसकी उत्तराधिकारिणी उसकी धेवती मार्गेरेट थी, जो नार्वे के राजा की लड़की थी। अपने नाना की मृत्यु का समाचार पाकर मार्गेरेट स्काटलैंड को रवाना हुई, परन्तु मार्ग ही में उसकी भी मृत्यु हो गई। इसके बाद दूर के नातेदारों के अतिरिक्त स्काटलैंड के राजसिंहासन का कोई उत्तराधिकारी नहीं रहा। बहुत-से नातेदारों ने अपना उत्तराधिकार जतलाना शुरू किया और ऐसा प्रतीत होने लगा कि स्काटलैंड में एक भयङ्कर गृह-युद्ध होगा।

अंत में सब नातेदारों ने स्काटलैंड के राजसिंहासन का उत्तराधिकार निश्चित करने के लिए एडवर्ड प्रथम को पंच बनाया। एडवर्ड ने यह शर्त ठहराई कि इस प्रश्न का निबटारा करने के पहले मेरा स्काटलैंड पर आधिपत्य स्वीकार कर लिया जाय। स्काटलैंड में गृह-युद्ध की संभावना को रोकने के लिए एडवर्ड प्रथम की शर्त स्वीकार कर ली गई और उसके सभापतित्व में नार्हम (Norham) के स्थान पर ८० स्काट और २० अँगरेज़ों की एक सभा इस प्रश्न का विचार करने के लिए सम्मिलित हुई। सब नातेदारों में दो अर्थात् जॉन बेलियल (John Balliol) और राबर्ट ब्रूस (Robert Bruce) का उत्तराधिकार विशेषतया दृढ़ था।

एडवर्ड प्रथम ने जॉन बेलियल के पक्ष में निर्णय किया। तदनुसार जॉन बेलियल ही स्काटलैंड का राजा बनाया गया और ठहरी हुई शर्त के अनुसार उसने एडवर्ड प्रथम का आधिपत्य स्वीकार करने की शपथ खाई।

स्काटलैंड की विजय—इँगलैंड के राजा कई अवसरों पर स्काटलैंड पर अपना आधिपत्य स्थापित कर चुके थे, परन्तु अब तक वह नाममात्र ही को माना जाता था। परन्तु एडवर्ड प्रथम केवल नाममात्र के आधिपत्य ही से सन्तुष्ट नहीं हो सकता था। उसका कहना था कि अधिष्ठाता होने की हैसियत से उसको स्काटलैंड के न्यायालयों की अंतिम अपीलें सुनने का अधिकार है। जॉन बेलियल तथा स्काटलैंड के निवासी इस अधिकार के मानने को तैयार नहीं हुए और इस प्रश्न पर खूब वाद-विवाद चला। इसी बीच में बेलियल ने फ्रांस के राजा से संधि कर ली, जो उस समय इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध कर रहा था। अब तो एडवर्ड प्रथम के क्रोध की सीमा नहीं रही और उसने फ़ौरन स्काटलैंड पर चढ़ाई कर दी। बेलियल की सेना डन्बर (Dunbar) के युद्ध में परास्त हुई और एडवर्ड प्रथम ने उसे राजच्युत करके स्काटलैंड पर स्वयं अपना अधिकार जमा लिया।

इस प्रकार स्काटलैंड में अब एडवर्ड प्रथम का राज्य स्थापित हो गया और उसने अपनी ओर से वहाँ शासन करने के लिए कर्मचारी नियुक्त करके भेज दिये। इसी अवसर पर एडवर्ड स्काटलैंड के राजसिंहासन का वह शुभ पत्थर ले आया जिसके विषय में यह विश्वास किया जाता था कि साधु जेकब (Jacob) को जिस समय आकाशवाणी हुई थी उस समय वह इसी पत्थर का तकिया लगाये हुए था। एडवर्ड प्रथम ने इँगलैंड में लाकर इस पत्थर को अपने राजसिंहासन (Coronation Chair) में लगवा दिया। यह पत्थरवाला* सिंहासन आज तक

* इस पत्थर के विषय में यह भविष्यवाणी थी कि जहाँ कहीं यह होगा वहाँ स्काटलैंड के राजा राज्य करेंगे। तीन शताब्दी बाद सन् १६०३,

वेस्टमिन्स्टर एबे (Westminster Abbey) में रखा हुआ है और उसी पर बैठकर इँगलैंड के राजाओं का राज्याभिषेक संस्कार होता है।

स्काटलैंड की स्वतन्त्रता का युद्ध—वालेस—स्काटलैंडवालों ने इँगलैंड के अधीन हो जाने में अपनी बड़ी मानहानि समझी और विलियम वालेस (William Wallace) नामक एक स्काट सर्दार ने स्काट जाति का नेता बनकर अँगरेज़ी सेना को देश से निकालना शुरू किया। वालेस को इस कार्य्य में बड़ी सफलता हुई और स्काट जाति ने उसे "स्काटलैंड का संरक्षक" (Protector of Scotland) उद्घोषित कर दिया। यह समाचार पाकर एडवर्ड प्रथम ने अपने नये राज्य की रक्षा के लिए दूसरी बार स्काटलैंड पर चढ़ाई की। फालकिक के युद्ध (Battle of Falkirk) में एडवर्ड प्रथम ने वालेस को परास्त किया और इस प्रकार स्काटलैंड में पुनः अँगरेज़ी राज्य स्थापित हो गया। वालेस भाग निकला, परन्तु थोड़े समय बाद उसी के एक साथी ने उसे एडवर्ड प्रथम के हाथों पकड़वा दिया। एडवर्ड ने उसे विद्रोही ठहराकर प्राणदंड दिया और उसके मृतक शरीर के चार टुकड़े करवाकर स्काटलैंड के चार मुख्य गढ़ों के फाटक पर लगवा दिये, जिससे स्काट जाति फिर उसके साथ युद्ध करने का साहस न कर सके।

राबर्ट ब्रूस—परन्तु एडवर्ड को यह ध्यान नहीं था कि समस्त स्काट जाति अपने जातीय मान की रक्षा के हेतु अपने देश को अँगरेज़ी राज्य से स्वतंत्र करने के लिए पूर्णतया तत्पर हो गई है। एडवर्ड से स्काटलैंड-निवासी घृणा करने लगे थे, क्योंकि वे समझते थे कि उसने उनके राज-सिंहासन के प्रश्न के पंच बनने का अनुचित लाभ उठाकर स्काटलैंड में अपना राज्य स्थापित करने का अवसर निकाल लिया था। शीघ्र ही स्काट जाति की स्वतंत्रता का एक दूसरा नेता उठ खड़ा हुआ। यह राबर्ट

में जब स्काटलैंड का राजा जेम्स षष्ठ "जेम्स प्रथम" के नाम से इँगलैंड के राजसिंहासन पर बैठा, उस समय यह भविष्यवाणी पूरी हुई।

ब्रूस (Robert Bruce) था, जिसके दादा का भी नाम ब्रूस ही था जो नार्हम की सभा में, एडवर्ड प्रथम के सम्मुख, स्काटलैंड के सिंहासन के अन्य उत्तराधिकारियों के साथ उपस्थित हुआ था। ब्रूस को समस्त स्काट जाति ने अपना नेता मान लिया और स्कोन (Scone) के स्थान पर उसका राज्याभिषेक भी कर डाला। ऐसी परिस्थिति में एडवर्ड प्रथम ने तीसरी बार स्काटलैंड पर चढ़ाई की, परन्तु उसकी सीमा तक पहुँचने से पहले ही उसकी मृत्यु हो गई। मृत्यु-शय्या पर उसने युवराज को वसीयत की कि ब्रूस को परास्त करके स्काटलैंड को पूर्णतया विजय किये बिना दम न लेना। एडवर्ड प्रथम की समाधि पर लिखा हुआ है "यही राजा एडवर्ड प्रथम है जिसके नाम से स्काट थर्राते थे।" परन्तु समस्त जाति का विरोध होते हुए देश में राज्य स्थापित कर लेना बड़ा टेढ़ा काम है और एडवर्ड प्रथम यदि अधिक काल तक जीवित भी रहता तब भी उसकी इच्छा की पूर्ति की बहुत ही कम सम्भावना थी।

एडवर्ड द्वितीय तथा बेनकबर्न का युद्ध—सन् १३०७ में एडवर्ड प्रथम की मृत्यु होने पर युवराज "एडवर्ड द्वितीय" (Edward II) के नाम से राजा हुआ। एडवर्ड द्वितीय बड़ा कायर था और जिस कार्य्य को उसका वीर पिता भी अपूर्ण ही छोड़ गया था वह उससे कदापि पूरा नहीं हो सकता था। राबर्ट ब्रूस ने धीरे-धीरे स्काटलैंड के सब गढ़ों से अँगरेज़ी सेना को निकाल बाहर किया। अंत में केवल स्टर्लिंग (Stirling) के गढ़ में अँगरेज़ी सेना रह गई थी और इस पर भी ब्रूस ने घेरा डाल रखा था। यह समाचार पाकर एडवर्ड द्वितीय सेना लेकर स्काटलैंड को रवाना हुआ और २४ जून सन् १३१४ को बेनकबर्न (Bannockburn) नदी के तट पर अँगरेज़ी तथा स्काट सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। ब्रूस ने अँगरेज़ों को पूर्णतया परास्त किया और स्वयं एडवर्ड द्वितीय सबसे पहले रणक्षेत्र से भाग निकला। इस प्रकार स्काटलैंड "स्वतंत्रता के युद्ध" (War of Independence) में सफल हुआ और राबर्ट ब्रूस देश का जातीय राजा हो गया। आज तक

स्काटलैंड में वालेस तथा ब्रूस के नामों का बहुत आदर है और ब्रूस "स्काट जाति का संस्थापक" माना जाता है।
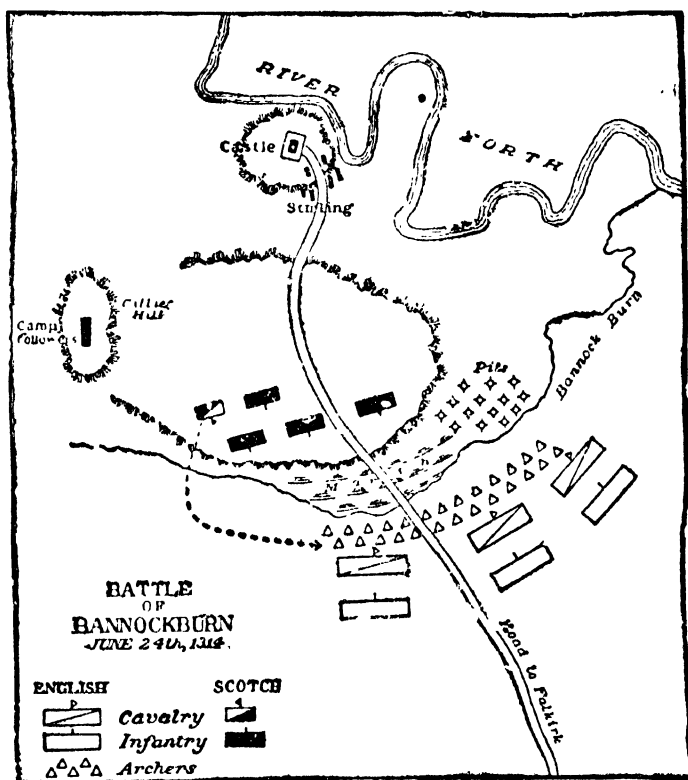
बेनकबर्न का युद्ध

इसके बाद भी एडवर्ड द्वितीय ने कई बार ब्रूस को परास्त करने की चेष्टा की, परन्तु उसे सफलता प्राप्त नहीं हुई। अन्त में सन् १३२८ में नार्थेम्पटन की सन्धि (Treaty of Northampton) के अनुसार स्काटलैंड की पूर्ण स्वतंत्रता निश्चित रूप से स्वीकार कर ली

गई और इसके बाद से स्काॅटलैंड पर इँगलैंड का किसी प्रकार का आधिपत्य नहीं रहा।

एडवर्ड द्वितीय का राज्यच्युत होना तथा वध—स्काट जाति के हाथों परास्त होने के अतिरिक्त एडवर्ड द्वितीय शासन-कार्य में भी सर्वथा अयोग्य सिद्ध हुआ। वह नीच प्रकृति का था और सदा नीच लोगों ही की संगति में रहता था। गेव्सटन (Gaveston) नामक एक स्वार्थी दरबारी पर उसकी विशेष कृपा थी। भूमिपतियों ने मिलकर गेव्सटन को मरवा डाला परन्तु इसके बाद भी एडवर्ड द्वितीय की बुरी नीति में कोई सुधार नहीं हुआ। अन्त में तंग आकर स्वयं उसकी स्त्री आइज़ेबेला (Isabella) ने फ्रांस जाकर एडवर्ड द्वितीय को राज-सिंहासन से हटाने के लिए एक षड्यंत्र रचा। माॅटमर (Mortimer) नामक अपने एक मित्र की सहायता से आइज़ेबेला कुछ फ्रांसीसी सेना लेकर इँगलैंड में आ पहुँची। एडवर्ड द्वितीय का किसी ने साथ नहीं दिया और आइज़ेबेला तथा माॅटमर ने सुगमतापूर्वक पार्लिमेंट से उसके राज्यच्युत करने की स्वीकृति प्राप्त कर ली। एडवर्ड द्वितीय के पुत्र को, जिसकी अवस्था कुल पन्द्रह वर्ष की थी, "एडवर्ड तृतीय" (Edward III) के नाम से राजा बना दिया गया और शासन कार्य के लिए एक "संरक्षक सभा" (Council of Regency) नियत कर दी गई। राज्यच्युत होने के एक ही वर्ष बाद एडवर्ड द्वितीय को बर्कले नामक गढ़ में किसी ने मार डाला और इस प्रकार यह नीच तथा कायर राजा परलोक सिधारा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १२७२—१३०७—एडवर्ड प्रथम

„ १२८२—वेल्ज़ की विजय।

„ १२९२—एडवर्ड प्रथम के निर्णयानुसार जाॅन बेलियल का स्काटलैंड का राजा होना।

सन् १२९६—स्काटलैंड का एडवर्ड प्रथम के अधीन होना।
,, १२९८—वालेस तथा फ़ालकिर्क का युद्ध।
,, १३०६—राबर्ट ब्रूस का स्काटलैंड का राजा होना।
,, १३०७—१३२७—एडवर्ड द्वितीय।
,, १३१४—बेनकबर्न का युद्ध।
,, १३२८—नार्थेम्पटन की संधि तथा स्काटलैंड की स्वतन्त्रता का स्वीकृत होना।

आठवाँ परिच्छेद

प्लैंटेजनेट वंश के पिछले दो राजा

(एडवर्ड तृतीय और रिचर्ड द्वितीय)

(१) फ्रांस से शतवार्षिक युद्ध (प्रथम भाग)

एडवर्ड तृतीय (१३२७–१३७७)—राज्याभिषेक के समय एडवर्ड तृतीय की आयु केवल पन्द्रह वर्ष की थी। इसलिए शासन-कार्य्य के संचालन के लिए "संरक्षक-सभा" (Council of Regency) नियत कर दी गई थी। परन्तु वास्तव में राज्य का सब कार्य्य उसकी माता आइज़ेबेला (Isabella) तथा मार्टिमर (Mortimer) करते थे। "नार्थेम्पटन की संधि" (१३२८) भी, जिससे स्काटलैंड की पूर्ण स्वतंत्रता स्वीकार कर ली गई, इन्हीं दोनों के द्वारा हुई थी। इससे देश में ये दोनों बहुत बदनाम हो गये। तीन वर्ष बाद एडवर्ड तृतीय ने मार्टिमर को पकड़वाकर फाँसी दिलवा दी, आइज़ेबेला को बन्दीगृह भेजवा दिया और स्वयं राजकार्य्य सँभाल लिया।

फ्रांस से शतवार्षिक युद्ध—एडवर्ड तृतीय के राज्यकाल में फ्रांस से एक बहुत बड़ा युद्ध शुरू हुआ जो "शतवार्षिक युद्ध" (Hundred Years' War) के नाम से प्रसिद्ध है। बीच-बीच में कई बार यह युद्ध बंद भी हो जाता था, परन्तु सन् १३३४ से सन् १४५३ तक अर्थात् एक शताब्दी से कुछ अधिक काल तक, फ्रांस तथा इँगलैंड में बराबर शत्रुता बनी रही और दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाने की चेष्टा करते रहे।

पाठकों को याद होगा कि नार्मन विजय के समय से इँगलैंड के राजा फ्रांस के भी बहुत-से भाग के स्वामी होते थे, परन्तु राजा जॉन के राज्य-काल में फ्रांस का सब भाग उनके हाथ से निकल गया था। उस समय से अँगरेज़ी राजा फ्रांस को पुनः विजय करने की बराबर अभिलाषा रखते थे। इस समय फ्रांस के विरुद्ध युद्ध करने के अन्य विशेष कारण भी उपस्थित हो गये थे। फ्रांसीसियों ने "स्काटलैंड की स्वतन्त्रता के युद्ध" में अँगरेज़ों के विरुद्ध स्काटों को सहायता दी थी। इसके अति-रिक्त फ्रांसीसी फ़्लान्डर्स (Flanders) प्रान्त के निवासियों को बहुत सताते थे, जो उस काल में ऊनी माल के लिए प्रसिद्ध था और जहाँ इँगलैंड के बहुत-से कच्चे ऊन की खपत होती थी। इसी बीच में फ्रांस के राजसिंहासन का प्रश्न भी उपस्थित हो गया और एडवर्ड तृतीय ने भी उसके लिए अपना अधिकार जतलाना शुरू किया। एडवर्ड तृतीय की माता आइज़ेबेला फ्रांस के भूतपूर्व राजा फ़िलिप चतुर्थ (Philip IV) की पुत्री थी; अतः उसने कहा कि नाती होने के कारण, पुत्र की अनुपस्थिति में फ्रांस का राजसिंहासन मुझे मिलना चाहिए। परन्तु फ्रांस के नियमानुसार* कन्या की सन्तान को कोई अधिकार नहीं पहुँचता था, और इसलिए फ़िलिप चतुर्थ के भतीजे को फ़िलिप षष्ठ (Philip VI) के नाम से फ्रांस का राजा बना दिया गया। वास्तव में एडवर्ड तृतीय का फ्रांस के राजसिंहासन के लिए उत्तराधिकार बहुत कमज़ोर था, परन्तु इससे उसे फ्रांस के विरुद्ध युद्ध करने का अच्छा अवसर मिल गया। अपना उत्तराधिकार जतलाने के लिए उसने अपने राजचिह्न में फ्रांस के राजचिह्न को भी मिलाना शुरू कर दिया और उस समय से लेकर अठारहवीं शताब्दी में जार्ज तृतीय के समय

* यह नियम Salic Law कहलाता था और यह सेलियन जाति (Salians) का चलाया हुआ था जो पाँचवीं शताब्दी में फ्रांस में आकर बस गई थी।

तक इँगलैंड के राजा बराबर "फ़्रांस के राजा" की उपाधि ग्रहण करते रहे।

वंशावली नम्बर ५

एडवर्ड तृतीय का फ़्रांस के राजसिंहासन के लिए उत्तराधिकार

फ़िलिप तृतीय (फ़्रांस का राजा)

- फ़िलिप चतुर्थ (फ़्रांस का राजा)
  - आइज़ेबेला = एडवर्ड द्वितीय (इँगलैंड का राजा)
    - एडवर्ड तृतीय (इँगलैंड का राजा)
- राजकुमार चार्ल्स
  - फ़िलिप षष्ठ (फ़्रांस का राजा)
    - जॉन द्वितीय (फ़्रांस का राजा)
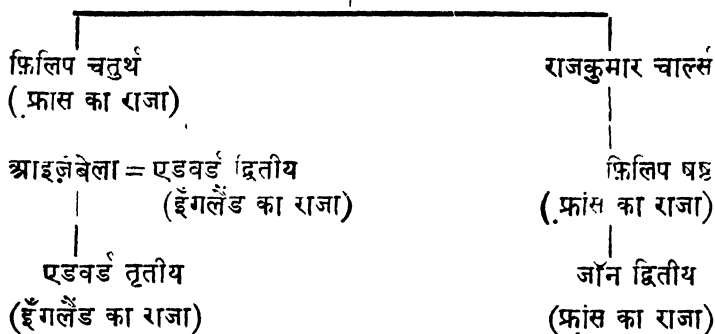
इस "शतवार्षिक युद्ध" में दो बार इँगलैंड की बहुत बड़ी विजय और दो बार बहुत बड़ी पराजय हुई। इस परिच्छेद में हम पहली विजय तथा पहली पराजय का वर्णन करेंगे। दूसरी विजय तथा दूसरी पराजय का लङ्कास्टर राजवश के सम्बन्ध में वर्णन किया जायगा।

नोट—फ़्रांस के नियमानुसार स्त्री-द्वारा कोई अधिकार नहीं पहुँचता था। इसलिए फ़िलिप षष्ठ के मुक़ाबले एडवर्ड तृतीय फ़्रांस के राज सिंहासन का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता था।

क्रेसी का युद्ध (१३४६)—सन् १३४६ में एडवर्ड तृतीय ने फ्रांस पर आक्रमण किया। उसके साथ उसका बड़ा पुत्र अर्थात् "युवराज" भी था जो अपने काले रंग के कवच के कारण ब्लैक प्रिन्स (Black Prince) के नाम से प्रसिद्ध है। क्रेसी (Crecy) के स्थान पर अँगरेज़ों तथा फ्रांसीसियों में घमासान युद्ध हुआ। अँगरेज़ी सेना संख्या में फ्रांसीसी सेना से कहीं कम थी, परन्तु अँगरेज़ी धनुर्धारी (English Archers) युद्ध-कला में बड़े निपुण थे। उनके बड़े धनुषों की डोरी केवल छाती तक ही नहीं, परन्तु कान तक खींची जाती थी और इसलिए उनके तीर बड़े वेग से जाते थे। फ्रांसीसी घुड़सवार इन सुशिक्षित धनुर्धारियों के सम्मुख नहीं ठहर सके और अँगरेज़ों की पूर्ण विजय हुई। लगभग १५०० फ्रांसीसी सर्दार और इससे दसगुन सैनिक युद्ध क्षेत्र में मारे गये; और अँगरेज़ों की ओर केवल दो सर्दारों और सौ सैनिकों की हानि हुई। इस युद्ध में ब्लैक प्रिन्स ने बड़ी योग्यता दिखाई और इस युवक योद्धा की शत्रुओं तक ने प्रशंसा की।

युवराज ब्लैक प्रिन्स

अगले वर्ष एडवर्ड तृतीय ने केले (Calais) का प्रसिद्ध गढ़ ले लिया, जो लगभग दो शताब्दी तक, अर्थात् रानी मेरी ट्यूडर के राज्य-काल तक, बराबर अँगरेज़ों ही के अधीन रहा।

पायटीयर्स का युद्ध (१३५६)—दस वर्ष पीछे अँगरेज़ों तथा फ्रांसीसियों में फिर दूसरा घमासान युद्ध हुआ। इस बीच में फ़िलिप षष्ठ की मृत्यु हो चुकी थी और इस समय जॉन द्वितीय (John II) फ्रांस का राजा था। इस बार युद्धक्षेत्र पायटीयर्स (Poitiers) का स्थान था। अँगरेज़ी सेना का सेनापति ब्लैक प्रिन्स था जो पिछले युद्ध ही में अपनी वीरता का परिचय दे चुका था। इस बार फिर अँगरेज़ों ही
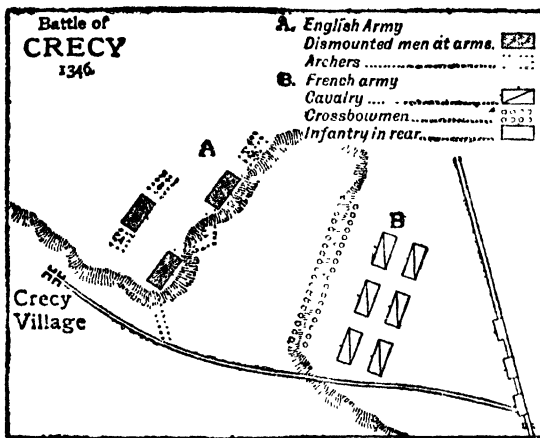
क्रेसी का युद्ध

की विजय हुई। लगभग दो हज़ार फ्रांसीसी युद्धक्षेत्र में पकड़ लिये गये और स्वयं फ्रांस का राजा जॉन द्वितीय अँगरेज़ों के हाथों क़ैद हो गया।

ब्रेटिग्नी की संधि (१३६०)—अपने राजा के क़ैद हो जाने के कारण फ्रांसीसियों को संधि की प्रार्थना करनी पड़ी। ब्रेटिग्नी की संधि (Treaty of Bretigny) के अनुसार धन के बदले राजा जॉन मुक्त किया गया। एडवर्ड तृतीय ने फ्रांस के राजसिंहासन के लिए अपना उत्तराधिकार जतलाना छोड़ दिया और उसके बदले उसको फ्रांस के उस भाग का राजा स्वीकार कर लिया गया, जिस पर उसने युद्ध-काल में अधिकार जमा लिया था। इस प्रकार एडवर्ड तृतीय फ्रांस के लगभग

एक तिहाई भाग का स्वामी हो गया और फ्रांस के कुछ प्रान्तों में पहले की तरह फिर अँगरेज़ी राज्य स्थापित हो गया। एडवर्ड तृतीय ने ब्लैक प्रिन्स को इस भाग पर शासन करने के लिए नियुक्त कर

ब्रेटिग्नी की संधि के समय अँगरेज़ी राज्य

दिया और "युवराज" ने बोरडो (Bordeaux) के स्थान को राजधानी बनाकर शासन-कार्य्य आरम्भ किया।

अँगरेज़ों की शक्ति का पतन—परन्तु अँगरेज़ अपनी नई विजय का अधिक काल तक लाभ नहीं उठा सके। फ्रांसीसियों ने अँगरेज़ी सेना की रसद नष्ट करने का प्रबन्ध शुरू किया और धीरे-धीरे अँगरेज़ बड़ी कठिनाई में पड़ गये। इसी बीच में, स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण, ब्लैक प्रिन्स इँगलैंड लौट आया और इस वीर योद्धा के हटते ही अँगरेज़ों का फ्रांस में ठहरना असम्भव हो गया। यह वह समय था जब इँगलैंड में "महामारी" (Black Death) फैली हुई थी और राजा के सम्बन्धी, शासनकार्य में शक्ति प्राप्त करने के लिए, आपस में झगड़ रहे थे। फ्रांसीसियों ने अवसर पाकर धीरे धीरे अँगरेज़ी सेना को निकालना शुरू किया और एडवर्ड तृतीय की मृत्यु के समय तक फ्रांस का जीता हुआ भाग फिर अँगरेज़ों के हाथ से निकल गया। केवल केले, बोरडो इत्यादि कुछ बन्दरगाह अँगरेज़ों के अधीन रह गये; क्योंकि समुद्रशक्ति में अभी तक अँगरेज़ बढ़े-चढ़े थे।

(२) "महामारी" तथा किसानों का विद्रोह

"महामारी" (The Black Death)—सन् १३४८ में इँगलैंड में एक बहुत बुरी बीमारी फैली, जो Black Death के नाम से प्रसिद्ध है। इस बीमारी में जगह-जगह फफोले पड़ जाते थे और तमाम शरीर काला हो जाता था। रोगी को ख़ून की क़ै होने लगती थी और दो दिन के भीतर ही उसकी मृत्यु हो जाती थी। इस "महामारी" के कारण इँगलैंड-निवासियों को एक वर्ष में अधिक घोर विपत्ति का सामना करना पड़ा और देश की जन-संख्या आधी रह गई। बहुत-से स्थानों में कुटुम्ब के कुटुम्ब नष्ट हो गये और कई स्थानों में एक भी मनुष्य जीवित नहीं बचा।

पूँजीपतियों तथा मज़दूरों का बखेड़ा—प्राचीन इँगलैंड में भूमिपति के प्रत्येक असामी (Serfs or Villeins) को सप्ताह में कुछ दिन अपने स्वामी के खेतों में काम करना होता था। परन्तु सिक्के का

रिवाज बढ़ने से भूमिपतियों ने अपने असामियों से सेवा के बदले नक़द धन लेना शुरू कर दिया था और इस धन से वे मज़दूरी देकर मज़दूर नौकर रख लेते थे। "महामारी" के कारण इँगलैंड में मज़दूरों की संख्या बहुत कम हो गई और इससे मज़दूरी भी बहुत बढ़ गई। ऐसी परिस्थिति में भूमिपतियों को बड़ी हानि होने लगी; क्योंकि उन्हें असामियों से तो उतना ही धन मिलता था, परन्तु अब उनको अपने खेतों में काम कराने के लिए मज़दूरी अधिक देनी पड़ती थी।

पार्लिमेंट में भूमिपतियों का बहुत ज़ोर था। उन्होंने पार्लिमेंट से बहुत-से नियम स्वीकृत कराये, जिनका यह आशय था कि मज़दूरी की दर उतनी ही रहे जितनी "महामारी" से पहले थी और जो मज़दूर उतनी मज़दूरी पर काम करने को तैयार न हों, उन्हें दंड दिया जाय। ये नियम "मज़दूरों के नियम" (Statutes of Labourers) कहलाते हैं और इँगलैंड के इतिहास में यह पहला अवसर है जब पूँजीपतियों और मज़दूरों में, मज़दूरी की दर के विषय में, बखेड़ा हुआ।

"किसानों का विद्रोह" (१३८१)—इन नये नियमों के कारण मज़दूरों में बड़ा असंतोष फैला। "महामारी" के कारण सब वस्तुओं के दाम बढ़ गये थे। और इसलिए पुरानी मज़दूरी की दर स्वीकार करने से उनका निर्वाह नहीं हो सकता था। इसी बीच में "शतवार्षिक युद्ध" के संचालन के लिए देश पर एक विशेष प्रकार का कर (Poll tax) लगाया गया। यह कर धनिक प्रजा के लिए भारी नहीं था, परन्तु बेचारे मज़दूर तथा किसान इसे देने में सर्वथा असमर्थ थे। दिन पर दिन अपनी आपत्ति बढ़ते देखकर खेत पर काम करनेवाले मज़दूरों ने वाट टायलर (Wat Taylor) नामक एक किसान के नेतृत्व में एक भयङ्कर विद्रोह खड़ा कर दिया, जो "किसानों का विद्रोह" (Peasant Revolt) कहलाता है। विद्रोहियों ने लन्दन पर चढ़ाई कर दी, केन्टबरी के बड़े पादरी को मार डाला, पटवारियों के

खाते जला दिये, वकीलों को मारना शुरू किया और कचहरियों में आग लगा दी।

इस समय इँगलैंड का राजा रिचर्ड द्वितीय (Richard II) था, जिसको एडवर्ड तृतीय की मृत्यु के पश्चात् राजसिंहासन मिला था और उसकी आयु कुल सोलह वर्ष की थी। रिचर्ड ने, अल्पायु होने पर भी, बड़े धैर्य से काम लिया और घोड़े पर सवार होकर वह स्वयं विद्रोहियों को शान्त करने के लिए रवाना हुआ। राजा के एक साथी ने वाट टायलर को बढ़-बढ़ कर बातें करते देखकर मार डाला। अपने नेता के मारे जाने पर विद्रोहियों में और भी अधिक जोश फैल गया, परन्तु रिचर्ड ने हाथ उठा कर फ़ौरन ही चिल्लाकर कहा, "घबराओ नहीं, अब से मैं तुम्हारा नेता हूँगा।" यह सुनकर विद्रोही कुछ शान्त हुए और रिचर्ड के यह वचन देने पर, कि मज़दूरों के दुःखों का उचित प्रबन्ध किया जायगा, सबने सन्तुष्ट होकर अपने-अपने घरों की राह ली।

परन्तु पार्लिमेंट ने राजा के वचन का पालन नहीं होने दिया। मज़दूरों के हित के लिए कुछ भी नहीं किया गया और विद्रोह के शान्त होते ही विद्रोहियों के मुख्य-मुख्य नेताओं को प्राणदण्ड की आज्ञा दी गई।

"किसानों के विद्रोह" का प्रभाव—धीरे-धीरे भूमिपतियों ने समझ लिया कि मज़दूरों को बाध्य करके उनसे ठीक काम नहीं लिया जा सकता। भूमिपतियों ने अब भेड़ पालने का उद्यम शुरू कर दिया जिसमें थोड़े से ही मज़दूरों से काम चल सकता है। उन्होंने अपनी भूमि पर भेड़ों के लिए चरागाह (Enclosures) बना लिये और इस प्रकार देश में ऊन बनाने का व्यापार खूब चल पड़ा। कृषि की ओर बहुत कम ध्यान रह गया और जिन भूमिपतियों के पास खेती की ज़मीन होती भी थी वे उसको किराये (Lease) पर उठा देते थे। इस प्रकार खेतों के मज़दूरों की कमी का प्रश्न स्वयं ही हल हो गया और कृषि के स्थान पर ऊन का धन्धा चल जाने से इँगलैंड के ग्रामों की दशा भी दूसरे ही ढंग की हो गई।

रिचर्ड द्वितीय तथा "किसानों का विद्रोह"

(३) लङ्कास्टर वंश द्वारा राज्यक्रान्ति

(THE LANCASTRIAN REVOLUTION)

रिचर्ड द्वितीय (१३७७–१३९९)—रिचर्ड द्वितीय (Richard II), जो एडवर्ड तृतीय की मृत्यु के पश्चात् इँगलैंड का राजा हुआ, "युवराज" ब्लैक प्रिन्स* (Black Prince) का पुत्र था। राज्याभिषेक के समय रिचर्ड द्वितीय की अवस्था कुल बारह वर्ष की थी। इसलिए शासनकार्य का संचालन एक "संरक्षक-सभा" द्वारा होता था, परन्तु इस काल में वास्तव में कुल अधिकार उसके चाचा जॉन आफ़ गांट (John of Gaunt) के हाथ में रहा, जो लङ्कास्टर प्रान्त का नवाब था। रिचर्ड द्वितीय केवल सोलह वर्ष का था जब उसने "किसानों के विद्रोह" (Peasant Revolt) को धैर्यपूर्वक शान्त किया था। इससे लोगों को आशा थी कि बड़ा होने पर वह योग्य शासक होगा, परन्तु बिलकुल इसका उलटा हुआ और बड़ा होने पर रिचर्ड अत्याचारी तथा निर्दयी हो गया। वह देश के नियमों का उल्लंघन करने लगा और थोड़े ही समय में प्रजा उससे तङ्ग आगई।

रिचर्ड द्वितीय का राज्यच्युत होना—जॉन आफ़ गांट की मृत्यु होने पर रिचर्ड द्वितीय ने उसके पुत्र हेनरी को अपने पिता की लंकास्टरवाली जायदाद का स्वामी नहीं बनने दिया। रिचर्ड ने हेनरी को देशनिकाला दे दिया और लंकास्टर की जायदाद को वह स्वयं दबा बैठा। कुछ काल तक हेनरी विदेश में घूमता फिरा। परन्तु अवसर पाकर वह थोड़ी सी सेना इकट्ठा करके इँगलैंड में आ पहुँचा और उसने यह घोषणा की कि मैं बलपूर्वक अपने पिता की लङ्कास्टरवाली जायदाद लेने आया

---

* ब्लैक प्रिन्स "युवराज" था परन्तु उसका अपने पिता, एडवर्ड तृतीय, से एक वर्ष पूर्व ही देहान्त हो चुका था; इस कारण उसे राजा होने का अवसर नहीं मिल सका।

हूँ, जिसका मैं नियमानुसार उत्तराधिकारी हूँ। इस अवसर पर जितने लोग रिचर्ड द्वितीय से बिगड़े हुए थे, सब हेनरी से जा मिले और शीघ्र ही रिचर्ड हेनरी के हाथों क़ैद हो गया। पार्लिमेंट ने व्यवस्था दे दी कि रिचर्ड, अत्याचारी होने के कारण, राज्यच्युत किया जाय और उसके स्थान पर हेनरी को "हेनरी चतुर्थ" (Henry IV) के नाम से राजा बनाया जाय। तदनुसार रिचर्ड को राजसिंहासन से हटना पड़ा और हेनरी केवल लंकास्टर ही की जायदाद का स्वामी नहीं, बल्कि समस्त इँगलैंड का राजा हो गया। हेनरी चतुर्थ के राज्याभिषेक के समय से लंकास्टर वंश (Lancastrians) का राज्य आरम्भ होता है।

पार्लिमेंट एडवर्ड द्वितीय को राज्यच्युत कर चुकी थी। अब यह दूसरा अवसर था जब पार्लिमेंट ने रिचर्ड द्वितीय को अत्याचारी होने के कारण राजसिंहासन से हटाया। इससे पता चलता है कि धीरे-धीरे पार्लिमेंट बड़ी शक्तिशाली संस्था बनती जा रही थी।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १३२७—१३७७—एडवर्ड तृतीय।
,, १३४६—क्रेसी का युद्ध।
,, १३४८—"महामारी" (Black Death)
,, १३५६—पायटीयर्स का युद्ध।
,, १३६०—ब्रेटिग्नी की संधि।
,, १३७७—१३९९—रिचर्ड द्वितीय।
,, १३८१—"किसानों का विद्रोह" (Peasant Revolt)
,, १३९९—लंकास्टर वंश द्वारा राज्यक्रान्ति।

नवाँ परिच्छेद

माध्यमिक इँगलैंड की सभ्यता

(१) चर्च की दशा तथा जॉन विक्लिफ़

माध्यमिक चर्च—माध्यमिक काल में इँगलैंड का चर्च एक जातीय संस्था नहीं कहा जा सकता। उस काल में अधिकतर ईसाई देशों का एक ही चर्च माना जाता था, जिसका अधिष्ठाता रोम का पोप होता था जिसे ईसाई लोग पृथ्वी पर यीशू मसीह का प्रतिनिधि समझते हैं। प्रत्येक देश के लिए अलग-अलग पादरी होते थे, परन्तु वे सब पोप ही की ओर से नियुक्त किये जाते थे। हम बतला चुके हैं कि इँगलैंड में आठवीं, नहीं और दसवीं शताब्दी में चर्च तथा राज्य का बड़ा घनिष्ठ सम्बन्ध था और चर्च के लोग ही प्रायः राज्य के भी प्रधान कर्मचारी हुआ करते थे। इसके बाद ग्यारहवीं शताब्दी में पादरियों ने चर्च को एक स्वतन्त्र संस्था बनाने की चेष्टा की, जिसके परिणामस्वरूप बारहवीं और तेरहवीं शताब्दी में चर्च और राज्य में पारस्परिक सम्बन्ध के विषय में ख़ूब झगड़ा चला। इस सम्बन्ध में बेकेट तथा हेनरी द्वितीय का झगड़ा बहुत प्रसिद्ध है। जिसका इस खंड के दूसरे परिच्छेद में वर्णन किया जा चुका है। बेकेट के वध के बाद चर्च और भी शक्तिशाली हो गया और उसकी स्वतंत्रता स्वीकार कर ली गई। इस प्रकार चर्च और राज्य के झगड़े में चर्च की पूर्ण विजय हुई।

"सफ़ेद" तथा "काले" भिक्षुक—तेरहवीं शताब्दी में लोगों को धर्म में रुचि दिलाने के लिए भिक्षुकों के दो नये संघ स्थापित किये गये। एक संघ "सफ़ेद भिक्षुकों" (Grey Friars) का था, जिसको सेंट फ्रांसिस (St. Francis) ने स्थापित किया था। इस संघवाले सफ़ेद वस्त्र पहनते और यह शपथ खाते थे कि हम भूमि या अन्य सम्पत्ति एकत्र नहीं करेंगे और अपना जीवन ग़रीबों तथा अपाहिजों की सेवा में

व्यतीत करेंगे। दूसरा संघ "काले भिक्षुकों" (Black Friars) का था, जिसकी स्थापना सेंट डोमिनिक (St. Dominic) द्वारा हुई थी। इस दूसरे सङ्घवाले काले वस्त्र पहनते और विशेषतया धर्मप्रचार की ओर ध्यान देते थे।

कुछ दिनों तक इन सफ़ेद तथा काले भिक्षुकों ने बड़ा अच्छा काम किया; परन्तु धीरे-धीरे इन लोगों ने अपने संघों के उच्च आदर्श को भुला दिया और उनमें तरह-तरह के दोष फैलने लगे। कुछ काल के बाद उनकी ऐसी हीन दशा हो गई कि भिक्षुक शब्द का अर्थ "बेकार तथा आलसी भिखारी" माना जाने लगा।

चौदहवीं शताब्दी का पहनावा

चौदहवीं शताब्दी में चर्च के दोष—चौदहवीं शताब्दी तक पहुँचते-पहुँचते केवल भिक्षुकों में ही नहीं बल्कि समस्त चर्च में बहुत-से

दोष फैलने लगे। पादरियों ने, जिनके जीवन का लक्ष्य स्वार्थत्याग हुआ करता था, अब सांसारिक भोग-विलास की सामग्री एकत्र करना आरम्भ कर दिया। अब तक पादरियों का बड़ा मान होता था, परन्तु उनका जीवन दूषित हो जाने तथा उनके अपने कर्तव्य से पतित हो जाने के कारण उनकी प्रतिष्ठा धीरे-धीरे कम होने लगी।

स्वयं पोप का जीवन इतना सांसारिक हो गया कि उसमें और इटेली के राजकुमारों में कोई अन्तर ही नहीं प्रतीत होता था। पोप के कोष के लिए समस्त ईसाई देशों से, धर्म-कर (Tithes) के रूप में, रुपया भेजा जाता था। अपने को धनवान् बनाने के लिए पोप लोग, अब बिलकुल स्वार्थी राजा की भाँति, ईसाइयों से बुरी तरह रुपया चूसने लगे थे। पोप कुछ दिन तक रोम छोड़कर फ्रांस के एविगनन (Avignon) नगर में रहे। यह इँगलैंड और फ्रांस के शतवार्षिक युद्ध का समय था और इस कारण इँगलैंड-निवासी पोप को अपने शत्रुओं का समर्थक समझने लगे। एडवर्ड तृतीय के राज्यकाल में अँगरेज़ों की निगाह में पोप का महत्त्व इतना गिर गया था कि उसके विरुद्ध कई नियम बनाये गये। एक नियम (Statute of Provisors) का यह आशय था कि पोप के नियुक्त किये हुए पादरियों को तब तक पद न दिया जाय जब तब उनको इँगलैंड का राजा स्वीकार न कर ले। दूसरे नियम (Statute of Praemunire) का यह आशय था कि इँगलैंड की अपील पोप के दर्बार में तथा किसी अन्य विदेशी न्यायालय में न भेजी जायँ।

विक्लिफ़ तथा चर्च के दोषों के विरुद्ध पहली आवाज़—चर्च के दोषों को जनता पर प्रकाशित करने तथा पोप के प्रति अश्रद्धा प्रकट करने का काम सबसे पहले आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के एक अध्यापक जॉन विक्लिफ़ (John Wycliffe) ने किया। विक्लिफ़ केवल बाइबिल ही को प्रमाण मानता था और जिन रीतियों तथा सिद्धान्तों का उल्लेख बाइबिल में नहीं मिलता था उनको वह ईसाई-मत का अंग मानने के लिए तैयार नहीं था। उसने ईसाइयों

के कई प्रचलित विश्वासों का विरोध किया और साफ़ कह दिया कि ऐसे विश्वासों का आधार मूर्खता तथा अन्ध-श्रद्धा के अतिरिक्त कुछ नहीं हो सकता। वह पहला विद्वान् था जिसने बाइबिल का अँगरेज़ी भाषा में अनुवाद किया। इस अनुवाद से विकलिफ़ का यह आशय था कि साधारण मनुष्य भी अपने धर्म की पुस्तक को पढ़कर अपना स्वतन्त्र मत बना सकें और स्वार्थी पादरियों के धोखे से बचे रहें। अपने विचारों को फैलाने के लिए विकलिफ़ ने एक नई संस्था खोली जो "ग़रीब पादरियों का संघ" (Order of the Poor Priests) के नाम से प्रसिद्ध है। अन्य पादरी लोग विकलिफ़ के अनुयायियों को Lollards अर्थात् "व्यर्थ बकवादी" कहकर चिढ़ाया करते थे और धीरे-धीरे उनका यही नाम प्रचलित भी हो गया।

जॉन विकलिफ़

विकलिफ़ ने बहुत कुछ वही करने की चेष्टा की थी जो आगे चलकर "धर्म-सुधार" (Reformation) के काल में हुआ। इसी लिए वह इतिहास में "The Morning Star of the Reformation" के नाम से प्रसिद्ध है।

विकलिफ़ के प्रचार की विफलता—विकलिफ़ के अनुयायियों अर्थात् लोलर्ड्स की संख्या पहले तो काफ़ी हो गई और रिचर्ड द्वितीय

के राज्यकाल में उनका काफ़ी ज़ोर रहा। परन्तु लंकास्टर-वंश के राजाओं ने (जो चर्च की सहायता से राज्य पाने के कारण चर्च से मित्रता रखना चाहते थे) लोलर्ड्स को दबाने के लिए तरह-तरह के नियम बनाये। यहाँ तक हुआ कि उसके एक दो नेता जीवित जला दिये गये। परिणाम यह हुआ कि उनकी संख्या दिन पर दिन कम होने लगी और थोड़े ही दिन में इस दल का बिलकुल अन्त हो गया।

इस प्रकार विक्लिफ़ का प्रचार स्थायी नहीं हो सका और उसका चर्च को सुधारने का प्रयत्न निष्फल ही रहा। इस विफलता का सबसे बड़ा कारण यह था कि देश में अभी विद्या का बड़ा अभाव था और विद्या के प्रकाश के बिना अन्ध विश्वासों का स्थायी रूप से हट जाना कभी सम्भव नहीं होता।

(२) पार्लिमेंट का उत्थान

पार्लिमेंट का उत्थान—पार्लिमेंट के उत्थान को माध्यमिक काल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना माना जाता है। पार्लिमेंट के प्राचीन रूप अर्थात् आंग्ल-सेक्सन काल की विटान (Witan) और नार्मन काल की ग्रेट काउंसिल (Great Council) का हम पहले ही वर्णन कर चुके हैं। माध्यमिक काल में बड़े भूमिपति ही देश के नेता होते थे और उन्हीं के आन्दोलन के द्वारा पार्लिमेंट ने राजाओं से लड़कर अपने अधिकार प्राप्त किये, पार्लिमेंट के उत्थान का इतिहास वास्तव में राजा जान के "महा स्वतन्त्रता-पत्र" (John's Magna Charta) के समय से आरंभ होता है, जिसमें राज-करों के लिए पार्लिमेंट की स्वीकृति के सिद्धान्त का पहली बार उल्लेख किया गया। इसके बाद हेनरी तृतीय के राज्य-काल में साइमन डी मांटफ़ोर्ड (Simon De Montford) द्वारा जनता के प्रतिनिधियों का पहली बार पार्लिमेंट में प्रवेश हुआ और इसके तीस वर्ष बाद एडवर्ड प्रथम ने "आदर्श पार्लिमेंट" (Model Parliament) की बैठक करके साइमन की प्रणाली को पूर्णतया स्वीकृत कर

लिया और पार्लिमेंट के रूप को सदा के लिए निश्चित कर दिया। "आदर्श पार्लिमेंट" में भूमिपति, पादरी तथा साधारण प्रतिनिधि सब एक ही स्थान पर सम्मिलित हुए थे, परन्तु कुछ समय बाद पार्लिमेंट दो सभाओं में विभक्त हो गई—एक हाउस आफ़ लार्ड्स (House of Lords) जिसके सदस्य केवल बड़े भूमिपति तथा बड़े पादरी हो सकते थे और दूसरी हाउस आफ़ कामन्स (House of Commons) जिसमें साधारण जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते थे* ।

पन्द्रहवीं शताब्दी में पार्लिमेंट के अधिकार—माध्यमिक काल में पार्लिमेंट ने कितनी शक्ति प्राप्त कर ली थी, इसका पाठकों को अनुमान कराने के लिए हम पन्द्रहवीं शताब्दी में पार्लिमेंट के अधिकारों का उल्लेख कर देना आवश्यक समझते हैं। इस काल में पार्लिमेंट में प्रतिनिधि भेजना एक बखेड़े की बात समझी जाती थी, क्योंकि प्रतिनिधियों के आने-जाने के व्यय का भार उनके निर्वाचन-स्थान (Constituency) पर ही पड़ता था। अभी देशवासियों में यह भाव नहीं फैला था कि अपने प्रतिनिधि-द्वारा उनको देश के शासन में भाग मिलना एक गौरव की बात है। पार्लिमेंट के अधिकार भी अभी स्पष्ट रूप से निश्चित नहीं हुए थे और वे वास्तव में राजा की कृपा पर निर्भर थे। नये राज-करों के लिए पार्लिमेंट की स्वीकृति आवश्यक थी, परन्तु इस सिद्धान्त का पूर्णतया पालन नहीं होता था। शक्तिशाली राजा प्रायः मनमाने राज-कर लगाते रहते थे और आगे चलकर यार्क वंश के राजाओं ने राजकोष की सहायता के लिए दान (Benevolence) के रूप में प्रजा से धन लेने का सुगम उपाय निकाल लिया। राजनियम आजकल की तरह पार्लिमेंट ही में तैयार नहीं होते थे। जब कभी पार्लिमेंट कोई नया नियम बनाना चाहती थी तो वह अपने प्रस्ताव को राजा के सम्मुख, प्रार्थनापत्र (Petition) के रूप में, उपस्थित करती थी और उसे स्वीकृत

---

* पार्लिमेंट के उत्थान का विस्तृत वर्णन इसी खण्ड के चौथे, पाँचवें तथा छठे परिच्छेदों में किया जा चुका है।

करना या न करना पूर्णतया राजा की इच्छा पर निर्भर होता था। राजा के मन्त्रियों तथा राज्य के अन्य कर्मचारियों पर भी पार्लिमेंट का अधिक दबाव नहीं होता था; केवल कभी-कभी अयोग्य कर्मचारियों के विरुद्ध अभियोग (Impeachment) उपस्थित करके पार्लिमेंट अपनी शक्ति जतला दिया करती थी।

इस प्रकार पार्लिमेंट की शक्ति का अभी आरम्भ-मात्र ही था, परन्तु फिर भी धीरे-धीरे ऐसे चिह्न प्रतीत होने लगे थे जिनसे ज्ञात होता था कि पार्लिमेंट देश की शासन-प्रणाली का एक प्रधान अंग है। लंकास्टर राजवंश को, पार्लिमेंट ही की स्वीकृति के कारण, राजसिंहासन मिला और आगे चलकर भी पाठक कई उदाहरण ऐसे पावेंगे कि जिन राजाओं का वंशीय अधिकार अधिक पुष्ट नहीं होता था वे अपने राज्याधिकार को पार्लिमेंट ही की स्वीकृति द्वारा पुष्ट करते थे। संक्षेप में यों कहिए कि पार्लिमेंट का अभी प्रारम्भिक काल था, परन्तु धीरे-धीरे उसकी भावी शक्ति के लक्षण भी प्रस्तुत होते जाते थे।

(३) सामाजिक दशा

माध्यमिक व्यापार—माध्यमिक काल में इँगलैंड में केवल साधारण व्यापार होता था। एक बस्ती का दूसरी बस्ती से बहुत कम सम्बन्ध था और प्रत्येक बस्ती में दैनिक जीवन की सभी आवश्यकताओं को पूरा करने की चेष्टा की जाती थी। सप्ताह में एक-दो बार बड़ी-बड़ी बस्तियों में हाट (Markets) तथा मेले (Fairs) लगते थे, जिनमें आस-पास के व्यापारी अपनी दूकानें ले आते थे। ऐसी वस्तुओं को मोल लेने के लिए, जो साधारणतया बस्ती में नहीं मिलती थीं, लोगों को इन्हीं हाटों तथा मेलों की प्रतीक्षा करनी पड़ती थी। देश में धन का बहुत अभाव था और समाज में केवल यहूदी (Jews) ही इतने धनवान् होते थे कि आवश्यकता पड़ने पर व्यापारियों को ऋण दे सकें। यहूदी लोग ब्याज बहुत लेते थे, जिसके कारण ईसाई जनता उनसे घृणा

करती थी। "विजयी विलियम" ने यहूदियों को इँगलैंड में बुलाया था जिससे देश के व्यापारियों को धन की सहायता मिल सके; परन्तु उनके ब्याज की दर बराबर बढ़ती जाने के कारण एडवर्ड प्रथम ने उन्हें देश से निकाल दिया।

माध्यमिक काल में प्रत्येक व्यवसाय के लोगों ने अपने अलग-अलग संघ बना रखे थे जो गिल्ड (Guild) कहलाते थे। गिल्ड का यह उद्देश्य होता था कि अपने सदस्यों को हर तरह की सहायता दी जाय और अपने व्यवसाय की उन्नति के लिए सदा प्रयत्न किया जाय। धीरे-धीरे ये गिल्ड इतने शक्तिशाली हो गये कि बिना उनकी स्वीकृति के कोई नया आदमी किसी व्यवसाय में शरीक नहीं हो सकता था और जो सदस्य उनके नियमों का उल्लंघन करते थे, उनको कड़े दंड दिये जाते थे और कभी-कभी उनको व्यवसाय से निकाल भी दिया जाता था।

ऊन के व्यवसाय में उन्नति—माध्यमिक इँगलैंड का प्रधान व्यवसाय खेती करना था; परन्तु "महामारी" (Black Death) और "किसानों के विद्रोह" (Peasant Revolt) के बाद स्थिति बिलकुल बदल गई। मज़दूरों की कमी के कारण खेती का काम बहुत कम रह गया और उसके स्थान पर भेड़ पालने तथा ऊन बनाने का व्यवसाय धीरे-धीरे बहुत फैल गया, क्योंकि उसमें थोड़े से ही मज़दूरों से काम चल जाता था और उसमें लाभ भी अधिक होता था। पहले इँगलैंड का कच्चा ऊन सब फ़्रांस के प्रांत फ्लान्डर्स (Flanders) देश को भेज दिया जाता था, परन्तु अब धीरे-धीरे इँगलैंड ही में ऊनी कपड़ा बनाया जाने लगा और इसलिए जितना ऊन पैदा होता था उसकी अब देश ही में खपत हो जाती थी। उस काल में बड़े बड़े कारख़ाने नहीं थे और छोटे छोटे जुलाहे अपने घरों पर ही चर्खे और कर्घे की सहायता से कपड़ा बनाया करते थे।

नगरों को स्वतन्त्रता-पत्र—व्यापार में धीरे-धीरे उन्नति होने के कारण देश में नगरों की संख्या बढ़ने लगी। फ़्यूडेलिज़्म (Feudalism) की प्रथा के अनुसार जिस भूमिपति के इलाक़े में नगर होता था

वही उसका स्वामी माना जाता था और उसी को नगर के व्यापारी कर इत्यादि देते थे। कुछ काल के बाद नगरनिवासियों ने अपने स्वामियों से कुछ धन के बदले स्वतन्त्रता-पत्र (Charters) प्राप्त कर लिये, जिनसे दोनों को लाभ हुआ। स्वामियों को काफ़ी नक़द धन मिल गया और निवासियों को अपने प्रतिनिधियों द्वारा अपने नगर का स्वयं शासन करने का अवसर मिल गया। इसी समय से इँगलैंड में "स्वतन्त्र नागरिक शासन" (Municipal Government) का प्रारम्भ होता है, जो वास्तव में "स्थानीय स्वराज्य" (Local Self-Government) की नींव है।

वास्तु-विद्या तथा रहन-सहन—माध्यमिक काल में इँगलैंड में सभ्यता के चिह्न धीरे-धीरे बढ़ने लगे। नार्मन और अँगरेज़ आपस में मिल-जुलकर एक जाति बन चुके थे और उनका रहन-सहन तथा सभ्यता भी एक ही ढंग की हो गई थी। देश में लकड़ी के स्थान पर ईंट और पत्थर के मकान बनने लगे और इस काल में भूमिपतियों ने बड़े सुन्दर गढ़ (Castles) तैयार किये। माध्यमिक वास्तु-विद्या में गाथिक ढङ्ग (Gothic Style) बहुत प्रचलित था, जिसको अँगरेज़ों ने फ़्रांसीसियों से सीखा था। इस काल में बड़े गिरजाघर तथा अन्य सुन्दर इमारतें प्रायः इसी ढङ्ग की बनाई जाती थीं। हेनरी द्वितीय ने जब वेस्टमिन्स्टर एबे (Westminster Abbey) को फिर से बनवाना चाहा तब उसने भी उसी गाथिक ढङ्ग पर उसको तैयार कराया। वेस्टमिन्स्टर एबे इस ढंग की इमारतों में सबसे सुन्दर मानी जाती है।

माध्यमिक वस्त्र बहुत भड़कीले होते थे और स्त्री और पुरुष दोनों गहरे रङ्ग के कपड़े पहनते थे। देशवासियों के मनोविनोद का काफ़ी प्रबन्ध था। बड़े नगरों में प्रतिमास टूर्नामेंट (Tournament) हुआ करता था, जिसमें नाइट (Knight) अर्थात् सर्दार अपनी वीरता तथा कतव्य दिखाते थे। अभी इँगलैंड में नाटक (Drama) शुरू नहीं हुआ था, परन्तु स्वाँग इत्यादि प्रायः होते रहते थे।

माध्यमिक टूर्नामेंट (खेल)

विश्वविद्यालयों की स्थापना—बारहवीं शताब्दी तक इँगलैंड में विद्या सिखाने का कोई उचित प्रबन्ध नहीं था। केवल पादरी लोग ही पढ़े-लिखे होते थे और वही मठों या चर्च की पाठशालाओं में थोड़े-से विद्यार्थियों को बटोरकर उन्हें थोड़ा बहुत अक्षरों का ज्ञान करा देते थे। उस काल में शिक्षित कहलाने के लिए बाइबिल को पढ़ लेने की योग्यता हो जाना काफ़ी था। परन्तु धीरे-धीरे विद्या का प्रचार बढ़ने लगा और तेरहवीं शताब्दी के आदि-काल में विश्वविद्यालयों (Universities) की स्थापना शुरू हुई, जहाँ विविध विषयों की शिक्षा का प्रबन्ध होता था। इँगलैंड के सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय आक्सफ़ोर्ड (Oxford) और केम्ब्रिज (Cambridge) के हैं, जिनका अब तक अन्य विश्वविद्यालयों की अपेक्षा अधिक आदर होता है।

वेस्टमिन्स्टर एबे

अँगरेज़ी भाषा का प्रचार—नार्मन राज्य के स्थापित होने के समय से दर्बार तथा उच्च समाज में फ़्रेंच (French) भाषा का प्रयोग होने लगा था। लगभग तीन शताब्दियों तक फ़्रेंच भाषा ही का इँगलैंड में ज़ोर रहा, परन्तु "शतवार्षिक युद्ध" के कारण अँगरेज़ों को फ्रांसीसियों तथा उनकी भाषा से घृणा होने लगी थी। परिणाम यह हुआ कि चौदहवीं शताब्दी में धीरे-धीरे फ़्रेंच का प्रयोग कम होने लगा और उसके स्थान पर अँगरेज़ी भाषा (English) प्रचलित होने लगी। सन् १३६२ में राजकीय न्यायालयों

में फ्रेंच के स्थान पर अँगरेज़ी भाषा के प्रयोग करने की आज्ञा प्रकाशित कर दी गई और चौदहवीं शताब्दी के अंत तक अँगरेज़ी को, जो अब तक किसानों की भाषा समझी जाती थी, उच्च समाज में भी स्थान मिल गया।

परन्तु चर्च की भाषा अभी तक लैटिन (Latin) ही थी और धार्मिक विषयों पर वाद-विवाद तथा लेखों में लैटिन ही का प्रयोग होता था। अँगरेज़ी आगे चलकर सोलहवीं शताब्दी में "धर्मसुधार" (Reformation) के पश्चात् चर्च की भाषा हुई। माध्यमिक काल में केवल विक्लिफ़ (Wycliffe) एक ऐसा धार्मिक विद्वान् हुआ जिसने धार्मिक विषयों में भी अँगरेज़ी भाषा ही का प्रयोग शुरू कर दिया था; परन्तु जैसा हम बतला चुके हैं, विक्लिफ का प्रभाव देश में स्थायी नहीं हो सका।

माध्यमिक अँगरेज़ी साहित्य—माध्यमिक अँगरेज़ी साहित्य में फ्रेंच तथा लैटिन साहित्य का बहुत कुछ प्रभाव पाया जाता है। शुरू में तो अँगरेज़ी भाषा में फ्रेंच और लैटिन से अनुवाद की हुई पुस्तकों के अतिरिक्त कुछ था ही नहीं, परन्तु चौदहवीं शताब्दी से अँगरेज़ी साहित्य में कुछ मौलिकता भी पाई जाने लगी। चौदहवीं शताब्दी का सबसे प्रसिद्ध कवि चॉसर (Chaucer) हुआ है, जिसकी रचनाओं से मौलिक अँगरेज़ी साहित्य का प्रारम्भ माना जाता है। चॉसर की प्रसिद्ध रचना "The Canterbury Tales" को माध्यमिक अँगरेज़ी साहित्य का सबसे उत्तम रत्न कहा जाता है। इस काल का दूसरा प्रसिद्ध कवि विलियम लैंगलैंड (William Langland) हुआ जिसकी सबसे उत्तम रचना "The Vision of Piers Plowman" है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन ११७०—टामस बेकेट का वध।

„ १२१५—"महास्वतन्त्रता-पत्र" (Magna Charta)

सन् १२६५—साइमन की पार्लिमेंट।

„ १२९०—यहूदियों का इँगलैंड से निकाला जाना।

„ १२९५—"आदर्श पार्लिमेंट" (Model Parliament)

„ १३६२—राजकीय न्यायालयों में फ्रेंच के स्थान पर अँगरेज़ी का प्रचार।

„ १३८४—जॉन विकलिफ़ की मृत्यु।

„ १४००—चॉसर की मृत्यु।

——

तीसरा खण्ड

माध्यमिक काल का अन्त तथा लंकास्टर और यार्क राजवंश

पहला परिच्छेद

लंकास्टर राजवंश तथा फ्रांस से शतवार्षिक युद्ध (द्वितीय भाग)

हेनरी चतुर्थ (१३९९-१४१३)—हेनरी चतुर्थ का पिता जॉन आफ़ गांट (John of Gaunt) एडवर्ड तृतीय का तीसरा पुत्र था। वंशीय अधिकार की दृष्टि से रिचर्ड द्वितीय के राजच्युत होने के पश्चात् राजसिंहासन एडवर्ड द्वितीय के दूसरे पुत्र के परपोते "एडमंड मार्टिमर" (Edmund Mortimer) को मिलना चाहिए था। तीसरे पुत्र की संतान की अपेक्षा दूसरे पुत्र की संतान का अधिकार अधिक पुष्ट था, परन्तु पार्लिमेंट ने हेनरी चतुर्थ ही को राजा बनाना उचित समझा। इस प्रकार हेनरी चतुर्थ का राज्याधिकार बिलकुल पार्लिमेंट की स्वीकृति पर निर्भर था और इसी लिए उसने तथा लंकास्टर वंश के अन्य राजाओं ने सदा पार्लिमेंट को प्रसन्न रखने की चेष्टा की।

हेनरी चतुर्थ के राज्यकाल में कई विद्रोह हुए। इस समय देश में पर्सी वंश (The Percies) वालों की शक्ति बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। इस वंश के दो भाइयों ने, हेनरी चतुर्थ से झगड़ा हो जाने के कारण, एडमंड मार्टिमर को राजा बनाने की चेष्टा की; परन्तु उनका प्रयत्न सफल नहीं हो सका और वे दोनों भाई युद्ध में हेनरी चतुर्थ के हाथों मार डाले गये। एडवर्ड तृतीय के वंशजों में राजसिंहासन के लिए झगड़े का यह आरम्भमात्र था। अगले परिच्छेद में पाठक पढ़ेंगे कि इन झगड़ों ने धीरे-धीरे बड़ा भयंकर रूप धारण कर लिया।

हेनरी पंचम (१४१३—१४२२)—हेनरी चतुर्थ की मृत्यु के पश्चात् उसका बड़ा पुत्र "हेनरी पंचम" (Henry V) के नाम से राजा हुआ। हेनरी पंचम योग्य राजनीतिज्ञ तथा वीर योद्धा था और वह लंकास्टर राजवंश का सर्वश्रेष्ठ राजा माना जाता था। उसका यह विचार था कि अपने वंश की स्थिति पुष्ट करने का सर्वोत्तम उपाय यही हो सकता है कि विदेशी युद्धों में विजय प्राप्त करके देश-वासियों का प्रशंसापात्र बनने का प्रयत्न किया जाय।

हेनरी पञ्चम

"शतवार्षिक युद्ध" का पुनरारम्भ*—हेनरी पञ्चम ने राज्याभिषेक ही के समय से विदेशी युद्धों द्वारा यश प्राप्त करने की धारणा कर ली थी। उसने भी एडवर्ड तृतीय की भाँति फ्रांस के राजसिंहासन के लिए अपना उत्तराधिकार जतलाना शुरू किया। यह उत्तराधिकार जतलाना सर्वथा अनुचित था, क्योंकि पहले तो एडवर्ड तृतीय ही फ्रांस के राजसिंहासन का नियमानुसार उत्तराधिकारी नहीं था और इसके अतिरिक्त बड़े पुत्र के वंशजों के जीवित रहते हेनरी पंचम स्वयं एडवर्ड तृतीय का भी वास्तविक उत्तराधिकारी नहीं हो सकता था। परन्तु हेनरी पंचम फ्रांस से युद्ध पुनरारम्भ करने के लिए केवल एक बहाना खोज रहा था। उसको सफलता की पूर्ण आशा थी; क्योंकि इस समय फ्रांस की बड़ी हीन दशा

* "शतवार्षिक युद्ध" (The Hundred Years' War) के प्रथम भाग के लिए पिछले खण्ड का आठवाँ परिच्छेद देखो।

हो रही थी; फ्रांस के राजा चार्ल्स षष्ठ को पागलपन का रोग लगा हुआ था और उसके संबंधी तथा अन्य बड़े दर्बारी इस अवसर से लाभ उठाकर अपनी-अपनी शक्ति बढ़ाने में लगे हुए थे। फ्रांस में एकता नहीं थी और राज्य को हड़प करने के लिए वहाँ बहुत-से दल आपस में झगड़ रहे थे।

एगिनकोर्ट का युद्ध—सन् १४१५ में हेनरी ने भारी सेना लेकर फ्रांस पर चढ़ाई कर दी। कैले को जाते समय मार्ग में उसकी फ्रांसीसी सेना से मुठभेड़ हो गई और २५ अक्टूबर को एगिनकोर्ट (Agin-court) के स्थान पर घमासान युद्ध शुरू हुआ। क्रेसी तथा पायटीयर्स के युद्धों की भाँति इस युद्ध में भी अँगरेज़ी धनुर्धारियों ने बड़ा काम किया। इस बार हेनरी पंचम ने एक विशेष सावधानी यह की थी कि धनुर्धारियों के सामने बड़े-बड़े खूँटे गड़वा दिये थे, जिससे वे शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षित रह सकें। इस युद्ध में अँगरेज़ों की पूर्ण विजय हुई और उन्होंने लगभग ८ हज़ार फ्रांसीसियों को युद्धक्षेत्र में मार गिराया। इस विजय के कारण अँगरेज़ों की फिर से फ्रांस में धाक जम गई।

बर्गंडी से मेल तथा ट्रायस की सन्धि (१४२०)—फ्रांस में इस समय दो मुख्य दल, राज्य में शक्ति प्राप्त करने के लिए, झगड़ रहे थे। एक दल बर्गंडीवालों (Burgundians) का था और दूसरा आर्लियन्सवालों (Orleanists) का। अवसर पाकर आर्लियन्सवालों ने बर्गंडी के बड़े नवाब को मार डाला। इसका बदला लेने के लिए बर्गंडीवालों ने अँगरेज़ों से मेल कर लिया और "शतवार्षिक युद्ध" में उनको सहायता देना शुरू किया। एगिनकोर्ट की विजय से अँगरेज़ों की फ्रांस में धाक जम ही चुकी थी; अब स्वयं फ्रांस ही के एक दल की सहायता मिल जाने से अँगरेज़ों की शक्ति और भी अधिक बढ़ गई। सन् १४२० में फ्रांसीसी ट्रायस की सन्धि (Treaty of Troyes) करने पर बाध्य हुए, जिसके अनुसार हेनरी पञ्चम ने फ्रांस के राजा चार्ल्स षष्ठ की पुत्री कैथरायन से विवाह किया और वह अपने ससुर का उत्तराधिकारी भी स्वीकृत कर लिया गया। यह निश्चित हुआ कि चार्ल्स

षष्ठ के पागल होने के कारण उसके जीवन-काल में हेनरी पंचम "संरक्षक" होकर फ़्रांस का प्रबन्ध करेगा और अपने ससुर की मृत्यु होने पर वह फ़्रांस का राजा हो जायगा।
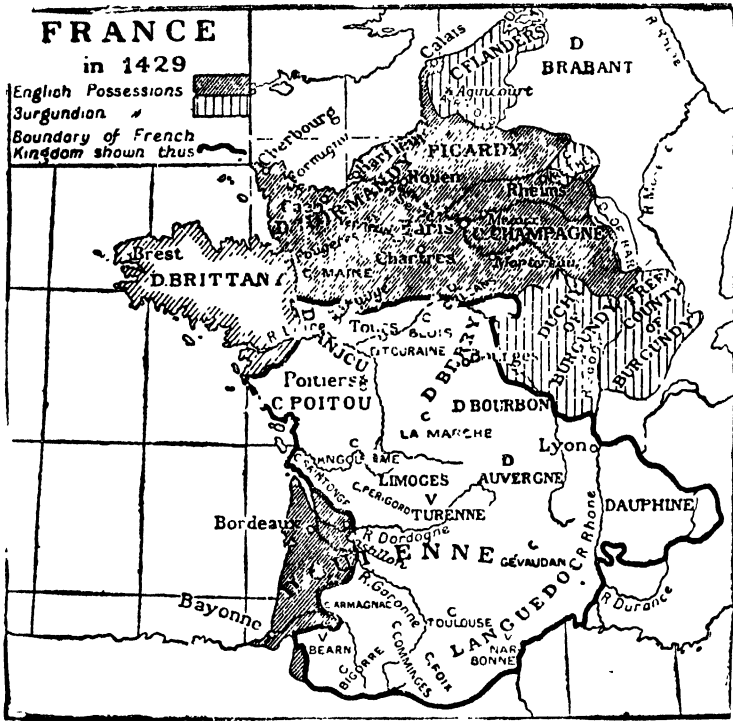
ट्रायस की सन्धि के समय अँगरेज़ी राज्य

"शतवार्षिक युद्ध" में अँगरेज़ी विजय का यह पूर्ण रूप था। ब्रेटिग्नी की सन्धि (Treaty of Bretigny) में एडवर्ड तृतीय को फ़्रांस का केवल तिहाई भाग मिला था, परन्तु इस बार हेनरी पंचम स्पष्ट रूप से फ़्रांस के राजसिंहासन का उत्तराधिकारी स्वीकृत कर लिया गया।

हेनरी षष्ठ (१४२२-१४६१)—सन् १४२२ में हेनरी पंचम, ३५

वर्ष ही की अवस्था में, परलोक सिधारा और उसका पुत्र "हेनरी षष्ठ" (Henry VI) के नाम से राजा हुआ। हेनरी षष्ठ इस समय केवल नौ महीने का बालक था। शीघ्र ही फ्रांस के राजा चार्ल्स षष्ठ की भी मृत्यु हो गई और ट्रायस की सन्धि के अनुसार हेनरी षष्ठ फ्रांस का भी राजा हो गया। हेनरी षष्ठ के अल्पायु होने के कारण उसका चाचा जाँन ड्यूक आफ़ बेडफ़ोर्ड (John, Duke of Bedford) "संरक्षक" नियत हुआ और उसने फ्रांस तथा इँगलैंड का प्रबन्ध शुरू किया। उत्तरी फ्रांस के सब प्रान्तों ने, जहाँ बर्गंडी दल का ज़ोर था, हेनरी षष्ठ के राज्याधिकार को स्वीकार कर लिया; परन्तु दक्षिणी प्रान्तवाले, जहाँ आर्लियन्स दल प्रधान था एक विदेशी राजा के अधीन होना पसन्द नहीं करते थे और वे चार्ल्स षष्ठ के पुत्र अर्थात् डाफ़िन* (Dauphin) को फ्रांस का राजा बनाने की चेष्टा करने लगे।

जोन आफ़ आर्क—डाँफ़िन के समर्थकों की संख्या आरलियन्स (Orleans) में अधिक होने के कारण अँगरेज़ों ने यही उचित समझा कि समस्त फ्रांस पर अधिकार जमाने के लिए आर्लियन्स ही पर घेरा डाला जाय। अँगरेज़ों के घेरा डालने के समय आर्लियन्स की दशा सन्तोषजनक नहीं थी और ऐसे ही लक्षण दीख पड़ते थे कि यह गढ़ भी शीघ्र ही अँगरेज़ों के अधीन हो जायगा। परन्तु जोन आफ़ आर्क (Joan of Arc) नामक एक कृषक की लड़की ने इस समय फ्रांस को बचा लिया। उसने यह प्रसिद्ध किया कि मुझे स्वयं देवताओं ने फ्रांस का पुनरुद्धार करने की प्रेरणा की है। डाफ़िन के पास पहुँचकर उसने कहा—हे राजकुमार! स्वर्ग के राजा के आज्ञानुसार मैं आपको यह बतलाती हूँ कि आपका रेम्स (Rheims) के स्थान पर राज्याभिषेक संस्कार होगा और आप ईश्वर के प्रतिनिधि होकर फ्रांस में राज्य करेंगे।

---

* फ्रांस के राजा का बड़ा पुत्र अर्थात् उत्तराधिकारी "Dauphin" कहलाता है।

एक साधारण कृषक की लड़की के मुख से ऐसी बातें सुनकर पहले तो सबने उसे हँसी में उड़ा दिया। परन्तु उसका धैर्य तथा साहस

जोन आफ़ आर्क

देखकर डॉफ़िन के सिपाहियों ने उसे अपना सर्दार बना लिया। जोन ने मर्दाने कपड़े पहने, कवच धारण किया और फ़्रांसीसी सेना को लेकर वह आर्लियन्स की रक्षा करने को रवाना हुई। फ्रांस के सिपाही जोन को देवी-रूप समझते थे और उसकी सेना में रहकर उन्होंने मदिरा आदि भी त्याग दी थी। फ्रांसीसियों में यह भाव उत्पन्न हो गया था कि हमारे जातीय मान की रक्षा के लिए ईश्वर ने यह दैवी सहायता भेजी है और इस भाव ने उनमें एक नई जान फूँक दी। फ्रांसीसी सेना के आते ही

अँगरेज़ों को आलियन्स* का घेरा उठाना पड़ा और शीघ्र ही पैटे (Patay) के युद्ध में अँगरेज़ों की बुरी तरह पराजय हुई। जोन ने जाकर अपने कथनानुसार रेम्स (Rheims) के स्थान पर ख़ास उत्तरी फ्रांस में, जहाँ शत्रुओं का ज़ोर था, डॉफ़िन का राज्याभिषेक संस्कार किया और उसको "चार्ल्स सप्तम" (Charles VII) के नाम से फ्रांस का राजा बनाया।

परन्तु इसके थोड़े ही समय बाद जोन अँगरेज़ों के हाथों पकड़ी गई, और उन्होंने उसे जादूगरनी ठहराकर जीवित जलवा दिया। जोन ने ऐसे संकट के समय फ्रांस का पुनरुद्धार किया था कि स्वयं उसके शत्रु अर्थात् अँगरेज़ तक यह कहते थे "यह कुमारी अवश्य देवी है। ईश्वर ऐसी देवी को जीवित जलाने के पाप से हमारी रक्षा करे"।

अँगरेज़ी शक्ति का पुनः पतन—चार्ल्स सप्तम के राज्याभिषेक के समय से अँगरेज़ों की शक्ति फ्रांस में दिन पर दिन घटती गई। बेडफ़ोर्ड (Bedford) का, जो "संरक्षक" की हैसियत से अँगरेज़ों की ओर से "शतवार्षिक युद्ध" का संचालन कर रहा था, बर्गंडीवालों से झगड़ा हो गया जिसके कारण उन्होंने अँगरेज़ों का साथ छोड़ दिया। वास्तव में बर्गंडी ही की सहायता से अँगरेज़ फ्रांस में इतनी धाक जमा सके थे, परन्तु अब इस सहायता के न रहने से अँगरेज़ी शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा। इसी बीच में सन् १४३५ में बेडफ़ोर्ड की मृत्यु हो गई और उसकी मृत्यु के पश्चात् अँगरेज़ों को कोई दूसरा योग्य नेता नहीं मिल सका। हेनरी षष्ठ अभी अल्पायु ही था और इँगलैंड में उसके सम्बन्धियों ने राज्य को हड़प करने के लिए झगड़ा शुरू कर दिया था। ऐसी परिस्थिति में फ्रांस में अँगरेज़ी राज्य का स्थायी रहना असम्भव था। अँगरेज़ों ने हेनरी षष्ठ का विवाह चार्ल्स सप्तम की भतीजी मार्गरेट (Margaret)

---

* आर्लियन्स की रक्षा करने के कारण जोन Maid of Orleans भी कहलाती है।

से करा दिया और इस प्रकार फ़्रांस में अपनी शक्ति के पतन के रोकने की चेष्टा की। परन्तु फ़्रांसीसियों में इस समय जातीय जोश उबल रहा था और उन्होंने प्रण कर लिया था कि विदेशियों को फ़्रांस से निकालकर ही दम लेंगे। परिणाम यह हुआ कि धीरे धीरे सब फ़्रासीसी प्रान्त अँगरेज़ों के हाथ से निकल गये। सन् १४५३ में केवल कैले का गढ़ अँगरेज़ों के अधीन रह गया और फ़्रांस के शेष भाग में अँगरेज़ों का कोई अधिकार नहीं रहा।

"शतवार्षिक युद्ध" (The Hundred Years' War) में दो बार अँगरेज़ों ने फ़्रांस को विजय किया, परन्तु दोनों ही बार जीते हुए प्रान्त, थोड़े ही वर्ष बाद, उनके हाथ से निकल गये। इतिहास में कई अवसरों पर यह सिद्ध हुआ है कि देशवासियों में जातीय मान का भाव उत्पन्न हो जाने पर विदेशी राज्य का स्थायी रहना असम्भव है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १३९९—१४१३—हेनरी चतुर्थ।
,, १४१३—१४२२—हेनरी पंचम।
,, १४१५—एगिनकोर्ट का युद्ध।
,, १४२०—ट्रायस की संधि।
,, १४२२—१४६१—हेनरी षष्ठ।
,, १४३०—जोन आफ़ आर्क का जीवित जलाया जाना।

दूसरा परिच्छेद

यार्क राजवंश तथा गुलाबों के युद्ध

हेनरी षष्ठ तथा वंशीय युद्धों का काल—हेनरी षष्ठ के राज्यकाल में "शतवार्षिक युद्ध" के अन्तिम भाग तथा फ्रांस में अँगरेज़ों की शक्ति नष्ट होने का वर्णन हम पिछले परिच्छेद में कर चुके हैं। विदेशी युद्धो के समाप्त होने पर बहुत-से अँगरेज़ी सिपाही बेकार हो गये और वे सब देश ही में लड़ाई-झगड़े का अवसर खोजने लगे। यह अवसर मिलना कुछ कठिन नहीं था, क्योंकि इस समय इँगलैंड में कई कुटुम्ब ऐसे थे जिनका राजवंश से संबंध था और जो बहुत दिनों से राजसिंहासन पर ताक लगाये बैठे थे। राजा हेनरी षष्ठ नेक तथा सदाचारी था, परन्तु वह इतना कायर था कि उससे इन शक्तिशाली कुटुम्बों तथा भयानक सिपाहियों के दबाने की कोई आशा नहीं हो सकती थी। राजा की कमज़ोरी के कारण देश में गड़बड़ी फैलने लगी और शीघ्र ही राजवंश के सम्बन्धियों के झगड़ों ने एक भयंकर रूप धारण कर लिया।

गुलाबों के युद्ध, रिचर्ड ड्यूक आफ़ यार्क—सन् १४५४ में हेनरी षष्ठ बिलकुल पागल हो गया। ऐसी परिस्थिति में रिचर्ड ड्यूक आफ़ यार्क (Richard, Duke of York) संरक्षक नियत हुआ। यार्क की माता एडवर्ड तृतीय के दूसरे पुत्र की वंशज थी और उसका पिता उसी सम्राट् के चौथे पुत्र का वंशज था। इस प्रकार यार्क को एडवर्ड तृतीय के दूसरे तथा चौथे दोनों पुत्रों का उत्तराधिकार पहुँचा था और इस कारण वंशीय अधिकार की दृष्टि से हेनरी षष्ठ (जो एडवर्ड तृतीय के तीसरे पुत्र का वंशज था) की अपेक्षा यार्क का राजसिंहासन

के लिए अधिक हक़ था। परन्तु संरक्षक होने पर यार्क ने कोई अनुचित व्यवहार नहीं किया और योग्यता-पूर्वक राज्य का संचालन किया।

थोड़े दिनों में हेनरी षष्ठ स्वस्थ हो गया और यार्क को संरक्षक के पद से हटना पड़ा। अब तक यार्क इस आशा में था कि हेनरी षष्ठ के कोई सन्तान न होने के कारण वही राजसिंहासन का उत्तराधिकारी होगा, परन्तु हेनरी के एक पुत्र पैदा हो जाने के कारण स्थिति बिलकुल बदल गई। इसके अतिरिक्त हेनरी षष्ठ, स्वस्थ हो जाने पर, यार्क के प्रति बड़ी कठोरता का व्यवहार करने लगा और उसने उसके वैरियों को राज्य के बड़े पदों पर भरना शुरू कर दिया। यह देखकर यार्क ने, अपने वंशीय अधिकार की रक्षा के लिए, शस्त्र उठाये और इस प्रकार यार्क तथा लंकास्टर वंशों में भयंकर युद्धों का सिलसिला शुरू हो गया। ये युद्ध "गुलाबों के युद्ध" (Wars of the Roses) कहलाते है; क्योंकि लंकास्टरदल का चिह्न लाल गुलाब और यार्क दल का चिह्न सफ़ेद गुलाब था।

सन् १४५५ में सेंट एलबेन्स (St. Albans) के स्थान पर यार्क ने अपने शत्रुओं को परास्त किया और स्वयं हेनरी षष्ठ उसके हाथों क़ैद हो गया। इस विजय के परिणाम-स्वरूप यार्क फिर "संरक्षक" हो गया और शीघ्र ही यार्क तथा लंकास्टर दलों में यह समझौता हो गया कि हेनरी षष्ठ अपने जीवनकाल तक राजा रहे और इसके बाद यार्क सिंहासन का उत्तराधिकारी हो। परन्तु हेनरी षष्ठ की फ्रांसीसी रानी मार्गरेट को यह समझौता पसन्द नहीं आया; क्योंकि इससे उसके पुत्र का हक़ मारा जाता था। मार्गरेट ने कुछ सेना इकट्ठी करके वेकफ़ील्ड (Wakefield) के स्थान पर यार्क दल को परास्त किया। यार्क स्वयं युद्ध में मारा गया और मार्गरेट ने उसके शव पर काग़ज़ का मुकुट लगाकर उसे एक ऊँचे खम्भे पर लटकवा दिया, जिससे लोग देख लें कि यार्क-दल के राजसिंहासन प्राप्त करने की आशा भंग हुई।

यार्क-वंश की विजय, एडवर्ड चतुर्थ (१४६१-१४८३)—थोड़े ही दिन बाद रिचर्ड ड्यूक आफ़ यार्क के पुत्र एडवर्ड ने अपने पिता

की मृत्यु का अच्छी तरह बदला ले लिया। हेनरी षष्ठ के राज्यकाल की गड़बड़ी से इँगलैंड-निवासी तङ्ग आ गये थे। इसलिए एडवर्ड के सेना लेकर लन्दन पहुँचते ही प्रजा ने उसका हार्दिक स्वागत किया और पार्लिमेंट ने उसे "एडवर्ड चतुर्थ" (Edward IV) के नाम से राजा उद्घोषित कर दिया। शीघ्र ही एडवर्ड ने टाउन्टन (Townton) के स्थान पर लङ्कास्टर दल को पूर्णतया परास्त किया। इसके बाद हेनरी षष्ठ लन्दन के टॉवर में क़ैद कर दिया गया और उसकी रानी मार्गेरेट फ़्रांस को भाग निकली। इस प्रकार सन १४६१ में यार्क-वंशवालों का इँगलैंड के राजसिंहासन को प्राप्त करने का प्रयत्न सफल हो गया।

रिचर्ड नेवील, अर्ल आफ़ वार्विक (किंग मेकर)—एडवर्ड चतुर्थ को राजसिंहासन प्राप्त करने में रिचर्ड नेवील, अर्ल आफ़ वार्विक (Richard Neville, Earl of Warwick) से बहुत सहायता मिली थी। नेवील वंश की शक्ति इस समय बहुत बढ़ी-चढ़ी थी और जिस समय से इस वंश की एक कन्या का रिचर्ड ड्यूक आफ़ यार्क से विवाह हो गया था, उस समय से इस वंशवालों ने यार्क-दल का साथ देना शुरू कर दिया था। वार्विक इतिहास में किंग-मेकर (King-Maker) के नाम से प्रसिद्ध है; क्योंकि उसने राज्य में इतनी शक्ति प्राप्त कर ली थी कि वह चाहे जिसको राजा बना सकता था और चाहे जिस राजा को सिंहासन से हटा सकता था। उसी की सहायता से एडवर्ड चतुर्थ राजा हुआ था, परन्तु उन दोनों में शीघ्र ही झगड़ा होने लगा। धीरे-धीरे झगड़ा इतना बढ़ गया कि वार्विक को देश छोड़ना पड़ा। वह फ़्रांस पहुँच गया और वहाँ मार्गेरेट से मिलकर लङ्कास्टर वंश का पुनः राज्य स्थापित करने की चेष्टा करने लगा। थोड़े ही दिनों बाद वार्विक तथा मार्गेरेट सेना लेकर इँगलैंड आ पहुँचे और उन्होंने एडवर्ड चतुर्थ को राजसिंहासन से हटने पर बाध्य किया। इस बार वार्विक ने बूढ़े हेनरी षष्ठ को, बन्दीगृह से मुक्त करके, राजा बनाया और उसके नाम से वह स्वयं राज्य का शासन करने लगा।

परन्तु वार्विक की शक्ति अधिक काल तक स्थायी नहीं रह सकी। एडवर्ड चतुर्थ चुप बैठनेवाला नहीं था। उसने अपनी सेना इकट्ठी करके बार्नेट (Barnet) के स्थान पर वार्विक को पूर्णतया परास्त किया। वार्विक स्वयं युद्ध में मारा गया और एडवर्ड चतुर्थ फिर इँगलैंड का राजा हो गया। थोड़े ही दिनों बाद एडवर्ड चतुर्थ ने लङ्कास्टर दल की शेष सेना को ट्यूकसबरी (Tewkesbury) के स्थान पर परास्त किया। इस युद्ध के बाद मार्गरेट क़ैद कर ली गई, उसका पुत्र मरवा डाला गया और उसका पति हेनरी षष्ठ फिर बन्दीगृह भेज दिया गया, जहाँ शीघ्र ही उसके भी प्राण ले लिये गये।

इस प्रकार राजसिंहासन के लिए झगड़ा करने को लङ्कास्टर वंश का अब कोई राजकुमार जीवित नहीं रहा और कुछ काल के लिए यार्क-दलवालों को निश्चिन्त होकर राज्य करने का अवसर मिल गया! अपने राज्य-काल का शेष भाग एडवर्ड चतुर्थ ने सुख तथा शान्ति से व्यतीत किया।

एडवर्ड पंचम तथा संरक्षक रिचर्ड—सन् १४८३ में एडवर्ड चतुर्थ की मृत्यु हुई। उसने दो छोटे छोटे लड़के तथा एक लड़की छोड़े, जिनमें से बड़ा लड़का "एडवर्ड पंचम" (Edward V) के नाम से राजा हुआ। एडवर्ड पंचम के अल्पायु होने के कारण उसका चचा रिचर्ड "संरक्षक" नियत हुआ। रिचर्ड (Richard, Duke of Gloucester) पहले ही से बहुत बदनाम था। लोगों का विचार था कि यार्क-वंश की स्थिति पुष्ट करने के लिए, एडवर्ड चतुर्थ के राज्यकाल में, रिचर्ड ही ने हेनरी षष्ठ तथा उसके पुत्र की जान ली थी। संरक्षक होने के थोड़े ही दिन बाद रिचर्ड स्वयं राजा बनने की चेष्टा करने लगा। उसने यह प्रसिद्ध किया कि एडवर्ड पंचम की माता का विवाह नियमानुसार नहीं हुआ था और इसलिए वह राजसिंहासन का वास्तविक उत्तराधिकारी नहीं है। कुछ चापलूस दर्बारियों ने इस समाचार को ख़ूब फैलाया और उन्हीं की सहायता से संरक्षक रिचर्ड, अवसर पाकर, रिचर्ड तृतीय (Richard III) के नाम से राजा बन बैठा। राजा होते ही उसने एडवर्ड

टॉवर में दो राजकुमारों की हत्या।

पंचम और उसके छोटे भाई को टॉवर में गुप्त रूप से मरवा डाला, जिससे उसके मार्ग में कोई काँटा न रहने पावे।

रिचर्ड तृतीय तथा बास्वर्थ का युद्ध—जब देश में यह समाचार फैला कि रिचर्ड तृतीय ने अपनी स्थिति पुष्ट करने के लिए अपने छोटे-छोटे निर्दोष भतीजों की जान ली है तो सब देशवासी उससे घृणा करने लगे। राजा के प्रति इस घृणाभाव का लाभ उठाकर हेनरी ट्यूडर (Henry Tudor) ने कुछ सेना इकट्ठी करके देश पर चढ़ाई कर दी। हेनरी की माता ब्यूफ़ोर्ट (Beaufort) वंश की थी, जिसकी उत्पत्ति लङ्कास्टर वंश की भाँति एडवर्ड तृतीय के तीसरे पुत्र से हुई थी और उसका पिता वेल्ज़ का एक प्रसिद्ध ज़मींदार था। अपनी माता के नाते हेनरी को लङ्कास्टर दलवालों से पूर्ण सहायता मिली और एडवर्ड चतुर्थ की राजकन्या एलिज़ेबेथ (Elizabeth) से, जो अपने दोनों सहोदर भ्राताओं के वध के पश्चात् यार्कवंश की उत्तराधिकारिणी होती थी, विवाह कर लेने का वचन दे देने के कारण यार्क दलवालों ने भी उसका साथ दिया। लङ्कास्टर तथा यार्क दोनों दलों की सहायता पाने से हेनरी की शक्ति बहुत बढ़ गई थी और वह सुगमता से रिचर्ड तृतीय को बॉस्वर्थफ़ील्ड (Bosworth Field) के स्थान पर परास्त करने में सफल हुआ। अभी कुछ दिन हुए बॉस्वर्थ के युद्ध-क्षेत्र के पास एक कुआँ मिला है, जिस

रिचर्ड तृतीय

पर लिखा हुआ है, "२२ अगस्त सन् १४८५ को जिस समय इँगलैंड का राजा रिचर्ड तृतीय हेनरी के विरुद्ध युद्ध में लड़ते हुए बेदम हो रहा था और सायंकाल से पूर्व उसके राज्य तथा जीवन दोनों के जाने के लक्षण दिखाई दे रहे थे, उस समय उसने इस कुएँ के पानी से अपनी प्यास बुझाई थी।" बड़े घमासान युद्ध के बाद युद्धक्षेत्र ही में रिचर्ड तृतीय मारा गया और हेनरी ट्यूडर "हेनरी सप्तम" (Henry VII) के नाम से इँगलैंड का राजा हो गया।

गुलाबों के युद्ध का अन्त तथा ट्यूडर राज्य का आरम्भ—हेनरी सप्तम के राजा होने पर गुलाबों के युद्ध, जिनके कारण तीस वर्ष तक राज्य में आफ़त मची हुई थी समाप्त हुए और इँगलैंड में ट्यूडर राज्य का प्रारम्भ हुआ। यार्क तथा लंकास्टर राजवंशों के झगड़ों में बड़ी उलझन है और इस सम्बन्ध में जितनी निर्दोष जानें ली गईं, उनका वृत्तान्त पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। इस काल में वंशीय वैर तथा स्वार्थ इतने बढ़े हुए थे कि अपनी स्थिति पुष्ट करने के लिए अपने किसी सम्बन्धी के प्राण ले लेना तो मानो साधारण बात थी। फ़्यूडेलिज़्म (Feudalism) की प्रथा के कारण प्रत्येक भूमिपति के पास निज के सिपाही काफ़ी रहते थे जिससे दोनों दलवालों को सेना इकट्ठी करने में बराबर सुगमता बनी रही। गुलाबों के युद्धों को भली भाँति समझने के लिए पाठकों के लिए यह अच्छा होगा कि वे इस परिच्छेद के आरम्भ में दी हुई वंशावली का ध्यान से अध्ययन करें। इससे वे समझ सकेंगे कि किसी विशेष व्यक्ति अथवा वंश ने एक या दूसरे दल का किसलिए साथ दिया।

गुलाबों के युद्ध के समाप्त होने के काल से "माध्यमिक इँगलैंड" (Mediæval England) का अन्त माना जाता है और ट्यूडर राज्य के स्थापित होने के समय से इँगलैंड के इतिहास में एक नया युग शुरू होता है। इसी युगान्तर के समय से "आधुनिक

इँगलैंड" (Modern England) का आरम्भ होता है, जिसका वर्णन अगले खण्ड में किया जायगा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १४५५—सेंट एलबेन्स का युद्ध।

" १४६०—वेकफ़ील्ड का युद्ध तथा रिचर्ड ड्यूक आफ़ यार्क की मृत्यु।

" १४६१—हेनरी षष्ठ का राज्यच्युत होना तथा एडवर्ड चतुर्थ का राज्याभिषेक।

" १४७०—हेनरी षष्ठ का पुनः राजा होना।

" १४७१—बार्नेट तथा ट्यूकस्बरी के युद्ध तथा एडवर्ड चतुर्थ का पुनः राजा होना।

" १४८३—एडवर्ड चतुर्थ की मृत्यु तथा एडवर्ड पञ्चम का राज्याभिषेक।

" १४८३—रिचर्ड तृतीय का राज्याभिषेक।

" १४८५ बास्वर्थफ़ील्ड का युद्ध। रिचर्ड तृतीय की मृत्यु तथा ट्यूडर राज्य का आरम्भ।

Model Questions

(Ancient and Medieval England)

1. Briefly describe how the history of Great Britain has been affected by its physical features, specially its insular position.

2. Give an account of the Roman occupation of Britain. Why has it left only a few permanent traces behind ?

3. How did the Angles, Saxons, and Jutes settle in England ? Give an account of the principal Anglo-Saxon institutions.

4. How was England converted to Christianity ? Estimate the importance of the Synod Whitby.

5. What steps did Alfred take to secure his position against the Danish invasions ? Give some account of his important reforms, which entitle him to be reckoned as the greatest of English kings.

6. Trace the circumstances leading to the Norman conquest. How did this conquest affect the position of the English ?

7. Give an account of the important steps taken by William the Conqueror to consolidate his position in England.

8. Explain the term "Feudalism". Describe the important measures adopted by Norman and early Plantagenet kings to hold the feudal barons in check.

(*Hint*—Emphasise the importance of Salisbury Oath, Domesday Book, the Scutage, and the establishment of Royal Justice.)

9. "Over the barons Henry II triumphed; the church on the other hand worsted him." Explain this and also give an account of the important administrative reforms of Henry II.

10. Give an account of the struggle between the church and the state in the eleventh and twelfth centuries. Describe the part played in it by Anslem and Becket.

11. Give a brief account of the reign of Richard the Crusader.

12. Why is king John called "John the Lackland" ? Estimate the significance of John's surrender to the Hope.

13. "The Magna Charta may justly be described as the Bible of the English constitution." Explain this and describe how the Magna Charta was secured.

14. Sketch the career of Simon de Montford. Why is he regarded as the founder of the House of Commons ?

15. What was the "Model Parliament"? How did it differ (*a*) from the Parliament summoned by Simon de Montford, (*b*) from the Modern Parliament?

16. Mention the various stages in the relations between England and Scotland during the reign of the first three Edwards. What part did Wallace and Robert Bruce play in the struggle of Scotch Independence?

17 "Edward I is regarded as the greatest of the Plantagenets". What achievements qualify him to be so called?

18 Describe the events leading to the outbreak of the Hundred Years War. Trace the progress of this war during the reign of Edward III.

19. What led to the "Peasant Revolt"? Describe its important economic effects.

20 How was the Lancastrian Revolution brought about? What claims had Henry IV to the throne of England?

21 What evils had crept into the church in the fourteenth century? How did John Wycliffe try to remedy them and why could he not be successful?

22. Trace the various stages in the growth of the Parliament in the Medieval Period. What powers did the Parliament possess in the fifteenth century?

23. Describe the achievements of Henry V in the Hundred Years War. How was the Maid of Orleans instrumental in the decline of the English power in France ?

24. Mention the important stages in the Wars of the Roses. Give genealogical tables showing the claims of the various families fighting for the throne.

25. Write short notes on :—

Druids; Heptarchy; Theodore; Dunstan; Ethelred the Unready; Canute; Edward the Confessor; Hereward the Wake; Domesday Book; Henry I's Charter of Liberties; Matilda; Stephen Langton; Mad Parliament; Battle of Evesham; Confirmatio Cartarum; Black Prince; Chaucer; Black Death; Statute of Labourers; Warwick (the King-Maker).

दूसरा भाग

'आधुनिक' इँगलैंड का इतिहास

पहला खण्ड

ट्यूडर शासन

तथा

"धर्मसुधार" का काल

पहला परिच्छेद

हेनरी सप्तम

(१४८५-१५०९)

हेनरी सप्तम—बॉस्वर्थ (Bosworth) के युद्धक्षेत्र में रिचर्ड तृतीय को परास्त करके राज्य प्राप्त करने से हेनरी ट्यूडर की समस्त इँगलैंड में काफ़ी प्रतिष्ठा फैल गई थी। "हेनरी सप्तम" (Henry VII) के नाम से इँगलैंड का पहला ट्यूडर राजा होते ही उसने अपने प्रतिज्ञानुसार यार्क वंश की उत्तराधिकारिणी एलिज़बेथ (Elizabeth) से विवाह किया और अपने राजचिह्न में यार्क तथा लङ्कास्टर वंश के सफ़ेद तथा लाल दोनों गुलाबों को मिला लिया, इससे हेनरी का यह उद्देश्य था कि जनता अब गुलाबों के युद्ध (Wars of the Roses) के काल को भूल जाय और लोग उसी को दोनों वंशों का उत्तराधिकारी समझें।

हेनरी सप्तम

वंशावली नम्बर १

ट्यूडर राजाओं की वंशावली
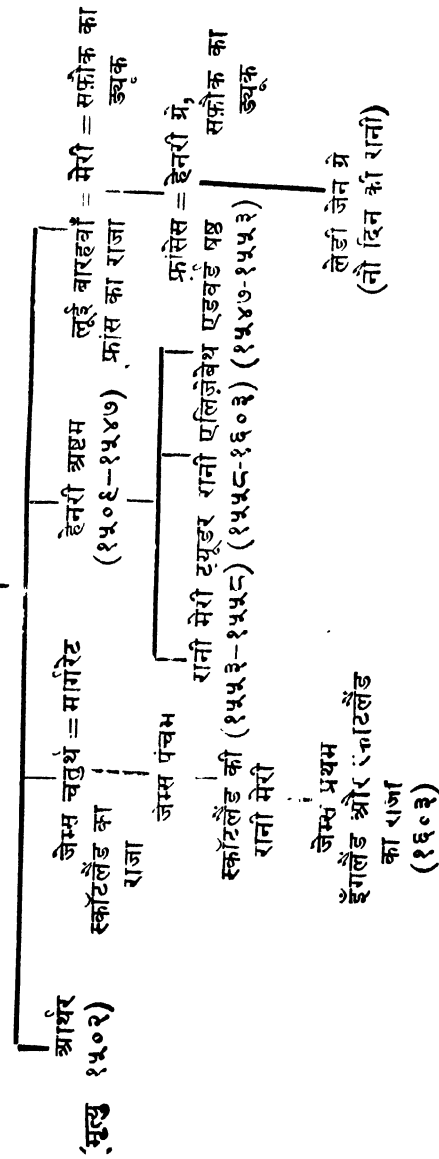
वंशगत अधिकार की दृष्टि से हेनरी का राज्याधिकार अधिक पुष्ट न था। अपनी माता के नाते उसका लंकास्टर वंश से जो सम्बन्ध था, वह अधिक घनिष्ठ न था। और एडवर्ड चतुर्थ की राजकन्या एलिज़ेबेथ के द्वारा जो उसे यार्क वंश का उत्तराधिकार पहुँचा, उसमें कई बाधायें थीं; क्योंकि एडवर्ड चतुर्थ का भतीजा अर्ल आफ़ वार्विक (Earl of Warwick) अभी जीवित था, जिसे हेनरी ने बन्दीगृह में रख छोड़ा था। हेनरी सप्तम को वास्तव में उसके बॉस्वथ के युद्ध में विजयी होने के कारण ही राजसिंहासन मिला था। इसके बाद अपना राज्याधिकार अधिक पुष्ट करने के लिए हेनरी ने पार्लिमेंट से अपना राजा होना स्वीकार करा लिया।

प्रारम्भिक उपद्रव—हेनरी का एलिज़ेबेथ से विवाह हो जाने पर भी यार्क दल के कुछ सहायकों ने हेनरी के विरुद्ध कई षडयन्त्र रचे। पहले उन्होंने लैम्बर्ट सिम्नल (Lambert Simnel) नामक एक द्वादशवर्षीय बालक के विषय में यह प्रसिद्ध किया कि यही एडवर्ड चतुर्थ का भतीजा अर्ल आफ़ वार्विक (Earl of Warwick) है, जो हेनरी के बन्दीगृह से भाग आया है। आयरलैंड ले जाकर उसका राज्याभिषेक भी कर डाला गया और उसको इँगलैंड का राजा उद्घोषित किया गया। परन्तु तुरन्त ही हेनरी ने वास्तविक अर्ल आफ़ वार्विक को बन्दीगृह से निकालकर प्रजा को दिखला दिया, और सब लोग जान गये कि आयरलैंडवाला बालक नक़ली है और धोखा दे रहा है। हेनरी ने बड़ी सुगमता से उस बालक के सहायकों को परास्त किया और उसे क़ैद करके अपने राजमहल में रसोईदार बनाकर रखा।

इसके बाद यार्क दलवालों ने पर्किन वार्बेक (Perkin Warbeck) नामक एक वधिक पुत्र के विषय में यह प्रसिद्ध किया कि यह एडवर्ड चतुर्थ का कनिष्ठ पुत्र रिचर्ड ड्यूक आफ़ यार्क (Richard, Duke of York) है। सब लोग जानते थे कि एडवर्ड चतुर्थ के दोनों पुत्रों को रिचर्ड तृतीय ने टॉवर में मरवा डाला था; परन्तु पर्किन

ने ऐसी सफ़ाई से जनता को धोखा दिया कि बहुत दिन तक कुछ लोग उसको सचमुच राजकुमार ही समझते रहे। फ्रांस और स्काटलैंड के राजाओं ने भी उसकी सहायता की। स्काटलैंड के राजा जेम्स चतुर्थ ने तो अपनी भतीजी का विवाह भी उसके साथ कर दिया। पर्किन ने आकर हेनरी के विरुद्ध युद्ध ठान दिया। परन्तु शीघ्र ही हेनरी की सेना ने उसे परास्त किया और वह बन्दीगृह में भेज दिया गया। वहाँ भी अर्ल आफ़ वार्विक से मिलकर उसने उपद्रव मचाना चाहा, और इस कारण हेनरी ने उसको तथा अर्ल आफ़ वार्विक दोनों को प्राणदण्ड दिया। अब तक यार्क वंश के राजकुमारों में केवल अर्ल आफ़ वार्विक ही बचा हुआ था। उसका भी अन्त हो जाने से यार्क दल के सहायकों को अब सफलता की कोई आशा न रही और इसके पश्चात् हेनरी को इस प्रकार की किसी और आपत्ति का सामना न करना पड़ा।

भूमिपतियों का दमन तथा फ़्यूडेलिज़्म का अन्त—हेनरी ने अच्छी तरह समझ लिया था कि देश में शान्ति रखने के लिए यह परम आवश्यक है कि बड़े भूमिपतियों की शक्ति कम की जाय। माध्यमिक काल की प्रचलित फ़्यूडेलिज़्म (Feudalism) प्रथा के अनुसार भूमि-पतियों (Barons) को इस शर्त पर भूमि दी जाती थी कि वे अपने यहाँ सैनिकों की एक निश्चित संख्या सदा तैयार रखें और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें राजा की सहायता के लिए भेजें। धीरे-धीरे भूमिपतियों ने इन सैनिकों का राजा की सहायता के अतिरिक्त अपने आपस के झगड़ों में भी प्रयोग करना शुरू कर दिया था। प्रत्येक भूमिपति के यहाँ फ़ौजी वर्दी पहने हुए जवानों की एक निज की सेना रहने लगी थी जिसकी सहायता से वे कभी-कभी राजा तक के विरुद्ध विद्रोह ठान देते थे। हेनरी ने इस प्रथा को बन्द करने के लिए एक राजनियम (Statute of Livery) बनाया कि किसी भूमिपति के यहाँ निज की सेना तथा किसी प्रकार की फ़ौजी वर्दी पहने हुए आदमी नहीं रह सकते। इस नियम का पूर्णतया पालन किया गया। एक बार जब हेनरी के परम मित्र आक्सफ़ोर्ड के

नवाब ने वर्दी पहने हुए सैनिकों-सहित उसका स्वागत किया, तो हेनरी ने उसको भी बिना दंड दिये न छोड़ा।

दूसरी अनुचित प्रथा यह चली आ रही थी कि जब किसी बड़े भूमिपति को किसी अपराध के कारण न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित होना पड़ता था, तब उसके निज के सैनिक तथा सेवक न्यायालय में पहुँचकर न्यायाधीश इत्यादि को धमकी देते थे; और इस प्रकार भय दिखलाकर अपने स्वामी के विरुद्ध न्याय न होने देते थे। हेनरी ने एक दूसरे राजनियम (Statute of Maintenance) द्वारा इस प्रथा को भी बिलकुल बन्द कर दिया।

बड़े भूमिपतियों को पूर्णतया शासन-विधान में बाँधने के लिए हेनरी ने एक विशेष प्रकार का न्यायालय स्थापित किया। जिस गृह में इस न्यायालय का कार्य होता था, उसकी छत में सितारों की-सी सजावट थी; और इस कारण उसका नाम "नक्षत्र-भवन" (Court of Star Chamber) पड़ गया। उसमें उच्च श्रेणी के सात न्यायाधीश बैठते थे और उन्हें पूरे-पूरे अधिकार प्राप्त थे। यहाँ बड़े भूमिपति अपनी प्रतिष्ठा या बल आदि के कारण कोई अनुचित लाभ नहीं उठा सकते थे। यह न्यायालय प्रिवी काउन्सिल (Privy Council) की एक कमेटी के रूप में था और इसमें विद्रोह, जालसाज़ी और षड्यन्त्र इत्यादि के अभियोगों का विचार होता था और बहुत कड़े-कड़े दंड दिये जाते थे।

राजकोष की उन्नति—हेनरी ने अपनी शक्ति और भी अधिक बढ़ाने के लिए धन संचित करने के बहुत-से उपाय निकाले। बिना पार्लिमेंट की स्वीकृति के कोई नया राज-कर नहीं लगाया जा सकता था; इसलिए हेनरी ने माध्यमिक काल के राजाओं की तरह धनिक लोगों से राजकोष की सहायता के लिए दान (Benevolence) के रूप में धन लेना शुरू किया।

हेनरी का मंत्री कार्डिनल मॉर्टन (Cardinal Morton) बड़ी अपूर्व रीति से यह दान एकत्र करता था। जो लोग अधिक ठाट-बाट से

रहते थे, उनसे कहा जाता था कि तुम्हारे रङ्ग ढङ्ग से प्रतीत होता है कि तुम्हारे पास बहुत धन है; तुम राजा के लिए दान दो। और जो लोग साधारण ढंग से रहते थे, उनसे कहा जाता था कि तुमने अवश्य बहुत धन बचाया होगा; तुम्हें राजकोष की सहायता करनी चाहिए। इस माँगने की रीति का नाम Cardinal Morton's Fork पड़ गया। इस प्रकार मार्टन ने अपने स्वामी के लिए बहुत-सा धन एकत्र किया था। राजद्रोहियों की सम्पत्ति छीन ली जाती थी: और अपराधियों को अधिकतर जुर्माने का ही दंड दिया जाता था। जुर्माना अपराध के अनुसार नहीं बल्कि अपराधी की आर्थिक दशा के अनुसार कम या अधिक होता था।

हेनरी ने अपनी सन्तान के लिए इतना धन छोड़ा कि ट्यूडर राजाओं को नये राज-कर स्वीकृत कराने के लिए पार्लिमेंट के अधिवेशन करने की विशेष आवश्यकता ही नहीं पड़ती थी। इस काल में पार्लिमेंट की बहुत कम बैठकें हुईं। इस प्रकार पार्लिमेंट का दबाव ट्यूडर राजाओं पर नाम मात्र ही रह गया।

हेनरी की नीति और व्यापारिक उन्नति—हेनरी बहुत चतुर और दूरदर्शी शासक था। यह उसी की योग्यता का परिणाम था कि गुलाबों के युद्ध के घोर अनर्थ काल के पश्चात् इँगलैंड में शान्ति स्थापित हुई। भूमिपतियों को उसने अच्छी तरह से वश में किया और धन संचित करके अपनी शक्ति बढ़ाई। उसने व्यापार की भी बहुत उन्नति की, और फ़्लैंडर्स (Flanders) देश से, जो बहुत दिन से ऊनी कपड़े के लिए प्रसिद्ध था, एक व्यापारिक संधि (Magnus Intercursus)* की, जिससे दोनों देशों के व्यापार को बहुत लाभ हुआ।

हेनरी ने नये उपनिवेश स्थापित करने का भी प्रयत्न किया; और जॉन कैबट (John Cabot) को इस आशय का एक आज्ञापत्र प्रदान किया कि जिन नये देशों में तुम पहुँचो, वहाँ अँगरेज़ी झंडा गाड़कर इँगलैंड के

* Magnus Intercursus—Good Bargain (अच्छा सौदा)।

राजा के नाम से अधिकार जमा लो। कैबट के जहाज़ उत्तरी अमेरिका के उत्तरी-पूर्वी तट पर पहुँचे; और इस प्रकार लैब्रेडर (Labrador) और न्यूफ़ाउंडलैंड (Newfoundland) का पता लगा।

परराष्ट्रनीति और अन्तर्देशीय राजविवाह—हेनरी को इस बात की बहुत चिन्ता थी कि आस-पास के सब राजा मेरा राज्याधिकार स्वीकृत कर लें। पर्किन वार्बेक को स्काटलैंड और फ्रांस से जो सहायता मिली थी उससे हेनरी की आँखें खुल गईं। उसने भली भाँति समझ लिया कि अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिए अन्य देशों से मेल रखना अत्यन्त आवश्यक है। इस उद्देश की पूर्ति के लिए हेनरी ने अपने पुत्र-पुत्रियों के विवाह देशान्तरों के राजवंशों में किये*।

फ्रांस से हेनरी को सर्वदा भय लगा रहता था; इसलिए फ्रांस के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने के उद्देश से हेनरी ने स्पेन से मित्रता की; और अपने बड़े पुत्र आर्थर (Arthur) का विवाह स्पेन की राजकुमारी कैथराइन (Catherine) से किया। कुछ दिनों बाद जब आर्थर का देहान्त हो गया, तब हेनरी ने यह सोचकर कि स्पेन से सम्बन्ध बना रहना चाहिए, कैथराइन का विवाह अपने दूसरे पुत्र (भावी हेनरी अष्टम) से कर दिया। यद्यपि इस प्रकार का विवाह ईसाई-मत के नियमों के विरुद्ध था, परन्तु इसके लिए हेनरी ने अपने धर्मगुरु रोम के पोप की विशेष आज्ञा (Dispensation) प्राप्त कर ली थी।

हेनरी स्काटलैंड से भी मेल करना चाहता था। स्काटलैंड अब तक प्रायः फ्रांस का साथ देता आया था और इँगलैंड को अपना शत्रु समझता था। हेनरी ने अपनी पुत्री मार्गरेट (Margaret) का विवाह स्काटलैंड के राजा जेम्स चतुर्थ (James IV) से किया; और इस प्रकार दोनों देशों में पारस्परिक प्रेम का अंकुर लगाया। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि इसी विवाह से उत्पन्न सन्तान के द्वारा इँगलैंड और स्काटलैंड के राजसिंहासन एक हुए।

---

*Dynastic Marriage.

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १४८५—हेनरी सप्तम का राज्याभिषेक।
" १४९७—कैबट उत्तरी अमेरिका पहुँचा।
" १४९९—पर्किन वार्बेक और एडवर्ड अर्ल आफ़ वार्विक को प्राणदंड।
" १५०२—आर्थर की मृत्यु।
" १५०९—हेनरी सप्तम की मृत्यु।

——

दूसरा परिच्छेद

इँगलैंड में नवीन युग

("आधुनिक इँगलैंड" का आरम्भ)

माध्यमिक काल का अन्त—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से "माध्यमिक इँगलैंड" (Mediaeval England) का अन्त माना जाता है। माध्यमिक काल की विशेषतायें अब धीरे-धीरे लुप्त होने लगीं और उनके स्थान पर एक नये ही ढङ्ग की सभ्यता का आरम्भ हुआ। माध्यमिक काल की अपेक्षा अब देशवासियों के विचारों में अधिक उदारता पाई जाने लगी और उनकी रहन-सहन इत्यादि में भी भारी परिवर्तन होने लगा। माध्यमिक सभ्यता अब पुरानी पड़ गई और जनता में नवीन भावों का विकास शुरू हो जाने के कारण देश के सामाजिक, धार्मिक तथा राजनीतिक जीवन सभी में एक नई झलक दिखाई पड़ने लगी।

नवीन युग की विशेषतायें—इँगलैंड में इस युगान्तर के साथ ही एक नये राजवंश का भी आरम्भ होता है। इसलिए इस नये राजवंश अर्थात् ट्यूडर राज्य ही के स्थापित होने के समय से इस "नवीन युग" के इतिहास को भी शुरू किया जाता है। इँगलैंड में इस समय नये-नये विचारों, नये-नये देशों और नई-नई वस्तुओं का आविष्कार हुआ और देश में नये ढङ्ग की उन्नति दिखाई पड़ने लगी। इस "नवीन युग" में प्रवेश करने के समय से "आधुनिक इँगलैंड" (Modern England) का आरम्भ होता है जिसकी मुख्य-मुख्य विशेषताओं का उल्लेख आगे किया जाता है।

नये देशों की खोज और व्यापारिक उन्नति—पन्द्रहवीं शताब्दी में .कुतुबनुमा (Mariner's Compass) के आविष्कार से लोगों को समुद्र-यात्रा में बहुत सुभीता हो गया। सन् १४९२ में कोलम्बस (Columbus) ने एटलांटिक महासागर को पार करके अमेरिका का पता लगाया; और सन् १४९८ में वास्को डी गामा (Vasco de Gama) ने केप आफ़ गुड होप (Cape of Good Hope) होकर भारतवर्ष के लिए समुद्री मार्ग मालूम किया। इन देशों और मार्गों का पता लग जाने से दुनिया के व्यापार में बहुत उन्नति हुई। अब तक रूम सागर (Mediterranean Sea) ही व्यापार का बड़ा केन्द्र था, जो इँगलैंड से बहुत दूर पड़ता है। परन्तु नवीन देशों और मार्गों का पता लगने पर एटलांटिक महासागर व्यापार के लिए अधिक प्रसिद्ध हो गया; और इस परिवर्तन से इँगलैंड को नई व्यापारिक उन्नति में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त हुआ।

युद्ध-कला में परिवर्तन—गोले बारूद का आविष्कार हो जाने से युद्ध-कला में भारी परिवर्तन हो गया। तोपख़ाने के सामने भूमिपतियों के दुर्ग (Baronial Castles) भला क्या ठहर सकते थे? और अच्छी बन्दूक़ों के प्रचलित हो जाने से तलवारों और तीरों से युद्ध करने का काल भी समाप्त हो गया। मध्यकालीन सर्दारों (Knights) की युद्ध-कला अब पुरानी और निरर्थक-सी हो गई। इस परिवर्तन से राजकीय शक्ति भी अधिक बढ़ गई, क्योंकि राजा के अतिरिक्त और कोई तोपख़ाना न रख सकता था।

राष्ट्रीयता का विकास—माध्यमिक काल में योरप के किसी देश में भी राष्ट्रीयता का भाव नहीं पाया जाता था। परन्तु अब धीरे-धीरे प्रत्येक देश के निवासियों में यह भाव उत्पन्न होने लगा कि हम अपने ही देश की भाषा, धर्म तथा मर्यादा को अपनावें और विदेशी विचारों तथा संस्थाओं को अपने देश में ज़ोर पकड़ने से रोकें। चौदहवीं शताब्दी ही में इँगलैंड-निवासियों ने फ्रेंच के स्थान पर अपनी मातृ-भाषा अँगरेज़ी का

कैक्सट की छापे की कल

प्रचार करना शुरू कर दिया था। अब "आधुनिक काल" में आकर जीवन के अन्य विभागों में भी उनमें स्वदेश-प्रेम की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ने लगी थी। यह "आधुनिक काल" की सबसे बड़ी विशेषता है कि योरप के सब देशों में धीरे-धीरे संगठित राष्ट्र स्थापित होने लगे थे और लोगों में देशप्रेम तथा जातीय गौरव के भाव दिन पर दिन बढ़ते जाते थे।

छापे की कल—मध्यकाल में हस्त-लिखित पुस्तकों से ही काम चलता था और केवल धनाढ्य पुरुष ही उनसे लाभ उठा सकते थे। पन्द्रहवीं शताब्दी में जर्मनी में पहले पहल छापे की कल का आविष्कार हुआ। कैक्सटन (Caxton) ने जर्मनी जाकर छापेखाने का काम सीखा; और वहाँ से लौटकर सन् १४७४ में उसने इँगलैंड में भी एक बड़ी छापे की कल खोल दी। उस समय यह इतनी अद्भुत वस्तु समझी जाती थी कि स्वयं राजा और रानी इस कल को देखने के लिए गये थे। अब किताबें अधिक संख्या में छपने लगीं और उनका मूल्य भी कम हो गया। इस प्रकार साधारण जनता को भी विद्योपार्जन का अवसर प्राप्त हुआ।

विद्या का पुनर्जन्म—चौदहवीं शताब्दी में योरप भर में विद्या की बड़ी हीन दशा हो गई थी। केवल कुस्तुन्तुनिया या कांसटेंटीनोप्ल (Constantinople) ही एक ऐसा स्थान रह गया था, जहाँ प्राचीन यूनानी सभ्यता के चिह्न अभी तक दीख पड़ते थे। सन् १४५३ में तुर्कों ने कांसटेंटीनोप्ल पर आक्रमण करके उसे अपने अधीन कर लिया। यूनानी विद्वानों ने वहाँ से भागकर इटली में शरण ली, जहाँ उनका अच्छी तरह स्वागत किया गया। इन्हीं यूनानी विद्वानों के द्वारा इटली में यूनानी कला-कौशल का प्रचार हुआ। अब इटलीवालों का ध्यान अपने प्राचीन रोमन साहित्य की ओर भी आकृष्ट होने लगा। थोड़े ही दिनों में इटली का प्रसिद्ध नगर फ़्लोरेंस (Florence) कला-कौशल और साहित्य का केन्द्र हो गया; और वहाँ के विद्वानों के द्वारा समस्त योरप में विद्या का प्रचार होने लगा। इस प्रकार योरप में "विद्या का पुनर्जन्म"

(Renaissance) हुआ; और पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से सभी योरपीय देशों में विद्योन्नति का प्रारम्भ हुआ।

ऑक्सफ़ार्ड के विद्वान्—विद्योन्नति की लहर शीघ्र ही इँगलैंड तक पहुँच गई और ऑक्सफ़ार्ड विश्वविद्यालय में बड़े-बड़े विद्वान् दिखाई पड़ने लगे। इन विद्वानों में तीन मुख्य थे। कॉलेट (Colet) ने एक नये स्कूल की स्थापना की, जिसमें मध्यकालीन स्कूलों की भाँति विद्यार्थियों को कड़े दंड नहीं दिये जाते थे। अब यह विचार ज़ोर पकड़ने लगा कि जो विद्या प्रेम से पढ़ाई जाती है, उसी का ठीक-ठीक प्रभाव होता है। टॉमस मोर (Thomas More) ने देश के आर्थिक और राजनीतिक दोषों की ओर जनता का ध्यान आकृष्ट किया और अपनी प्रसिद्ध पुस्तक युटोपिया (Utopia) में एक कल्पित स्थान का उदाहरण लेकर समझाया कि इन दोषों का किस प्रकार सुधार हो सकता है। इरास्मस (Erasmus) ने धार्मिक सुधार का कार्य्य किया। उसने बाइबिल का लैटिन भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया और पाद-टिप्पणियों में बहुत-से धार्मिक विषयों पर स्वतंत्रता-पूर्वक अपने विचार प्रकट किये। इन सब बातों से ज्ञात होता है कि पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से योरपीय जनता की आँखें दिन पर दिन खुलती जाती थीं और जीवन के प्रत्येक विभाग में एक नये ही ढङ्ग के विचार फैलने शुरू हो गये थे।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १४५३ कान्सटंटीनोप्ल पर तुर्कों का अधिकार।
,, १४७४—कैक्सटन ने छापे की कल खोली।
,, १४९२—कोलम्बस ने अमेरिका का पता लगाया।
,, १४९८—वास्को डी गामा ने भारतवर्ष के समुद्री मार्ग का पता लगाया।

तीसरा परिच्छेद

हेनरी अष्टम तथा वूल्ज़े

हेनरी अष्टम—सन् १५०९ में हेनरी सप्तम की मृत्यु हुई। उसके ज्येष्ठ पुत्र आर्थर का पहले ही देहान्त हो चुका था; अतः अब उसका कनिष्ठ पुत्र "हेनरी अष्टम" के नाम से गद्दी पर बैठा। नये सम्राट् की अवस्था कुल १८ वर्ष की थी। वह बहुत ही सुन्दर था और खेल-कूद तथा शिकार का बड़ा शौक़ीन था। उसने धार्मिक पुस्तकों का अच्छी तरह से अध्ययन किया था और उसे अपने धार्मिक विषयों के ज्ञान का बड़ा अभिमान था। हास्यप्रिय तथा प्रसन्नचित्त होने के कारण वह शीघ्र ही समस्त प्रजा का प्रेमपात्र हो गया।

हेनरी अष्टम

विलासी होने के कारण उसके दरबार का व्यय बहुत बढ़ गया। वह बड़ा कृतघ्न भी था। गद्दी पर बैठते ही उसने अपने पिता के भूतपूर्व मन्त्री एम्पसन (Empson) और डडले (Dudley) को, जिन्होंने राजकोष के लिए बहुत-सा धन एकत्र किया था, मरवा डाला। केवल जनता को प्रसन्न करने के लिए, जो उन दोनों को देश से रुपया चूसने के कारण नहीं चाहती थी हेनरी ने उनकी जान ली थी।

वूल्ज़े (Wolsey)—हेनरी ने वूल्ज़े नामक एक पादरी को अपना मन्त्री बनाया। वूल्ज़े इप्सविच (Ipswich) के एक व्यापारी का पुत्र था; और बहुत ही थोड़ी अवस्था में उसने आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय से बी० ए० की उपाधि प्राप्त की थी। तत्पश्चात् उसने दरबार में प्रवेश करना चाहा। हेनरी सप्तम ने उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर उसे अपने राज-प्रासाद के गिरजे का अध्यक्ष नियत किया। हेनरी अष्टम के समय में वह पहले यार्क का बड़ा बिशप (Archbishop of York) और फिर प्रधान मन्त्री (Chancellor) हो गया। रोम के पोप ने उसे इँगलैंड के लिए अपना प्रतिनिधि (Papal Legate or Cardinal) नियत किया; और इस प्रकार देश में उसकी प्रतिष्ठा बहुत बढ़ गई। अब उसे धार्मिक तथा राजनैतिक दोनों क्षेत्रों में पूर्ण अधिकार प्राप्त हो गये और वह बड़े ठाट से जीवन व्यतीत करने लगा।

वूल्ज़े

पर-राष्ट्र-नीति तथा योरपीय शक्ति-सतुलन—योरप में इस समय फ्रांस और स्पेन की शक्ति अधिक बढ़ी-चढ़ी थी। तब तक इँगलैंड की गणना योरप के प्रधान राष्ट्रों में नहीं होती थी। हेनरी अष्टम को वूल्ज़े ने यह सम्मति दी कि ऐसी परिस्थिति में इँगलैंड के लिए यही ठीक होगा कि वह कभी स्पेन और कभी फ्रांस को सहायता दे। इस प्रकार इन दोनों राज्यों में से किसी की शक्ति अधिक न बढ़ने पावेगी; और साथ ही योरपीय राजनीतिक क्षेत्र में इँगलैंड की प्रतिष्ठा भी अधिक हो जायगी।

हेनरी सबसे पहले पोप और स्पेन तथा आस्ट्रिया के सम्राटों के साथ "पवित्र सघटन" (Holy League) में सम्मिलित हुआ। इस सघटन का उद्देश्य फ्रांस की शक्ति को रोकना था। हेनरी ने बहुत बड़ी सेना लेकर फ्रांस पर आक्रमण किया। युद्ध में फ्रांसीसी परास्त हुए और रणक्षेत्र से घोड़ों को एँड़ लगाकर ऐसे वेग से भागे कि यह युद्ध "एँड़ों का युद्ध" (Battle of Spurs) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। थोड़े ही दिनों में हेनरी को विदित हुआ कि युद्ध का सारा भार तो मेरे सिर पर रहता है, और उससे विशेष लाभ मेरे मित्र उठाते हैं। इसलिए वह सघटन से अलग हो बैठा और उसने फ्रांस से संधि कर ली। उसी समय हेनरी ने अपनी छोटी बहन का विवाह फ्रांस के बुड्ढे बादशाह लूई बारहवें (Louis XII) से कर दिया।

फ्रांस और स्पेन दोनों अपनी-अपनी शक्ति बढ़ाने के इच्छुक थे। उस समय इँगलैंड की स्थिति ऐसी थी कि जिस ओर वह सहायता करता, उसी ओर का पल्ला भारी हो सकता था। फ्रांस और स्पेन दोनों राज्यों ने इँगलैंड से मित्रता करनी चाही। फ्रांस का राजा स्वयं हेनरी से भेंट करने आया। हेनरी ने ऐसे ठाट-बाट से उसका स्वागत किया कि जिस स्थान पर दोनों की भेंट हुई, वह स्थान अपनी चमक-दमक के कारण "स्वर्णवस्त्रीय क्षेत्र" (Field of the Cloth of Gold) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसी बीच में स्पेन के सम्राट ने वूल्ज़े को अपनी ओर मिला लिया था। वूल्ज़े की सम्मति के अनुसार हेनरी ने स्पेन का ही साथ दिया और फ्रांस से फिर युद्ध ठान दिया। इस युद्ध में अधिक धन व्यय हुआ; और वूल्ज़े को राजकोष की पूर्ति के लिए जनता से ऋण (Amicable Loan) लेना पड़ा। यह ऋण दबाव डालकर लिया जाता था; इस कारण वूल्ज़े देश में बहुत बदनाम हो गया। अन्त में हेनरी ने देखा कि इन युद्धों में इँगलैंड का बहुत धन व्यय होता है और कोई अधिक लाभ नहीं होता; इसलिए वह योरपीय

राजनीतिक झगड़ों से अलग हो गया; और उसने फ्रांस से, जिसके विरुद्ध वह अब तक युद्ध कर रहा था, गुप्त रीति से सन्धि कर ली।

वूल्ज़े की पर-राष्ट्र-नीति का परिणाम—वूल्ज़े पहला अँगरेज़ी राजनीतिज्ञ था जिसने योरपीय "शक्ति-सतुलन" (Balance of Power) के विचार का प्रचार किया। उसकी पर-राष्ट्र-नीति का परिणाम यह हुआ कि स्पेन और फ्रांस दोनों ही इँगलैंड की सहायता के इच्छुक रहने लगे; और इस प्रकार इँगलैंड का योरपीय राजनीतिक क्षेत्र में भली भाँति प्रवेश हो गया।

कैथराइन का परित्याग—हेनरी को अपनी रानी कैथराइन (Catherine) बहुत पसन्द न थी, कारण यह था कि वह अवस्था में उससे पाँच वर्ष बड़ी थी; और फिर उससे अब तक कोई पुत्र भी न हुआ था। कुछ दिनों बाद हेनरी अपने दरबार की एनी बोलीन (Anne Boleyn) नामक एक बहुत ही सुन्दरी युवती पर मोहित हो गया, और उससे विवाह करने के लिए उसने कैथराइन का परित्याग करना चाहा।

कैथराइन

हम पहले कह आये हैं कि कैथराइन का विवाह उसके पूर्व पति आर्थर की मृत्यु होने पर हेनरी के साथ हुआ था। बड़े भाई की विधवा से विवाह करना ईसाई-मत के विरुद्ध था; इस कारण इस विवाह के लिए ईसाइयों के धर्मगुरु रोम के पोप की विशेष आज्ञा (Dispensation) प्राप्त करनी पड़ी थी। ऐसी अवस्था में पोप से दूसरी आज्ञा प्राप्त किये बिना कैथराइन का परित्याग नहीं किया जा सकता था। हेनरी ने पोप से पत्नी-परित्याग के

लिए आज्ञा प्रदान करने की प्राथना की। परन्तु उसकी प्रार्थना स्वीकृत करने से पोप हिचका; क्योंकि इस कार्य्य से फ्रांस और स्पेन जैसे दो शक्तिशाली राज्यों के रुष्ट होने का भय था। फ्रांस के बड़े राजकुमार के साथ कैथराइन की पुत्री का विवाह निश्चित हुआ था; और स्पेन का सम्राट कैथराइन का भानजा होता था।

पोप ने इस कार्य्य में टाल-मटोल की। पहले उसने इस विषय में जाँच करने की इच्छा प्रकट की। इसके लिए उसने उच्च कोटि के एक पादरी को रोम से नियत करके भेजा। उस पादरी ने इँगलैंड में आकर वूल्ज़े के साथ जाँच का कार्य्य आरम्भ किया। कुछ ही दिनों बाद पोप ने यह जाँच बन्द करने की आज्ञा दी और कहा कि इस विषय पर रोम में ही विचार हो सकता है।

वूल्ज़े का पतन—हेनरी को आशा थी कि वूल्ज़े की सहायता से शीघ्र ही यह निर्णय मेरे पक्ष में हो जायगा। परन्तु जब उसने देखा कि मेरे लिए पत्नी-परित्याग की आज्ञा प्राप्त करने में वूल्ज़े सफल नहीं हुआ, तब उसके क्रोध की सीमा न रही। उसने वूल्ज़े को सब पदों से हटा दिया और अब वह केवल यॉर्क का बिशप रह गया। यॉर्क में भी हेनरी ने उसे चैन से न बैठने दिया; और राजद्रोह का अपराध लगाकर उसे लन्दन के न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दी। उस समय वूल्ज़े का स्वास्थ्य ठीक न था। लन्दन जाते समय रास्ते में, लीसेस्टर के गिरजाघर में, उसका देहान्त हो गया। उसके अन्तिम शब्द ये थे—"जिस प्रकार मैंने हृदय से राजा की सेवा की थी, उसी प्रकार यदि मैंने परमात्मा की सेवा की होती, तो इस वृद्धावस्था में वह मेरे साथ ऐसा अत्याचारपूर्ण व्यवहार न करता।"

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १५०९—हेनरी अष्टम का राज्याभिषेक।

,, १५१३—"एँड़ों का युद्ध" (Battle of Spurs)

सन् १५२०—"स्वर्ण-वस्त्रीय क्षेत्र" (Field of the Cloth of Gold)

„ १५२९—वूल्ज़े का पतन।

चौथा परिच्छेद

योरप में "धर्म-सुधार"

चर्च के दोष—पिछले भाग में हम लिख आये हैं कि चौदहवीं शताब्दी तक आते-आते चर्च-सम्बन्धी संस्थाओं में कई प्रकार के दोष आ गये थे। ईसाई-धर्म की प्राचीन सरलता के स्थान पर उपासना-विधि इत्यादि में नये-नये आडम्बर बढ़ते जाते थे। धर्म के नाम पर पाखंड इतना बढ़ गया था कि साधारण मनुष्य वास्तविक धर्म को बिलकुल भूल बैठे थे। लोगों में उचित प्रकार की धार्मिक शिक्षा का बिलकुल अभाव था, जिसके कारण भिन्न-भिन्न प्रकार के अंधविश्वासों ही को धर्म का प्रधान अंग माना जाने लगा था।

चर्च के पदाधिकारी, जो पहले निःस्वार्थ जीवन का महान् लक्ष्य अपने सामने रखकर धर्म की सेवा किया करते थे, अब बिलकुल सांसारिक मायाजाल में फँस गये, और जनता के अंधविश्वास तथा अज्ञान का अनुचित लाभ उठाकर अब उन्होंने तरह-तरह से धन बटोरना तथा अपने भोग-विलास की सामग्री एकत्र करना शुरू कर दिया था। स्वयं रोम के पोप भी, जो समस्त ईसाई चर्चों के अधिष्ठाता माने जाते थे, और जिन्हें ईसाई लोग पृथ्वी पर यीशू मसीह का प्रतिनिधि समझते थे, इन दोषों से खाली न थे। पोप के प्रति ईसाइयों की अंधश्रद्धा यहाँ तक बढ़ गई थी कि उसके दरबार के आज्ञापत्र (Papal Bulls) स्वयं ईश्वर की वाणी माने जाने लगे थे। इस अंधश्रद्धा का अनुचित लाभ उठाकर कुछ पोपों ने धन के बदले सब प्रकार के अपराधों से मुक्त होने के क्षमापत्र बेचने शुरू कर दिये। इसके अतिरिक्त पोपों ने अपने कोष में वृद्धि करने के लिए तरह-तरह के धार्मिक कर लगा दिये, जिनके द्वारा उन्होंने ईसाई देशों से खूब रुपया चूसा।

विद्योन्नति का प्रभाव—जब तक लोगों में अज्ञान रहा, उस काल तक तो यह सब पाखण्डबाज़ी खूब चलती रही, यहाँ तक कि विकलिफ़ (Wycliffe) जैसे जोशीले धर्म-सुधारक के प्रचार का भी कोई स्थायी परिणाम नहीं हुआ। परन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी के अंत में समस्त योरप में "विद्या के पुनर्जन्म" (Renaissance), की लहर फैल जाने से लोगों के विचारों में परिवर्तन होने लगा। भला, विद्या के प्रचार के सम्मुख अंधविश्वास और भ्रामक सिद्धान्त कहाँ तक ठहर सकते थे! परिणाम यह हुआ कि सांसारिक पोपों के प्रति शिक्षित समाज की श्रद्धा घटने लगी; और लोग समझ गये कि पोप के कोष के लिए कई रूपों में जो धन भेजा जाता है, वह सब व्यर्थ जाता है। उससे कोई धार्मिक लाभ नहीं होता और वह केवल पोप के भोग-विलास में व्यय होता है। धीरे-धीरे लोगों में यह विचार भी फैलने लगा कि चर्च में कुछ संशोधन करना अत्यन्त आवश्यक है।

मार्टिन लूथर चर्च के संशोधन का आन्दोलन मार्टिन लूथर (Mortin Luther) ने आरम्भ किया। यह जर्मनी का निवासी था और इसकी शिक्षा एक ईसाई-मठ की पाठशाला में हुई थी। इसने विदेश-यात्रा भी खूब की थी और स्वयं रोम जाकर चर्च के सब दोष देखे थे। जब पोप के प्रतिनिधि रोम में एक बड़ा गिरजाघर बनाने के लिए सैक्सनी में यह कहकर चन्दा ले रहे थे कि यह दान देने से दाता अपने जीवन भर के अपराधों से मुक्त हो जाता है, तब लूथर ने ऐसे भ्रामक सिद्धान्तों के विरुद्ध कुछ लेख प्रकाशित किये। इन लेखों का समाचार पाकर पोप आगबबूला हो गया और उसने कहा कि लूथर के विचार ईसाई-धर्म के बिलकुल विरुद्ध हैं।

"धर्म-सुधार" की लहर (The Reformation)—लूथर ईसाई-मत का शत्रु नहीं था। उसका अभिप्राय केवल यही था कि ईसाइयों में धर्म के नाम पर जो अंधश्रद्धा और हानिकारक रीतियाँ फैली हुई हैं, उनका सुधार किया जाय। अब तक धार्मिक विषयों की

चर्च लैटिन भाषा में ही होती थी। लूथर ने जर्मनी के निवासियों पर जर्मन-भाषा में ही अपना विचार प्रकट करना आरम्भ किया, जिससे साधारण जनता भी उसकी बातें समझने लगी। उसने बतलाया कि प्रत्येक व्यक्ति को बाइबिल का अपना स्वतन्त्र अर्थ लगाने का अधिकार है; और पोपों तथा पादरियों की सहायता ही ईश्वर-प्राप्ति का एक-मात्र

मार्टिन लूथर

साधन नहीं है। धीरे धीरे लूथर के विचार समस्त योरप में फैलने लगे और उसके अनुयायी प्राटेस्टेंट* (Protestant) नाम से प्रसिद्ध हुए।

---

* यह शब्द अँगरेज़ी के Protest शब्द से निकला है, जिसका अर्थ "विरोध करना" है। जो लोग रोमन चर्च का विरोध करते थे, वे प्रॉटेस्टेंट कहलाने लगे थे।

कैल्विन और नॉक्स—लूथर की ही तरह अन्य देशों में भी कई और धर्म-सुधारक इसी काल में हुए। इनमें जॉन कैल्विन (John Calvin) मुख्य है, जिसने जनेवा (Geneva) में "धर्म-सुधार" का कार्य्य आरम्भ किया था। फ्रांस के ह्यूगनॉट्स (Hugenots) उसी के अनुयायी थे। कैल्विन के एक शिष्य जॉन नॉक्स (John Knox) ने स्काटलैंड में "धर्म-सुधार" का आन्दोलन आरम्भ किया था। कैल्विन के सिद्धान्त लूथर से कुछ भिन्न थे; परन्तु मुख्य विषय में दोनों का मत एक था। दोनों ही कहते थे कि पोप को ईसा मसीह का प्रतिनिधि मानना केवल भ्रम है। आगे चलकर स्कॉटलैंड के प्रेस्बिटेरियन चर्च (Presbyterian Church) वाले और इँगलैंड के प्योरिटन (Puritans) दल के लोग कैल्विन के ही सिद्धान्त माननेवाले हुए। इँगलैंड में "धर्म-सुधार" की लहर फैलने तथा अँगरेज़ी चर्च में भिन्न-भिन्न प्रकार के परिवर्तनों का वृत्तांत पाठक अगले परिच्छेदों में पढ़ेंगे।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १५१७—मार्टिन लूथर के धर्मसुधार का प्रारम्भ।

,, १५५०—नॉक्स का स्काटलैंड में धर्म-प्रचार।

पाँचवाँ परिच्छेद

हेनरी अष्टम और "धर्म-सुधार"

रोम के पोप से झगड़ा—हम पहले बतला आये हैं कि किस प्रकार हेनरी अष्टम ने कैथराइन का परित्याग करने की आज्ञा प्रदान करने के लिए पोप से प्रार्थना की थी और किस प्रकार पोप ने वह प्रार्थना अस्वीकृत कर दी थी। एनी बोलीन से विवाह करने के लिए हेनरी इतना मत्त हो रहा था कि वह कैथराइन का परित्याग किये बिना न रह सकता था। पोप को धमकी देने के आशय से हेनरी ने पार्लिमेंट से यह राजनियम (Act of Annates) स्वीकृत कराया कि पोप के कोष के लिए इँगलैंड मे किसी प्रकार का धर्म-कर न भेजा जाय। जब इस पर भी पोप अपनी बात पर डटा ही रहा, तब हेनरी ने एक दूसरे राजनियम (Act of Appeals) द्वारा यह निश्चित किया कि इँगलैंड की कोई अपील देश से बाहर फैसला होने के लिए न भेजी जाय। राज्य के न्यायालयों में जिस तरह साधारण विवादों का निर्णय होता है, उसी तरह धार्मिक विषयों का भी निर्णय देश के बड़े पादरियो-द्वारा इँगलैंड में भी हुआ करेगा। इसी नियम से लाभ उठाकर हेनरी ने कैंटर्बरी के बड़े पादरी क्रैन्मर (Cranmer) से कैथराइन के परित्याग के लिए व्यवस्था प्राप्त कर ली और झटपट एनी बोलीन से विवाह कर लिया।

पोप से सम्बन्ध-त्याग—पोप भला क्रैन्मर को ऐसी व्यवस्था प्रदान करने का अधिकारी कब मान सकता था? उसने तुरन्त व्यवस्था दे दी कि एनी बोलीन का विवाह विधि-विहित नहीं है। अब हेनरी भली भाँति समझ गया कि जब तक पोप से सम्बन्ध रहेगा, तब तक मुझे अपनी इच्छाओं की पूर्त्ति में आये दिन बाधाओं का सामना

करना पड़ेगा। इसलिए उसने "सर्व-प्रधानता का राजनियम" (Act of Supremacy) के द्वारा यह निर्धारित कर दिया कि अब से इँगलैंड के राजा तथा रानी ही अँगरेज़ी चर्च के मुख्य अधिष्ठाता और सर्व-प्रधान आचार्य हुआ करेंगे। इस नियम को न मानना राजद्रोह ठहराया गया; और राज्य के बड़े-बड़े कर्मचारियों को शपथ खानी पड़ी कि हम इँगलैंड के राजा को ही चर्च का मुख्य अधिष्ठाता मानते हैं; इसलिए उसके नियत किये हुए कैंटर्बरी के बड़े पादरी का कैथराइन के विषय में निर्णय बिलकुल विधिविहित है। सुप्रसिद्ध विद्वान् सर टामस मोर (Sir Thomas More) ने यह शपथ खाना स्वीकृत न किया; और इसलिए उस पर राजद्रोह का अपराध लगाकर हेनरी ने उसे प्राण-दंड दिया। ऐसे प्रसिद्ध विद्वान् का वध यह सूचित करता है कि हेनरी अपनी इच्छा के विरुद्ध किसी प्रकार का प्रतिरोध सहन नहीं कर सकता था।

सर टामस मोर

मठों का ध्वंस—अब हेनरी ने मठों (Monasteries) की दशा की जाँच कराना आरम्भ किया। प्रत्येक मठ में धनिक लोगों की धर्मार्थ दान की हुई बहुत-सी जायदादें होती थीं। उन मठों में बहुत-से साधु तथा त्यागी पुरुष और स्त्रियाँ (Monks and Nuns) रहती थीं जिनका

यह प्रण होता था कि हम विवाह के बखेड़े में न पड़कर अपना समस्त जीवन धर्म-प्रचार में व्यतीत करेंगे। पहले कुछ दिनों तक तो इन मठों ने बड़ा अच्छा काम किया था; परन्तु अब ये व्यभिचार के अड्डे बन रहे थे। हेनरी ने पहले छोटे मठों को और फिर बड़े मठों को तोड़ा और उनकी सब जायदादें बेच दी गईं। जिन्होंने मठों की जायदादें ख़रीदी थीं, वे कभी यह नहीं पसन्द कर सकते थे कि पोप फिर अँगरेज़ी चर्च का अधिष्ठाता हो जाय; क्योंकि उस दशा में मठों की फिर से स्थापना होती और उनकी जायदादें उन्हें फिर वापस दिलाई जातीं। इस प्रकार देश में ऐसे लोगों की बहुत अधिक संख्या हो गई जो सर्वदा "धर्म-सुधार" के पक्षपाती रहे। मठों की सम्पत्ति मिल जाने से राजा की शक्ति भी बहुत बढ़ गई। अब तक बहुत-से मठों के अधिष्ठाता पार्लमेंट के, हाउस आफ़ लार्ड्स (House of Lords) के सदस्य होते थे। उनके स्थान पर हेनरी ने अपने पक्षपातियों को, कुछ जायदादें देकर, लार्ड-सभा का सदस्य बना दिया; और इस प्रकार पार्लिमेंट का एक प्रधान अंश राजा की मुट्ठी में आ गया। परन्तु मठों के टूटने से उन निःसहाय कङ्गालों की हानि हुई, जिनका निर्वाह मठों के सदाव्रत से होता था।

धार्मिक विद्रोह—देश में कुछ लोग ऐसे भी थे जो धर्म में कुछ भी परिवर्तन नहीं चाहते थे। ये लोग अँगरेज़ी चर्च के पोप से अलग हो जाने के कारण बहुत असन्तुष्ट थे। अब मठों के टूटने पर ये लोग और भी घबराये। इन लोगों ने विद्रोह ठान दिया। इनका कहना था कि हम ईसा के नाम पर "धार्मिक आन्दोलन" (Pilgrimage of Grace) कर रहे हैं। यह विद्रोह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया और विद्रोहियों के मुख्य मुख्य नेताओं को प्राण-दंड मिला।

टामस क्राँम्वेल—वूल्ज़े के पतन पर हेनरी ने विद्वान् मोर को और उसको प्राण-दंड देने के पश्चात् टॉमस क्रॉम्वेल (Thomas Cromwell) को अपना प्रधान मंत्री बनाया था। क्रॉम्वेल "धर्म सुधार" (Reformation) का बड़ा पक्षपाती था; और उसी ने हेनरी को पोप से

सम्बन्ध-त्याग करने और मठों को तोड़ने की सम्मति दी थी। हेनरी उसे बहुत चाहता था; क्योंकि उसने राज्य की शक्ति बढ़ाने में बहुत सहायता दी थी। परन्तु एक मामले में हेनरी उससे रुष्ट हो गया। एनी बोलीन को, जिसके साथ इतने प्रयत्नों के पश्चात् हेनरी ने विवाह किया था, व्यभिचार का दोष लगाकर

टामस क्रॉम्वेल

प्राण दंड दिया गया। अगली रानी जेन साइमर (Jane Seymour) का प्रसूतागार में ही देहान्त हो गया था। अब क्रॉम्वेल ने हेनरी के विवाह के लिए एनी आफ़ क्लीव्ज़ (Anne of Cleves) को ढूँढ़ा। परन्तु वह सुन्दरी नहीं थी, इस कारण हेनरी को पसन्द न आई। और ऐसी कुरूपा स्त्री ढूँढ़ने के कारण राजा क्रॉम्वेल से रुष्ट हो गया। थोड़े ही दिनों में, हेनरी ने क्रॉम्वेल को, राज-द्रोह का अपराध लगाकर, प्राण-दंड दिलाया, और तुरन्त एनी का परित्याग करके फिर एक दूसरा विवाह कर डाला।

हेनरी अष्टम के समय में अँगरेज़ी चर्च की स्थिति—हेनरी पहले "धर्म सुधार" (Reformation) का बड़ा विरोधी था। उसने लूथर के प्रचार के प्रतिवाद में एक पुस्तक प्रकाशित की, जिसमें रोमन चर्च की संस्था का भली भाँति समर्थन किया। इससे प्रसन्न होकर पोप ने उसे "धर्म-रक्षक" (Defender of the Faith) की उपाधि दी, जिसका प्रयोग अब तक इँगलैंड के राजा सिक्कों और घोषणाओं में करते हैं। परन्तु कैथराइन के परित्याग के विषय में पोप से झगड़ा हो जाने के कारण हेनरी ने इँगलैंड के चर्च का सम्बन्ध पोप से हटा लिया और

वह स्वयं अँगरेज़ी चर्च का अधिष्ठाता बन बैठा। जनता ने भी इसे पसंद किया; क्योंकि उस समय जातीयता की लहर फैलती जा रही थी और धार्मिक विषयों में भी लोग एक विदेशी पोप के अधीन रहना नहीं चाहते थे। हेनरी ने बाइबिल का अनुवाद अँगरेज़ी में कराकर उसकी प्रतिलिपियाँ प्रत्येक गिरजाघर के खम्भों से बँधवा दीं, जिसमें लोग स्वयं देख लें कि ईसाइयों की धर्मपुस्तक में, पोप के अधीन रहने के विषय में, कहीं कोई उल्लेख नहीं है।

परन्तु इतना सब करने पर भी हेनरी प्राचीन धर्म के सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहता था। उसने एक राजनियम स्वीकृत कराया, जिसमें प्राचीन कैथोलिक मत की मुख्य मुख्य छः धारायें (Statute of Six Articles) सम्मिलित थीं। इससे हेनरी का यही उद्देश्य था कि पोप से सम्बन्ध त्याग होने पर भी लोग अपने धर्म को सनातन की भाँति ही मानते रहें और उसमें लेशमात्र भी परिवर्तन न होने पावे। सारांश यह कि हेनरी अँगरेज़ी चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेंट बनाने के पक्ष में न था। वह हृदय से कैथोलिक सिद्धान्तों का ही अनुयायी था; और यदि पोप से उसका झगड़ा न हुआ होता, तो सम्भवतः वह पोप से अँगरेज़ी चर्च का सम्बन्ध-विच्छेद भी न करता।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १५३५—Henry VIII's Act of Supremacy (पोप के स्थान पर हेनरी अष्टम का स्वयं अँगरेज़ी चर्च का अधिष्ठाता होना)।

„ १५३६-१५३९—मठों का ध्वंस।

„ १५३९—Statute of Six Articles (छः धाराओं का नियम)।

„ १५४७—हेनरी अष्टम की मृत्यु।

छठा परिच्छेद

एडवर्ड षष्ठ और धार्मिक सिद्धान्तों में संशोधन

(सन् १५४७-१५५३)

एडवर्ड षष्ठ तथा संरक्षक समर्सेट—हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् उसका इकलौता लड़का, जो जेन साइमर के गर्भ से उत्पन्न हुआ था, एडवर्ड षष्ठ के नाम से गद्दी पर बैठा। गद्दी पर बैठने के समय उसकी अवस्था केवल दस वर्ष की थी; इसलिए उसका पिता मरते समय एक संरक्षक-सभा नियत कर गया था, जिसमें "धर्म-सुधार" के पक्ष और विपक्षवाले दोनों प्रकार के सदस्य थे। परन्तु एडवर्ड का मामा एडवर्ड साइमर (Edward Seymour) अपनी निपुणता से उस सभा का मुखिया बन बैठा, और अब वह ड्यूक आफ़ समर्सेट (Duke of Somerset) हो गया। उसने एडवर्ड का विवाह स्काटलैंड की राजकुमारी मेरी से कराना चाहा, परन्तु इसमें उसे सफलता न हुई। एक अँगरेज़ी फ़ौज ने जाकर स्काटलैंड में पिनकी (Pinkie) नामक स्थान में विजय भी प्राप्त की, परन्तु इससे स्काटलैंडवाले और भी चिढ़ गये। उन्होंने मेरी को फ्रांस भेज दिया और वहाँ फ्रांस के राजकुमार से उसका विवाह भी निश्चित हो गया।

धार्मिक सिद्धान्तों में संशोधन—समर्सेट 'धर्म-सुधार' (Reformation) का हार्दिक समर्थक था। उसने अँगरेज़ी चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेंट बनाने का प्रयत्न किया। पोप से तो सम्बन्ध-त्याग हो ही चुका था। समर्सेट ने अब धार्मिक सिद्धान्तों में भी संशोधन आरम्भ किया। हेनरी अष्टम का छः धाराओंवाला राज-नियम (Statute of Six Articles), जिसका आशय यह था कि सिद्धान्त सनातन ही रहें, हटा दिया गया और पादरियों को विवाह करने की आज्ञा दे दी गई। गिरजों की

मूर्तियाँ तोड़ दी गईं और खिड़कियों तक के वे शीशे जिन पर महात्माओं के रंगीन चित्र बने हुए थे, तोड़ डाले गये। मूर्तियों और चित्रों का रहना प्राचीन अन्ध-विश्वास का चिह्न समझा गया। अब तक प्रार्थना लैटिन भाषा में होती चली आई थी, परन्तु समर्सेट ने एक नवीन प्रार्थना-पुस्तक (New Prayer Book) अँगरेज़ी भाषा में प्रकाशित की; और सब पादरियों को उसी का प्रयोग करने के लिए बाध्य किया गया। उसका अभिप्राय यही था कि लैटिन भाषा में प्रार्थना करना, जिसे बहुत थोड़े से लोग समझते थे, बिलकुल व्यर्थ है। यह नवीन प्रार्थना-पुस्तक "धर्म-सुधार" (Reformation) के सिद्धान्तों के अनुसार ही बनी थी।

एडवर्ड षष्ठ

सन् १५४९ के विद्रोह तथा समर्सेट का पतन—धर्म में इतने बड़े-बड़े परिवर्तन मानने के लिए जनता तैयार न थी। पोप से सम्बन्ध त्याग करना तो जनता पसन्द करती थी, परन्तु सैकड़ों वर्षों के प्रचलित सिद्धान्तों में संशोधन के नाम से लोग घबराते थे। इसलिए प्राचीन मत के अनुयायियों ने डेवन प्रान्त (Devonshire) में विद्रोह आरम्भ किया; परन्तु वह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया।

थोड़े ही दिनों बाद नॉर्फ़ोक (Norfolk) प्रान्तवालों ने एक और विद्रोह खड़ा किया। इस विद्रोह का एक मुख्य कारण था। ऊन का

व्यापार अधिक लाभदायक था; इस कारण देश में भेड़ पालने का काम बहुत ज़ोरों से चल पड़ा था*; और कृषि की ओर लोग बहुत कम ध्यान देने लगे थे। ऊन तैयार करने में थोड़े हो आदमियों की आवश्यकता होती है; इस कारण बहुत-से मज़दूर अब बेकार फिरने लगे। इन्हीं बेकारों ने यह विरोध खड़ा किया था। उसका मुखिया रॉबर्ट केट (Robert Ket) नामक एक रंगसाज़ था। समर्सेट इस विद्रोह को शांत न कर सका, और इसलिए वह संरक्षक पद से हटा दिया गया। थोड़े ही दिनों बाद राजद्रोह का अपराध लगाकर उसे प्राण-दंड दिया गया। समर्सेट हृदय का सच्चा था, परन्तु उसके सुधारों के लिए देश अभी तैयार न था

नॉर्थंबरलंड तथा "धर्म-सुधार" की उन्नति—समर्सेट के हटने पर वार्विक का अर्ल जोन डडले (John Dudley, Earl of Warwick) संरक्षक हुआ। वह शीघ्र ही ड्यूक आफ़ नॉर्थंबरलैंड (Duke of Northumberland बना दिया गया। वह "धर्म-सुधार' (Reformation) में अधिक विश्वास न रखता था; परन्तु यह सोचकर, कि इस बहाने से गिरजों और मठों की सम्पत्ति हमारे और हमारे मित्रों के हाथ लगेगी, उसने "धर्म-सुधार" का ख़ूब प्रचार किया। एक दूसरी प्रार्थना-पुस्तक प्रकाशित की गई, जिसमें पहली प्रति की अपेक्षा भी अधिक प्रोटेस्टेंट विचार भरे हुए थे। बयालीस धाराओंवाला एक नया राजनियम (Statute of Forty-two Articles) स्वीकृत किया गया, जिसमें लूथर के चलाये हुए प्रोटेस्टेंट मत के प्राय: सभी सिद्धान्त सम्मिलित थे। इस प्रकार अँगरेज़ी चर्च सिद्धान्तों तथा रीतियों में सब प्रकार से पूर्णतया प्रोटेस्टेंट हो गया, परन्तु जनता की सहानुभूति इन सब परिवर्तनों के प्रति बिलकुल न थी। देश यही

---

* इसी सम्बन्ध में विद्वान् मोर ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "युटोपिया" (Utopia) में लिखा है—"भेड़ों की संख्या इतनी बढ़ गई है कि वे मकानों और मनुष्यों को खाये डालती हैं।"

जेन ग्रे का वध

चाहता था कि पोप से सम्बन्ध-त्याग तो ठीक है, परन्तु धार्मिक सिद्धान्त सनातन और ज्यों के त्यों बने रहें।

लेडी जन ग्रे—एडवर्ड षष्ठ क्षय-रोग से ग्रस्त था; इसलिए उसके अधिक दिनों तक जीने की आशा नहीं थी। संरक्षक नॉर्थंबरलैंड ने अपने वंशजों और कुल की प्रतिष्ठा स्थायी बनाने के हेतु एक सुंदर उपाय निकाला। एडवर्ड के पश्चात् सिंहासन की उत्तराधिकारिणी उसकी बड़ी बहन मेरी होती थी, जो पक्की कैथोलिक थी। नॉर्थंबरलैंड ने एडवर्ड को सुझाया कि राजसिंहासन पर मेरी के आरूढ़ होने से "धर्म-सुधार" के कार्य में बड़ी बाधा पड़ेगी। उसकी सम्मति से एडवर्ड ने यह वसीयत की कि मेरे पश्चात् गद्दी की मालिक लेडी जेन ग्रे (Lady Jane Grey) होगी। जेन ग्रे हेनरी अष्टम की सबसे छोटी बहन की दौहित्री थी। वह प्रोटेस्टेंट मत को मानती थी और उसका विवाह नॉर्थंबरलैंड के पुत्र से हो चुका था।

सोलह वर्ष की अवस्था में एडवर्ड का देहान्त हो गया; और नॉर्थंबरलैंड ने तुरन्त जेन ग्रे को रानी घोषित कर दिया। परन्तु कोई यह नहीं चाहता था कि असली उत्तराधिकारिणी मेरी के रहते जेन ग्रे रानी हो। जेन ग्रे कुल नौ दिन* राज्य कर पाई थी कि वह गद्दी से हटा दी गई; और मेरी के सहायकों ने उसको रानी बनाया। अपने प्रयत्न में विफलता देखकर नॉर्थंबरलैंड स्वयं भी मेरी का सहायक हो गया; परन्तु मेरी ने बिना उसे प्राण-दंड दिये न छोड़ा। कुछ दिनों बाद लेडी जेन ग्रे को भी, उसके समस्त परिवार-सहित, मेरी ने वध करा डाला, जिससे उसके मार्ग में कोई काँटा न रहने पावे।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १५४७—पिनकी का युद्ध।
,, १५४९—एडवर्ड षष्ठ के राज्यकाल की प्रथम प्रार्थना-पुस्तक।
,, १५४९—समर्सेट का पतन।
,, १५५२—एडवर्ड षष्ठ के राज्यकाल की द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक।
,, १५५३—एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु।

* Lady Jane Grey, "The Nine Days' Queen."

सातवाँ परिच्छेद

रानी मेरी और कैथोलिक मत का पुनः प्रचार

(सन् १५५३-१५५८)

रानी मेरी—मेरी का अधिकतर जीवन दुःख और निराशा में ही बीता था। उसकी माता कैथराइन के परित्याग के विषय में सब बातें हम पहले ही बतला चुके हैं। अपनी माता का अपमान मेरी कभी न भूल सकती थी। बड़ी होकर वह पक्की कैथोलिक हुई, और राजसिंहासन पर आते ही उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि अँगरेज़ चर्च को फिर सनातन की भाँति पूर्णतया कैथो-लिक बनाऊँगी और "धर्म-सुधार" (Reformation) की बढ़ती हुई लहर को रोकने का यथाशक्ति प्रयत्न करूँगी।

रानी मेरी ट्यूडर

स्पेन से विवाह तथा वॉट का विद्रोह—मेरी ने स्पेन के सम्राट् फ़िलिप द्वितीय (Philip II) से विवाह करने की इच्छा प्रकट की। इस बात को इँगलैंडनिवासी कभी पसन्द न कर सकते थे; क्योंकि इससे यह भय था कि यदि मेरी के कोई पुत्र हुआ, तो वह स्पेन का राजकुमार कहलावेगा और किसी दिन इँगलैंड तथा स्पेन दोनों देशों का स्वामी हो जायगा। इस प्रकार इँगलैंड की स्थिति स्पेनिश साम्राज्य के एक प्रान्त के समान हो जायगी, जिससे अँगरेज़ जाति के मान की बड़ी हानि होगी। परन्तु मेरी अपने विचार पर दृढ़ थी; इस कारण देश में विद्रोह भी हुआ जिसका नेता वॉट (Wyatt) था। विद्रोहियों ने मेरी की छोटी बहन एलिज़ंबेथ को रानी बनाना चाहा। परन्तु यह विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया; और अपनी स्थिति दृढ़ करने के लिए मेरी ने एलिज़ेबेथ को टावर में क़ैद कर दिया। अन्त में पार्लिमेंट को फ़िलिप के साथ विवाह करने की स्वीकृति देनी पड़ी, लेकिन यह निश्चय कर लिया गया कि स्वयं मेरी ही इँगलैंड का राज्य-प्रबन्ध करेगी, और इँगलैंड तथा स्पेन के राजसिंहासन मिलाकर संयुक्त-राज्य कभी न बन सकेगा।

कैथोलिक मत का पुनः प्रचार—मेरी ने एडवर्ड षष्ठ के समय के धर्म-सम्बन्धी राजनियम बिलकुल रद कर दिये; और हेनरी अष्टम के समय का छः धाराओंवाला राजनियम (Statute of Six Articles) फिर पास कराकर कैथोलिक सिद्धान्तों का पुनः प्रचार किया। परन्तु इतने ही से मेरी सन्तुष्ट नहीं हो सकती थी। उसका उद्देश्य तो यह था कि अँगरेज़ी चर्च को फिर से पूर्णतया कैथोलिक बनाया जाय। उसने पोप के प्रतिनिधि कार्डिनल पोल (Cardinal Pole) को इँगलैंड में बुलाया। पार्लिमेंट के सब सदस्यों ने उसके सम्मुख आदर-पूर्वक झुककर, पोप का अपमान करने के लिए, क्षमा माँगी। अब अँगरेज़ी चर्च फिर पोप के अधीन हो गया और गिरजों में सनातन की भाँति फिर पूजा-पाठ होने लगा। सब प्रोटेस्टेंट पादरी निकाल बाहर

किये गये और उनके स्थानों पर कैथोलिक पादरी नियत हुए। परन्तु मेरी मठों की सम्पत्ति वापस न दिला सकी; क्योंकि ऐसा करने से राज-कोष से भी बहुत-सा धन देना पड़ता। इस कारण "धर्म-सुधार" (Reformation) का वृक्ष बिलकुल जड़ से न उखाड़ा जा सका। उसका कुछ अंकुर रह गया जो अवसर पाकर फिर हरा-भरा हो जायगा।

प्रोटेस्टेंटों का जीवित जलाया जाना—मेरी ने अब प्रोटेस्टेंटों को अपना मत छोड़ने पर बाध्य करना आरम्भ किया। जिन्होंने कैथोलिक मत स्वीकार न किया, उन्हें कड़े कड़े दंड दिये गये। लगभग तीन सौ प्रोटेस्टेंट, अपना धर्म न छोड़ने के कारण, जीवित जलवाये गये! इन शहीदों की वीरता के विषय में बहुत-सी कथायें प्रचलित हैं। रोलैंड टेलर (Rowland Taylor) को जब सिपाही बन्दीगृह की ओर ले जा रहे थे: तब रास्ते में जनता ने उस पर फूलों की वर्षा की। लैटिमर (Latimer) और रिड्ले (Ridley) एक साथ आक्सफोर्ड में जलाये गये। आग की लपटों में से लैटिमर ने चिल्लाकर कहा—"मास्टर रिड्ले! धर्म के लिए वीरता से प्राण निछावर करो। हम लोग आज उस ज्वाला का प्रकाश कर रहे हैं, जिसको इँगलैंड में कोई न बुझा सकेगा।" हुआ भी ऐसा ही। धर्म के नाम पर ऐसे अत्याचार होते देखकर जनता को मेरी से घृणा हो गई; और प्रोटेस्टेंट लोग अपने धार्मिक विश्वासों में और भी कट्टर हो गये।

क्रेन्मर (Cranmer) को मेरी अपना पुराना शत्रु समझती थी; क्योंकि उसी ने उसकी माता कैथराइन के परित्याग की व्यवस्था दी थी। क्रेन्मर को भी प्रोटेस्टेंट मत न छोड़ने के अपराध में जीवित जलाने की आज्ञा दी गई। क्रेन्मर कुछ दुर्बल हृदय का था, इस कारण उसने अपने प्राण बचाने के लिए क्षमापत्र पर हस्ताक्षर कर दिये। परन्तु उसकी आत्मा ने इसका प्रतिरोध किया और उसने शीघ्र ही अपना क्षमापत्र लौटा लिया। अतः उसे जीवित जलाने की फिर से आज्ञा दी गई। जब क्रेन्मर जलाया जा रहा था, तब उसने बड़ी वीरता से अपना दाहिना

हाथ अग्नि में बढ़ाकर कहा—"इस हाथ ने क्षमापत्र पर हस्ताक्षर करने का अपराध किया है, और इसलिए सबसे पहले यही भस्म होना चाहिए।"

कैले का पतन और मेरी की मृत्यु—मेरी के अन्तिम दिन बड़ी निराशा और कष्ट में बीते। शहीदों की वीरता देखकर प्रोटेस्टेंट मत के प्रति जनता की सहानुभूति और भी अधिक हो गई। मेरी के पति फ़िलिप ने उसे, सुन्दर न होने के कारण, त्याग दिया। मेरी ने उसको प्रसन्न करने के लिए फ्रांस के विरुद्ध युद्ध में उसका साथ दिया। परन्तु इससे मेरी पर एक दूसरी आपत्ति आई; युद्ध में अवसर पाकर फ्रांसीसियों ने कैले (Calais) के दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया; और इस प्रकार फ्रांस पर प्राचीन काल की अँगरेज़ों की विजय की अन्तिम निशानी भी इँगलैंड के हाथ से निकल गई। मेरी का स्वास्थ्य पहले से ही ठीक न था। कैले के छिन जाने से उसके हृदय पर बड़ी चोट लगी और कुछ ही दिनों बाद वह इस संसार से चल बसी। उसकी मृत्यु के दो ही दिन बाद कार्डिनल पोल भी परलोक सिधारा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन १५५४—अँगरेज़ी चर्च का फिर पोप के अधीन होना।
,, १५५८—कैले का इँगलैंड के हाथ से निकलना।
,, १५५८—मेरी की मृत्यु।

आठवाँ परिच्छेद

रानी एलिज़बेथ तथा अँगरेज़ी चर्च

रानी एलिज़ेबेथ—मेरी की मृत्यु होने पर एलिज़ेबेथ (Elizabeth) टावर से मुक्त हुई और राजसिंहासन पर बैठी। अपनी माता एनी बोलीन की भाँति उसे भी सज-धज का बहुत शौक़ था; और यह शौक़ वृद्धावस्था तक बराबर बना रहा। उसे गान-विद्या से भी अधिक प्रेम था; और वह नाचने में भी बहुत निपुण थी। अपने पिता हेनरी अष्टम की भाँति वह दूरदर्शी, उत्साही और धीर भी थी घमंड भी उसमें कूट कूट-कर भरा हुआ था; और वह केवल इसलिए आजन्म अविवाहित रही, जिसमें उसे किसी स्वामी के अधीन न होना पड़े। वह कई भाषायें जानती थी और विद्वानों का बड़ा आदर

रानी एलिज़बेथ

करती थी। देश के शासन में उसे कितनी ही बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु अपने धैर्य्य और राजनीतिज्ञता के कारण उसे कभी विफलता न हुई। भाग्यवश उसे मन्त्री भी बहुत अच्छे मिल गये। एक का नाम विलियम सेसिल (William Cecil) था जिसे उसने लार्ड बर्गले (Lord Burgley) बना दिया; और दूसरा वालसिंघम (Walsingham) था, जो गुप्तचर-विभाग का अध्यक्ष था।

अँगरेज़ी चर्च का प्रबन्ध—इस समय सबसे आवश्यक कार्य्य यह था कि अँगरेज़ी चर्च का उचित प्रबन्ध किया जाय। प्रोटेस्टेंटों और कैथोलिकों के झगड़े से देश शक्तिहीन हो रहा था। स्वयं एलिज़ेबेथ की धार्मिक विषयों में कुछ भी रुचि न थी और उसने चर्च का प्रबन्ध एक राजनीतिज्ञ की भाँति किया। वह जानती थी कि देश पोप के अधीन रहना कभी पसन्द न करेगा; और इसलिए उसने अपने पिता की भाँति "मुख्यता का राजनियम" (Act of Supremacy) स्वीकृत किया, जिसके अनुसार वह स्वयं अँगरेज़ी चर्च की मुखिया तथा संरक्षक बनी। एडवर्ड षष्ठ के राजत्वकाल की द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक फिर प्रचलित की गई; परन्तु उसमें से ऐसे शब्द निकाल दिये गये जिनसे पुराने धर्मावलम्बियों के हृदय को कष्ट पहुँचने की सम्भावना थी। "एकरूपता का राजनियम" (Act of Uniformity) के द्वारा किसी और प्रार्थना-पुस्तक का सार्वजनिक गिरजाघरों में प्रयोग करने की मनाही कर दी गई। एडवर्ड षष्ठ का ४२ धाराओंवाला राजनियम (The 42 Articles of Religion) फिर स्वीकृत किया गया; परंतु उसकी तीन धारायें, जिन पर सनातन-प्रथा के अनुयायी आक्षेप करते थे, हटा दी गईं। एलिज़ेबेथ का प्रबन्ध स्थायी हुआ; और वर्तमान अँगरेज़ी चर्च का प्रबन्ध बहुत कुछ उसी ढंग का है।

एलिज़ेबेथ की धार्मिक नीति—एलिज़ेबेथ ने चर्च के प्रबन्ध में मध्यम मार्ग का अवलम्बन किया। उसकी इच्छा थी कि अँगरेज़ी चर्च

समस्त जाति का चर्च हो जाय, जिसमें सब विचारों के मनुष्य मिल सकें। वह चाहती थी कि मेरे राज्य में, जहाँ तक हो सके, किसी को धार्मिक विश्वास के लिए दंड न दिया जाय। केवल पदाधिकारियों को ही उसका "मुख्यता का राजनियम" मानने की शपथ खानी पड़ती थी। यदि वे शपथ न खाते थे तो उनको पद न दिया जाता था परन्तु इसके अतिरिक्त उन पर और कोई अत्याचार नहीं किया जाता था। सार्वजनिक गिरजों में तो सबको नियत की हुई प्रार्थना-पुस्तक का ही व्यवहार करना पड़ता था, परन्तु अपने घरों में सबको स्वतन्त्रता थी कि जिस प्रकार चाहें, प्रार्थना किया करें। राज्य की ओर से केवल इतनी सख्ती थी कि जो लोग सार्वजनिक गिरजाघरों में उपस्थित न होते थे, उन्हें कुछ थोड़ा-सा जुर्माना देना पड़ता था। अन्य धर्मावलम्बी जब तक शांतिपूर्वक रहते थे, तब तक एलिज़बेथ उनसे कुछ न बोलती थी। पर वह यह सहन नहीं कर सकती थी कि उसके चर्च-प्रबन्ध के विरुद्ध किसी प्रकार का आन्दोलन हो। उसने एक "धार्मिक न्यायालय" (High Commission Court) बनाया, जिसमें ऐसे मनुष्यों को दंड दिया जाता था जो अँगरेज़ी चर्च के विरुद्ध प्रचार करते थे। यदि हम रानी मेरी के शहीदों का ध्यान करें, तो हम समझ सकेंगे कि एलिज़बेथ की धार्मिक नीति कितनी उदार थी।

प्योरिटन दल (Puritans)—इँगलैंड में कुछ लोग जनेवा के धर्म-सुधारक महात्मा कैल्विन के भी अनुयायी थे। उनके विचार बड़े स्वतंत्र थे। वे लोग उपासना में बहुत-सी रीतियों और विधियों के बखेड़े पसन्द नहीं करते थे। उनका मत था कि उपासना बिलकुल सीधे-सादे ढँग से होनी चाहिए और उसमें बहुत-से आडम्बरों की कोई आवश्यकता नहीं है। किसी नियत प्रार्थना-पुस्तक को भी वे आवश्यक नहीं समझते थे और वे पादरियों के विशेष प्रकार के वस्त्र पहनने के भी पक्ष में न थे। आचार की ओर उनका बहुत ध्यान था और साधारण मनोविनोद ताश, शतरंज, बाजे आदि को भी वे लोग अच्छी दृष्टि से नहीं देखते थे।

उनका कहना था कि हमारा उद्देश्य चर्च को पवित्र बनाना है। और इसी लिए वे लोग प्योरिटन (Puritans) अर्थात् "पवित्रता-प्रचारक" के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनको प्रोटेस्टेंट दल की ही एक शाखा समझना चाहिए: परन्तु स्मरण रहे कि इनके और मार्टिन लूथर के सिद्धान्तों में बहुत कुछ भेद है।

इँगलैंड के प्योरिटन एलिज़ेबेथ के चर्च-सम्बन्धी प्रबन्ध से सन्तुष्ट न थे और वे 'धर्म-सुधार' (Reformation) की लहर को और आगे बढ़ा ले जाना चाहते थे। परन्तु एलिज़ेबेथ उनके विचारों से सहमत न थी। वह प्योरिटन दल को अँगरेज़ी चर्च का उतना ही शत्रु समझती थी जितना कि रोमन कैथोलिक दल को। सब पादरियों को उपासना के समय विशेष प्रकार के वस्त्र पहनने पड़ते थे। प्योरिटन पादरी ऐसा करना आवश्यक नहीं समझते थे; और इसलिए एलिज़ेबेथ ने उन्हें निकाल बाहर किया था। प्योरिटन दलवाले अँगरेज़ी चर्च से पृथक् हो गये; और यही लोग आगे चलकर नानकन्फ़र्मिट्स (Non-Conformists) और डिसेंटर्स (Dissenters) अर्थात् "देश के स्थापित चर्च के विरोधी" कहलाये।

कैथोलिक मत के पुनरुद्धार की लहर (The Counter-Reformation)—प्रोटेस्टेंट मत के प्रचार से रोमन चर्च की संस्था के दोष योरप भर के लोगों पर प्रकट हो गये। अब पोप को अपनी स्थिति सँभालने की फ़िक्र पड़ी रोमन चर्च के दोषों में कुछ सुधार किया गया; और कैथोलिक मत के पुनः प्रचार के लिए एक जेसुइट संघ (Order of the Jesuits) की स्थापना की गई। जेसुइट दल ने समस्त योरप में जाकर बड़े ज़ोर से कैथोलिक मत का प्रचार शुरू किया और "धर्म-सुधार" की बढ़ती हुई लहर को रोकने का यथा-शक्ति प्रयत्न किया।

ईसाइयों के सनातन धर्मगुरु (Spiritual Head) को न मानने के अपराध में पोप ने एलिज़ेबेथ को ईसाई-मत से पतित घोषित

कर दिया और इँगलैंड के कैथोलिकों से कह दिया कि एलिज़ेबेथ के विरुद्ध विद्रोह करने में कोई पाप नहीं है। थोड़े ही दिनों बाद जेसुइट दल इँगलैंड में आ पहुँचा। उसके प्रचार का यह परिणाम हुआ कि रानी के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए जनता में उत्तेजना फैलने लगी। ऐसी अवस्था में एलिज़ेबेथ को कड़े नियमों का प्रयोग करना पड़ा और जेसुइट दल बुरी तरह इँगलैंड से निकाला गया। एलिज़ेबेथ के राजत्वकाल में केवल यही एक समय ऐसा है जब कि रानी को अपने सिंहासन तथा जीवन की रक्षा के लिए धार्मिक क्षेत्र में कड़े दंड देने के लिए बाध्य होना पड़ा था।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १५५८—एलिज़ेबेथ का राज्याभिषेक।
„ १५५९—एलिज़ेबेथ का "मुख्यता का राज-नियम" तथा "एकरूपता का राज-नियम" (Elizabeth's "Acts of Supremacy and Uniformity")।
„ १५८०—जेसुइट दल का इँगलैंड में आना।
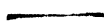
नवाँ परिच्छेद

एलिज़बेथ तथा स्कॉटलैंड की रानी मेरी

हेनरी अष्टम और स्कॉटलैंड—हम पहले कह आये हैं कि हेनरी सप्तम ने अपनी पुत्री मार्गरेट का विवाह स्कॉटलैंड के राजा जेम्स चतुर्थ के साथ किया था। इससे यह आशा की जाती थी कि इँगलैंड और स्कॉटलैंड में परस्पर मेल हो जायगा। परन्तु ऐसा न हुआ और स्कॉटलैंड बराबर फ्रांस का ही साथ देता रहा। जब हेनरी अष्टम का फ्रांस के साथ युद्ध ठना हुआ था, तब जेम्स चतुर्थ ने इँगलैंड पर आक्रमण किया; परन्तु फ़्लॉडन क्षेत्र (Flodden Field) के युद्ध में वह मारा गया। जेम्स पञ्चम भी फ्रांस को ह[illegible] मित्र समझता था; अतः उसने भी इँगलैंड पर आक्रमण किया। परन्तु वह भी सोलवे मास (Solway Moss) के युद्ध में परास्त हुआ और कुछ दिनों बाद उसकी मृत्यु हो गई।

मेरी स्टुअर्ट का आरम्भिक जीवन—जेम्स पञ्चम की मृत्यु होने पर उसकी पुत्री मेरी स्टुअर्ट (Mary Stuart) स्कॉटलैंड की रानी हुई। मेरी उस समय दूध पीती बालिका थी। ऐसी अवस्था में उसकी माता उसकी संरक्षक होकर राज्य का प्रबन्ध करने लगी। हम पहले बतला चुके हैं कि समर्सेट ने एडवर्ड षष्ठ का विवाह मेरी स्टुअर्ट से कराना चाहा था; परन्तु स्कॉटलैंडवालों ने इसे पसन्द न किया। मेरी फ्रांस भेज दी गई और वहाँ के राजकुमार के साथ उसका विवाह निश्चित हो गया। मेरी का पालन-पोषण फ्रांस में ही हुआ और वहाँ रहकर वह पक्की कैथोलिक हो गई।

स्कॉटलैंड के धर्म-सुधार में एलिज़बेथ की सहायता—स्कॉटलैंड में "धर्म सुधार" का प्रचार कैल्विन के शिष्य जान नॉक्स (John Knox) के द्वारा हुआ। मेरी की माता ने "धर्म-सुधार" की लहर को बहुत रोकना चाहा। नये धर्म के कई अनुयायी जलाये भी गये; परन्तु देश में बराबर उसकी उन्नति होती गई। बहुत-से लार्डों ने नॉक्स का साथ दिया और स्काटलैंड में नये मत के लार्डों का एक समूह (Lords of the Congregation) तैयार हो गया। अब मेरी का पति फ्रांस का राजा हो गया था; और उसने स्काटलैंड में "धर्म सुधार" को दबाने के लिए फ्रांसीसी सेना भेजी। इस आपत्ति के समय में स्कॉटलैंड के नये मत के लार्डों ने एलिज़ेबेथ से सहायता माँगी। एलिज़ेबेथ ने पहले स्कॉटलैंडवालों को उनकी सरकार के विरुद्ध सहायता देने में कुछ आगा-पीछा किया; परन्तु अन्त में कुछ सोच समझकर उसने एक अँगरेज़ी सेना को, स्कॉटलैंड के लार्डों की सहायता के लिए, भेज दिया। फ्रांसीसी सेना लीथ (Leith) नामक स्थान में परास्त हुई और सन् १५६० में एडिनबरा (Edinburgh) की सन्धि के अनुसार फ्रांसीसियों को स्कॉटलैंड से लौट जाना पड़ा। इसी समय मेरी की माता की, जो अब तक संरक्षक होकर स्कॉटलैंड का राज्य-प्रबन्ध कर रही थी, मृत्यु हो गई। ऐसी अवस्था में स्कॉटलैंड के लार्डों की एक मंडली को देश का शासन सौंपकर अँगरेज़ी सेना भी स्कॉटलैंड से लौट आई। स्कॉटलैंड के लार्डों ने फ़ौरन् कैल्विन के सिद्धान्तों के अनुसार स्कॉटलैंड के चर्च का नये ढंग से प्रबन्ध किया। इस नये चर्च में नियत किये हुए पादरियों के स्थान पर एक चुना हुआ मन्त्रि-मंडल कार्य्य करता था; और इस प्रकार स्कॉटलैंड का चर्च प्रेसबिटेरियन (Presbyterian) अर्थात् "मंत्रियों द्वारा संचालित" हो गया।

एलिज़ेबेथ की नीति स्कॉटलैंड के प्रति पूर्णतया सफल रही। अब स्कॉटलैंड के राज्य में फ्रांस का बिलकुल हस्तक्षेप न हो सकता था। स्कॉटलैंड की शासक-मंडली से एलिज़ेबेथ का बराबर मेल बना रहा।

चर्च-सुधार में सहायता देने के कारण स्कॉटलैंड की जनता भी सदा एलिज़ेबेथ का उपकार मानती रही। अब इँगलैंड के स्कॉटलैंड की ओर से भय न रहा और दोनों की पुरानी शत्रुता भी इस प्रकार धीरे धीरे कम होने लगी।

रानी मेरी स्टुअर्ट तथा लार्ड डार्नले—मेरी स्टुअर्ट के पति फ्रांस के राजा फ्रांसिस द्वितीय का सन् १५६१ में देहान्त हो गया। मेरी के कोई सन्तान न थी, इसलिए अब उसे स्कॉटलैंड लौट आना पड़ा। मेरी पक्की कैथोलिक थी; और उधर स्कॉटलैंड में प्रेसबिटेरियन चर्च स्थापित हो गया था। इस कारण प्रजा की मेरी के प्रति हार्दिक सहानुभूति कभी न हो सकती थी। "धर्म-सुधार" के साधारण प्रचारक भी रानी के लिए अपमानजनक शब्दों का प्रयोग करने में अपना गौरव समझते थे। अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिए मेरी ने अब अपने चचेरे भाई लार्ड डार्नले (Lord Darnley) से विवाह किया। कुछ दिनों तक दोनों का विवाहित जीवन सुख से व्यतीत हुआ; परन्तु धीरे-धीरे मेरी को अपने नये पति के दुर्गुण दिखाई देने लगे। इधर डार्नले को भी अपनी पत्नी के सदाचार के विषय में कुछ सन्देह होने लगा और दोनों का एक साथ रहना असम्भव हो गया। इसी बीच में मेरी अर्ल आफ़ बाथ्वेल (Earl of Bothwell) पर मोहित हो गई और डार्नले से छुटकारा पाने के उपाय सोचे जाने लगे। थोड़े ही दिनों में एडिनबरा से कुछ दूर कर्कोफ़ील्ड (Kirk-o-field) नामक स्थान में डार्नले का मकान बारूद से उड़ा दिया गया और उसकी लाश लोगों को बाहर के बाग़ में पड़ी हुई मिली।

मेरी का राज्यच्युत होना—साधारण जनता का यही अनुमान हुआ कि यह सब षड्यंत्र बाथ्वेल का रचा हुआ है और इसमें रानी की भी कुछ सहायता रही होगी। जब मेरी ने बाथ्वेल से विवाह कर लिया, तब तो लोगों को यह निश्चय ही हो गया कि अवश्य इन दोनों ने ही मिलकर डार्नले के प्राण लिये हैं। जब देश में यह ख़बर फैली, तब

सारा स्काटलैंड इस पापी रानी के विरुद्ध उठ खड़ा हुआ और एक बहुत बड़ा विद्रोह आरम्भ हुआ परिणाम यह हुआ कि मेरी राज्यच्युत की गई और उसका पुत्र जेम्स षष्ठ (James VI) के नाम से राजसिंहासन पर बैठाया गया। जेम्स का जन्म उसके पिता डार्नले की हत्या से थोड़े दिन पहले हुआ था और इस समय वह बिलकुल बच्चा था। ऐसी अवस्था में मेरी के सौतेले भाई अर्ल आफ़ मरे (Earl of Murray) को, "संरक्षक" नियत करके, राज्य-प्रबन्ध सौंपा गया।

मेरी का भागकर इंगलैंड पहुँचना—एक वर्ष तक मेरी लाक लेवन दुर्ग (Lochleven Castle) में क़ैद रही। वहाँ उसने जेलर

मेरी क्वीन ऑफ स्काटस

को मिला लिया। दुर्ग की तालियाँ चुराई गईं और मेरी बन्दीगृह से निकल भागी। अब उसने स्काटलैंड में उपद्रव मचाना चाहा; परन्तु इसमें उसे सफलता नहीं हुई। अन्त में वह निराश हो गई और भाग

कर इँगलैंड आई। यहाँ उसे एलिज़बेथ की शरण लेनी पड़ी। एलिज़बेथ उसे बिलकुल सहायता नहीं देना चाहती थी; इसलिए उसने यह बहाना किया कि पहले मेरी अपने निर्दोष होने का प्रमाण दे। इसकी जाँच के लिए एक कमीशन बैठाया गया; परन्तु वह कमीशन कुछ निर्णय न कर सका और मेरी को बराबर इँगलैंड के एक दुर्ग में क़ैद रहना पड़ा।

एलिज़बेथ के विरुद्ध षड्यन्त्र और मेरी को प्राण-दंड—इँगलैंड में मेरी के रहने से अँगरेज़ी कैथोलिकों का साहस कुछ बढ़ गया। हेनरी अष्टम और एना बोलीन का विवाह पोप की आज्ञा के विरुद्ध होने के कारण कैथोलिक उसे विधि विहित नहीं समझते थे; और इसलिए एनी बोलीन की पुत्री एलिज़बेथ को भी वे राजसिंहासन की उत्तराधिकारिणी नहीं मानते थे। मेरी हेनरी अष्टम की बड़ी बहन मार्गरेट की पोती थी; और इसलिए एलिज़बेथ को छोड़कर वही ट्यूडर सिंहासन की अधिकारिणी होती थी। अँगरेज़ी कैथोलिकों की अब यह इच्छा हुई कि एलिज़बेथ को मारकर मेरी को इँगलैंड की रानी बनाना चाहिए। इस उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए बहुत से षड्यंत्र रचे गये। परन्तु एलिज़बेथ का गुप्तचर-विभाग ऐसी निपुणता से कार्य्य करता था कि कैथोलिकों का कोई उपाय सफल न हो सका। यह वही समय था जब कि पोप ने एलिज़बेथ को ईसाई-मत से पतित घोषित कर दिया था और जेसुइट दलवाले देश भर में यह कहते फिरते थे कि एलिज़बेथ के विरुद्ध विद्रोह करना धार्मिक कर्तव्य है। एलिज़बेथ की स्थिति बहुत अस्थिर और डाँवाडोल थी। परन्तु अँगरेज़ी जनता ने उसका साथ दिया; और सबने इस आशय के एक प्रतिज्ञापत्र (Bond of Association) पर हस्ताक्षर किये कि हम लोग तन, मन, धन से रानी की रक्षा करेंगे। अन्त में एलिज़बेथ के विरुद्ध एक ऐसे षड्यंत्र का पता लगा, जिसमें स्वयं मेरी स्टुअर्ट भी बहुत कुछ सम्मिलित थी। यह सुनकर एलिज़बेथ के क्रोध की सीमा न रही। मेरी स्टुअर्ट पर

स्काटलैंड की रानी मेरी का वध

अभियोग चलाया गया और वह फ़ौथरिंगे (Fotheringay) दुर्ग में, अपराधी के रूप में, न्यायालय के सम्मुख लाई गई। इस न्यायालय ने

मेरी को प्राणदंड दिया और सन् १५८७ में स्कॉटलैंड की सुन्दर रानी निहत होकर परलोक सिधारी। मेरी के प्राणदंड के पश्चात् अब राजसिंहासन के लिए झगड़ा करनेवाला कोई न रह गया और एलिज़बेथ को षड्यन्त्रों के भय से छुटकारा मिल गया।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १५१३—फ़्लॉडन क्षेत्र का युद्ध।
,, १५४२—सॉवले मास का युद्ध।
,, १५६०—लीथ का युद्ध तथा एडिनबरा की सन्धि।
,, १५६१—मेरी का फ्रांस से लौटकर स्कॉटलैंड आना।
,, १५६५—मेरी का डार्नले से विवाह।
,, १५६८—मेरी का भागकर इँगलैंड आना।
,, १५८७—मेरी का प्राणदंड

दसवाँ परिच्छेद

एलिज़बेथ तथा अँगरेज़ो ना-शक्ति की नींव

एलिज़बेथ के समय में समुद्र-यात्रा—अब तक योरप में स्पेन और पुर्तगालवाले ही बड़ी बड़ी समुद्र-यात्रायें किया करते थे। कोलम्बस को, जिसने अमेरिका का पता लगाया था, स्पेन के राजा ने ख़र्च दिया था; और वास्को डी गामा, जिसने भारतवर्ष का समुद्री मार्ग ढूँढ़ निकाला था, पुर्तगाल का निवासी था। पोप ने यह निर्णय कर दिया था कि जितने नये उपनिवेश स्थापित किये जायँ, उनमें से पूर्वीय उपनिवेश पुर्तगाल के अधीन और पश्चिमीय उपनिवेश स्पेन के अधीन हों। "धर्मसुधार" के आन्दोलन के पश्चात् इँगलैंड-निवासी भला पोप की आज्ञा की क्या परवाह करते! पुर्तगाल और स्पेन को नये देशों के व्यापार से धनी होते देखकर अँगरेज़ लोग भी समुद्र-यात्रा में अग्रसर हुए। जॉन कैबट (John Cabot) ने हेनरी सप्तम ही के राजत्वकाल में लैब्रेडर और न्यूफ़ाउंडलैंड का पता लगा लिया था। एलिज़बेथ के राजत्वकाल में आर्टिक महासागर से होकर चीन का मार्ग ढूँढ़ निकालने का प्रयत्न किया

सर वाल्टर रेल

गया। यह प्रयत्न सफल नहीं हुआ; परन्तु इस सिलसिले में रिचर्ड चांसलर (Richard Chancellor) को श्वेत सागर (White Sea) का पता लग गया और इस मार्ग से उत्तरी रूस से व्यापार होने लगा। हॉकिन्स (Hawkins) अफ्रिका के हबशियों को पकड़-कर अमेरिका ले जाकर बेचने लगा। अमेरिका के उपनिवेशों में मज़दूरों की बहुत आवश्यकता थी; इस कारण स्पेनवाले हबशियों को ख़रीद लेते थे। वाल्टर रेले (Walter Raleigh) ने अमेरिका से आलू और तम्बाकू लाकर योरप में उनका प्रचार किया। ये दोनों वस्तुएँ

सर फ्रांसिस ड्रेक

योरप के लिए बिलकुल नई थी और वहीं से फिर समस्त भूमण्डल में फैलीं। रेले ने अमेरिका में प्रथम अँगरेज़ी उपनिवेश की स्थापना की

और उसका नाम वर्जीनिया (Virginia) अर्थात् "कुमारी रानी एलिज़ेबेथ की भूमि" रखा। हॉकिन्स का सम्बन्धी ड्रेक (Drake) इन सबसे बढ़कर रहा। वह पहला अँगरेज़ था जिसने पैसफ़िक या प्रशान्त महासागर पार किया। तीन वर्ष की कठिन समुद्र-यात्रा करके उसने दुनिया के चारों ओर चक्कर लगाया और बहुत-सा धन लेकर वह कुशल-पूर्वक इँगलैंड लौट आया। एलिज़ेबेथ ने उसकी भूमंडल की समुद्र-यात्रा की सफलता का समाचार सुनकर उसे नाइट (Knight) की उपाधि दी।

स्पेन और इँगलैंड में युद्ध का प्रारम्भ—सन् १५८० में स्पेन और पुर्तगाल के राजसिंहासन मिल जाने के कारण स्पेन के राजा फ़िलिप द्वितीय (Philip II) की शक्ति बहुत बढ़ गई; क्योंकि अब पूर्वीय और पश्चिमीय व्यापार दोनों उसके हाथ में आ गये। फ़िलिप इँगलैंड के साथ झगड़ा करने से हिचकता था। उसे भय था कि कहीं इँगलैंड और फ्रांस मिलकर स्पेन पर आक्रमण न कर दें। परन्तु अपनी शक्ति बढ़ जाने से उसका भय कम हो गया और उसने इँगलैंड के कैथोलिकों को एलिज़ेबेथ के विरुद्ध उत्तेजित करना आरम्भ किया। एलिज़ेबेथ ने भी इसका उचित बदला लिया; और फ़िलिप के विरुद्ध नीदरलैंड के प्रोटेस्टेंटों को पूरी सहायता पहुँचाई। नीदरलैंड अब तक स्पेन के अधीन था; परन्तु वहाँ के निवासी कैथोलिक राजा फ़िलिप के विरुद्ध उठ खड़े हुए थे और उन्होंने अपने देश में एक स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राज्य स्थापित
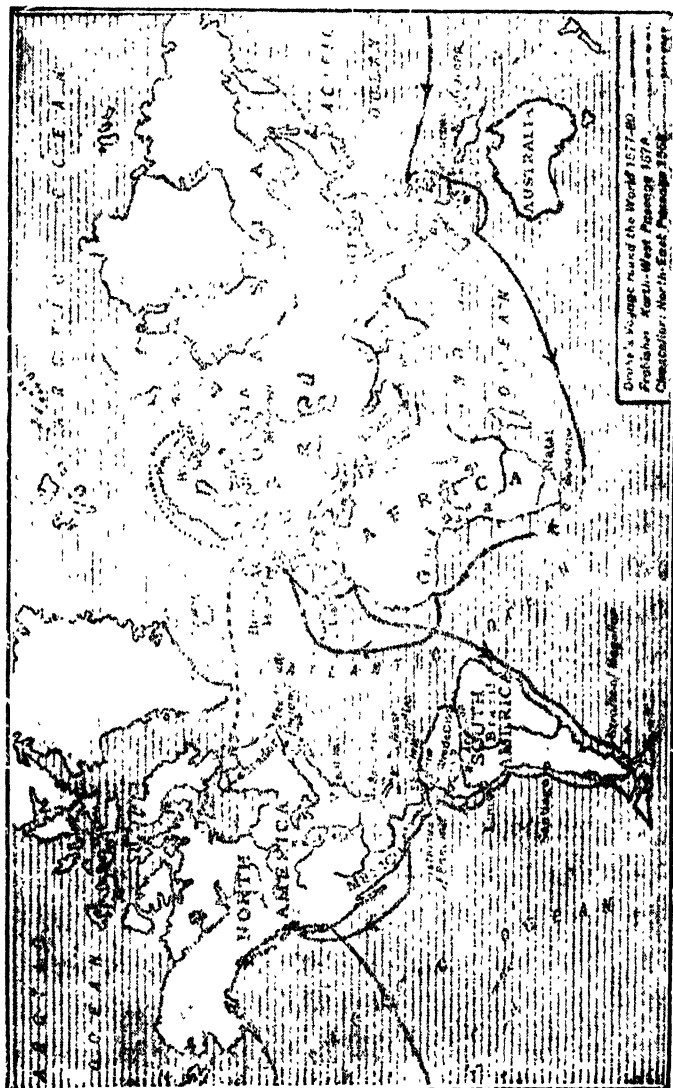
सर फ़िलिप सिडनी

सोलहवीं शताब्दी की प्रसिद्ध समुद्र-यात्रायें

कर लिया था। एलिज़ेबेथ ने अपने प्रेम-पात्र रॉबर्ट डडले, अर्ल आफ़ लीसेस्टर (Robert Dudley, Earl of Liecester) को नीदरलैंड भेजा। डडले योग्य पुरुष न था, इसलिए उसको अधिक सफलता न हुई। परन्तु अँगरेज़ों की सहायता से नीदरलैंड के निवासियों का साहस बहुत बढ़ गया। डडले का भतीजा सर फ़िलिप सिडनी (Sir Philip Sydney), जो बहुत अच्छा कवि भी था, नीदरलैंड में मारा गया।

अब एलिज़ेबेथ ने अँगरेज़ी समुद्र-यात्रियों को भड़काया और उनसे कहा कि तुम लोग, जहाँ अवसर पाओ, स्पेन के जहाज़ों को लूट लो। ड्रेक आदि बड़े साहसी समुद्र-यात्री थे। उन्होंने स्पेनवालों की नाक में दम कर दिया। जब स्पेन के जहाज़ अमेरिका से धन लेकर लौटते थे, तब रास्ते में ये लोग उनको लूट लेते थे। बहुत-से अँगरेज़ी मल्लाहों ने स्पेन के जहाज़ों को लूटना ही अपना पेशा बना लिया। इस प्रकार उन्हें धन भी ख़ूब मिल जाता था; और साथ ही प्रोटेस्टेंट अँगरेज़, धार्मिक दृष्टि से, कैथोलिक स्पेनियों को लूटना-मारना अपना कर्तव्य भी समझते थे। इन अँगरेज़ी समुद्री डाकुओं (Sea-dogs) से स्पेनवाले बहुत तंग आ गये और बदला लेने के अवसर की प्रतीक्षा करने लगे।

आर्मेडा (The Armada)—ऐसी अवस्था में स्पेन का राजा फ़िलिप द्वितीय एक भारी जहाज़ी बेड़ा लेकर इँगलैंड पर आक्रमण करने की तरकीब सोचने लगा। स्पेन की भाषा में भारी जहाज़ी बेड़े को आर्मेडा (Armada) कहते हैं। कैडिज़ के बन्दरगाह में इसके लिए तैयारी हो ही रही थी कि ड्रेक को इसकी ख़बर लग गई। उसने वहाँ पहुँच कर बहुत-से स्पेन के जहाज़ों में आग लगा दी और इँगलैंड लौटने पर बड़े गर्व से कहा कि "मैं स्पेन के राजा की दाढ़ी जला आया हूँ"। इस प्रकार आर्मेडा की तैयारी कुछ दिनों के लिए स्थगित हो गई। परन्तु स्पेनवाले बड़े साहसी थे। दूसरे साल फिर पूरी तैयारी करके आर्मेडा इँगलैंड पर आक्रमण करने के लिए रवाना हुआ। उसमें १३० जहाज़

और १६०० योद्धा थे; और उनका अफ़सर मेडिना सिडोनिया (Medina Sidonia) था। फ़िलिप ने घोषणा की थी कि हमारे आक्रमण का उद्देश्य कैथोलिक मत की रक्षा करना है; और इसलिए उसे आशा थी कि आर्मेडा के इँगलैंड के तट पर पहुँचते ही अँगरेज़ी कैथोलिक स्पेनियों से आ मिलेंगे। ऐसी विकट परिस्थिति में एलिज़ेबेथ ने बड़े धैर्य और बुद्धिमत्ता से काम लिया। उसने लॉर्ड हॉवर्ड (Lord Howard) नामक एक कैथोलिक अफ़सर को अँगरेज़ी बेड़े का कप्तान नियत किया, जिसमें इँगलैंड की जनता पर यह प्रभाव पड़े कि यह कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों का धार्मिक युद्ध नहीं है। अब इसका रूप अँगरेज़ों और स्पेनियों के जातीय युद्ध का हो गया और समस्त अँगरेज़ों ने, धार्मिक विश्वास का विचार छोड़कर, अपनी रानी का साथ दिया।

आर्मेडा की पराजय अँगरेज़ी बेड़े में हॉवर्ड के अतिरिक्त इँगलैंड के विख्यात समुद्र-यात्री ड्रेक, हॉकिन्स और रेले भी थे। जब आर्मेडा दिखाई पड़ा, तब अँगरेज़ी कप्तान बैठे हुए खेल से दिल बहला रहे थे। स्पेन के बेड़े को देखकर वे ज़रा भी न डरे। ड्रेक बोला—"जल्दी क्या है! अपना खेल समाप्त करके भी हम स्पेनियों को परास्त कर लेंगे।" अँगरेज़ों ने आर्मेडा को आगे बढ़ जाने दिया और तब पीछे से उस पर आक्रमण किया। उस समय उत्तरी हवा चल रही थी; इस कारण स्पेन के जहाज़ इँग्लिश चैनेल (English Channel) में न ठहर सके। अवसर पाकर अँगरेज़ों ने दुश्मन के कुछ जहाज़ों में आग लगा दी। अब सफलता की आशा छोड़कर स्पेनवाले भाग चले। उन्हें स्कॉटलैंड का चक्कर लगाकर लौटना पड़ा। रास्ते में उनके बहुत-से जहाज़ तबाह हो गये। बहुत ही थोड़े-से जहाज़ स्पेन वापस पहुँच सके। वहाँ फ़िलिप ने यह कहकर अपने कप्तानों को ढाढ़स दिलाया—"मैंने तुम्हें मनुष्यों से युद्ध करने के लिए भेजा था, समुद्री तूफ़ान से नहीं।" एलिज़ेबेथ का भी यही विचार था कि स्पेनियों की पराजय हवा का रुख़ उनके विरुद्ध हो जाने के कारण हुई; और इसी लिए उसने अपनी

विजय के स्मारक चिह्न में यह लिखाया—"ईश्वर ने हवा चलाई और दुश्मनों को भागना पड़ा।" परन्तु यदि हवा विरुद्ध न भी होती, तो भी स्पेनियों का सफल-मनोरथ होना कठिन ही था। आर्मेडा की पराजय का मुख्य कारण यह था कि उसके जहाज़ बहुत बड़े थे और इसलिए वे शीघ्र चल नहीं सकते थे। इसके सिवा उनके मल्लाह भी थोड़े थे। स्पेन के कप्तान मैडिना सिडोनिया को केवल स्थल-युद्ध का ही अनुभव था; और वह अपने जहाज़ों में अधिकांश ऐसे ही सिपाही भरकर लाया था जो केवल स्थल-युद्ध कर सकते थे। उन्हें वह इँगलैंड में उतारकर स्थल-युद्ध में अँगरेज़ों को परास्त करना चाहता था। परन्तु ड्रेक ऐसे दक्ष समुद्र-यात्रियों के होते हुए स्पेनियों का इँगलैंड में उतरना बहुत कठिन था। इस प्रकार फ़िलिप का इँगलैंड पर आक्रमण करने का प्रयत्न पूर्णतया विफल रहा।

आर्मेडा की पराजय का परिणाम—अब तक योरप भर में स्पेन की ही समुद्री शक्ति सबसे बढ़ी-चढ़ी मानी जाती थी; परन्तु आर्मेडा की पराजय ने स्पेन का मान भङ्ग कर दिया। अब स्पेनियों को एलिज़बेथ के विरुद्ध षड्यंत्र रचने का साहस न हो सकता था। कैथोलिक मत को भी इससे बड़ा धक्का पहुँचा और अब इँगलैंड के प्रोटेस्टंट चर्च को किसी ओर से भी भय न रह गया। आर्मेडा पर विजय प्राप्त करने से अँगरेज़ों की हिम्मत भी ख़ूब बढ़ गई और अब उन्होंने बेधड़क होकर समुद्र-द्वारा व्यापार करना आरंभ किया। वर्तमान काल में ब्रिटेन की समुद्री शक्ति ही अँगरेज़ जाति के उत्थान का प्रधान कारण मानी जाती है। आर्मेडा पर विजय प्राप्त करने से ही इस समुद्री शक्ति की उन्नति का प्रारंभ समझना चाहिए।

आयरलैंड का ट्यूडर राजाओं के अधीन होना—अँगरेज़ी राजा हेनरी द्वितीय (Henry II) को आयरलैंड के सरदारों ने आयरलैंड का स्वामी (Lord of Ireland) मान लिया था। परन्तु अँगरेज़ों का प्रभाव देश के केवल थोड़े से भाग में ही था, जो

अँगरेज़ी प्रान्त (English Pale) कहलाता था। प्रथम ट्यूडर राजा हेनरी सप्तम ने एडवर्ड पायनिंग्ज़ (Edward Poynings) को अपना प्रतिनिधि बनाकर आयरलैंड भेजा। उसने वहाँ जाकर आयरलैंड की पार्लिमेंट से दो क़ानून पास कराये। एक का यह आशय था कि इँगलैंड की पार्लिमेंट के समस्त नियम आयरलैंड में भी माने जायँगे। दूसरे का, जो बहुत दिनों तक "पायनिंग्ज़ राजनियम" (Poynings' Law) कहलाता रहा, यह आशय था कि बिना इँगलैंड की पार्लिमेंट की स्वीकृति के आयरलैंड की पार्लिमेंट कोई राजनियम पास न कर सकेगी।

आयरलैंड निवासी पक्के कैथोलिक थे। इँगलैंड में "धर्म-सुधार" का प्रचार हो जाने के कारण वे अँगरेज़ों को घृणा की दृष्टि से देखने लगे। हेनरी अष्टम के समय में आयरलैंड के सरदारों ने विद्रोह ठान दिया; परन्तु वह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया और आयरलैंड की पार्लिमेंट को हेनरी अष्टम को "आयरलैंड का राजा" (King of Ireland) स्वीकृत करना पड़ा।

अब अँगरेज़ों ने आयरलैंड-निवासियों की भूमि छीनना और वहाँ अँगरेज़ी उपनिवेश (The English Plantations) स्थापित करना आरम्भ किया। रानी मेरी तक की, कैथोलिक होने पर भी, आयरलैंड की जनता के प्रति बस नाममात्र की ही सहानुभूति थी। उसने भी आयरलैंड में किंग और क्वीन काउंटी (King's and Queen's Counties) नामक अँगरेज़ी उपनिवेश स्थापित किये; और वहाँ अँगरेज़ों के लिए फ़िलिप टाउन और मेरी टाउन नामक दो नगर भी बसा दिये गये। इन अँगरेज़ी उपनिवेशों से आयरलैंड-निवासियों की बड़ी हानि होती थी। इस प्रकार उनकी बहुत-सी भूमि उनसे छीन ली जाती थी; इसलिए उनका असन्तोष बढ़ता गया। जब पोप ने इँगलैंड की रानी एलिज़बेथ को ईसाई-मत से पतित घोषित कर रखा था, तब आयरलैंड की कैथोलिक जनता ने अपने देश से अँगरेज़ों

का अधिकार हटाना अपना धार्मिक कर्तव्य समझा। एलिज़बेथ के शत्रुओं ने आयरलैंडवालों को और भी भड़काया। इसका परिणाम यह हुआ कि आनील वंश के अर्ल ने, जो अब तक इँगलैंड से सम्बन्ध के पक्ष में था, विद्रोह खड़ा कर दिया।

एलिज़बेथ ने अर्ल आफ़ एसेक्स (Earl of Essex) को आयरलैंड में शान्ति स्थापित करने के लिए भेजा। एसेक्स को अपनी अयोग्यता के कारण अपने प्रयत्न में सफलता न हुई; और रानी की आज्ञा के बिना ही वह, आयरलैंड को उसी दशा में छोड़कर, इँगलैंड लौट आया। उसे आशा थी कि रानी के कृपापात्र होने के कारण मुझे कुछ दंड न मिलेगा; और इसी लिए वह रास्ते के गन्दे वस्त्र पहने ही रानी से मिलने पहुँच गया। एलिज़बेथ को उसकी इस धृष्टता पर बड़ा क्रोध आया और वह दरबार से निकाल दिया गया। एसेक्स ने विद्रोह करने की चेष्टा की, परन्तु वह क़ैद कर लिया गया और उसे प्राण-दंड दिया गया।

अब एलिज़बेथ ने, लॉर्ड माउंटज्वाय (Lord Mountjoy) को आयरलैंड भेजा। उसने आयरलैंड के विद्रोह को शान्त किया; परन्तु ऐसा करने में उसे देशवासियों के साथ बहुत कठोरता का व्यवहार करना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि आयरलैंड एलिज़बेथ के अधीन तो अवश्य हो गया, परन्तु अँगरेज़ों के प्रति आयरलैंड की जनता की घृणा और भी बढ़ गई। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि आयरलैंड में बहुत दिनों तक बराबर अशान्ति और असन्तोष बना रहा।

एलिज़बेथ के राज्यकाल का गौरव—एलिज़बेथ की गणना इँगलैंड के प्रसिद्ध शासकों में है। अपने ४६ वर्ष के शासन में एलिज़बेथ को बड़ी-बड़ी आपत्तियों का सामना करना पड़ा; परन्तु अपनी बुद्धिमत्ता और धैर्य्य के कारण उसको सब कार्यों में सफलता हुई। एलिज़बेथ के विरुद्ध जितने षड्यन्त्र रचे गये, वे सब विफल रहे; और धीरे-धीरे देश में सुख और शान्ति की स्थापना हुई। अँगरेज़ी चर्च का उचित प्रबन्ध

रानी एलिज़बेथ की सवारी

किया गया, जो अब तक बराबर चला आता है। स्कॉटलैंड से प्रीति का व्यवहार प्रारम्भ हुआ और आयरलैंड पूर्णतया अँगरेज़ों के अधीन हो गया। रानी की पर-राष्ट्र-नीति भी सफल रही; और फ्रांस तथा स्पेन जैसे वैरियों के रहते हुए भी इँगलैंड तीस वर्ष तक विदेशी युद्ध से बचा रहा। अन्त में जब स्पेनवालों ने आक्रमण किया भी तब आर्मेडा की पराजय से इँगलैंड की प्रतिष्ठा और अधिक बढ़ गई।

एलिज़बेथ के समय में देश के धन, व्यापार, साहित्य आदि की भी बड़ी उन्नति हुई और इस कारण एलिज़बेथ का राज्यकाल इँगलैंड के इतिहास में बड़े गौरव का माना जाता है। इस काल की विशेषताओं का उल्लेख अगले परिच्छेद में किया जायगा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १५७८—ड्रेक का पैसफ़िक महासागर पार करना।
,, १५८४—वर्जीनिया उपनिवेश की स्थापना।
,, १५८८—आर्मेडा की पराजय।
,, १५९४—"पायनिग्ज राज-नियम" (Poynings' Law)।
,, १५४१—हेनरी अष्टम आयरलैंड का राजा।
,, १५९९—एसेक्स का आयरलैंड जाना।
,, १६०३—माउटज्वाय का आयरलैंड को जीतना।
,, १६०३—रानी एलिज़बेथ की मृत्यु।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

ट्यूडर काल में इँगलैंड की दशा

(१) "धर्मसुधार" की लहरें

"धर्मसुधार" के कारण—ट्यूडर काल की मुख्य घटना देश में भिन्न प्रकार के धार्मिक परिवर्तनों का होना है। पिछले परिच्छेदों* में उन सब दोषों का उल्लेख कर चुके हैं जो चौदहवीं शताब्दी से चर्च के प्रबन्ध तथा धार्मिक सम्प्रदायों के सचालन में बराबर बढ़ते जा रहे थे। जब तक जनता में अज्ञान रहा उस काल तक तो इन सब दोषों की ओर लोगों का ध्यान न गया; यहाँ तक कि विकलिफ़ (Wycliffe) जैसे धर्मसुधारकों के उपदेश का भी कोई स्थायी परिणाम न हुआ। परन्तु सोलहवीं शताब्दी के आरम्भिक काल में विद्योन्नति की लहर फैलने के कारण जनता की आँखें खुलीं और जब मार्टिन लूथर (Martin Luther) और जॉन कैलविन (John Calvin) इत्यादि ने धार्मिक अंधविश्वासों और चर्च के पदाधिकारियों के पाखंडमय जीवन के विरुद्ध प्रचार शुरू किया तो उनके शब्दों का अधिकांश योरप पर जादू की तरह प्रभाव पड़ा। कितने ही योरपीय चर्चों ने रोम के पोप से सम्बन्ध हटा लिया और "धर्मसुधार" (Reformation) की लहर बड़े वेग से आगे बढ़ने लगी।

इँगलैंड में "धर्मसुधार" के भिन्न-भिन्न रूप—"धर्मसुधार" की लहर का कुछ दिन तक इँगलैंड में कुछ भी प्रभाव न पड़ा। परन्तु जैसा कि हम पाँचवें परिच्छेद में बतला आये हैं, हेनरी अष्टम का अपनी पत्नी कैथराइन के परित्याग के प्रश्न पर रोम के पोप से व्यक्तिगत झगड़ा हो जाने के कारण उसने इँगलैंड के चर्च को पोप की

* देखो पृष्ठ २२।

अधीनता से निकालकर स्वय अपने को अँगरेज़ी चर्च का अधिष्ठाता उद्घोषित कर दिया। इस प्रकार इँगलैंड में "धर्मसुधार" का प्रारम्भ हुआ और प्रोटेस्टंट मत ने अँगरेज़ी चर्च में प्रवेश किया। परन्तु हेनरी अष्टम ने प्रबन्ध के अतिरिक्त मूल धार्मिक सिद्धान्तो में कोई परिवर्तन न होने दिया और इस कारण पोप से सम्बन्ध त्याग होने पर भी अँगरेज़ी चर्च के सिद्धान्त अभी सनातन ही बने रहे।

एडवर्ड षष्ठ के राजत्वकाल में उसके दोनों सरक्षको समर्सेट और नार्थम्बरलैंड ने मुख्य सिद्धान्तों में भी परिवर्तन कर डाला और इँगलैंड के चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेंट बनाने की चेष्टा की; परन्तु इस परिवर्तन को जनता ने पसन्द न किया। चर्च-प्रबन्ध में रोम के पोप के स्थान पर इँगलैंड के राजा के अधिष्ठाता हो जाने से देशवासी प्रसन्न हुए थे, परन्तु मूल धार्मिक सिद्धान्तों में परिवर्तन के नाम से लोग अभी तक हिचकते थे।

इसके पश्चात् जब रानी मेरी का राज्य प्रारम्भ हुआ तब उसने नये परिवर्तनों को एकदम रद कर दिया और बलपूर्वक "धर्मसुधार" के नये पौदे को इँगलैंड की भूमि से सदा के लिए उखाड़ देना चाहा। कुछ काल के लिए अँगरेज़ी चर्च फिर से कैथालिक हो गया, परन्तु जनता का विरोध तथा प्रोटेस्टेंटों की चिताओं की आग बराबर बतला रही थी कि मेरी का प्रबन्ध उसके राजत्वकाल तक ही स्थायी रह सकेगा।

मेरी की मृत्यु के पश्चात् जब एलिज़बेथ राजसिंहासन पर आई तो उसने चर्च के प्रश्न का ऐसी बुद्धिमानी से निबटारा कर दिया कि जिससे "धर्मसुधार" के समर्थक तथा विरोधी दोनों संतुष्ट हो सकें यह उद्घोषित कर दिया गया कि पोप के स्थान पर इँगलैंड के राजा या रानी ही चर्च के अधिष्ठाता हुआ करेंगे, प्रार्थना-पुस्तक में लैटिन के स्थान पर देश-भाषा अर्थात् अँगरेज़ी ही का प्रयोग होगा। परन्तु इसके अतिरिक्त मूल सिद्धान्तों में केवल साधारण ही परिवर्तन किये गये, जिससे सनातन-धर्मावलम्बियों को अधिक विरोध करने का अवसर न रहे।

वर्तमान अँगरेज़ी चर्च—वर्तमान अँगरेज़ी चर्च का प्रबन्ध एलिज़ेबेथ के निबटारे ही के अनुसार होता है। अँगरेज़ी चर्च (English Church) ही इँगलैंड का जातीय चर्च माना जाता है और देश के प्रतिसैकड़ा ९० मनुष्य इसमें सम्मिलित हैं। अन्य धार्मिक सम्प्रदायों का बिलकुल विनाश नहीं हुआ और आगे चलकर भी धार्मिक विषयों पर काफ़ी बखेड़े होते रहे; परन्तु एलिज़ेबेथ के समय से जो अँगरेज़ी चर्च की पार्टी (English Church Party) बनी, उसकी इँगलैंड में प्रधानता के विषय में कभी संदेह न हो सका।

इँगलैंड के "धर्मसुधार" में हेनरी अष्टम तथा एलिज़ेबेथ दोनों का अधिक ध्यान मूल धार्मिक सिद्धान्तों में परिवर्तन की ओर इतना न था जितना कि एक विदेशी पोप की अधीनता को हटाकर चर्च के प्रबन्ध में स्वाधीनता प्राप्त करने की ओर था। इस प्रकार ट्यूडर काल में "धर्मसुधार" का रूप अधिकतर राजनीतिक रहा और इसी कारण इँगलैंड के "धर्मसुधार" को इतिहासकार "राजनीतिक धर्मसुधार" (Political Reformation) कहते हैं।

(२) ट्यूडर निरंकुश शासन
(Tudor Despotism)

ट्यूडर राजाओं का पार्लिमेंट को वश में करना—हम कह आये हैं कि पन्द्रहवीं शताब्दी तक आते-आते पार्लिमेंट ने यथेष्ट शक्ति प्राप्त कर ली थी। सोलहवीं शताब्दी पार्लिमेंट के शक्तिहीन होने का काल है। ट्यूडर राजा बराबर स्वेच्छाचारी बनने का प्रयत्न करते रहे; और उन्होंने बड़े अच्छे ढंग से पार्लिमेंट को अपनी मुट्ठी में किया। लार्ड-सभा (House of Lords) के सदस्यों में मठों के अध्यक्षों की यथेष्ट संख्या होती थी; इसलिए मठों के टूट जाने पर बहुत-सी जगहें ख़ाली हो गईं। ट्यूडर राजाओं ने इन जगहों पर नये ज़मींदारों को, जो मठों की भूमि मोल लेने से मालदार हो गये थे, भर दिया।

ये नये सदस्य सदा राजा के पक्ष में रहते थे; और इस प्रकार लार्डसभा में राजा के समर्थकों की यथेष्ट संख्या हो गई।

लोक-सभा (House of Commons) भी इसी तरह वश में की गई। छोटे-छोटे ग्रामों को भी लोक-सभा के लिए प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया गया। ऐसे छोटे स्थानों के प्रतिनिधि प्रायः अनपढ़ होते थे और सब अवसरों पर वे राजा के ही पक्ष में अपना मत देते थे। सभा के प्रधान (Speaker) को भी राजा ही नियुक्त करता था, और उन दिनों इस प्रधान को वर्तमान काल के प्रधानों से कहीं अधिक अधिकार प्राप्त थे। वह जिस प्रस्ताव को चाहता, उसे रोक सकता था; और सभा के कार्यों की सारी बागडोर उसी के हाथ में होती थी। सोलहवीं शताब्दी की पार्लिमेंट के वाद-विवाद के विवरणों से पता चलता है कि उस काल में लोक-सभा के प्रधान के द्वारा ट्यूडर राजाओं को बहुत सहायता मिलती थी।

पार्लिमेंट का सबसे बड़ा काम नये राज-करों के लिए स्वीकृति देना था। ट्यूडर राजाओं ने चर्च आदि की सम्पत्ति लेकर राजकोष में इतना अधिक धन इकट्ठा कर लिया था कि उन्हें नये राज-कर लगाने की बहुत ही कम आवश्यकता पड़ती थी। इसलिए पार्लिमेंट का अधिवेशन भी जल्दी-जल्दी करने की कोई आवश्यकता न होती थी। ट्यूडर काल में पार्लिमेंट के अधिवेशन बहुत कम होते थे; और इस कारण उसके सदस्यों को आपस में मिलने तथा अपनी शक्ति बढ़ाने का बहुत कम अवसर मिलता था।

ट्यूडर निरंकुश शासन—पार्लिमेंट के प्रति ट्यूडर राजाओं का व्यवहार बड़ी बुद्धिमानी का होता था। राज्य की सारी बागडोर वे स्वयं अपने हाथ में रखते थे; परन्तु साथ ही यह कभी प्रतीत न होने देते थे कि पार्लिमेंट के अधिकारों में कोई हस्तक्षेप किया जा रहा है। पार्लिमेंट की दोनों सभाओं में उनके समर्थकों की यथेष्ट संख्या थी ही; इस कारण वे जो चाहते थे, पार्लिमेंट ही के द्वारा करा सकते थे। ट्यूडर

काल के सब राजनियम पार्लिमेंट ने ही पास किये थे। परन्तु जब कभी आवश्यकता होती थी, तब ट्यूडर राजा राजकीय घोषणा (Royal Proclamation) द्वारा किसी विषय के निर्णय करने के अधिकार का भी उपयोग कर लेते थे। सब राज-कर पार्लिमेंट को ही स्वीकृति से लगाये जाते थे, परन्तु ट्यूडर राजाओं ने ऋण (Loan) और दान (Benevolence) के रूप में राजकोष के लिए धन लेने का अच्छा ढँग निकाल रखा था। न्याय यद्यपि देश के क़ानून के अनुसार ही होता था, परन्तु फिर भी विशेष प्रकार के अपराधियों को दंड देने के लिए "नक्षत्रभवन" (Star Chamber) और "धार्मिक न्यायालय" (High Commission Court) स्थापित कर दिये गये थे।

ट्यूडर राजाओं के स्वेच्छाचारी होने में सुविधायें—ट्यूडर काल में जनता बहुत सन्तुष्ट थी और ट्यूडर राजा स्वेच्छाचारी होने पर भी सर्वप्रिय थे। इसका मुख्य कारण यह था कि उन्होंने देश में सुख और शान्ति की स्थापना की थी। देशवासी अभी गुलाबों के युद्ध (Wars of the Roses) की दुर्घटनाओं को न भूले थे; और इसलिए ऐसे राजवंश के प्रति, जिसके द्वारा एक घोर अनर्थ के काल के पश्चात् शान्ति स्थापित हुई, जनता की हार्दिक सहानुभूति का होना स्वाभाविक ही था। उस समय देश में योग्य स्वेच्छाचारी राजाओं की आवश्यकता भी थी। बिना प्रबल शासन के पन्द्रहवीं शताब्दी की बिगड़ी हुई सामाजिक दशा में सुधार होना सर्वथा असम्भव था।

मध्यकाल में राजशक्ति कम करने का कार्य बड़े भूमिपतियों के ही द्वारा हुआ था; परन्तु गुलाबों के युद्ध में भूमिपतियों के बहुत-से वंश बरबाद हो गये थे; और इस कारण राजाओं की शक्ति को रोकने का अब कोई उपाय न रह गया। भूमिपतियों के नये वंश, जो मठों की भूमि प्राप्त करके धनिक हुए थे, प्रायः राजा के ही बनाये और बढ़ाये हुए थे; और इसलिए वे अधिकतर राजशक्ति के ही समर्थक होते थे।

राजा की शक्ति पर भूमिपतियों के अतिरिक्त चर्च का भी कुछ दबाव रहता था। परन्तु "धर्मसुधार" (Reformation) की लहर फैलने के कारण चर्च की स्थिति में भारी परिवर्तन हो गया। इँगलैंड का राजा स्वयं देश के चर्च का प्रधानाध्यक्ष हो गया और अब वही चर्च के पदाधिकारियों की नियुक्ति भी करने लगा। इस प्रकार राजा पर चर्च का भी कुछ दबाव न रह गया।

आगे चलकर हम बतलावेंगे कि सत्रहवीं शताब्दी में पार्लिमेंट के अधिकार बढ़ाने के सम्बन्ध में मध्यम श्रेणी की जनता के द्वारा ही विशेष उद्योग और आन्दोलन हुआ; परन्तु ट्यूडर काल में इस श्रेणी की उन्नति का प्रारम्भमात्र ही था। सोलहवीं शताब्दी की व्यापारिक उन्नति के द्वारा इस श्रेणी का उत्थान हुआ; परन्तु इसकी शक्ति की वास्तविक वृद्धि सत्रहवीं शताब्दी में जाकर हुई।

ट्यूडर निरंकुश शासन का प्रभाव—ट्यूडर राज्य में शान्ति होने के कारण देश को उन्नति करने का अच्छा अवसर मिला। मेरियट (Marriot) महोदय लिखते हैं—"देश की बिगड़ी हुई सामाजिक तथा आर्थिक दशा के सुधार का ट्यूडर निरंकुश शासन ही एकमात्र साधन था।" पार्लिमेंट की स्थिति पर भी इसका अच्छा ही प्रभाव पड़ा। ट्यूडर राजाओं जैसे योग्य शासकों के राज्यकाल में पार्लिमेंट को बहुत कुछ सीखने का अवसर मिला। सोलहवीं शताब्दी भर तो पार्लिमेंट अवश्य शक्तिहीन रही; परन्तु धीरे-धीरे उसकी वास्तविक शक्ति की वृद्धि के साधन भी प्रस्तुत होते जा रहे थे। इसके लक्षण रानी एलिज़बेथ के राज्य-काल के अन्तिम वर्षों में दिखाई पड़ने लगे थे। रानी अपने कृपापात्रों को पुरस्कार के रूप में किसी वस्तु के व्यापार का एकाधिकार (Monopoly) दे दिया करती थी। पार्लिमेंट ने इस प्रथा का विरोध किया और रानी को सब एकाधिकार हटाने पड़े। अगले राज्यवंश के शासनकाल में तो पार्लिमेंट की शक्ति स्पष्ट रूप में दिखाई देने लगी; और जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा, सत्रहवीं शताब्दी

में स्टुअर्ट राजाओं से लड़-झगड़कर पार्लिमेंट ने बहुत-से अधिकार प्राप्त किये।

(३) व्यापारिक तथा साहित्यिक उन्नति

समुद्र-यात्रायें और व्यापार—ट्यूडर काल में बहुत-से नये-नये देशों का ज्ञान प्राप्त हुआ। कोलम्बस (Columbus) ने अमेरिका और वास्को डा गामा (Vasco de Gama) ने केप आफ़ गुड होप होकर भारतवर्ष के समुद्री रास्ते का पता लगाया। लैब्रडर का पता लगानेवाले जान कैबट (John Cabot), श्वेत सागर (White Sea) तक पहुँचनेवाले रिचर्ड चांसलर (Richard Chancellor), अफ्रीका से दास व्यापार स्थापित करनेवाले हाकिन्स (Hawkins), अमेरिका में प्रथम अँगरेज़ी उपनिवेश स्थापित करनेवाले वाल्टर रेले, (Walter Raleigh) और भूमण्डल की पहले-पहल परिक्रमा करनेवाले ड्रेक (Drake) का उल्लेख हम कर ही चुके हैं (देखो पृ० ५२–५३)। इन बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्राओं से, विशेष कर आमेंडा की पराजय के पश्चात्, इँगलैंड के व्यापार में बहुत उन्नति हुई। अब अँगरेज़ लोग विदेश जाकर व्यापार करने लगे; और बहुत-सी कम्पनियों की स्थापना हुई। इनमें सबसे मुख्य ईस्ट इंडिया कम्पनी (East India Company) थी; जिसने भारतवर्ष में अँगरेज़ी राज्य की स्थापना की। अब तक योरप में

एलिज़ेबेथ के समय की वास्तु-विद्या

एंटवर्प (Antwerp) व्यापार का बड़ा केन्द्र माना जाता था; परन्तु नीदरलैंड में स्पेनियों का अत्याचार होने से कारण इस नगर को बहुत हानि पहुँची। एंटवर्प के नष्ट होने से लन्दन (London) की उन्नति का मार्ग खुला और धीरे-धीरे यह नगर केवल योरप के ही नहीं, बरन समस्त भूमंडल के व्यापार का केन्द्र हो गया। एलिज़बेथ के समय में लन्दन में रॉयल एक्सचेंज (Royal Exchange) की स्थापना हुई, जिसमें बड़े-बड़े व्यापारी मिलकर आपस के हिसाब-किताब चुकाते थे।

भोग-विलास की वृद्धि—व्यापार की उन्नति के द्वारा देश धनी भी हो गया, और पहले की अपेक्षा उसकी जन-संख्या भी अधिक बढ़ गई। धन के बढ़ने से अब लोगों के रहन सहन में भी उन्नति होने लगी। एलिज़ेबेथ के राज्यकाल में बहुत-सी बढ़िया-बढ़िया इमारतें तैयार हुईं, जिनसे देश की रौनक़ ख़ूब बढ़ गई। साधारण मनुष्यों के मकानों में भी उन्नति दिखाई देने लगी। पहले केवल अमीरों के यहाँ खिड़कियों में शीशे लगाये जाते थे; परन्तु अब शीशेदार खिड़कियाँ लगाना एक साधारण बात हो गई। पहले पाल बिछाकर और लकड़ी के टुकड़े का तकिया लगाकर ही लोग रात काट देते थे; परन्तु अब कम्बल, दरियाँ और मुलायम तकिये घर घर दिखाई देने लगे। नगरों में बाग़ लगाये गये, जिनमें ख़ूब भड़कीले वस्त्र पहनकर लोग टहलने जाते थे। देश में नये नये खेल-तमाशे होने लगे और जानवरों की लड़ाइयाँ देखने के लिए सहस्रों मनुष्य पहुँचने लगे। बग्घियाँ भी काम में आने लगीं, परन्तु वे भारी होती थीं, और फिर सड़कों में अभी बहुत कम उन्नति हुई थी।

दरिद्र-संरक्षण-नियम—देश के दरिद्रों और कंगालों के लिए भी प्रबन्ध किया गया। माध्यमिक काल से ऐसे लोगों का काम मठों के सदाव्रतों से ही चलता था; परन्तु अब मठों के टूट जाने पर उनका कोई ठिकाना न रह गया था। एलिज़ेबेथ के राज्यकाल में दरिद्रों की रक्षा के लिए "दरिद्र-संरक्षण-नियम" (Poor Laws) बनाये गये। इन नियमों के अनुसार सड़कों पर भीख माँगते फिरना अपराध ठहराया

गया। जिनकी जीविका का कोई सहारा न था, उनके लिए दरिद्रालय (Poor House or Work House) स्थापित किये गये। उनमें अपाहिजों को मुफ़्त खाना कपड़ा मिलता था। परन्तु जो लोग काम करने योग्य होते थे, उनसे भरपूर काम लेकर तब उन्हें पेट भर अन्न दिया जाता था। इसका अभिप्राय यह था कि जिन्हें कहीं ठिकाना न हो, केवल वही दरिद्रालयों की शरण लें। प्रत्येक महल्ले में राज्य की ओर से निरीक्षक नियत थे जो लोगों से थोड़ा-सा कर (Poor Rate) वसूल करके उससे दरिद्रालयों का ख़र्च चलाते थे। उन्नीसवीं शताब्दी तक इँगलैंड के कंगालों की रक्षा इन्हीं नियमों-द्वारा होती रही।

एलिज़बेथ के काल का साहित्य—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में विद्या का जो पुनर्जन्म (Renaissance) हुआ था, उसके विषय में हम पहले ही बतला चुके हैं। एलिज़बेथ के राज्यकाल तक पहुँचते पहुँचते हम विद्या में बहुत कुछ उन्नति पाते हैं। देश में सुख और शान्ति होने के कारण विद्या और साहित्य की भी ख़ूब उन्नति हुई। बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्राओं और विदेशी व्यापारों के कारण लोग अपने देश के अतिरिक्त अन्य देशों के इतिहास का भी अध्ययन
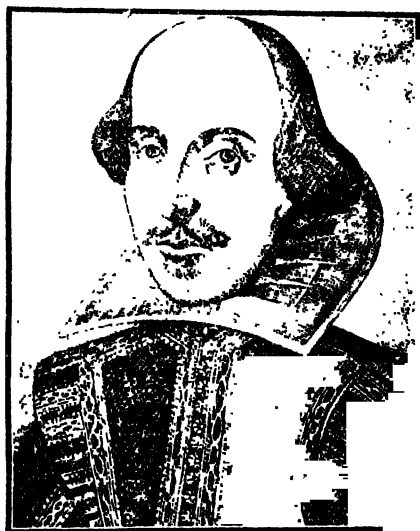
शेक्सपियर

करने लगे। वाल्टर रेले ने तुर्कों का इतिहास और समस्त भूमंडल का एक संक्षिप्त इतिहास प्रकाशित किया।

एलिज़ेबेथ का राज्यकाल साहित्य के लिए बड़े महत्त्व का माना जाता है। इँगलैंड का सबसे प्रसिद्ध कवि और नाटककार शेक्सपियर (Shakespeare) इसी काल में हुआ था। इसके अतिरिक्त इस काल में और भी कई प्रसिद्ध लेखक तथा विद्वान हुए। फ्रांसिस बेकन (Francis Bacon), बड़ा प्रसिद्ध निबन्ध-लेखक था और वह आधुनिक विज्ञान का जन्मदाता (Father of Modern Science) भी माना जाता है। एडमंड स्पेन्सर (Edmund Spencer) के काव्यों का अँगरेज़ी साहित्य में बहुत उच्च स्थान है; और रिचर्ड हुकर (Richard Hooker) धार्मिक विषयों का बड़ा प्रसिद्ध लेखक हुआ है।

इन्हीं प्रसिद्ध कवियों तथा लेखकों के कारण एलिज़ेबेथ के राज्य काल को अँगरेज़ी साहित्य का "स्वर्ण काल" (Golden Age) कहते हैं।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६०१ — दरिद्र-संरक्षण-नियम (Poor Laws)
" १६०१ — एकाधिकारों (Monopolies) का अन्त।
" १५६६ — रॉयल एक्सचेंज (Royal Exchange) की स्थापना
" १५८७ शेक्सपियर (Shakespeare) का लन्दन में आगमन।
" १५९० — स्पेन्सर की "Fairie Queen" का प्रकाशन।
" १५९४ — हुकर की "Ecclesiastical Polity" का प्रकाशन।
" १५९७ — बेकन के "Essays" का प्रकाशन।

Model Questions

(Tudor Period)

1. Briefly narrate how the Tudor rule began in England. What claims had Henry VII to the English throne ?

2. Indicate the difficulties with which Henry VII was confronted, the measures he took to overcome them and the extent to which he was successful.

(*Hint*—Pay special attention to his measures to control the barons and to gather money and to his policy of Dynastic Marriages.)

3 What was the object of Henry VII's Dynastic Marriages ? Point out the importance of the marriages of (i) Arthur and Catherine, and (ii) Margaret and James IV.

4. Why is the year 1485 regarded as the commencing point of modern England ?

5. Explain the term "Reformation" and point out the causes which led to it,

6. "Henry VIII's breach with the Papacy was caused by purely personal motives, but it led to results of vast national importance." Elucidate.

(*Hint*—Explain how a purely personal quarrel began between Henry VIII and the Pope over the question of Catherine's divorce and how it led to the separation of the English Church from the Papacy.)

7. Give a brief sketch of the career of Cardinal Wolsey, and estimate the effect of his foreign policy.

8. Write a short account of the reign of Edward VI.

9. What were the aims of Queen Mary Tudor? Show that with such aims the struggles of her reign were inevitable.

(*Hint*—She tried to force Catholicism upon England against the wishes of the people.)

10. Give an estimate of the home and foreign policy of Elizabeth, dwelling mainly on (i) her relations with Parliament, (ii) her dealings with the Puritans and the Catholics, and (iii) her attitude towards Spain and the Papacy.

11. Give a brief sketch of the career of Mary Queen of Scots.

12. Give an account of the Armada's invasion of England. Point out the effect of its destruction upon the position of England.

13. Give an account of the commercial, literary and social activities of Elizabeth's reign. Why is her reign regarded as the golden period of English History ?

14. Explain the term "Despotism." What factors enabled the Tudors to rule successfully as despots ?

15. Give an account of the important voyages of discovery during the Tudor Period. How did they affect the commerce of England ?

16. Give an account of England's relations with Spain during the Tudor Period.

(*Hint*—Good relations during the reign of Henry VII, as a consequence of Prince Arthur's marriage with Catherine—relations ruffled during the reign of Henry VIII as a consequence of Catherine's divorce—good relations again, as a consequence of Queen Mary Tudor's marriage with Philip II of Spain—relations again ruffled during Elizabeth's reign—Spain's plan for the invasion of England and its failure; the Armada)

17. "Elizabeth found England divided and weak; she left it united and strong." Explain.

18. Trace the various steps by which the Church of England was separated from the Church of Rome.

19. What various turns did the "Reformation" take during the Tudor Period ?

(*Hint*—See section I, chapter XI.)

20.—Write short notes on the following:—Star Chamber Court, Cardinal Morton's Fork, Anne Boleyn, Martin Luther, Dissolution of the Monasteries, Protector Somerset, Cardinal Pole, Cranmer, Raleigh, Hawkins, Drake, John Knox, Elizabethan Literature, Sir Thomas More, High Commission Court, Monopolies, Poor Laws.

दूसरा खण्ड

स्टुअर्ट शासन

तथा

राजनीतिक आन्दोलन का काल

पहला परिच्छेद

जेम्स प्रथम तथा दैवी अधिकार

(सन् १६०३—१६२५)

(१) स्टुअर्ट वंश के राज्य का प्रारम्भ

जेम्स प्रथम, ग्रेट ब्रिटेन और आयरलैंड का राजा—एलिज़ेबेथ की मृत्यु के पश्चात् हेनरी अष्टम की बड़ी बहन मार्गरेट का परपोता स्कॉटलैंड का स्टुअर्ट राजा जेम्स षष्ठ इँगलैंड के सिंहासन पर बैठा। वह इँगलैंड का प्रथम स्टुअर्ट राजा हुआ और अँगरेज़ी इतिहास में "जेम्स प्रथम" के नाम से प्रसिद्ध है। अब इँगलैंड और स्कॉटलैंड के राजसिंहासन सम्मिलित हो गये; दोनों देशों के झंडे भी मिला दिये गये; और इस सम्मिलित झंडे का नाम "यूनियन जैक" (Union Jack) पड़ा। परन्तु दोनों देशों के चर्च, पार्लिमेंट और क़ानून अभी तक अलग ही रहे। एलिज़ेबेथ के समय में आयरलैंड अँगरेज़ों के अधीन हो ही चुका था; इसलिए जेम्स आयरलैंड का भी राजा हुआ।

जेम्स प्रथम

वंशावली नम्बर २
स्टुअर्ट राजाओं की वंशावली
हेनरी सप्तम
हेनरी अष्टम
मार्गरेट = जेम्स चतुर्थ (स्कॉटलैंड का राजा)
जेम्स पंचम
स्कॉटलैंड की रानी मेरी
जेम्स प्रथम (१६०३–१६२५)
(इँगलैंड का पहला स्टुअर्ट राजा)
चार्ल्स प्रथम (१६२५—१६४९)
एलिज़बेथ = फ्रेडरिक (पैलेटिनेट का राजा)
सोफ़िया = हनोवर का राजा
हनोवर-वंश (१७१४ से)
चार्ल्स द्वितीय (१६६०-१६८५)
मेरी आफ़ मोडेना = जेम्स द्वितीय (१६८५–१६८८) = एनीहाइड
विलियम = मेरी
आफ़ आरेंज
जेम्स एडवर्ड (Old Pretender)
चार्ल्स एडवर्ड (Young Pretender)
रानी एन (१७०२–१७१४)
रानी मेरी द्वितीय (१६८९–१६९४) = विलियम तृतीय (१६८९–१७०२)

आयरलैंड की जनता अँगरेज़ों के अधीन रहने की सदा विरोधी रही और अल्स्टर (Ulster) प्रान्त के कुछ सरदारों ने विद्रोह भी किया। जेम्स ने विद्रोहियों की जायदादें छीन लीं और उनके स्थान पर अल्स्टर में अँगरेज़ों और स्काट लोगों को बसा दिया।

(२) तीस वर्षीय युद्ध
(Thirty Years' War)
(१६१९-१६४९)

तीसवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ—सत्रहवीं शताब्दी में जर्मनी और मध्य योरप में लगभग तीन सौ छोटी-छोटी रियासतें थीं। ये सब मिलकर "पवित्र रोमन साम्राज्य" (Holy Roman Empire) के नाम से प्रसिद्ध थीं; और इस साम्राज्य का अधिष्ठाता प्रायः आस्ट्रिया का राजा हुआ करता था, जो सम्राट् कहलाता था। सम्राट् फ़र्डिनेंड (Emperor Ferdinand) के समय, उसके प्रोटेस्टेंट मतावलम्बियों के सताने के कारण, सब प्रोटेस्टेंट रियासतें उसके विरुद्ध हो गईं। बोहीमिया (Bohemia) वालों ने एक दूसरा राजा भी चुन लिया और इँगलैंड की सहायता पाने के आशय से उन्होंने पैलेटिनेट के राजा फ्रेडरिक (Frederick, Elector of Palatinate) को, जो जेम्स प्रथम का दामाद था, बोहीमिया के राजसिंहासन पर बैठाया। अन्य प्रोटेस्टेंट राज्यों ने बोहीमिया का साथ दिया और यह देखकर सब कैथोलिक राज्य आस्ट्रिया की सहायता करने लगे। इस प्रकार मध्य योरप के कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट राज्यों में एक भयङ्कर युद्ध छिड़ गया, जो निरन्तर तीस वर्षों तक चलता रहा।

बोहीमिया के नये राजा फ्रेडरिक को आस्ट्रिया की सेना ने बुरी तरह परास्त किया। उसी समय स्पेन की सेना ने नीदरलैंड से आकर पैलेटिनेट पर अपना अधिकार जमा लिया; और इस प्रकार बेचारा फ्रेडरिक अब कहीं का न रहा।

जेम्स प्रथम की पर-राष्ट्रनीति—फ़्रेडरिक को सहायता देने के लिए इँगलैंड की प्रोटेस्टेंट जनता में बहुत जोश फैला और अँगरेज़ी पार्लिमेंट ने उसके पक्ष में बहुत-से प्रस्ताव पास किये। परन्तु जेम्स ने अपने दामाद के लिए कुछ भी न किया। वह इस युद्ध में किसी दल का पक्ष लेना पसन्द न करता था। उसका उद्देश्य यह था कि कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट दोनों मतों के राज्यों से मित्रता करके योरप में शान्ति स्थापित की जाय। इसी लिए उसने अपनी पुत्री का विवाह प्रोटेस्टेंट मतावलम्बी फ़्रेडरिक से किया था; और अपने उक्त उद्देश्य को पूर्णतया सफल करने के लिए उसने अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की कैथोलिक मतावलम्बी राजकन्या इन्फ़ैंटा (Infanta) से करना चाहा। उसे आशा थी कि स्पेन से मित्रता हो जाने पर सम्भव है कि फ़्रेडरिक का भी उद्धार हो जाय और स्पेन का राजा उसे पैलेटिनेट लौटा दे। इँगलैंड की प्रोटेस्टेंट जनता ने स्पेन से विवाह के प्रस्ताव का बहुत विरोध किया; परन्तु जेम्स ने उस पर कुछ भी ध्यान न दिया।

स्पेन से विवाह—स्पेनवाले इन्फ़ैंटा का विवाह एक प्रोटेस्टेंट राजकुमार से नहीं करना चाहते थे। जब उन्होंने टालमटोल की, तब जेम्स ने यही अच्छा समझा कि विवाह के लिए चार्ल्स को स्वयं स्पेन भेज दिया जाय। राजमन्त्री बकिंग्घम (Buckingham) और राजकुमार चार्ल्स, रास्ते में भेस बदलकर, स्पेन की राजधानी मैड्रिड में जा पहुँचे। विवाह के लिए जो शर्तें लगाई गईं, उन सबको भी चार्ल्स ने स्वीकृत कर लिया। परन्तु वास्तव में स्पेन के राजा की विवाह करने की बिलकुल इच्छा न थी। अन्त में उसने साफ़ जवाब दे दिया और चार्ल्स तथा बकिंग्घम को निराश होकर इँगलैंड लौटना पड़ा। कुछ ही दिनों बाद इन्फ़ैंटा का विवाह जर्मनी के एक कैथोलिक राजकुमार से हो गया। जब जेम्स को यह समाचार मिला, तब उसने अपनी शान्तिप्रिय नीति छोड़कर फ़्रेडरिक की सहायता के लिए सेना भेजी; परन्तु उस सेना के किये कुछ भी न हुआ; और इसी बीच में जेम्स की मृत्यु भी हो गई।

चार्ल्स प्रथम का युद्ध में सम्मिलित होना—अब चार्ल्स इँगलैंड के सिंहासन पर बैठा। वह अपने पिता की पर-राष्ट्रनीति की विफलता देख ही चुका था। वह जर्मनी की प्रोटेस्टेंट रियासतों का पक्ष लेकर युद्ध में सम्मिलित हुआ; और उनकी सहायता के लिए इँगलैंड से कुछ धन भी भेजा गया। स्पेनियों को फ़्रेडरिक को पैलेटिनेट लौटाने के लिए बाध्य करने के उद्देश्य से स्पेन के बन्दरगाह कैडिज़ (Cadiz) पर आक्रमण करना निश्चित हुआ; और इसके लिए बकिंघम को एक अँगरेज़ी सेना देकर भेजा गया। परन्तु इस प्रयत्न में सफलता नहीं हुई। अन्त में चार्ल्स समझ गया कि फ़्रेडरिक का उद्धार करना बहुत कठिन है; और इसलिए वह इस योरपीय युद्ध से बिलकुल अलग हो बैठा।

युद्ध का अन्त—कुछ दिनों के बाद स्वीडन का राजा प्रोटेस्टेंट राज्यों का सहायक बनकर खड़ा हुआ। थोड़ी-सी ही विजय प्राप्त करने के पश्चात् वह युद्ध में काम आया। फ़्रांस ने भी, आस्ट्रिया की शक्ति कम करने के आशय से, प्रोटेस्टेंट राज्यों का साथ दिया। अन्त में इस तीस वर्षीय युद्ध का परिणाम यह हुआ कि जर्मनी का बहुत-सा भाग स्वीडन और फ़्रांस को मिल गया; और "पवित्र रोमन साम्राज्य" में अब पहले से भी अधिक फूट के चिह्न दिखाई देने लगे।

इँगलैंड की नीति की विफलता के कारण—इँगलैंड की नीति इस युद्ध में बिलकुल विफल रही। न तो फ़्रेडरिक का ही उद्धार हो सका और न इँगलैंड को और ही कोई लाभ हुआ। इसका मुख्य कारण यही था कि जेम्स और चार्ल्स दोनों बेढंगी तरह से युद्ध में सम्मिलित हुए थे। जेम्स ने बहुत-सा समय स्पेन की मित्रता सम्पादित करने में नष्ट किया; परन्तु उसमें उसे सफलता न हुई। इससे जेम्स के प्रति इँगलैंड के प्रोटेस्टेंटों की भी सहानुभूति कम हो गई। इसके बाद चार्ल्स की योरप भेजी हुई सेनाओं ने कुछ भी करके न दिखलाया; और कैडिज़ का आक्रमण तो सर्वथा विफल ही रहा। विफलता का एक मुख्य कारण यह भी था कि पार्लिमेंट इन दोनों स्टुअर्ट राजाओं तथा इनके मन्त्रियों

पर विश्वास नहीं करती थी; और इसलिए इँगलैंड में फ्रेडरिक के पक्ष में बहुत जोश होने पर भी पार्लिमेंट कभी युद्ध के लिए यथेष्ट धन की स्वीकृति न देती थी।

(३) धार्मिक सम्प्रदाय

धार्मिक दल—सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैंड में तीन मुख्य धार्मिक दल थे। एक तो रोमन कैथोलिक दल (Roman Catholics) था, जो अब तक रोम के पोप को ही अपना धर्मगुरु मानता था। दूसरा अँगरेज़ी चर्च दल (English Church Party) था, जो "धर्म-सुधार" का पक्षपाती था और स्थापित अँगरेज़ी चर्च का अनुयायी था। तीसरा दल प्योरिटन (Puritans) लोगों का था, जो अँगरेज़ी चर्च के संशोधन को यथेष्ट नहीं समझता था और जो "धर्म-सुधार" की लहर को और आगे बढ़ा ले जाना चाहता था। वे तीनों ही दल जेम्स से सहायता प्राप्त करने की आशा करते थे। कैथोलिकों को इसलिए आशा थी कि जेम्स की माता स्कॉटलैंड की रानी मेरी पक्की कैथोलिक थी। अँगरेज़ी चर्च दल को इसलिए आशा थी कि जेम्स इँगलैंड का राजा होने के कारण अँगरेज़ी चर्च का अधिष्ठाता होगा; और इससे उसके प्रति उसकी सहानुभूति अवश्य हो जायगी। और प्योरिटन दल को इसलिए आशा थी कि जेम्स स्कॉटलैंड से आया था, जहाँ के चर्च का संशोधन बहुत कुछ प्योरिटन सिद्धान्तों के अनुसार हुआ था।

"पादरी नहीं तो राजा भी नहीं" (No Bishop, No King)—इन तीनों दलों में जेम्स की सहानुभूति अँगरेज़ी चर्च दल के प्रति हुई। कैथोलिक मतावलम्बी, अपनी भ्रमपूर्ण प्रथाओं के कारण देश में बदनाम थे; और प्योरिटन दल के सिद्धान्तों से जेम्स को बड़ी चिढ़ थी। जेम्स का विचार था कि यदि प्योरिटन सिद्धान्तों के अनुसार चर्च के पदाधिकारी जनता चुनेगी, तो चर्च पर राजा का बिलकुल दबाव

न रह जायगा। वह समझता था कि यदि चर्च में राजा के नियत किये हुए पादरियों के स्थान पर चुनाव की प्रथा चल गई, तो कुछ ही दिनों में लोग राजनीतिक क्षेत्र में भी राजा को हटाकर प्रजा-तन्त्र स्थापित करने का उद्योग करने लगेंगे। इसी लिए जेम्स का कहना था—"पादरी नहीं, तो राजा भी नहीं"।

जेम्स और प्योरिटन दल—जेम्स के राजा होते ही प्योरिटन दलवालों ने एक "सहस्र हस्ताक्षर-युक्त प्रार्थना-पत्र" (Millenary Petition) उपस्थित किया, जिसमें चर्च के पूजा-पाठ बन्द करने और प्रार्थना-पुस्तक में कुछ संशोधन करने के लिए अनुरोध किया गया था। उनका कहना था कि यदि ये सब बातें मान ली जायँ, तो हम लोग अँगरेज़ी चर्च में सम्मिलित होने के लिए तैयार हैं। इस पर जेम्स ने हैम्पटन कोर्ट (Hampton Court) में एक सभा की, जिसमें प्योरिटन दल के नेता और अँगरेज़ी चर्च के बड़े-बड़े पादरी बुलाये गये। परन्तु उस सभा में कोई विशेष निर्णय न हो सका; केवल इतना ही हुआ कि बाइबिल का एक नये ढंग से अनुवाद करने को आज्ञा दी गई; और वह अनुवाद राज्य की ओर से प्रकाशित किया गया। अब प्योरिटन दलवालों के अँगरेज़ी चर्च में मिल जाने की कोई आशा न रह गई; और वे सदा के लिए उससे पृथक् हो गये। तभी से वे Dissenters या Non-conformists अर्थात् "देश के स्थापित चर्च के विरोधी" कहलाने लगे।

जेम्स और कैथोलिक दल (बारूद का षड्यन्त्र)—एलिज़ेबेथ के समय में कैथोलिकों के विरुद्ध कुछ नियम बनाये गये थे; और अँगरेज़ी चर्च की प्रार्थनाओं में सम्मिलित न होने के कारण उन्हें कुछ जुर्माना देना होता था। जेम्स के समय में पहले के नियम फिर से प्रचलित करके और भी कठोर कर दिये गये। इससे कैथोलिक लोग इतना बिगड़े कि उन्होंने एक भीषण षडयन्त्र रचा। पार्लिमेंट-भवन के नीचे गुप्त रीति से बारूद भर दी गई; और यह प्रबन्ध किया गया कि

५ नवम्बर सन् १६०५ को, जब पार्लिमेंट की पहली बैठक हो तब, बारूद में आग लगा दी जाय। इस प्रकार राजा, पार्लिमेंट के समस्त सदस्यों और दरबारियों का नाश हो जायगा। परन्तु उन्हीं षड्यन्त्रकारियों में से एक ने अपने एक सम्बन्धी को, जो पार्लिमेंट का सदस्य था, उसकी रक्षा करने के उद्देश्य से पत्र-द्वारा इसकी सूचना दे दी। उसने वह पत्र राजा को दिखला दिया; और इस प्रकार इस षड्यन्त्र का पता चल गया। षड्यन्त्रकारियों का सारा प्रयत्न विफल हुआ और उनके बहुत से नेता पकड़ कर मरवा डाले गये। इसके बाद कैथेलिकों के विरुद्ध और भी कठोर नियम बना दिये गये।

वाल्टर रेले को प्राणदण्ड—इसके अतिरिक्त जेम्स के राज्यकाल में और भी कई षड्यन्त्र रचे गये, जो अन्त में विफल ही हुए। उनमें से एक षड्यन्त्र के साथ सर वाल्टर रेले (Sir Walter Raleigh) का भी सम्बन्ध पाया गया; और इसलिए उसे प्राणदण्ड की आज्ञा हुई। परन्तु वह रानी एलिज़बेथ के समय का बड़ा प्रसिद्ध समुद्र-यात्री, विद्वान् और लेखक था; इसलिए उसे प्राणदण्ड के स्थान पर जीवन भर के लिए बन्दीगृह में भेज दिया गया। बन्दीगृह ही में रेले ने अपना प्रसिद्ध ग्रंथ "भूमंडल का इतिहास" लिखा। कुछ दिनों बाद रेले ने जेम्स से यह प्रस्ताव किया कि यदि मुझे छोड़ दिया जाय, तो मैं दक्षिण अमेरिका जाकर सोने की खानों का पता लगाऊँ, जिनके विषय में मैंने अपनी यात्राओं में बहुत कुछ सुना है। जेम्स ने यह प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया, परन्तु यह शर्त कर दी कि रेले दक्षिण-अमेरिका में स्पेन की भूमि में कोई हस्तक्षेप न करेगा। रेले दक्षिण-अमेरिका पहुँचा; परन्तु उसे सोने की खानें ढूंढने के प्रयत्न में सफलता नहीं हुई। वहाँ उसका स्पेनियों से भी झगड़ा हो गया, जिसमें कुछ स्पेन के ग्रामों की हानि हुई। इस प्रकार रेले की शर्त भी टूट गई और वह खानों का पता भी न लगा सका। इँगलैंड लौटने पर जेम्स ने पुरानी दंडाज्ञा के अनुसार उसे फाँसी दिलवाई। जेम्स उस समय स्पेन के साथ, उसकी

मित्रता सम्पादित करने के लिए, पत्रव्यवहार कर रहा था; और वास्तव में उसने स्पेनवालों को प्रसन्न करने के लिए ही अपने देश के ऐसे सम्मानित और प्रसिद्ध विद्वान् के प्राण लिये थे।

(४) राजा और पार्लिमेंट

"दैवी अधिकार" (The Divine Rights of Kings)—जेम्स यद्यपि विद्वान् था, पर फिर भी उसमें कई दोष थे। वह अभिमानी था और अपने आपको सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ और कुशल शासक समझता था। उसका मत था कि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है; और इसलिए राजा को देश के शासन के लिए दैवी अधिकार प्राप्त है; उसका कहना था कि जिस प्रकार ईश्वर के सर्वशक्तिमान् होने में शंका करना अधर्म है, उसी प्रकार राजा के सम्बन्ध में भी यह कहना अधर्म है कि राजा अमुक कार्य कर सकता है और अमुक कार्य नहीं कर सकता। ऐसी दशा में यदि प्रारम्भ से ही जेम्स की पार्लिमेंट से न पटी, तो इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

राजा और पार्लिमेंट में झगड़े के कारण—जेम्स तथा अन्य स्टुअर्ट राजाओं ने ट्यूडर राजाओं की भाँति स्वेच्छाचारी होकर राज्य करना चाहा। परन्तु इस समय तक देश की स्थिति में बहुत कुछ परिवर्तन हो गया था। सोलहवी शताब्दी में ट्यूडर राजाओं को स्वेच्छाचारी बनने में जो सुविधायें थीं, वे अब सत्रहवीं शताब्दी तक आते-आते ग़ायब हो चुकी थीं। ट्यूडर काल में देश को बहुत-सी विदेश-सम्बन्धी आपत्तियों का सामना करना पड़ा था; और इसलिए ट्यूडर राजाओं के स्वेच्छाचारी होने पर भी देशवासियों को हर बात में उनका साथ देना पड़ता था। स्टुअर्ट काल में देश को किसी विदेशी आपत्ति का भय न था; और इसलिए जनता निःशंक होकर देश की राजनीतिक दशा के सुधार की ओर ध्यान दे सकती थी।

सोलहवीं शताब्दी में "विद्या के पुनर्जन्म", "धर्म-सुधार" की लहर और एलिज़ेबेथन साहित्य की उन्नति आदि के कारण जनता में यथेष्ट

जाग्रत हो गई। समुद्र-यात्राओं और व्यापार की उन्नति के कारण देशवासी धनी भी होने लगे। इन सब बातों का बहुत कुछ प्रभाव अगली शताब्दी में जाकर अच्छी तरह देखने में आया। इस कारण सत्रहवीं शताब्दी की जनता कभी सुगमता से स्वेच्छाचारी राजाओं के अनुचित कृत्य सहन नहीं कर सकती थी।

ट्यूडर राजाओं ने राजकोष के लिए बहुत अधिक सम्पत्ति एकत्र कर ली थी। वे काम भी किफ़ायत से चलाते थे; इसलिए उन्हें नये राज-करों की स्वीकृति लेने के लिए पार्लिमेंट के अधिवेशन करने की बहुत कम आवश्यकता होती थी। स्टुअर्ट राजाओं को, किफ़ायत से काम न चलाने के कारण, बार-बार पार्लिमेंट से धन माँगना पड़ता था; और धन के बदले में पार्लिमेंट को अधिकार देने पड़ते थे।

ट्यूडर राजाओं की राजनीति प्रायः जनता के इच्छा के अनुकूल ही होती थी: और इसी लिए वे सर्वप्रिय हो सके थे। परन्तु स्टुअर्ट राजा जनता की इच्छा की कुछ भी परवाह न करते थे। जेम्स बराबर स्पेन से मित्रता करने का पक्षपाती रहा; और देशवासी तथा पार्लिमेंट के सदस्य स्पेनियों को इँगलैंड के पुराने और जानी दुश्मन समझते थे।

इन सब कारणों से स्टुअर्ट राजाओं और पार्लिमेंट में झगड़ा अनिवार्य-सा हो गया। जेम्स विद्वान् तथा ईमानदार था; परन्तु उसके हठी होने के कारण शीघ्र ही झगड़ा शुरू हो गया जो बराबर बढ़ता गया। पार्लिमेंट के सदस्यों के साथ जेम्स का बरताव अच्छा न था और वह हर समय अपना "दैवी अधिकार" जतलाना चाहता था। इस कारण अब पार्लिमेंट भी देशवासियों की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए पूर्ण रूप से दृढ़ हो गई।

"अनुचित राज-कर" (Impositions)—इँगलैंड में शराब पर प्रति टन के हिसाब से महसूल लगाया जाता था, जो साधारण बोलचाल में "टनेज" (Tonnage) कहलाता था। व्यापार की अन्यान्य वस्तुओं पर प्रति पाउंड के हिसाब से महसूल लगता था जिसे

पाउंडेज (Poundage) कहते थे। इन्हीं दोनों महसूलों की आय से राजा का निजी व्यय चलता था। यह व्यवस्था एडवर्ड तृतीय के समय से चली आ रही थी। परन्तु इन मदों से उसे जो आय होती थी, वह साधारणतः राज-परिवार के निर्वाह के लिए यथेष्ट नहीं होती थी। जेम्स का काम भी इतने में किसी प्रकार नहीं चलता था; और इसलिए उसने कुछ वस्तुओं पर साधारण से अधिक महसूल लगाना आरम्भ किया। इस नये महसूल के लिए पार्लिमेंट की स्वीकृति प्राप्त नहीं की गई थी; और इसलिए यह "अनुचित राज-कर" (Impositions) के नाम से प्रसिद्ध है। व्यापारियों तथा पार्लिमेंट के सदस्यों ने इसका विरोध किया; परन्तु जेम्स ने न्यायाधीशों से यह निर्णय करा लिया कि आवश्यकता पड़ने पर राजा स्वयं अपने अधिकार से राज-कर लगा सकता है।

इसके अतिरिक्त उसने अपनी आय बढ़ाने के और भी कई उपाय निकाल लिये। वह लोगों से बलपूर्वक ऋण लेता था; और धन लेकर व्यापारियों को कुछ विशिष्ट पदार्थों के क्रय-विक्रय का एकाधिकार तथा धनवानों को उपाधियाँ भी प्रदान करता था। उसने अपनी आय बढ़ाने के लिए ही सन् १६११ में बैरन की नई उपाधि निकाली थी।

राज-मन्त्री—कर लगाने के प्रश्न के अतिरिक्त राजा और पार्लिमेंट में और कई प्रश्नों पर झगड़ा हुआ। जेम्स के दरबार में चापलूसों की खूब चलती थी और वे बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त कर दिये जाते थे। इस कारण राज्य के कर्मचारी तथा राज-मन्त्री अपने कार्य के लिए प्रायः अयोग्य होते थे। इस समय जेम्स का प्रधान मन्त्री ड्यूक आफ़ बकिंघम (Duke of Buckingham) था जिसे, स्पेन की मित्रता का पक्षपाती होने के कारण, जनता नहीं चाहती थी। पार्लिमेंट राजमन्त्रियों पर अपना दबाव रखना और उन्हें जनता के प्रतिनिधियों के इच्छानुसार चलाना चाहती थी। परन्तु जेम्स इसे सहन न कर सका। उसका मत था कि राजमन्त्री राजा के अतिरिक्त और किसी के अधीन नहीं हैं और पार्लिमेंट को उनके कार्यों में कोई हस्तक्षेप न करना चाहिए।

बेकन पर अभियोग—एलिज़बेथ के राज्य-काल का प्रसिद्ध निबन्ध-लेखक तथा आधुनिक विज्ञान का जन्मदाता फ्रांसिस बेकन (Francis Bacon) उस समय प्रधान न्यायाधीश के पद पर था। जेम्स ने अपने मित्रों को कई वस्तुओं के व्यापार का जो एकाधिकार (Monopoly) दिया था, उसके पक्ष में बेकन ही ने निर्णय किया था; इस कारण जनता उससे अप्रसन्न थी। पार्लिमेंट ने राज्य के प्रधान कर्मचारियों पर अपना अधिकार जतलाने का यह अच्छा अवसर समझा। बेकन पर रिश्वत लेने का अपराध लगाकर पार्लिमेंट ने अभियोग चलाया। पर वास्तव में बेकन का अधिक दोष न था। उसने उस काल की प्रचलित प्रथा के अनुसार कुछ भेंट आदि अवश्य ली थी; परन्तु इस बात का कोई प्रमाण नहीं था कि उसने भेंट लेकर अन्याय किया है। बेकन प्रधान न्यायाधीश के पद से हटा दिया गया। उस पर चार हज़ार पाउंड जुर्माना किया गया और वह बन्दीगृह में भेज दिया गया। जेम्स ने उसका जुर्माना माफ़ कर दिया और उसे बन्दीगृह से भी मुक्त कर दिया। यह सब कुछ हो गया, परन्तु पार्लिमेंट ने यह दिखला दिया कि राज्य के कर्मचारी अपने कार्यों के लिए देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हैं।

लोक-सभा के अधिकार (Privileges of the Commons)—पार्लिमेंट के अधिकारों की रक्षा के लिए जितने झगड़े हुए, वे वास्तव में लोक-सभा (House of Commons) ने किये थे। जिस समय जेम्स अपने पुत्र और उत्तराधिकारी चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी इन्फ़ैन्टा से करने के लिए पत्रव्यवहार कर रहा था, उस समय लोक-सभा ने राजा के समक्ष इस आशय का एक प्रार्थना-पत्र उपस्थित किया कि राजकुमार का विवाह किसी प्राटेस्टंट कन्या से ही होना चाहिए। इस पर जेम्स बहुत बिगड़ा और उसने साफ़ कह दिया कि लोक-सभा को राज्य के गंभीर प्रश्नों में कुछ भी हस्तक्षेप न करना चाहिए। इस पर लोक-सभा ने यह पास किया कि देश के प्रतिनिधियों को राज्य-सम्बन्धी समस्त विषयों पर अपना मत प्रकाशित करने का

पूर्ण स्वतंत्रता और अधिकार प्राप्त है। अब जेम्स के क्रोध की सीमा न रही, और उसने स्वय लोक-सभा के कार्य-क्रम की पुस्तक में से उन पृष्ठों को फाड़ डाला, जिनमें यह प्रस्ताव लिखा हुआ था। लोक-सभा के पुस्तकालय में सन् १६२१ के काय-विवरण की वह पुस्तक अब तक मौजूद है, और उसे देखने से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इसके बीच के कुछ पृष्ठ फाड़ डाले गये हैं।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६०३—जेम्स प्रथम का राज्याभिषेक।
" १६०४—हैम्प्टन कोर्ट की सभा की बैठक।
" १६०५—बारूद का षड्यंत्र।
" १६१८—रेले को प्राण-दंड।
" १६१९—तीस वर्षीय युद्ध का आरम्भ।
" १६२१—बेकन का पतन।
" १६२३—चार्ल्स की मैड्रिड-यात्रा।
" १६२५—जेम्स प्रथम का मृत्यु।

दूसरा परिच्छेद

चार्ल्स प्रथम (१६२५–१६४९)

(१) पहली तीन पार्लिमेंटों से झगड़ा

(सन् १६२५-१६२९)

चार्ल्स प्रथम—जेम्स प्रथम की मृत्यु होने पर उसका पुत्र, चार्ल्स प्रथम के नाम से, गद्दी पर बैठा। चार्ल्स सुन्दर, विद्या-प्रेमी तथा परिश्रमी था; परन्तु उसमें हठ की मात्रा बहुत थी। वह न तो स्वयं ही किसी दूसरे की बात ठीक तरह से समझता था और न अपनी ही बात किसी दूसरे को भली भाँति समझा सकता था। हम पहले कह आये हैं कि उसके पिता ने पहले उसका विवाह स्पेन की राजकुमारी से करना चाहा था; परन्तु इस प्रयत्न में उसे सफलता नहीं हुई थी। अब चार्ल्स का विवाह फ्रांस के राजा की बहन हेनरीटा मेरिया (Henrietta Maria) से हुआ। नई रानी पक्की कैथौलिक थी: और उसने अपना इतना प्रभाव जमा लिया था कि चार्ल्स की भी बहुत कुछ सहानुभूति कैथौलिक

चार्ल्स प्रथम की पत्नी

मतावलम्बियों के साथ हो गई थी। इस कारण यह राजा कभी इँगलैंड की प्रोटेस्टेंट जनता में सर्वप्रिय न हो सका।

चार्ल्स प्रथम

"बलात् ऋण" (Forced Loan)—इस समय तीस वर्षीय युद्ध चल रहा था। चार्ल्स ने स्पेन पर आक्रमण करने के लिए पार्लिमेंट से जून सन् १६२५ में धन माँगा। उसको आशा थी कि एक कैथोलिक देश के विरुद्ध युद्ध करने के लिए इँगलैंड-निवासी अवश्य प्रसन्नतापूर्वक आर्थिक सहायता देंगे। परन्तु जब पार्लिमेंट ने धन नहीं दिया, तब उसने

पार्लिमेंट भङ्ग कर दी। फिर कुछ दिनों बाद उसे धन की आवश्यकता हुई और उसने दोबारा पार्लिमेंट बुलाई। जेम्स प्रथम के राजत्वकाल का प्रधान मंत्री बकिंघम (Buckingham) अभी जीवित था, परन्तु जनता उस पर बिलकुल विश्वास न करती थी; और इस कारण उस नई पार्लिमेंट ने यह कहा कि जब तक बकिंघम अपने पद से हटाया न जायगा, तब तक पार्लिमेंट धन की स्वीकृति कदापि न देगी। अपने पिता जेम्स की भाँति चार्ल्स भी यह सहन न कर सकता था कि राजमन्त्रियों पर पार्लिमेंट का अधिकार हो; और इसलिए वह यह शर्त नहीं मान सकता था। पार्लिमेंट ने बकिंघम पर अभियोग चलाना चाहा। इस पर राजा ने क्रोध में आकर उस दूसरी पार्लिमेंट के भी विसर्जन की आज्ञा दे दी।

अब चार्ल्स ने केवल अपने ही अधिकार से युद्ध के लिए धन एकत्र करना आरम्भ किया। देश के धनिक लोगों को राज्य-कार्य्य के लिए ऋण देने पर बाध्य किया गया। जो लोग यह ऋण देने में आनाकानी करते थे, उन्हें बन्दीगृह में भेजवा दिया जाता था। सेना के लिए भी लोग दबाव डालकर बलपूर्वक भरती किये जाने लगे। सैनिकों की रसद आदि का कोई निश्चित प्रबन्ध न होने के कारण उन्हें गृहस्थों के यहाँ ठहरा दिया जाता था। इससे गृहस्थों और सैनिकों में प्राय: झगड़े भी हो जाते थे। इन झगड़ों का निर्णय एक विशेष प्रकार के सैनिक न्यायालय (Court Martial) में होता था; और इस प्रथा से साधारण देश-वासियों को बहुत कष्ट उठाना पड़ता था। यह सब करने पर भी चार्ल्स को युद्ध में सफलता नहीं हुई; और जैसा कि हम पहले बतला चुके हैं, तीस वर्षीय युद्ध में इँगलैंड के राजाओं की नीति निष्फल ही रही।

फ्रांस से युद्ध—फ्रांस के राजा की बहन से विवाह करने के समय चार्ल्स को यह वादा करना पड़ा था कि इँगलैंड के कैथालिकों के लिए कुछ सुभीते कर दिये जायँगे। इँगलैंड की प्रोटेस्टेंट जनता के विरोध के कारण चार्ल्स वह वादा पूरा न कर सका; और इस कारण फ्रांस से उसका झगड़ा हो गया। उस समय बकिंघम एक अँगरेज़ी सेना लेकर ला रोशल

(La Rochelle) में फ्रांस के प्रोटेस्टेंट विद्रोहियों को, उनके राजा के विरुद्ध, सहायता देने के लिए पहुँचा। परन्तु बांकंग्घम को इस प्रयत्न में सफलता नहीं हुई और इसलिए देश में उसकी बदनामी और भी अधिक बढ़ गई।

"अधिकार-याचना' (Petition of Right)—धन की आवश्यकता के कारण चार्ल्स को फिर तीसरी पार्लिमेंट बुलानी पड़ी। इस पार्लिमेंट के सदस्यों में आरम्भ से ही देश की स्वतंत्रता की रक्षा के लिए बड़ा जोश फैला हुआ था। ईलियट (Elliot) के नेतृत्व में पार्लिमेंट ने एक बड़े महत्त्व का प्रस्ताव पास किया जो "अधिकार-याचना" (Petition of Right) के नाम से प्रसिद्ध है। इसकी मुख्य-मुख्य धारायें इस प्रकार थीं—(१) बिना पार्लिमेंट की स्वीकृति के देश पर किसी प्रकार का कर न लगाया जाय; और ऋण, भेंट आदि देने के लिए किसी को बाध्य न किया जाय। (२) अपराध का बिना नियमानुसार निर्णय हुए किसी को बन्दीगृह में न भेजा जाय। (३) गृहस्थों के यहाँ, इनकी इच्छा के विरुद्ध, सैनिकों को न ठहराया जाय। और (४) शान्ति के समय किसी नागरिक पर सैनिक न्यायालय (Court Martial) के सम्मुख अभियोग न चलाया जाय। पहले तो चार्ल्स ने टाल-मटोल की; परन्तु अन्त में उसे पार्लिमेंट के इस प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने पड़े; और इस प्रकार इस "अधिकार-याचना" की सब बातें स्वीकृत होकर राजनियम के रूप में हो गईं। इससे पार्लिमेंट के अधिकारों और नागरिकों की स्वतन्त्रता का निश्चित रूप से निर्णय हो गया, और देश में नियमानुमोदित शासन (Constitutional Government) की नींव दृढ़ हो गई। यह "अधिकार-याचना" अँगरेज़ों का दूसरा बड़ा स्वतन्त्रता-पत्र (Second Great Charter of English Liberty) माना जाता है। पहला राजा जॉन के समय का "महा स्वतन्त्रता-पत्र" (Magna Charta) था, जिसके अनुसार पार्लिमेंट के उत्थान का प्रारम्भ हुआ था।

बकिंग्घम की हत्या—बकिंग्घम की बदनामी दिन पर दिन बढ़ती जाती थी। जेम्स और चार्ल्स दोनों उस पर पूर्ण विश्वास रखते थे; परन्तु देशवासी उसकी नीति का सदा विरोध करते रहे। बकिंग्घम वास्तव में स्पेन से मित्रता करने का पक्षपाती था और इस कारण देश-वासी उससे घृणा करते थे। जिस समय उस पर अभियोग चल रहा था, ईलियट ने उसके विषय में लार्डसभा के सम्मुख कहा था—"महाशयो! उसके कार्यों पर ध्यान दीजिए। उसके विचार और स्वभाव के विषय में आप लोग जानते ही हैं। मैं उसके दोषों का निर्णय इस सभा पर छोड़ता हूँ। परन्तु लोक-सभा के हम सदस्यों का तो यही मत है कि उसी के कारण देश को कई आपत्तियों का सामना करना पड़ा; जनता के दुःख का वही मुख्य कारण है, और उसी को दंड देने से देश का कल्याण हो सकता है।"

जब बकिंग्घम दूसरी बार फ्रांस से युद्ध करने के लिए सेना लेकर जा रहा था, तब रास्ते में फ़ेल्टन (Felton) नामक एक सैनिक ने उसे मार डाला। फ़ेल्टन उससे चिढ़ा हुआ था, क्योंकि उसने फ़ेल्टन का हक़ होने पर भी किसी दूसरे को सेना के कप्तान का पद दे दिया था। इस हत्या के लिए फ़ेल्टन को दंड दिया गया; परन्तु बकिंग्घम उस समय तक इतना बदनाम हो चुका था कि उसे मारनेवाले की देश में बहुत प्रशंसा हुई।

ईलियट की मृत्यु—इस समय पार्लिमेंट की लोक-सभा का नेता ईलियट (Elliot) था। उसी के नेतृत्व में "अधिकार-याचना" स्वीकृत हुई थी; और बकिंग्घम पर अभियोग चलाने का प्रयत्न किया गया था। वह देश की स्वतन्त्रता का हार्दिक पक्षपाती था और उसका मत था कि राजा को नियमानुमोदित शासन में बाँधना अत्यन्त आवश्यक है। इन विचारों के कारण चार्ल्स उससे शुरू से ही चिढ़ा हुआ था। कई बार ईलियट को बन्दीगृह भी भेजा गया; परन्तु उसके देशहित के विचारों में कोई परिवर्तन न हुआ। अन्तिम बार जब उसे बन्दीगृह भेजा गया तब वहीं, क्षयरोग के कारण, स्वतन्त्रता का यह सिपाही परलोक सिधारा।

(२) ग्यारह वर्षों का निरंकुश शासन

(The Eleven Years' Tyranny)

(सन् १६२९—१६४०)

टॉमस वेन्टवर्थ (स्ट्रैफ़ोर्ड का अर्ल)—तीसरी पार्लिमेंट का विसर्जन करने के बाद ग्यारह वर्ष तक चार्ल्स ने पार्लिमेंट का कोई अधिवेशन न किया, और इस काल में उसने पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारपूर्ण और निरंकुश शासन किया। इस कार्य में सहायता देनेवाला टामस वेन्टवर्थ (Thomas Wentworth) था। वेन्टवर्थ पहले राजा को नियमानुमोदित शासन में बाँधने के पक्ष में था; और "अधिकार-याचना" (Petition of Right) के स्वीकृत कराने में भी उसने बहुत कुछ प्रयत्न किया था। परन्तु अब उसमें आकाश-पाताल का अन्तर हो गया और वह स्पष्ट रूप से राजा के स्वेच्छाचार का समर्थक बन गया। चार्ल्स ने उसे आयरलैंड का शासक बनाकर भेजा। आयरलैंड में वेन्टवर्थ ने बड़ी दृढ़ता से शासन किया। जो लोग राज्याधिकार का ज़रा भी विरोध करते थे, उन्हें वह पूरी तरह से दबाया करता था। शासन का ढंग कठोर अवश्य था, परन्तु देश के व्यापार तथा कृषि की उन्नति का भी उसने यथेष्ट प्रयत्न किया था। उसके आयरलैंड से लौटने पर चार्ल्स ने प्रसन्न होकर उसे स्ट्रैफ़ोर्ड का अर्ल (Earl of Strafford) बना दिया।

लॉड तथा प्योरिटन दल पर अत्याचार—इस समय धार्मिक विषयों में चार्ल्स को सम्मति देनेवाला लॉड (Laud) था जिसको राजा ने कैंटबरी का प्रधान पादरी (Archbishop of Canterbury) बना दिया था। लॉड हृदय से चर्च का सुधार करना चाहता था। उसका विचार था कि पोप की चलाई हुई कुछ प्रथायें अवश्य अन्धविश्वासों पर निर्भर हैं; परन्तु प्योरिटन दलवालों की भाँति सब रीति रस्मों को छोड़-कर मनमाने ढंग से प्रार्थना करने लगना भी ठीक नहीं है। वह चाहता

था कि चर्च में एकता रहे और देश में भिन्न-भिन्न प्रकार के धार्मिक सम्प्रदाय स्थापित न होने पावें। उसका मत था कि धार्मिक रीति रस्मों में जितना संशोधन अँगरेज़ी चर्च में हो गया है, वह बहुत काफ़ी है; और उससे अधिक "धर्म-सुधार" की अब कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु प्योरिटन दलवाले अँगरेज़ी चर्च के सुधारों को यथेष्ट न समझते थे और इसी लिए वे उससे पृथक् हो बैठे थे। इस मतभेद के कारण लॉड प्योरिटन दलवालों से बहुत चिढ़ता था और उसने उनके साथ बहुत कठोरता का व्यवहार किया। स्थापित चर्च की विधियों तथा प्रार्थना-पुस्तक को न मानने के अपराध में उनको धार्मिक न्यायालय (High Commission Court) से दंड दिलाया गया। यद्यपि धार्मिक न्यायालय एलिज़बेथ के समय में स्थापित हो चुका था, परन्तु इससे पहले इतने कड़े-कड़े दंड उसमें नहीं दिये जाते थे। लॉड के प्रार्थना की विधियों पर ज़ोर देने के कारण प्योरिटन दल ने यह कहकर उसे बदनाम करना शुरू किया कि वह प्रोटेस्टंट मत की आड़ में कैथोलिक मत का प्रचार कर रहा है। अन्त में लॉड के अत्याचारों से प्योरिटन दलवाले इतने तंग आ गये कि उनमें से बहुत-से इँगलैंड छोड़कर अमेरिका में जा बसे। अमेरिका में अँगरेज़ी उपनिवेशों के स्थापित होने का वर्णन आगे चलकर किया जायगा।

बड़ा पादरी लॉड

"जहाज़ी कर"—इस ग्यारह वर्ष के काल में चार्ल्स ने कई प्रकार से नियमानुमोदित शासन के नियमों का उल्लंघन किया। "अधिकार-याचना" (Petition of Right) के स्वीकृत हो जाने पर निश्चित रूप से निर्णय हो चुका था कि राजा, बिना पार्लिमेंट की

स्वीकृति के, देश पर किसी प्रकार का नया कर नहीं लगा सकता। फिर भी चार्ल्स ने केवल अपने ही अधिकार से एक विशेष प्रकार का कर लगाना शुरू किया जो "जहाज़ी कर" (Ship Money) के नाम से प्रसिद्ध है। उसका कहना था कि प्राचीन काल में भी इँगलैंड के राजा, देश की रक्षा के लिए जहाज़ी बेड़े को ठीक दशा में रखने के उद्देश्य से समुद्र-तट के निवासियों पर यह कर लगाते थे। परन्तु इस बार यह कर देश के भीतरी भागों में रहनेवालों पर भी लगाया गया। यह कर इस दृष्टि से विशेष अनुचित था कि उस समय देश को किसी विदेशी आक्रमण का भय न था। पार्लिमेंट के हैम्पडन (Hampden) नामक एक सदस्य ने इस कर को राज-नियम के विरुद्ध समझकर देने से इनकार किया। राजा की ओर से हैम्पडन पर मुक़दमा चलाया गया और न्यायाधीशों ने डर के मारे राजा के पक्ष में निर्णय दे दिया। अब क्या था? चार्ल्स बेधड़क होकर यह कर वसूल करने लगा; और जो लोग कर देने में टाल-मटोल करते थे, उन्हें कड़े-कड़े दंड दिये जाने लगे।

जॉन हैम्पडन

स्कॉटलैंड में धार्मिक युद्ध—हम पहले बतला आये हैं कि स्कॉटलैंड के चर्च का सुधार महात्मा कैलविन के शिष्य जॉन नॉक्स के सिद्धान्तों के अनुसार हुआ था। उसमें पादरियों के स्थान पर चुने हुए पदाधिकारी होते थे और कोई निश्चित प्रार्थना-पुस्तक भी न होती थी। चार्ल्स स्कॉटलैंड के इस प्रेस्बिटेरियन चर्च (Presbyterian Church) का शुरू से ही विरोधी था; और अपने पिता जेम्स की भाँति उसका भी

यही मत था कि चर्च पर राजा का दबाव रहने के लिए पादरियों का होना अत्यन्त आवश्यक है। लॉड की सम्मति से चार्ल्स ने स्कॉटलैंड के लिए भी अँगरेज़ी चर्च के ढंग की एक प्रार्थना-पुस्तक के प्रयोग करने की आज्ञा दे दी। स्कॉटलैंड की जनता ने इसका बहुत ज़ोरों से विरोध किया। सबने एक "जातीय प्रतिज्ञा-पत्र" (National Covenant) पर हस्ताक्षर किये, जिसका आशय यह था कि देश के प्रेस्बिटेरियन चर्च की रक्षा करना सबका जातीय कर्तव्य है। इस पर चार्ल्स ने बल से काम लिया; और इस कारण राजा तथा स्कॉटलैंड की जनता में दो युद्ध हुए, जो "पादरियों के युद्ध" (Bishop Wars) के नाम से प्रसिद्ध हैं; क्योंकि चार्ल्स का उद्देश्य यही था कि स्कॉटलैंड के चर्च में भी इँगलैंड के चर्च की तरह राजा के नियुक्त किये हुए पादरी ही रहा करें। यथेष्ट धन और सेना के अभाव के कारण चार्ल्स स्कॉटलैंड की उत्तेजित जनता को न दबा सका। अन्त में उसे स्कॉटलैंड के प्रेस्बिटेरियन चर्च का अधिकार स्वीकृत कर लेना पड़ा और इस प्रकार वहाँ के निवासियों को अपने धर्म की रक्षा करने में पूर्ण सफलता हुई।

(३) "प्रलम्ब पार्लिमेंट" का अधिवेशन

अल्पकालिक और प्रलम्ब पार्लिमेंट (Short and Long Parliaments)—स्कॉटलैंड के धार्मिक युद्ध में बहुत धन व्यय हो जाने के कारण चार्ल्स को फिर धन की कमी पड़ने लगी; और इसलिए ग्यारह वर्ष बाद अब वह फिर पार्लिमेंट की बैठक करने के लिए बाध्य हुआ। धन स्वीकृत करने के लिए पहली पार्लिमेंट ने यह शर्त लगाई कि राजा पहले देशवासियों की सब शिकायतें दूर कर दे। चार्ल्स ने इस पार्लिमेंट को तुरन्त ही विसर्जित कर देने की आज्ञा दी; और इसलिए यह "अल्पकालिक पार्लिमेंट" (Short Parliament) कहलाती है। धन की बहुत कमी होने के कारण चार्ल्स को फिर दूसरी पार्लिमेंट बुलानी पड़ी, जिसका विसर्जन पूरे बीस वर्ष बाद हुआ। इस कारण इतिहास में यह "प्रलम्ब पार्लिमेंट" (Long Parliament)

के नाम से प्रसिद्ध है। जिस प्रकार चार्ल्स के राज्यकाल की आरम्भिक पार्लिमेंटों का नेता ईलियट था, उसी प्रकार इस प्रलम्ब पार्लिमेंट का नेता पिम (Pym) नामक एक बड़ा योग्य पुरुष था; और उसकी सहायता के लिए हैम्पडन (Hampden) था जिसके "जहाज़ी कर" के विरोध का वर्णन पहले हो चुका है।

स्ट्रैफ़ोर्ड तथा लॉड को प्राणदण्ड—"प्रलम्ब पार्लिमेंट" ने सबसे पहले राजमन्त्रियों की ख़बर ली। चार्ल्स के स्वेच्छाचार के मुख्य समर्थक स्ट्रैफ़ोर्ड पर अभियोग चलाया गया; परन्तु उसका कोई अपराध सिद्ध न हो सका। उसने जो कुछ किया था, वह राजा की आज्ञा से किया था; और इस कारण उस काल के नियमानुसार वह दोषी नहीं ठहराया जा सकता था। जब पार्लिमेंट ने देखा कि अभियोग चलाकर उसे दंड देना असम्भव है, तब उसने एक विशेष प्रकार का प्रस्ताव (Bill of Attainder) पास किया, जिसका आशय यह था कि स्ट्रैफ़ोर्ड देश-द्रोही है और उसे प्राणदण्ड मिलना चाहिए। राजा उसे बहुत मानता था; परन्तु उसे पार्लिमेंट के प्रस्ताव पर हस्ताक्षर करने के लिए बाध्य किया गया और इस प्रकार स्ट्रैफ़ोर्ड को प्राणदंड मिला।

पार्लिमेंट के प्योरिटन दलवालों पर अत्याचार करनेवाले लॉड पर भी अभियोग चलाया गया; और उसे बन्दीगृह भेजवा दिया गया। वहाँ चार वर्ष तक रहने के पश्चात् उसे भी प्राणदंड दिया गया।

राज-नियमों के संशोधन—अब पार्लिमेंट ने ऐसे राज-नियम बनाना आरम्भ किया, जिससे भविष्य में राजा का स्वेच्छाचारी और निरंकुश राज्य स्थापित होना असम्भव हो जाय। एलिज़ेबेथ का स्थापित किया हुआ "धार्मिक न्यायालय" (High Commission Court) तथा हेनरी सप्तम का स्थापित किया हुआ "नक्षत्र-भवन" (Star Chamber Court) नामक दोनों न्यायालय, जिसमें बिना नियमानुसार मुक़दमा चलाये ही दंड की आज्ञा दी जा सकती थी, अब हटा दिये गये। इन्हीं विशेष प्रकार के न्यायालयों के द्वारा चार्ल्स

ने अपने विरोधियों को कड़े-कड़े दंड देने का ढँग निकाल रखा था। "जहाज़ी कर" (Ship Money) लगाना तथा बलात् ऋण (Forced Loan) लेना नियमानुमोदित शासन के सिद्धान्तों के विरुद्ध ठहराया गया। इसके अतिरिक्त एक "त्रैवार्षिक राज-नियम" (Triennial Act) भी पास किया गया जिसके अनुसार पार्लिमेंट का बुलाना अब केवल राजा की इच्छा पर निर्भर न रह गया; और तीन वर्षों में कम से कम एक बार पार्लिमेंट का अधिवेशन होना आवश्यक हो गया।

धार्मिक सुधारों का प्रश्न—राजनीतिक विषयों में पार्लिमेंट के सब सदस्य एकमत थे और सभी नियमानुमोदित शासन की स्थापना करने के पक्ष में थे; परन्तु जब एक धार्मिक प्रश्न पर वाद-विवाद चला, तब पार्लिमेंट में दो दल हो गये। एक प्योरिटन दल, जो अँगरेज़ी चर्च को बिलकुल स्काटलैंड के चर्च की भाँति प्रेस्बिटेरियन बनाना चाहता था; और दूसरा अँगरेज़ी चर्च-दल जो अब 'हाई चर्च-पार्टी' (High Churchmen) के नाम से प्रसिद्ध हुआ, जो स्थापित अँगरेज़ी चर्च में कुछ भी संशोधन के लिए तैयार न था। इस दूसरे दल का नेता एडवर्ड हाइड (Edward Hyde) था, जो आगे चलकर क्लैरेंडन का अर्ल (Earl of Clarendon) हुआ।

"महान् विरोधपत्र"—पिम और हैम्पडन के नेतृत्व में पार्लिमेंट में एक "महान् विरोधपत्र" (The Grand Remonstrance) उपस्थित किया गया। उसमें चार्ल्स के समस्त अत्याचारों का उल्लेख किया गया और इस बात पर ज़ोर दिया गया कि लोक-सभा के विश्वास-पात्र व्यक्ति ही राजमन्त्री बनाये जायँ। धार्मिक प्रश्न पर बने हुए पार्लिमेंट के दोनों दलों में से प्योरिटन दलवाले इसके समर्थक थे; परन्तु हाई चर्च-पार्टी के सदस्यों ने इसका विरोध किया। अन्त में बहुमत से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ; परन्तु समर्थकों की विजय केवल थोड़ी-सी ही सम्मतियों के अधिक हो जाने के कारण हुई। इस पत्र की भी गणना इँगलैंड के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता-पत्रों में की जाती है।

राजा और पार्लिमेंट के युद्ध का प्रारम्भ—पार्लिमेंट में दो दल हो जाने से चार्ल्स का उत्साह बहुत बढ़ गया और उसने लोक-सभा के पिम, हैम्पडन आदि पाँच मुख्य नेताओं को पकड़ने का प्रयत्न किया। वह स्वयं कुछ सैनिकों को लेकर लोक-सभा के भवन में पहुँचा। परन्तु उन पाँचों सदस्यों को पहले ही राजा की धूर्तता का पता लग चुका था। लन्दन-निवासियों ने उन्हें नगर में छिपा दिया और चार्ल्स ने उनके स्थान ख़ाली पाये। राजा का प्रयत्न विफल हुआ, परन्तु उसके सैनिकों को साथ लेकर पार्लिमेंट-भवन में घुस आने से सदस्यों में बड़ी उत्तेजना फैली। अब यह स्पष्ट हो गया कि केवल राजनियम बना देने से चार्ल्स वश में नहीं आ सकता। नियमों का उल्लंघन करना चार्ल्स के लिए कोई बड़ी बात न थी; और इसलिए बिना बल का प्रयोग किये देश में नियमानुमोदित शासन स्थापित करना असम्भव प्रतीत होने लगा। अब राजा और पार्लिमेंट का युद्ध अनिवार्य हो गया और स्वतन्त्रता देवी की पूजा के लिए रक्तपात का प्रारम्भ हुआ।

(४) राजा और पार्लिमेंट का संघर्ष
(The Civil War)

गृह-युद्ध (The Civil War) के दोनों दल—हम बतला चुके हैं कि धार्मिक सुधारों के प्रश्न पर पार्लिमेंट में दो दल हो गये थे। इनमें से राजा और पार्लिमेंट के गृह-युद्ध (The Civil War) में हाई चर्च-पार्टी के लोगों ने राजा का पक्ष लिया; और प्योरिटन दल-वालों ने पार्लिमेंट के अधिकारों की रक्षा के लिए राजा से युद्ध किया। लार्डों में से अधिकांश ने राजा की सहायता की और ग्रामीण जनता ने भी पूर्णतया राजा का साथ दिया। परन्तु नगर-निवासी तथा मध्यम श्रेणी की जनता पार्लिमेंट के पक्ष में रही। भौगोलिक विचार से देश के उत्तरी तथा पश्चिमी भागों के लोग राजा के पक्ष में रहे; और दक्षिणी तथा पूर्वी भागों के लोगों ने, जहाँ व्यापार का केन्द्र होने के कारण

जनता शिक्षित तथा नागरिकों के अधिकारों को भली भाँति समझनेवाली थी, पार्लिमेंट का पक्ष लिया। राजा के दलवाले कैवेलियर* (Cavaliers) कहलाने लगे; क्योंकि उनके पास सवारों की सेना अधिक थी। पार्लिमेंट दल में अधिकांश बाल कटे हुए प्योरिटन थे, इस कारण उनका नाम राउंड हेड † (Roundheads) पड़ गया।

युद्ध की मुख्य-मुख्य घटनायें—लन्दन राजधानी के सब लोग राजा से विमुख हो गये थे। चार्ल्स ने अपने एक अफ़सर को उत्तरीय प्रान्त से और दूसरे को पूर्वीय प्रान्त से आकर लन्दन पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। परन्तु वे दोनों अफ़सर अपने ही प्रान्तों के विद्रोह शान्त करने में बुरी तरह से फँसे हुए थे; और इस कारण चार्ल्स का राजधानी पर अधिकार जमाने का प्रयत्न सफल न हो सका।

अब राजा ने आयरलैंड की कैथलिक जनता से सहायता माँगी; और यह देखकर पार्लिमेंट के पक्षवालों ने स्कॉटलैंड-निवासियों को अपनी ओर मिला लिया। एक सन्धिपत्र (Solemn League and Covenant) पर स्कॉटलैंड तथा पार्लिमेंट के नेताओं ने हस्ताक्षर किये, जिसके अनुसार स्कॉटलैंडवालों ने पार्लिमेंट के दल को इस शर्त पर सहायता देना स्वीकार किया कि इंगलैंड के चर्च को भी स्कॉटलैंड के चर्च की भाँति प्रेस्बिटेरियन बना दिया जायगा।

क्रॉम्वेल तथा "नई आदर्श सेना" का संघटन—युद्ध-काल में अपनी रक्षा करने के लिए अलग-अलग प्रान्तों ने छोटी-छोटी मंडलियाँ चुनकर कुछ सैनिक एकत्र कर रखे थे। उनमें से पूर्वीय मडली (Eastern Association) का सेनापति ओलिवर क्रॉम्वेल (Oliver Cromwell) था, जो योग्य नेता तथा साहसी वीर था। उसके सैनिक बड़े सीखे हुए थे और वे "आयरन साइड्स" (Ironsides) या वीर सैनिक के नाम से प्रसिद्ध हैं। क्रॉम्वेल अपनी सेना सहित पार्लिमेंट दल का पक्ष लेकर गृह

---

* घुड़सवार।

† गोल अर्थात् मुँड़े हुए सिरवाले।

युद्ध में सम्मिलित हुआ और तुरन्त ही उसने मार्स्टन मूर (Marston Moor) नामक स्थान पर राजा के दलवालों को परास्त किया। क्रॉम्वेल के अनुरोध से पार्लिमेंट ने यह प्रस्ताव (The Self-Denying Ordinance) स्वीकृत किया कि पार्लिमेंट के सब सदस्य सेना से अपना सम्बन्ध हटा लें। अब तक यही सदस्य सेना के मुख्य-मुख्य पदों पर थे; परन्तु इनको युद्ध-कला का कोई अनुभव न था। इसके पश्चात् एक "नई आदर्श सेना" (The New Model Army) तैयार की गई,

चार्ल्स प्रथम (क़ैद में)

जिसमें केवल युद्ध-कला की योग्यता के अनुसार सैनिक तथा अफ़सर नियुक्त किये गये। क्रॉम्वेल ने भी, पार्लिमेंट के सदस्य होने के कारण,

अपने सैनिक पद से त्यागपत्र दे दिया था; परन्तु सैनिकों के अनुरोध करने पर उसने सवारों का अफ़सर होना मंज़ूर कर लिया।

राजा का क़ैद होना—"नई आदर्श सेना" ने राजा को नेज़बाई (Naseby) नामक स्थान पर बुरी तरह से परास्त किया; और अब
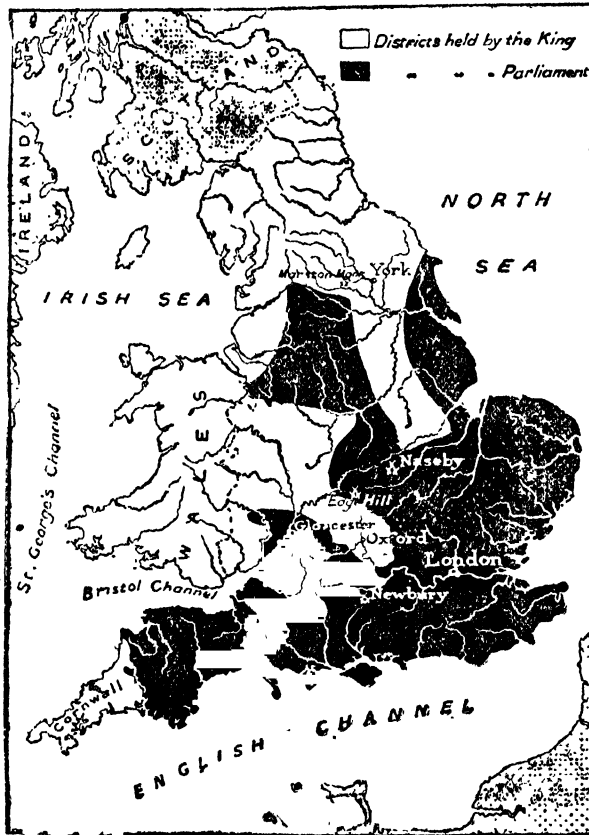
इँगलैंड का गृह-युद्ध (१६४३)

राजपक्षवालों को सफलता की कोई आशा न रह गई। राजा ने स्कॉट-लैंड की सेना में जाकर शरण ली और वहाँ वह सम्मानित क़ैदी की

भाँति रहने लगा। स्कॉटलैंडवालों ने चार्ल्स को प्रेस्बिटेरियन सिद्धान्तों के स्वीकृत करने पर बाध्य करना चाहा, परन्तु उसने साफ़ जवाब दे दिया। इस पर उन्होंने राजा को इँगलैंड की पार्लिमेंट के सुपुर्द कर दिया। युद्ध में सम्मिलित होने के बदले में चालीस हज़ार पाउंड पुरस्कार लेकर स्काटलैंड की सेना अपने देश को लौट गई।

पार्लिमेंट और सेना में झगड़ा—युद्ध समाप्त हो जाने के कारण अब पार्लिमेंट ने "नई आदर्श सेना" का विसर्जन करना चाहा। परन्तु सैनिकों के वेतन अभी पूरी तरह नहीं चुकाये गये थे; और बिना वेतन लिये वे लोग हटने को तैयार न होते थे। इस प्रकार सेना और पार्लिमेंट में झगड़ा चला; और दोनों में धार्मिक विषयों में मतभेद होने के कारण यह झगड़ा और भी बढ़ गया। प्योरिटन लोग इस समय दो दलों में विभक्त हो गये थे। एक दल तो प्रेस्बिटेरियन (Presbyterians) लोगों का था, जो स्कॉटलैंड के चर्च की संस्था के अतिरिक्त शेष सब धार्मिक संस्थाओं के विरोधी थे और पार्लिमेंट में जिनकी संख्या अधिक थी। दूसरा स्वतन्त्र-दल (Independents) था। इस दल के लोग किसी विशेष प्रकार की संस्था के पक्षपाती न थे और सबको पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता देना चाहते थे। "नई आदर्श सेना" में इनकी संख्या अधिक थी।

क्रॉम्वेल ने पहले दोनों दलों में समझौता कराना चाहा; परन्तु यह प्रयत्न निष्फल होने पर उसने सेना का पक्ष लिया। सेना ने बलपूर्वक राजा को पार्लिमेंट से छीन लिया; और उसके सम्मुख सन्धि करने के प्रस्ताव उपस्थित किये। यद्यपि वे शर्तें राजा के लिए बुरी न थीं, परन्तु फिर भी उसने उन्हें स्वीकृत न किया। कुछ ही दिनों में चार्ल्स किसी प्रकार से सेना के हाथों से निकल भागा और सकुशल वाइट द्वीप (Isle of Wight) में पहुँच गया।

द्वितीय गृह्य युद्ध—अब राजा ने फिर स्कॉटलैंडवालों से पत्र-व्यवहार आरम्भ किया; और उनके प्रेस्बिटेरियन सिद्धान्तों को स्वीकृत करने

की शर्त भी मान ली। इस पर स्कॉटलैंडवालों* ने इस बार राजा का पक्ष लेकर युद्ध करना आरम्भ किया, और अँगरेज़ी चर्चवालों ने भी उनका साथ दिया। इस प्रकार द्वितीय गृह्य युद्ध (Second Civil War) का आरम्भ हुआ। "नई आदर्श सेना" क्राॅम्वेल के नेतृत्व में स्कॉटलैंड को रवाना हुई। चलने से पहले उस सेना ने यह प्रण किया कि विजय प्राप्त करके लौटने पर चार्ल्स से, जिसके कारण देश में इतना रक्तपात हुआ है, अवश्य बदला लेंगे। "नई आदर्श सेना" ने स्कॉटलैंडवालों को परास्त किया और बड़े समारोह से लौटकर वह इँगलैंड आई।

चार्ल्स को प्राणदंड—अब सेना ने राजा पर अभियोग चलाना चाहा। लोक-सभा (House of Commons) के जिन सदस्यों से यह भय था कि वे राजा के पक्ष में रहेंगे, उन्हें सेना के अफ़सर प्राइड ने बलपूर्वक सभा-भवन में न आने दिया। केवल वही सदस्य अन्दर जाने पाते थे जो राजा को दंड देने के पक्ष में थे। इस घटना को Pride's Purge† कहते हैं। लोक-सभा की इस बैठक में कुल ८० सदस्य सम्मिलित हुए थे; परन्तु उन्होंने समस्त पार्लिमेंट के अधिकार के आधार पर तुरन्त एक न्याय-समिति बनाई जिसका प्रधान ब्रैडशा (Bradshaw) था। इसी समिति के सम्मुख राजा के अपराध का विचार आरम्भ हुआ। चार्ल्स ने कहा कि इस न्याय-समिति को राजा पर अभियोग चलाने का कोई अधिकार नहीं है। इसके सिवा उसने कोई सफ़ाई पेश न की, जैसी कि पहले से ही आशा थी। न्याय-समिति ने चार्ल्स को "अत्याचारी, देशद्रोही तथा घातक" ठहराया और उसे प्राणदण्ड की आज्ञा दी।

३० जनवरी सन् १६४९ को अपने ही राज-भवन के सामनेवाले मैदान में चार्ल्स का वध हुआ। वध-दंड के समय उसने बड़ी शान्ति तथा

---

* प्रथम गृह्य युद्ध में स्कॉटलैंडवालों ने इँगलैंड की पार्लिमेंट के पक्ष का साथ दिया था।

† सेना के अफ़सर प्राइड का बल-पूर्वक कुल सदस्यों को लोक-सभा से निकालना।
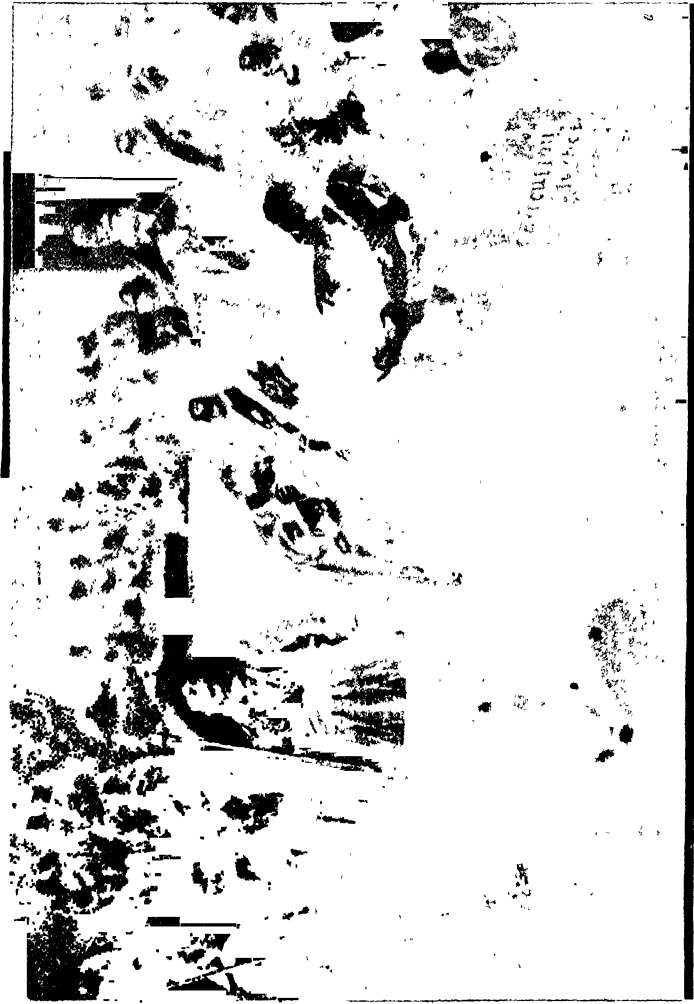
चार्ल्स प्रथम की दोष-समीक्षा

धैर्य से काम लिया। उसने कहा—"मैंने इसलिए गर्म वस्त्र पहन लिये हैं, जिसमें मेरे शीतकाल के कारण काँपने को लोग भय से काँपना न समझें।" चार्ल्स ने प्राण-दंड के समय जैसा शान्त स्वभाव तथा साहस का परिचय दिया, यदि वैसा ही स्वभाव और साहस उसका सदा रहता, तो उसे यह दिन न देखना पड़ता। जनता की स्वतन्त्रता की रक्षा के नाम पर इतना रक्तपात हुआ था; और अन्त में स्वयं राजा स्वतन्त्रता देवी की भेंट चढ़ाया गया।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६२५—चार्ल्स प्रथम का राज्याभिषेक।
" १६२६—बांकिंघम पर अभियोग।
" १६२८—"अधिकार-याचना" (Petition of Right)।
" १६३७—हैम्पडन पर "जहाज़ी कर" (Ship Money) का मुक़दमा
" १६४०—"अल्पकालिक पार्लिमेंट" (Short Parliament)।
" १६४०–५३—"प्रलम्ब पार्लिमेंट" (Long Parliament)।
" १६४१—स्ट्रैफ़ोर्ड को प्राण-दंड।
" १६४१—"महान् विरोध-पत्र" (The Grand Remonstrance)।
" १६४४—मार्स्टन मूर का युद्ध।
" १६४५—नेज़बाई का युद्ध।
" १६४९—चार्ल्स को प्राण-दंड।

तीसरा परिच्छेद

इँगलैंड में प्रजातन्त्र तथा संरक्षित राज्य

(१) प्रजातन्त्र राज्य

प्रजातन्त्र राज्य—पार्लिमेंट की लोक-सभा (House of Commons) के जिन ८० सदस्यों की मडली ने चार्ल्स प्रथम के प्राण-दंड की आज्ञा प्रकाशित की थी, उन्हीं ने अब राज्य का संचालन अपने हाथ में लिया। यह मंडली "क्षीण पार्लिमेंट" (The Rump Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है और इसने राजा तथा लार्ड-सभा दोनों को जनता की स्वतन्त्रता का नाशक ठहराकर इँगलैंड में प्रजातन्त्र राज्य (Commonwealth) स्थापित किया। प्रबन्ध-कार्य्य चलाने के लिए ४१ सदस्यों की एक राष्ट्र-सभा (Council of State) बनाई गई। उसका प्रधान वही ब्रैडशॉ (Bradshaw) था जिसने चार्ल्स के प्राणदंड की आज्ञा सुनाई थी। प्रसिद्ध कवि जॉन मिल्टन (John Milton) इसके विदेशी विभाग का मन्त्री था; और क्रॉम्वेल भी इसके मुख्य सदस्यों में से एक था।

आयरलंड और स्कॉटलैंड में कलह—आयरलंड की कैथॉलिक जनता बराबर राज्य-पक्ष की समर्थक रही थी; और चार्ल्स प्रथम की मृत्यु होने पर आयरलंडवालों ने उसके पुत्र को, चार्ल्स द्वितीय के नाम से, अपना राजा मान लिया। क्रॉम्वेल ने एक भारी सेना ले जाकर आयरलंडवालों को परास्त किया; और वहाँ प्रबन्ध करने के लिए अपने एक सहायक सैनिक अफ़सर को छोड़कर स्वयं इँगलैंड लौट आया। आयरलंड के ज़मींदारों की जायदादें छीनकर अँगरेज़ों में बाँट दी गईं। इन अत्याचारों के कारण आयरलंड में बहुत दिनों तक अशान्ति फैली रही।

हम ऊपर कह आये हैं कि द्वितीय गृह युद्ध में स्कॉटलैंड के प्रेस्बिटेरियन लोगों ने राजा का पक्ष लिया था। अब उन्होंने चार्ल्स प्रथम के पुत्र को देश में बुलाकर उसका राज्याभिषेक भी कर डाला। इस

पर अँगरेज़ी प्रजातन्त्र राज्य की ओर से क्रॉमवेल ने स्कॉटलैंड पर चढ़ाई की और वहाँवालों को डनबर (Dunbar) नामक स्थान पर परास्त किया। अगले वर्ष जब स्कॉटलैंड की सेना इँगलैंड पहुँचने का प्रयत्न कर रही थी, तब फिर वारसेस्टर (Worcester) नामक स्थान पर क्रॉमवेल ने उस पर भारी विजय प्राप्त की। अब स्कॉटलैंड में भी एक सैनिक अफ़सर शासक नियत कर दिया गया; और ऐसी स्थिति में चार्ल्स प्रथम के पुत्र ने निराश होकर फ्रांस जाकर शरण ली।

"क्षीण पार्लिमेंट" का विसर्जन—"क्षीण पार्लिमेंट" (The Rump) से देशवासी शीघ्र ही तंग आ गये। उसमें अब केवल ८० सदस्य रह जाने के कारण वह नाममात्र की ही पार्लिमेंट थी। उसके सदस्य केवल अपने ही मित्रों को बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त करते थे: इससे उनकी बदनामी और भी अधिक बढ़ गई। सब यही कहते थे कि नया निर्वाचन होना चाहिए। परन्तु "क्षीण पार्लिमेंट" के सदस्य विसर्जित होने के लिए सहमत न थे। ऐसी अवस्था में क्रॉमवेल ने कुछ सैनिकों की सहायता से बलपूर्वक उसके सदस्यों को सभा-भवन से निकाल बाहर किया और प्रधान की मेज़ पर रखे हुए राजदंड (The Speaker's Mace) को, जो पार्लिमेंट के अधिकार का चिह्न माना जाता है, उठाकर फेंक दिया। इस कार्य में देशवासियों की पूर्ण सहानुभूति थी और इसलिए इस पार्लिमेंट के विसर्जन का समाचार पाकर सब लोग बहुत प्रसन्न हुए। कहते हैं कि "क्षीण पार्लिमेंट" के सदस्यों की सहायता के लिए "देश में एक कुत्ता भी न भोंका"।

संरक्षित राज्य की स्थापना—अब देश में केवल सेना का अधिकार रह गया, जिसका नेता क्रॉमवेल था। एक दूसरी पार्लिमेंट बुलाई गई; जो अपने एक सदस्य के नाम पर बेयरबोन्स पार्लिमेंट (Barebones Parliament) के नाम से प्रसिद्ध है। परन्तु वह भी शीघ्र ही विसर्जित कर दी गई। उसके विसर्जन के पश्चात् "राज्य साधन" (Instrument of Government) नामक एक नई शासन-प्रणाली

बनाई गई। इसके अनुसार क्रॉम्वेल को संरक्षक (Lord Protector) की पदवी दी गई; और इँगलैंड, स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड तीनों देशों को एक ही राष्ट्र में मिला दिया गया। पार्लिमेंट में केवल लोक-सभा होती थी और उसमें तीनों देशों के प्रतिनिधि बुलाये जाते थे। संरक्षक की सहायता के लिए एक राष्ट्र-सभा (Council of State) नियत की गई, जिसके सदस्यों को संरक्षक पदच्युत न कर सकता था। पार्लिमेंट का अधिवेशन करने तथा उसे विसर्जित करने का अधिकार संरक्षक को दिया गया। इस नई शासन-प्रणाली का मुख्य उद्देश्य यह था कि संरक्षक तथा पार्लिमेंट दोनों में से किसी का अधिकार सीमा से बढ़ने न पावे। इस प्रकार अब संरक्षित राज्य का प्रारम्भ हुआ।

(२) संरक्षित राज्य
(The Protectorate)

क्रॉमवेल और पार्लिमेंट—संरक्षित राज्य के समय में क्रॉम्वेल और पार्लिमेंट में उसी तरह झगड़ा हुआ, जैसे पहले दोनों स्टुअर्ट राजाओं और पार्लिमेंट में हुआ था। क्रॉम्वेल वास्तव में पार्लिमेंट-द्वारा शासन के पक्ष में नहीं था। क्रॉम्वेल की पार्लिमेंट बस नाममात्र ही देश की प्रतिनिधि-सभा होती थी क्योंकि वह ऐसे लोगों को कभी निर्वाचित न होने देता था, जो उसकी नीति के विरोधी होते थे। अब देश-वासियों को पता चला कि राजनीतिक परिवर्तन से जनता की स्वतन्त्रता

ओलिवर क्रॉम्वेल

की कुछ भी वृद्धि नहीं हुई। एक स्वेच्छाचारी राजा के स्थान पर देश में सेना के एक नेता का प्रभुत्व स्थापित हो गया। संरक्षित राज्य की पहली पार्लिमेंट ने संरक्षक के अधिकारों को कुछ कम करना चाहा। इस पर क्रामवेल ने शीघ्र ही उसको विसर्जित कर दिया।

सैनिक शासन (Military Despotism)—इसके बाद स्पष्ट रूप से सैनिक शासन का आरम्भ हुआ। क्रॉमवेल ने समस्त इँगलैंड को दस ज़िलों में बाँटकर प्रत्येक ज़िले में एक मेजर जनरल को शासक नियत कर दिया। उसने अपने ही अधिकार से कर भी लगाना आरम्भ कर दिया; और मेजर जनरलों को आज्ञा दे दी कि राज-पक्ष-वालों की आय से दस प्रति सैकड़े के हिसाब से, राजकोष के लिए कर वसूल किया जाय। संरक्षक के विरुद्ध जो पुस्तकें तथा लेख आदि प्रकाशित होते थे वे ज़ब्त कर लिये जाते थे। नाटयशालायें तथा मनोविनोद के अन्य सब स्थान बन्द कर दिये गये। परन्तु यह मानना पड़ेगा कि नियमानुमोदित शासन का इस प्रकार उल्लङ्घन होने पर भी देश में पूर्णतया शान्ति रही और इस काल में इँगलैंड की आर्थिक दशा खूब उन्नत हुई। क्रॉमवेल का उद्देश्य अवश्य देश का हित करना था; परन्तु इस उद्देश्य की पूर्ति सेना की सहायता से की जाती थी; इसलिए क्रॉमवेल कभी लोकप्रिय न हो सका।

"विनीत परामर्श तथा प्रार्थना"—क्रॉमवेल ने दूसरी बार फिर एक नई पार्लिमेंट का अधिवेशन किया। इस बार पार्लिमेंट के सब सदस्य संरक्षक के समर्थक थे। उन्होंने एक नई शासन-प्रणाली तैयार की और "विनीत परामर्श तथा प्रार्थना" (The Humble Advice and Petition) के रूप में उसे क्रॉमवेल की स्वीकृति के लिए उसके समक्ष उपस्थित किया। इसके अनुसार क्रॉमवेल को "राजा" बनाने और उसको अपना उत्तराधिकारी चुनने का अधिकार देने का प्रस्ताव किया गया। दूसरा प्रस्ताव यह था कि लोक-सभा के अतिरिक्त एक लार्ड-सभा भी बनाई जाय, जिसके सदस्यों को क्रॉमवेल स्वयं

नियुक्त करे। सेना के लोग क्रामवेल को "राजा" बनाना पसन्द न करते थे; और इसलिए उसने यह उपाधि स्वीकृत न की। परन्तु प्रस्ताव की और सब बातें मान ली गईं और उनके अनुसार शासन होने लगा। केवल "राजा" का नाम न था; परन्तु क्रामवेल को सब तरह से राजा के-से अधिकार प्राप्त थे। दूसरी बार उसके "संरक्षक" होने के उपलक्ष में बड़े समारोह से दरबार किया गया।

(३) पर-राष्ट्रनीति
(Foreign Politics)

हॉलैंड से प्रथम युद्ध (First Dutch War)—"आरमेडा" की पराजय के पश्चात् से स्पेन की समुद्री शक्ति घटने लगी थी। अब सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैंड और हॉलैंड की समुद्री शक्ति का मुक़ाबला था। हॉलैंडवालों ने अपने जहाज़ इतने बढ़ा लिये थे कि इस समय समस्त भूमंडल के देशों में प्रायः विदेशी माल हॉलैंड के जहाज़ों के द्वारा ही आया-जाया करता था। एक देश से दूसरे देश तक माल पहुँचाने में हॉलैंड एकाधिकारी-सा हो रहा था। उसका यह काम कम करके अँगरेज़ी व्यापार की उन्नति करने के आशय से इँगलैंड की पार्लिमेंट ने सन् १६५१ में "समुद्री व्यापार-नियम" (Navigation Act) स्वीकृत किया, जिसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि जितने देशों का माल इँगलैंड में आवे, वह या तो उन्हीं देशों के जहाज़ों-द्वारा या अँगरेज़ी जहाज़ों द्वारा पहुँचाया जाय। इस नियम का समाचार पाकर हॉलैंडवाले भला कब चुपचाप बैठ सकते थे! उन्होंने शीघ्र ही इँगलैंड से युद्ध ठान दिया। युद्ध में पहले तो हॉलैंडवालों की विजय हुई; परन्तु अन्त में अँगरेज़ी समुद्री अफ़सर ब्लेक (Admiral Blake) ने हॉलैंड के जहाज़ी बेड़े को बुरी तरह परास्त किया। परिणाम यह हुआ कि हॉलैंडवालों को सन्धि करनी पड़ी, जिसके अनुसार उन्हें इँगलिश चैनेल में इँगलैंड की पताका (English Flag) का सम्मान करने के लिए

बाध्य होना पड़ा। एक प्रकार से उन्होंने "समुद्री व्यापार नियम" भी मान ही लिया, क्योंकि सन्धि में उसका कोई विरोध नहीं किया गया था। आगे चलकर हॉलैंड से दो और युद्ध हुए, जिनके विषय में चार्ल्स द्वितीय के विवरण में उल्लेख किया जायगा।

स्पेन से युद्ध—संरक्षक क्रॉमवेल इँगलैंड को धर्मरक्षा के कार्य्य में समस्त प्रोटेस्टेंट राज्यों का नेता बनाना चाहता था। स्पेन की कैथोलिक जाति को अँगरेज़ सदा अपना शत्रु समझते थे। क्रामवेल ने फ्रांस के राजा लूई चौदहवें (Louis XIV) को अपनी ओर मिलाकर स्पेन के विरुद्ध युद्ध ठान दिया। थोड़े ही दिनों में जमायका (Jamaica) द्वीप स्पेन से छीन लिया गया और तब से यह बराबर इँगलैंड के अधीन है। ब्लेक ने (Admiral Blake) कई बार समुद्री युद्धों में स्पेनवालों को परास्त किया; परन्तु अन्त में इँगलैंड लौटते समय जहाज़ पर ही इस प्रसिद्ध समुद्री अफ़सर की मृत्यु हो गई।

पर-राष्ट्रनीति का परिणाम—क्रामवेल की पर-राष्ट्रनीति पूर्णतया सफल रही। इसी लिए कहा जाता है, कि "देश में क्रामवेल का यश उसके विदेशों में होनेवाले यश के सामने कुछ भी न था"। पहले दोनों स्टुअर्ट राजाओं की पर-राष्ट्रनीति की विफलता के कारण इँगलैंड की प्रतिष्ठा योरपीय राजनीतिक क्षेत्र में बहुत कम रह गई थी। परन्तु क्रॉमवेल ने फिर इँगलैंड का यश देशान्तरों में फैला दिया। हॉलैंड पर विजय प्राप्त करने से इँगलैंड की व्यापारिक स्थिति में बहुत उन्नति हुई और अब अंगरेज़ी व्यापारिक तथा सैनिक ज़हाज़ों की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी। इँगलैंड को अब स्पेनियों से, जिनका सोलहवीं शताब्दी में हर समय भय लगा रहता था, कुछ भी भय न रह गया। अब अँगरेज़ बेधड़क होकर देशान्तरों में उपनिवेश स्थापित करने लगे। क्रॉमवेल की पर-राष्ट्रनीति में बस एक ही कमी थी। फ्रांस को स्पेन के विरुद्ध सहायता देने से लूई चौदहवें की शक्ति बहुत बढ़ गई, और आगे चलकर हम देखेंगे कि फ्रांस की शक्ति से योरपीय राष्ट्रों के शक्ति

सन्तुलन (Balance of Power) को उसी प्रकार भय हो गया, जिस प्रकार अब तक स्पेन से था।

क्रॉम्वेल के कार्यों की समालोचना—क्रॉम्वेल के देश-हितैषी होने में कोई शंका नहीं हो सकती। उसने देश का बहुत उपकार किया। उस जैसे योग्य शासक की अनुपस्थिति में न जाने राजा के प्राणदंड के पश्चात् देश में क्या क्या भयंकर काण्ड होते। क्रॉम्वेल का शासन "सैनिक शासन" था, इस कारण वह सर्वप्रिय न हो सका; परन्तु यह उसी के प्रयत्न का फल था कि प्रजातन्त्र राज्य के काल में देश में सुख और शान्ति बनी रही। सब धर्मों को स्वतन्त्रता दी गई; और इस काल में पहली बार इँगलैंड, स्कॉटलैंड और आयरलैंड एक साम्राज्य में सम्मिलित हुए। अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में क्रॉम्वेल ने इँगलैंड के लिए जो कुछ किया, उसके लिए देश सदा उसका कृतज्ञ रहेगा। क्रॉम्वेल के स्वेच्छाचारी परन्तु हितकारी शासन-काल में गृह्य युद्ध के झगड़े-बखेड़ों के पश्चात् देश को पुनः बल संचित करने का अवसर मिल गया, और देशवासी उस उन्नति में सम्मिलित होने के लिए तैयार हो गये, जो आगे चलकर "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) के समय से आरम्भ होगी।

(४) पुनः राज्य-स्थापन

(Events leading to the Restoration)

रिचर्ड क्रॉम्वेल—सन् १६५८ में क्रॉम्वेल की मृत्यु हुई। उसको अपना उत्तराधिकारी नियत करने का अधिकार दे दिया गया था; और अब उसका पुत्र रिचर्ड क्रॉम्वेल (Richard Cromwell) उसके स्थान पर संरक्षक नियत हुआ। शासन-कार्य्य के लिए रिचर्ड सर्वथा अयोग्य था और सेना से उसकी बिलकुल न बनी। नौ ही महीने बाद उसे अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा और वह फ्रांस चला गया।

अव्यवस्था का वर्ष—संरक्षक के त्यागपत्र के पश्चात् एक वर्ष तक बहुत गड़बड़ी रही। सेना को अब बड़ी कठिनाई यह आ पड़ी थी कि शासन-कार्य्य किस प्रकार चलाया जाय। राजा के समय की "प्रलम्ब पार्लिमेंट" (Long Parliament) का फिर अधिवेशन किया गया; और उसमें उन सदस्यों को भी बुलाया गया जिन्हें सैनिक अफ़सर प्राइड ने बलपूर्वक हटाकर इस पार्लिमेंट को "क्षीण पार्लिमेंट" (The Rump) बना दिया था। परन्तु पहले की भाँति इस पार्लिमेंट की सेना से फिर न बनी और गड़बड़ी बराबर जारी रही। ऐसी अवस्था में विचार-शील देशवासियों ने समझ लिया कि बिना पुनः राजकीय शासन की स्थापना के देश में शान्ति स्थापित नहीं हो सकती। यह विचार करके जनरल मांक (General Monck), जो उस समय प्रजातंत्र राज्य की ओर से स्काटलैंड की सेना का सेनापति था, अपने सैनिकों को लेकर लन्दन पहुँचा और उसके अनुरोध से "प्रलम्ब पार्लिमेंट" ने विसर्जन होने का प्रस्ताव पास किया। इस पार्लिमेंट का तेरह वर्ष (१६४०–१६५३) तक अधिवेशन होने पर क्रामवेल ने इसके "क्षीण भाग" का विसर्जन किया था, और अब एक वर्ष से कुछ अधिक (१६५९-१६६०) समय तक अधिवेशन होने पर इस पार्लिमेंट का अन्त हुआ।

पुनः राज्य-स्थापन (The Restoration)—इसके बाद समस्त देश में एक "प्रतिनिधि सभा" (The Convention) का निर्वाचन हुआ, जिसने इस विषय पर विचार करना आरम्भ किया कि देश में स्थायी शान्ति स्थापित करने के लिए किस प्रकार की शासन-प्रणाली बनाई जाय। इसी समय चार्ल्स प्रथम के पुत्र ने, जो अपने पिता के प्राण-दंड के समय से अपने को बराबर "चार्ल्स द्वितीय" कहता था, हॉलैंड के ब्रेडा नामक नगर से, जहाँ वह उस समय रहता था, एक घोषणा प्रकाशित की, जो "ब्रेडा की घोषणा" (Declaration of Breda) कहलाती है। इसमें सब अपराधियों को क्षमा करने, धार्मिक स्वतत्रता देने और सेना का वेतन चुकाने इत्यादि का वचन

था। इसका समाचार पाते ही "प्रतिनिधि सभा" ने निर्णय किया कि पूर्व परम्परा के अनुसार देश का शासन "राजा, लार्ड और लोक-सभा" द्वारा ही होना चाहिए। इस निर्णय के अनुसार २९ मई १६६० को चार्ल्स द्वितीय ने लन्दन में प्रवेश किया और समस्त देशवासियों ने हृदय से उसका स्वागत किया। यह घटना इतिहास में "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) के नाम से प्रसिद्ध है।

प्रजातन्त्र राज्य की विफलता—इस प्रकार प्रजातन्त्र राज्य का अन्त हुआ। कई कारणों से जनता इस राज्य से कभी संतुष्ट नहीं हो सकती थी। जनता की स्वतन्त्रता के नाम पर राजा से युद्ध हुआ था; परन्तु इन ग्यारह वर्षों में जनता के अधिकारों की रक्षा तो अलग रही, उलटे देश में स्पष्ट रूप से "सैनिक शासन" स्थापित हो गया। क्रॉम्वेल देशहितैषी अवश्य था, परन्तु उसका शासन वास्तव में सैनिक शासन था। इस कारण प्रजातन्त्र राज्य के प्रति जनता को सहानुभूति कभी न हो सकी। "पुनः राज्य-स्थापन" से सब देशवासी प्रसन्न हुए; और यह विचार फैलने लगा कि रक्त-पात के स्थान पर नियमानुसार रीति से आन्दोलन करना ही जनता के अधिकारों की रक्षा का एकमात्र मार्ग है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६४९—प्रजातंत्र राज्य की स्थापना।
,, १६५०—डनबर का युद्ध।
,, १६५१—वारसेस्टर का युद्ध।
,, १६५१—"समुद्री व्यापार नियम" (Navigation Act)।
,, १६५३—क्रॉम्वेल का "संरक्षक" बनना।
,, १६५२-१६५४—हॉलैंड से प्रथम युद्ध।
,, १६५८—क्रॉम्वेल की मृत्यु।
,, १६६०—"पुनः राज्य-स्थापन" (The Restoration)

चौथा परिच्छेद

चार्ल्स द्वितीय

(सन् १६६०-१६८५)

चार्ल्स द्वितीय का स्वागत—"पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) से सब देशवासी बहुत प्रसन्न हुए; क्योंकि प्रजातन्त्र-काल के "सैनिक शासन" से सब लोग असन्तुष्ट थे। चार्ल्स द्वितीय का राज्याभिषेक बड़े समारोह से हुआ और जनता ने हृदय से राजा का स्वागत किया। चार्ल्स ने कहा—"यह मेरा ही अपराध है कि मैंने इससे पहले देश को लौटने का विचार न किया। यहाँ मैं जिससे मिलता हूँ, उससे यही पता लगता है कि देशवासी मेरे आगमन की प्रतीक्षा कर रहे थे।" चार्ल्स द्वितीय के राजत्वकाल के वर्णन को हम दो भागों में विभक्त कर सकते हैं—(१) अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति (Foreign Politics) और (२) गृह-स्थिति (Domestic Politics)।

(१) अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति तथा हालैंड से युद्ध

चार्ल्स द्वितीय की पर-राष्ट्रनीति—क्रॉमवेल की भाँति चार्ल्स द्वितीय भी फ्रांस से मित्रता रखना चाहता था और स्पेन तथा हॉलैंड को इँगलैंड का शत्रु समझता था। परन्तु क्रॉमवेल और चार्ल्स में भारी अन्तर यह था कि चार्ल्स धीरे-धीरे फ्रांस के राजा लूई चौदहवें के हाथों का बिलकुल खिलौना बन गया। चार्ल्स की माता फ्रांस की ही थी और प्रजातंत्रकाल में चार्ल्स ने फ्रांस में ही शरण ली थी। लूई चौदहवाँ (Louis XIV) उसे धन की सहायता देता था; और उसी सहायता के भरोसे चार्ल्स को पार्लिमेंट से नये राज-कर स्वीकृत करने की अधिक आवश्यकता

न होती थी। लूई के अनुरोध से चार्ल्स ने पुर्तगाल की राजकुमारी कैथराइन से विवाह किया। इस विवाह के दहेज़ में उसे भारतवर्ष के पश्चिमी तट का बम्बई नामक बन्दरगाह प्राप्त हुआ, जो उसने ईस्ट इंडिया कम्पनी को किराये पर दे दिया। पुर्तगाल अभी, फ्रांस की सहायता से, स्पेनवालों के आधिपत्य से निकलकर स्वतंत्र हुआ था। लूई ही की सम्मति से चार्ल्स ने हॉलैंडवालों से दो और युद्ध किये जिनका वृत्तान्त नीचे दिया जाता है।

चार्ल्स द्वितीय

हॉलैंड से दूसरा युद्ध (१६६५-१६६७)—सत्रहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इँगलैंड और हॉलैंड में व्यापारिक प्रतिद्वन्द्विता चल रही थी। इसी कारण क्रॉम्वेल के शासनकाल में हालैंड का प्रथम युद्ध (१६५२-१६५४) हुआ था। (देखो पृष्ठ ११६)। अब इँगलैंड की पार्लिमेंट ने फिर से "व्यापारिक नियम" (Navigation Act) पास किया, और इस बार यह भी आज्ञा दी कि अँगरेज़ी उपनिवेश केवल इँगलैंड से ही व्यापार करें। ऐसे नियमों से हालैंडवालों के व्यापार की बड़ी हानि होती थी, और इस कारण अपने व्यापार की रक्षा के लिए हॉलैंड को दूसरी बार युद्ध करना पड़ा। इस समय ब्लेक जैसा साहसी जहाज़ी अफ़सर इँगलैंड में कोई न था, और धन की कमी के कारण चार्ल्स ने बहुत से जहाज़ों को हटा भी लिया था। हालैंड की सेनायें बड़ी सुगमता से टेम्स नदी में मेड्वे (Medway) तक बढ़ आईं और उन्होंने आकर बहुत-से अँगरेज़ी जहाज़ों का नाश कर डाला। परन्तु उसी समय फ्रांस का राजा हालैंड की सीमा पर भारी सेना

भेजकर आक्रमण करने की धमकी दे रहा था; और इस कारण हॉलैंड-वालों को इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध बन्द करना पड़ा। ब्रेडा की सन्धि (Peace of Breda) के अनुसार यह निर्णय हुआ कि जिसने युद्ध में जो कुछ जीत लिया है, वह उसी के पास रहे। इस प्रकार अँगरेज़ों को अमेरिका में हॉलैंडवालों का स्थापित किया हुआ उपनिवेश न्यू ऐम्सटरडम (New Amsterdam) मिला, जिस पर उन्होंने युद्ध-काल में अधिकार जमा लिया था। अब इसका नाम न्यूयार्क (New York) रखा गया, क्योंकि उस समय अँगरेज़ों का बड़ा अफ़सर (Lord High Admiral) चार्ल्स का छोटा भाई ड्यूक आफ़ यार्क था, जो बाद में जेम्स द्वितीय के नाम से इँगलैंड का राजा हुआ। इस उपनिवेश के प्राप्त होने के कारण उत्तरी अमेरिका के उत्तरी तथा दक्षिणी अँगरेज़ी उपनिवेश एक साथ मिल गये; और अब उत्तरी अमेरिका का समस्त पूर्वीय तट अँगरेज़ों के अधीन हो गया। यही न्यूयार्क अमेरिका के वर्तमान संयुक्त-राज्यों का मुख्य नगर तथा राजधानी है

डोवर की गुप्त संधि (The Secret Treaty of Dover)—लूई चौदहवें से चार्ल्स द्वितीय की मित्रता बराबर बढ़ती गई और सन् १६७० में दोनों ने डोवर नामक स्थान पर एक सन्धि की। इस सन्धि के अनुसार दोनों ने मिलकर हॉलैंड को जीतने और उसे आपस में बाँट लेने का इरादा किया। इसके अतिरिक्त चार्ल्स ने यह भी वचन दिया कि मैं शीघ्र ही अपने आपको कैथोलिक घोषित कर दूँगा और इँगलैंड के कैथोलिकों को भी पूरी सुविधायें दे दूँगा। यह भी निश्चित हुआ कि यदि ऐसा करने में इँगलैंड में कुछ विद्रोह होगा, तो फ्रांस का राजा उसको शान्त करने के लिए धन तथा जन से सहायता देगा। इस सन्धि का केवल प्रथम भाग प्रकाशित किया गया, जिसके अनुसार हॉलैंड से युद्ध करना निश्चित हुआ था। द्वितीय भाग, जिसमें चार्ल्स के कैथोलिक होने की बात थी, पूर्णतया गुप्त रखा गया। यहाँ तक कि राज-मन्त्रियों को भी उसका पता न था। इँगलैंड की प्रोटेस्टेंट जनता को

दबाने के लिए चार्ल्स का इस प्रकार गुप्त संधि करना यह सूचित करता है कि उसे अपनी प्रजा के हित का कुछ भी ध्यान न था, और फ्रांस के राजा से धन की सहायता पाने के लालच से वह, उसको प्रसन्न करने के लिए, सब कुछ करने को तैयार था।

हॉलैंड से तीसरा युद्ध (१६७२-१६७४)—डोवर की सन्धि के अनुसार चार्ल्स ने हॉलैंड के जहाज़ों पर आक्रमण कर दिया; और इस प्रकार अब तीसरी बार हॉलैंड से युद्ध आरम्भ हुआ। इस युद्ध में इँगलैंड की जनता ने राजा का साथ न दिया। अगरेज़ लोग समझते थे कि चार्ल्स फ्रांस के राजा के हाथों का खिलौना बन रहा है; और इसे इस बात का कुछ ध्यान नहीं है कि फ्रांस को हालैंड के विरुद्ध सहायता देने से फ्रांस की शक्ति कितनी अधिक बढ़ जायगी। इँगलैंडवाले बराबर यह भी सुन रहे थे कि लूई फ्रांस के प्रोटेस्टेंटो (Hugenots) पर बड़ा अत्याचार कर रहा है; और इस कारण इँगलैंड की जनता ने फ्रांस से मित्रता दृढ़ करने के लिए हॉलैंड से युद्ध करने की नीति का पूर्णतया विरोध किया। उधर हॉलैंडवालों ने बड़ी वीरता दिखाई और अपने बाँध तोड़कर अपने देश की बहुत-सी भूमि समुद्र के अर्पण कर दी, परन्तु उस पर शत्रुओं का अधिकार स्थापित न होने दिया। अन्त में चार्ल्स को हॉलैंड से सन्धि करनी पड़ी और इस प्रकार हॉलैंड का तीसरा युद्ध समाप्त हुआ। थोड़े ही दिनों बाद चार्ल्स द्वितीय के भाई ड्यूक आफ़ यार्क (भावी जेम्स द्वितीय) की पुत्री राजकुमारी मेरी का विवाह हॉलैंड के प्रजातन्त्र राज्य के अधिष्ठाता विलियम से कर दिया गया। इस प्रकार अब इँगलैंड और हॉलैंड में परस्पर मेल तथा सहानुभूति बढ़ने लगी। आगे चलकर पाठक पढ़ेंगे कि यही विलियम "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" (Glorious Revolution) के पश्चात् "विलियम तृतीय" के नाम से इँगलैंड का राजा हुआ और मेरी इँगलैंड की रानी मेरी द्वितीय बनी।

---

(२) गृह स्थिति

"प्रतिनिधि सभा" का प्रबन्ध—हम पहले कह आये हैं कि "प्रलम्ब पार्लिमेंट" (Long Parliament) का विसर्जन करके जनरल मांक (General Monck) ने देश की शासनप्रणाली निर्धारित करने के लिए एक "प्रतिनिधि सभा" (The Convention) बुलाई थी। इसी सभा ने चार्ल्स द्वितीय को राजा घोषित किया था; और अब "पुनः राज्यस्थापन" (Restoration) के पश्चात् उसी ने देश का प्रबन्ध करना प्रारम्भ किया। एक "क्षमानियम" (Act of Indemnity पास किया गया, जिसके अनुसार उन सब लोगों को क्षमा कर दिया गया जिन्होंने चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध युद्ध किया था। परन्तु जिन लोगों ने चार्ल्स के प्राण-दंड की आज्ञा पर हस्ताक्षर किये थे, उन्हें "राजा का घातक" (Regicides ठहराकर प्राण-दंड दिया गया। उनमें से बहुत से इस समय संसार में न थे। ऐसे लोगों के मृतक शरीर क़बरों से निकालकर फाँसीघर में लटका दिये गये। उनमें से एक क्रॉम्वेल भी था। उसका मृतक शरीर भी टाइबर्न के फाटक (Tyburn Gate) पर फाँसी के चौखटे पर लटकाया गया। "नई आदर्श सेना" (New Model Army) का वेतन चुकाकर अब उसका विसर्जन किया गया; परन्तु उसका कुछ भाग राजा की रक्षा के लिए रख लिया गया, और इस प्रकार इँगलैंड की "स्थायी सेना" (Standing Army) का प्रारम्भ हुआ।

"कैवेलियर पार्लिमेंट" तथा क्लैरेंडन कोड—मई सन् १६६१ में एक नई पार्लिमेंट का निर्वाचन हुआ, जिसने जनवरी सन् १६७९ तक कार्य्य किया। प्रजातन्त्र राज्य की विफलता देशवासी देख ही चुके थे। इसलिए इस पार्लिमेंट के सदस्यों ने राजा के प्रति इतनी भक्ति दिखलाई कि यह "कैवेलियर पार्लिमेंट" (Cavalier Parliament) कहलाने लगी। क्योंकि गृह युद्ध में राज-पक्षवाले कैवेलियर कहलाते थे। अब प्योरिटन दलवालों से, जिनके नेताओं ने प्रजातन्त्र राज्य का

कार्य्य चलाया था, जनता घृणा करने लगी थी। इस नई पार्लिमेंट ने प्योरिटन मतावलम्बियों को दबाने के हेतु चार राजनियम स्वीकृत किये—(१) "नगर-मंडली नियम" (Corporation Act), जिसके अनुसार केवल वही लोग नगर की शासन-सभाओं के सदस्य हो सकते थे जो अँगरेज़ी चर्च की रीतियों को मानते थे। (२) "एकरूपता नियम" (Act of Uniformity), जिसके अनुसार सब पादरियों को अँगरेज़ी चर्च की प्रार्थना-पुस्तक का व्यवहार करने के लिए बाध्य किया गया था। जिन्होंने इसे स्वीकृत न किया, वे निकाल बाहर किये गये; और २४ अगस्त सन् १६६२ (St. Bartholomew's Day) को लगभग दो हज़ार पादरी इसी आधार पर निकाले गये। (३) "धर्म-सभा नियम" (Conventicle Act), जिसके अनुसार अँगरेज़ी चर्च के अनुयायियों के अतिरिक्त पाँच से अधिक लोग मिलकर प्रार्थना न कर सकते थे। इसका यह आशय था कि अन्य मतावलम्बी धार्मिक सभायें न कर सकें। और (४) "पचमील नियम" (Five Mile Act), जिसके अनुसार निकाले हुए पादरी न तो किसी विद्यालय में अध्यापक हो सकते थे और न किसी बड़े नगर के चारों ओर पाँच मील की सीमा में आ सकते थे।

ये सब नियम मिलकर क्लैरेंडन कोड (Clarendon Code) नाम से प्रसिद्ध हैं; क्योंकि क्लैरेंडन इस समय प्रधान मन्त्री था; और उसी के अनुरोध से प्योरिटन दल के विरुद्ध ये नियम बनाये गये थे। इन नियमों का परिणाम यह हुआ कि प्योरिटन दलवाले अब बिलकुल शक्ति-हीन हो गये।। कुछ काल के पश्चात् स्वयं Puritan शब्द लुप्त हो गया और उसके स्थान पर Non-Conformists, Dissenters, Separatists इत्यादि शब्दों का प्रयोग स्थायी रूप से प्रचलित हो गया। प्रसिद्ध कवि जॉन मिल्टन (John Milton) और प्रसिद्ध पुस्तक "Pilgrim's Progess" के लेखक जॉन बुनियान (John Bunyan) दोनों प्योरिटन थे। बुनियान को तो अपने धार्मिक विचारों

के कारण बारह वर्ष तक बंदीगृह में भी रहना पड़ा था और वहीं उसने अपनी उक्त प्रसिद्ध पुस्तक लिखी थी।

अर्ल आफ़ क्लैरेंडन

प्लेग तथा अग्नि—सन् १६६५ में इँगलैंड को एक घोर विपत्ति का सामना करना पड़ा। देश में प्लेग फैल गया और गन्दी गलियों तथा घनी बस्ती के कारण शीघ्र ही इस महामारी ने भयंकर रूप धारण कर लिया। विशेषतया लन्दन नगर में हज़ारों आदमी मरने लगे और नगर बिलकुल ख़ाली होने लगा। ऐसी अवस्था में मृतक शरीरों का रीतिपूर्वक अन्तिम संस्कार करना असम्भव था। रात को एक बड़ी गाड़ी शहर में घूमती थी और प्रत्येक चौराहे पर गाड़ीवाला घंटी बजाकर पुकारता था—"अपने घरों के मुरदे निकाल लाओ"। बस, ये सब मुरदे गाड़ी में भरकर बड़े गड्ढों में फेंक दिये जाते थे।

अगले वर्ष दूसरी विपत्ति आई। लन्दन नगर में आग लग गई और नगर का बहुत-सा भाग तहस-नहस हो गया। ४०० गलियाँ, ८९

गिरजे, और १३,००० घर भस्म हो गये ! परन्तु इस भीषण आपत्ति से एक लाभ भी हुआ। नगर का गन्दा भाग बहुत कुछ नष्ट हो गया; और इसके पश्चात् लन्दन नगर नये और अच्छे ढंग से बसाया गया, जिससे प्लेग जैसी महामारी का फिर फैलना असम्भव हो गया। इसी आपत्ति के पश्चात् क्रिस्टोफर रेन (Christopher Wren) द्वारा बहुत-सी नई और सुन्दर इमारतें देश में बनीं। सेंट पाल का गिरजा (St. Paul's Cathedral), जो अग्नि से नष्ट हो गया था, फिर से बनाया गया।

क्रिस्टोफर रेन

जिस जगह से अग्नि प्रारम्भ हुई थी, उस जगह पर घोर आपत्ति की स्मृति में एक ऊँचा स्तम्भ (The Monument) बना दिया गया।

क्लैरेंडन का पतन—एडवर्ड हाइड (क्लैरेंडन) "प्रलम्ब पार्लिमेंट" (Long Parliament) का सदस्य रह चुका था और उसने उसके राजनीतिक सुधार के कार्य्य में बहुत कुछ सहायता की थी; परन्तु जब धार्मिक सुधार के प्रश्न पर लोक-सभा के सदस्यों में दो दल हो गये, तब वह स्थापित अँगरेज़ी चर्च के समर्थकों अर्थात् "हाई चर्च पार्टी" (High Churchmen) का नेता हो गया। उसी के नेतृत्व में "हाई चर्च पार्टी" ने गृहयुद्ध में राजा का साथ दिया था। चार्ल्स के प्राण-दण्ड के पश्चात् वह उसके पुत्र के साथ रहा; और जब वह पुत्र "चार्ल्स द्वितीय" के नाम से राजा हुआ, तब उसने एडवर्ड हाइड

(Edward Hyde) को अर्ल आफ़ क्लैरेंडन (Earl of Clarendon) बनाकर अपना प्रधान मन्त्री नियुक्त किया। क्लैरेंडन ही के अनुरोध से प्योरिटन दल को दबाने के लिए नियम बनाये गये थे। वह राजा की, फ्रांस से मित्रता रखने की नीति का समर्थक था और इस कारण देशवासी उसके विरुद्ध हो गये। पार्लिमेंट ने उस पर अभियोग चलाया और उसे प्रधान मन्त्री के पद से हटना पड़ा। इसके बाद अब वह फ्रांस चला गया और वहीं उसकी मृत्यु हुई।

कैबेल—अब चार्ल्स ने पाँच मन्त्रियों का एक मंडल नियुक्त किया जो कैबेल (Cabal) के नाम से प्रसिद्ध है। कैबेल फ्रेंच भाषा के शब्द ["Cabale" Fr. = "Club" Eng.] से बना है और उसका अर्थ "विशेष प्रकार की मंडली" है। संयोग से इन पाँचों मन्त्रियों के अँगरेज़ी नामों के पहले अक्षरों को मिलाने से भी कैबेल (Cabal) शब्द ही बनता था*। परन्तु यह कैबेल आजकल के "मन्त्रिमंडल" (Cabinet) की तरह न था। इन पाँचों मन्त्रियों के राजनीतिक विचार एक-से न थे और ये सब एक साथ मिलकर कार्य्य भी नहीं करते थे।

"परीक्षा-नियम" (The Test Act)—चार्ल्स द्वितीय वास्तव में कैथोलिक मत का अनुयायी था; परन्तु इँगलैंड की जनता के विरुद्ध हो जाने के भय से वह ऊपर से अँगरेज़ी चर्च की रीतियों का ही पालन करता था "डोवर की गुप्त सन्धि" के पश्चात् उसने अपनी प्रतिज्ञा के अनुसार इँगलैंड के कैथोलिकों को कुछ सुविधायें देने का विचार किया उसने एक "अनिषेध-घोषणा" (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की, जिसका आशय यह था कि सब धर्मावलम्बियों को अपने इच्छानुसार प्रार्थना करने का अधिकार है और धर्म के लिए राज्य की ओर से किसी को कोई दंड न दिया जायगा। राजा का यह कहना था कि मैं देश में धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहता हूँ;

*Clifford, Arlington, Buckingham, Ashley and Lauderdale.

परन्तु लोग समझ गये कि इस घोषणा का यही आशय है कि राजा कैथोलिकों को सुविधायें देना चाहता है। पार्लिमेंट के विरोध के कारण राजा को यह घोषणा रद्द करनी पड़ी; और अब एक "परीक्षा-नियम" (The Test Act) पास किया गया, जिसके अनुसार राज्य के प्रत्येक पदाधिकारी की, उसे पद देने से पहले, परीक्षा कर ली जाती थी कि वह स्थापित अँगरेज़ी चर्च की रीतियों को मानता है या नहीं।

इस नियम के कारण ड्यूक आफ़ यार्क (भावी जेम्स द्वितीय) ने प्रधान जहाज़ी अफ़सर (Lord High Admiral) के पद से त्यागपत्र दे दिया। कैबेल के दो मन्त्रियों को अपने पद से हटना पड़ा; और शेष तीनों को राजा ने अलग कर दिया। इस प्रकार केबेल नामक मन्त्र-मंडल का भी अन्त हो गया।

डेनबी—केबेल के टूटने पर राजा ने डेन्बी (Danby) को प्रधान मन्त्री बनाया। डेनबी हॉलैंड से मित्रता रखने के पक्ष में था, और उसी ने फ्रांस के राजा लूई चौदहवें के विरोधी होते हुए भी इँगलैंड तथा हॉलैंड की मित्रता स्थायी करने के आशय से हॉलैंड के प्रजातन्त्र राज्य के अधिष्ठाता विलियम आफ़ आरेंज से ड्यूक आफ़ यार्क (भावी जेम्स द्वितीय) की पुत्री राजकुमारी मेरी का विवाह कराया था। परन्तु चार्ल्स द्वितीय बराबर फ्रांस की मित्रता पर लट्टू बना रहा और पार्लिमेंट के यथेष्ट धन की स्वीकृति न देने के कारण वह फ्रांस के राजा से धन की सहायता लेता रहता था। इसी आर्थिक सहायता के लालच से डेन्बी को भी फ्रांस से मित्र-भाव का पत्र-व्यवहार करना पड़ता था। फ्रांस का राजा डेन्बी के पतन का अभिलाषी था; और उसने उसके द्वारा फ्रांस को लिखे हुए पत्रों से यह दिखाया कि डेन्बी इँगलैंडवालों के सामने तो फ्रांस से मेल रखने का विरोध करता है, और हॉलैंड का मित्र बनता है; परन्तु गुप्त रूप से फ्रांस ही की मित्रता का पक्षपाती है। इस पर पार्लिमेंट ने डेन्बी पर अभियोग चलाया; किन्तु चार्ल्स द्वितीय ने उसे क्षमा-पत्र प्रदान कर दिया। अपने बचाव के लिए उसने वही क्षमा पत्र

उपस्थित किया; परन्तु पार्लिमेंट ने कह दिया कि देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख चलनेवाले अभियोग से बचने के लिए राजा का दिया हुआ क्षमा-पत्र निरर्थक है। डेन्बी को अपने पद से हटना पड़ा; और इस प्रकार पार्लिमेंट ने जतला दिया कि उसे राज-मन्त्रियों के कार्य्यों की देख-रेख रखने का भी पूर्ण अधिकार है।

"स्वतंत्रता-नियम"—सन् १६७९ में पार्लिमेंट ने एक बड़े महत्त्व का नियम स्वीकृत किया, जो "स्वतंत्रता-नियम" (Habeas Corpus Act) के नाम से प्रसिद्ध है। इसका अँगरेज़ी नाम लैटिन भाषा से लिया गया है और इसका अर्थ है—"तुम्हें उसे पेश करना होगा"। जो लोग दोष के निर्णय से पूर्व हवालात में रखे जाते थे, उनके मित्र इसके अनुसार जेलर के नाम यह आज्ञा प्राप्त कर सकते थे कि दोष का निर्णय होने के लिए अपराधी को तुरन्त न्यायालय में पेश किया जाय। इसका आशय यह था कि कहीं ऐसा न हो कि दोष के निर्णय की प्रतीक्षा में बहुत काल तक अपराधी को हवालात में कष्ट भोगना पड़े। इस नियम की भी गणना इँगलैंड के प्रसिद्ध "स्वतत्रता-पत्रों" (Charters of Liberty) में की जाती है।

कैथोलिकों के षड्यन्त्र—इस समय कैथोलिक मतावलम्बियों के प्रति देशवालों की बिलकुल सहानुभूति न थी और वे घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। टाइटस ओट्स (Titus Oates) नामक एक बदमाश ने, जो अपनी धूर्तता के कारण अँगरेज़ी चर्च से निकाल दिया गया था, यह झूठा समाचार फैला दिया कि अँगरेज़ी चर्च पर भारी आपत्ति आनेवाली है। चार्ल्स द्वितीय और राज्य के प्रधान कर्मचारियों को मार डालने के लिए कैथोलिक लोग षड्यन्त्र रच रहे हैं और वे ड्यूक आफ़ यॉर्क को राजा बनाना चाहते हैं। यह समाचार फैलाने से ओट्स का शायद यह अभिप्राय था कि अँगरेज़ी चर्च को आनेवाली आपत्ति से सावधान करने के कारण लोग फिर मुझे अँगरेज़ी चर्च में ले लें। यद्यपि यह समाचार झूठा था, फिर भी बहुत-से लोगों को इस पर

विश्वास हो गया: और बहुत दिनों तक देश में बड़ी हलचल मची रही।

"बहिष्कार-प्रस्ताव"—चार्ल्स द्वितीय के कोई सन्तान न थी और उसका उत्तराधिकारी उसका कनिष्ठ भ्राता ड्यूक आफ़ यार्क ही था। ड्यूक ने "परीक्षा-नियम" के स्वीकृत होने पर अपने प्रधान जहाज़ी अफ़सर के पद से त्यागपत्र दे दिया था, और इस कारण सब लोग जान गये थे कि वह पक्का कैथोलिक है। ऐसे समय में, जब कि कैथोलिकों के प्रति इतनी घृणा थी और उनके रचाये हुए षडयन्त्र के समाचार देश में फैल रहे थे, जनता यह कभी पसन्द न कर सकती थी कि वह देश का राजा हो। पार्लिमेंट में एक प्रस्ताव उपस्थित किया गया जो "बहिष्कार-प्रस्ताव" (Exclusion Bill) के नाम से प्रसिद्ध है। इसका यह आशय था कि ड्यूक आफ़ यार्क को गद्दी न मिले। लोक सभा में यह प्रस्ताव स्वीकृत हो गया, परन्तु लार्ड-सभा ने इसे स्वीकृत न किया। बिना पार्लिमेंट की दोनों सभाओं से स्वीकृत हुए यह प्रस्ताव राजनियम न बन सकता था; और इसलिए ड्यूक आफ़ यार्क को गद्दी से वंचित रखने का प्रयत्न सफल न हो सका।

ह्विग और टोरी दल—जिस समय "बहिष्कार-प्रस्ताव" पर वाद-विवाद हो रहा था, उस समय पार्लिमेंट में दो दल हो गये। इस प्रस्ताव के समर्थकों का मत था कि पार्लिमेंट को राजसिंहासन के प्रश्न के निर्णय का पूर्ण अधिकार है। इसके विपक्षवालों का मत था कि ऐसे प्रश्नों पर विचार करना एक प्रकार से राज्याधिकार पर आघात करना है। उस समय के दोनों दल स्थायी हो गये और अँगरेज़ी इतिहास में ये ह्विग (Whig) तथा टोरी (Tory) नामों से प्रसिद्ध हैं। ह्विग का अर्थ स्कॉटलैंड के समाज में "खट्टा दूध" और टोरी का अर्थ आयरलैंड के समाज में "लुटेरा" था; और पहले दोनों दलवाले इन नामों का प्रयोग एक दूसरे को चिढ़ाने के लिए किया करते थे। परन्तु धीरे-धीरे यही नाम स्थायी हो गये। आगे चलकर ह्विग लोग पार्लिमेंट

के अधिकार के और टोरी लोग राजा के अधिकार के पक्षपाती हो गये। इन दोनों राजनीतिक दलों में से कभी एक और कभी दूसरे के हाथों में देश का शासन-कार्य्य रहा। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि इन्हीं राजनीतिक दलों के बनने से "दलबन्दी के शासन" (Party Government) का प्रारम्भ हुआ।

चार्ल्स द्वितीय का चरित्र—६ फ़रवरी सन् १६८५ को चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु हुई। मरते समय उसने अपने को कैथोलिक मत का अनुयायी बतलाया और कैथोलिक रीतियों के अनुसार ही उसका अन्तिम संस्कार हुआ। अपने शासन-काल में भी उसने कैथोलिकों को सहायता देने की चेष्टा की थी; परन्तु जनता के विरुद्ध हो जाने के भय से वह अपने कैथोलिक भावों को हृदय में ही रखकर बाहर से अँगरेज़ी चर्च से मिला रहता था। चार्ल्स को कला-कौशल तथा साहित्य से बड़ा प्रेम था और उसके राज्यकाल में रॉयल सोसाइटी (Royal Society) की स्थापना हुई, जिसके सदस्य होने में इस समय समस्त संसार के बड़े-बड़े प्रसिद्ध विद्वान् भी अपना गौरव समझते हैं। परन्तु चार्ल्स विषयी भी पूरा था और उसका दरबार व्यभिचार के लिए सारे योरप में बदनाम था। उसने राजकोष का बहुत-सा धन अपने भोग-विलास में लुटा दिया। उस काल के एक कार्टून (Cartoon) या उपहास-चित्र में वह दो स्त्रियों के बीच में ख़ाली जेब लटकाये खड़ा हुआ दिखलाया गया है। चार्ल्स में केवल यही गुण था कि वह जनता को अपने विरुद्ध न होने देता था। जनता ने जब उसके मन्त्रियों की नीति का विरोध किया, तब वह उन्हें पद से हटाने को तैयार हो गया। जब उसकी, सब धर्मों को स्वतंत्रता देने की घोषणा को देशवासियों ने ना-पसन्द किया तब उसने उसे लौटा लिया। इसी कारण वह उस परिणाम से बच गया, जो उसके पिता का हुआ था, या जो आगे चलकर उसके कनिष्ठ भ्राता जेम्स द्वितीय का होगा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन १६६०—चार्ल्स द्वितीय का राज्याभिषेक।
" १६६५-१६७०—हालैंड से दूसरा युद्ध।
" १६६५—भयंकर प्लेग (The Great Plague)।
" १६६६—भयंकर अग्नि (The Great Fire)।
" १६६७—क्लैरेंडन का पतन।
" १६७०—डोवर की गुप्त सन्धि।
" १६७२-१६७४—हालैंड से तीसरा युद्ध।
" १६७३—"परीक्षा-नियम" (Test Act)।
" १६७८—डेन्बी का पतन।
" १६७९—"स्वतंत्रता-नियम" (Habeas Corpas Act)।
" १६८०—"बहिष्कार-प्रस्ताव" (The Exclusion Bill) का अस्वीकृत होना।
" १६८५—चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु।

पाँचवाँ परिच्छेद

जेम्स द्वितीय

(१६८५-१६८८)

जेम्स द्वितीय—चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका कनिष्ठ भ्राता ड्यूक ऑफ़ यॉर्क, जिसे गद्दी से वंचित रखने के प्रयत्न की विफलता का वर्णन पहले हो चुका है; "जेम्स द्वितीय" के नाम से राजा हुआ। वह पक्का कैथोलिक था यद्यपि उसने राज्याभिषेक के समय यह वचन दिया था कि मैं अँगरेज़ी चर्च को कोई हानि न पहुँचाऊँगा, परन्तु फिर भी अपने शासन-काल में उसका मुख्य उद्देश्य बराबर यही रहा कि कैथोलिक मत का खूब प्रचार हो। वह जानता था कि कैथोलिक मतावलम्बियों की सहायता करने से जनता मेरे विरुद्ध हो जायगी; परन्तु उसे जनता के विरोध की लेशमात्र भी परवाह न थी;

जेम्स द्वितीय

और इसी कारण देश में भारी "राज्यक्रान्ति" हुई, जिसका वर्णन इस परिच्छेद में किया जायगा।

मनमथ का विद्रोह—"बहिष्कार-प्रस्ताव" के ह्विग समर्थकों ने चार्ल्स द्वितीय के एक दोगले लड़के ड्यूक आफ़ मनमथ (Duke of Monmouth) को गद्दी देना चाहा था। इस मनमथ ने अब ह्विग-दल की सहायता से विद्रोह ठान दिया और उसके प्रांटेस्टेंट होने के कारण कुछ देशवासियों ने भी उसका साथ दिया। जेम्स द्वितीय ने इस विद्रोह को दबाने के लिए सेना भेजी, जिसने सेजमूर (Sedgemoor) नामक स्थान पर विद्रोहियों को परास्त किया। मनमथ भाग निकला; परन्तु वह शीघ्र ही पकड़ा गया और राजद्रोह के अपराध में उसे प्राणदंड दिया गया।

"ख़ूनी न्यायालय"—मनमथ के बहुत-से सहायक भी पकड़े गये और उनको दंड देने के लिए जेम्स ने जेफ़्रे (Jeffrey) नामक एक बड़े ही निठुर और निर्दयी न्यायाधीश को नियुक्त किया। जेफ़्रे ने विद्रोहियों को कड़े दंड दिये। यहाँ तक कि बहुत-से निर्दोष कृषक भी, जिनके खेतों में से होकर विद्रोहियो का दल आया था, दंड के भागी ठहराये गये। तीन सौ से अधिक आदमियों को फाँसी दी गई। इसके सिवा लगभग आठ सौ आदमियों को दास बनाकर बेच दिया गया और उन्हें पश्चिमी द्वीपसमूह (West Indies) में, कड़ी धूप में, मिट्टी खोदने का काम दिया गया। इन अत्याचारों के कारण जेफ़्रे का न्यायालय इतिहास में "ख़ूनी न्यायालय" (Bloody Assizes) कहलाता है। राजा ने जेफ़्रे का कार्य्य पसन्द किया और उसे प्रधान न्यायाधीश (Lord Chancellor) का पद दिया।

जेम्स का नियम-भंग करना—"परीक्षा-नियम" (Test Act) के अनुसार केवल अँगरेज़ी चर्च के अनुयायी ही राज्य के कर्मचारी हो सकते थे। जेम्स ने देखा कि इससे कैथोलिकों को बड़ी हानि पहुँचती है, इसलिए उसने "परीक्षा-नियम" को रद करना चाहा; परन्तु पार्लिमेंट उसे रद करने के लिए तैयार न हुई। इस पर जेम्स ने कहा कि

आवश्यकता पड़ने पर राजा के नियमों के स्थगित करने का अधिकार (Dispensing Power) है; और इस अधिकार का प्रयोग करके कैथोलिक तथा प्योरिटन दलवालों के विरुद्ध जितने नियम थे, उन सबके उसने रद कर दिया। जनता ने इसका विरोध किया; क्योंकि यदि यह मान लिया जाता कि राजा के नियमों के स्थगित करने का अधिकार है, तो नियमानुमोदित शासन (Constitutional Government) का बिलकुल अन्त हो जाता। जेम्स ने देशवासियों के विरोध की कुछ भी परवाह न की और कैथोलिकों के सेना तथा राज्य में बड़े-बड़े पद देना आरम्भ कर दिया। यही नहीं, बल्कि उसने रोम के पोप के निमन्त्रित करके इँगलैंड में, राज्य की ओर से, उसका स्वागत किया और इस आशय की एक "अनिषेध घोषणा" (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की कि अँगरेज़ी चर्च के विरोधियों के विरुद्ध जितने नियम बन चुके हैं, अब उनका प्रयोग न किया जायगा।

जेम्स और विश्वविद्यालय—इँगलैंड में इस समय दो बड़े विश्वविद्यालय थे—एक कैम्ब्रिज (Cambridge) में और दूसरा ऑक्सफ़ोर्ड (Oxford) में। इन दोनों में केवल प्रोटेस्टेंट अध्यापक ही नियुक्त होते थे; और उनमें कैथोलिकों की शिक्षा का कोई प्रबन्ध न था। जेम्स इन विश्वविद्यालयों में भी कैथोलिक विचार फैलाना चाहता था; क्योंकि वहीं से शिक्षा पाये हुए युवक आगे चलकर देश और जाति के नेता होते थे। इसी लिए जब ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के मैग्डैलन कालिज (Magdalen College) के अधिष्ठाता की जगह ख़ाली हुई, तब जेम्स ने पार्कर (Parker) नामक एक कैथोलिक के उस पद पर नियुक्त कर दिया। विश्वविद्यालय के सदस्यों ने इसका विरोध किया; क्योंकि इस पद के लिए निर्वाचन करके नियुक्त करने का केवल उन्हीं लोगों के अधिकार था। देश में इतना जोश फैला कि पार्कर के लिए अधिष्ठाता के स्थान का ताला खोलने के कोई लोहार तैयार न होता था। जेम्स ने पार्कर के बलपूर्वक मैग्डैलन कालिज का अधिष्ठाता बनाया; और

आॅक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय के जिन सदस्यों ने उसका विरोध किया था, उन्हें निकाल बाहर किया। जनता ने उन सदस्यों का हार्दिक स्वागत किया; और देश के धनाढ्य पुरुषों ने उन्हें आदरपूर्वक अपने यहाँ रहने को स्थान दिया।

जेम्स और सात पादरी—अप्रैल सन् १६८८ में जेम्स ने दूसरी बार वही "अनिषेध घोषणा" (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की जिसका अभिप्राय यह था कि अँगरेज़ी चर्च के विरोधियों के विरुद्ध जितने राजनियम हैं, वे सब स्थगित किये गये। पादरियों को आज्ञा दी गई कि जगह-जगह गिरजाघरों में यह घोषणा पढ़कर सुनावें। इस पर कैंटरबरी के बड़े पादरी (Archbishop of Canterbury) और छः अन्य पादरियों ने मिलकर जेम्स को इस आशय का एक प्रार्थनापत्र दिया कि कम से कम देवालय में तो राजनियमों का खंडन करने की घोषणा न पढ़वाई जाय। जेम्स ने इसमें अपना अपमान समझा; और पादरियों पर, राजा के विरुद्ध विद्रोह फैलाने का अपराध लगाकर, अभियोग चलाया। न्यायालय ने पादरियों को निर्दोष ठहराया; और यह समाचार पाकर देश भर में ख़ुशी मनाई गई। इससे पता चलता है कि देशवासी उस समय राजा से कितने असन्तुष्ट थे; और अँगरेज़ी चर्च पर होनेवाले आघात को वे बिलकुल सहन न कर सकते थे।

जेम्स के घर पुत्र-जन्म—जनता अब तक यही समझकर जेम्स के अत्याचारों को किसी प्रकार सहन कर रही थी कि यह दुःख थोड़े ही दिनों का है। जेम्स की वृद्धावस्था थी और उसके कोई पुत्र न होने के कारण उसकी पुत्री राजकुमारी मेरी ही उसकी उत्तराधिकारिणी थी। पिता के कैथोलिक होने पर भी मेरी सच्ची प्रोटेस्टेंट था और उसका विवाह भी, योरप में प्रोटेस्टेंट दल की रक्षा करनेवाले, विलियम आफ़ आॅरेंज से हुआ था। परन्तु १० जून सन् १६८८ को जेम्स के एक पुत्र उत्पन्न हुआ। यह समाचार पाकर देश में बड़ी ख़लबली मची। सबने यही सोचा कि इस पुत्र की शिक्षा कैथोलिक ढंग से होगी; और जेम्स के

बाद यही राज-सिंहासन का अधिकारी होगा। इस प्रकार देश में बराबर कैथोलिक राजाओं का शासन रहेगा; और अँगरेज़ी चर्चवालों के साथ वर्तमान शासन के-से अत्याचार हुआ करेंगे। अब इस आपत्ति से बचने का "राज्यक्रांति" के अतिरिक्त और कोई साधन न रह गया।

विलियम को निमन्त्रण—ऐसी अवस्था में इँगलैंड की जनता ने हॉलैंड के शासक विलियम को, देश तथा चर्च की रक्षा करने के लिए, अपना राजा बनाने के उद्देश्य से निमन्त्रित किया। यह निमन्त्रण-पत्र लेकर एक विश्वासपात्र दूत हालैंड भेजा गया। उस निमन्त्रण-पत्र पर इँगलैंड के मुख्य-मुख्य नेताओं के हस्ताक्षर थे। विलियम एक ओर जेम्स द्वितीय की बड़ी पुत्री राजकुमारी मेरी का पति था; और दूसरी ओर उसकी माता का भी नाम मेरी था, जो चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय की बहन होती थी। विलियम इस प्रकार जेम्स द्वितीय का भानजा भी था और दामाद भी। वह इस समय योरप में प्रोटेस्टेंट मत की रक्षा के लिए फ्रांस के राजा लूई चौदहवें से युद्ध कर रहा था; और यह सोचकर कि इस युद्ध में इँगलैंड की सहायता प्राप्त करने का यह अच्छा अवसर है, उसने निमन्त्रण स्वीकार किया और कुछ सेना लेकर वह इँगलैंड आ पहुँचा।

"गौरव-पूर्ण राज्यक्रांति"—विलियम के इँगलैंड पहुँचते ही देश के सब नेता उससे जा मिले। इसमें जॉन चर्चिल (John Churchill) भी था, जो आगे चलकर ड्यूक आफ़ मालबरो (Duke of Marlborough) हुआ। जेम्स द्वितीय की सेना ने उसका साथ न दिया और विलियम बिना रुकावट लन्दन पहुँच गया। इस समय जेम्स ने जनता को प्रसन्न करने के लिए बहुत से वचन दिये; परन्तु देशवासियों को उस पर बिलकुल विश्वास न रह गया था। ऐसी अवस्था में जेम्स ने अपनी प्राण-रक्षा के लिए यही उचित समझा कि इँगलैंड छोड़कर भाग जाय। वह फ्रांस चला गया और लूई चौदहवें के यहाँ जाकर उसने शरण ली।

अब इँगलैंड की पार्लिमेंट ने यह घोषणा की कि जेम्स द्वितीय देश

छोड़कर भाग गया है; अतः उसके इस भाग जाने को उसका राजसिंहासन का त्याग समझना चाहिए। अब पार्लिमेंट ने विलियम और उसकी धर्म-पत्नी मेरी को "संयुक्त शासक" (Joint Sovereigns) बनाया। शासन-कार्य वास्तव में विलियम के ही हाथ में रहा; परन्तु मेरी का नाम उसके साथ इसलिए सम्मिलित कर दिया गया था कि वह जेम्स द्वितीय की बड़ी पुत्री होने के कारण, राजसिंहासन के नियमानुसार, उत्तराधिकारिणी कही जा सकती थी। पार्लिमेंट यह दिखलाना चाहती थी कि राज्य में कोई भारी परिवर्तन नहीं हुआ है। जेम्स द्वितीय के राजसिंहासन त्याग देने के पश्चात् उसकी उत्तराधिकारिणी राजकुमारी मेरी को गद्दी दी गई और मेरी के साथ उसके पति विलियम को भी "विलियम तृतीय" के नाम से राजा मान लिया गया। अब रहा जेम्स द्वितीय का नव-जात पुत्र; सो उसके विषय में कुछ लोगों को यह सन्देह था कि वह वास्तव में जेम्स की रानी का पुत्र नहीं है। देश में यह समाचार फैल रहा था कि जेम्स ने अपनी प्रोटेस्टेंट पुत्री को राजसिंहासन से वंचित रखने के लिए किसी प्रसूतिका-भवन से एक लड़का मँगाकर उसे रानी की सन्तान प्रसिद्ध कर दिया है। इस पुत्र और तत्पश्चात् इसके लड़के ने इँगलैंड का राजसिंहासन प्राप्त करने के लिए जो निष्फल प्रयत्न किये, उनका वर्णन आगे चलकर किया जायगा। इतिहास में ये Pretenders (मिथ्या अधिकार जतलानेवाले) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

जेम्स द्वितीय के स्थान पर "विलियम और मेरी" के राज्याभिषेक की घटना को अँगरेज़ी इतिहास में "गौरव-पूर्ण राज्यक्रान्ति" (The Glorious Revolution) कहते हैं। जेम्स राजसिंहासन छोड़कर भागने पर बाध्य हुआ। इसलिए यह घटना "राज्यक्रान्ति" तो अवश्य हुई; परन्तु यह राज्यक्रान्ति गौरव-पूर्ण इसलिए हुई कि इसमें रक्तपात का नाम भी न था—न कोई युद्ध हुआ और न कोई प्राणि-हत्या हुई। बहुत शान्तिपूर्वक जेम्स द्वितीय राजसिंहासन से हट गया और उसकी पुत्री तथा दामाद का राज्य स्थापित हो गया।

"अधिकार-पत्र" (Bill of Rights)—विलियम और मेरी को राजसिंहासन देते समय पार्लिमेंट ने "नियमानुमोदित शासन" की रक्षा के लिए उनसे कुछ शर्तें ठहरा लीं और अगले वर्ष, विलियम के राज्य-काल की प्रथम पार्लिमेंट ने, इन शर्तों को एक राजनियम के रूप में स्वीकृत किया। यह "अधिकार-पत्र" (Bill of Rights) के नाम से प्रसिद्ध है; और अंगरेज़ों का तीसरा "स्वतन्त्रता-पत्र" (Third Great Charter of English Liberty) माना जाता है। दूसरा चार्ल्स प्रथम के राज्यकाल का "अधिकार-याचना" (Petition of Rights) और पहला राजा जॉन का "महास्वतन्त्रता-पत्र" (The Magna Charta) था, जिनके विषय में पहले उल्लेख हो चुका है। "अधिकारपत्र" की मुख्य-मुख्य धारायें ये थीं—(१) राजा को देश के नियमों के भंग करने या कुछ काल के लिए स्थगित करने का कोई अधिकार नहीं है। (२) पार्लिमेंट के सदस्यों के चुनाव में किसी प्रकार का दबाव न डाला जाय और उनको पार्लिमेंट-भवन में समस्त विषयों पर स्वतन्त्रता-पूर्वक मत प्रकाशित करने दिया जाय। (३) राजा को बिना पार्लिमेंट की स्वीकृति के किसी रूप में जनता पर कर लगाने का अधिकार नहीं है। (४) कोई कैथोलिक या जिसका विवाह किसी कैथोलिक से हुआ हो, इँगलैंड के राजसिंहासन का अधिकारी नहीं हो सकता।

"गौरवपूर्ण राज्यक्रांति का राजनीतिक महत्त्व" (Constitutional Importance of the Glorious Revolution)—"गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" ने यह स्पष्ट रूप से दिखा दिया कि जिस राजा को जनता के प्रतिनिधि न चाहें, वह राजसिंहासन पर नहीं रह सकता। राजा को जनता की इच्छा के अनुसार ही कार्य्य करना पड़ेगा; और शासन-नीति में उसे पार्लिमेंट की बात माननी पड़ेगी। विलियम और मेरी को राजसिंहासन देकर पार्लिमेंट ने यह भी दिखला दिया कि वही नियमानुसार राजा है, जिसका राज्याधिकार पार्लिमेंट स्वीकृत करे। परन्तु पार्लिमेंट ने इस समय के प्रस्तावों में कोई ऐसी बात नहीं रखी

जिससे भविष्य में "राज्यविप्लव के पक्षपाती" (Revolutionaries) लाभ उठा सकें। "अधिकार-पत्र" में जेम्स द्वितीय के राजसिंहासन से हटाये जाने या इँगलैंड के राजा की नियुक्ति चुनाव के सिद्धान्त के अनुसार होने का कहीं उल्लेख नहीं था। उसमें केवल प्राचीन राजनीतिक सिद्धान्त, फिर से पुष्ट करने के आशय से, दुहरा दिये गये थे। इससे यही अभिप्राय था कि देश की स्वतन्त्रता की रक्षा भी हो जाय और देश की शासन-प्रणाली में भी कोई भारी परिवर्तन करने की आवश्यकता न हो। आगे चलकर हम देखेंगे कि "फ्रांस की राज्यक्रांति" (The French Revolution) इससे बिलकुल भिन्न ढंग की थी। उसमें घोर रक्तपात हुआ; और देश में कोई स्थायी शासन-प्रणाली भी अधिक काल तक न रह सकी।

इँगलैंड की "गौरव-पूर्ण राज्य-क्रान्ति" से स्टुअर्ट-काल के राजा और पार्लिमेंट के झगड़े का, जो पहले चारों स्टुअर्ट राजाओं के राज्य काल में बराबर चलता रहा था, अन्त माना जाता है। स्टुअर्ट राजा अपना "दैवी अधिकार" (Divine Right of Kings) जतलाकर पार्लिमेंट को दबाना चाहते थे; परन्तु इस प्रयत्न में वे सफल न हो सके। अन्त में पार्लिमेंट ही की विजय हुई और अब "राजकीय एकतन्त्र राज्य" (Monarchial Despotism) के स्थान पर निश्चित रूप से "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) की स्थापना हुई। आगे चलकर भी पार्लिमेंट के सुधार आदि के लिए बहुत कुछ आन्दोलन की आवश्यकता हुई; परन्तु इसके पश्चात् इस बात में कोई सन्देह न रह गया कि देश के शासनकार्य्य की बागडोर वास्तव में पार्लिमेंट के हाथ है और राजा को देश के प्रतिनिधियों की बात माननी पड़ेगी।

"गौरव-पूर्ण राज्य-क्रान्ति" और गृहयुद्ध द्वारा राज्यक्रान्ति का मुक़ाबिला—हम बतला आये हैं कि चार्ल्स प्रथम को हटाने के लिए जो राज्य-क्रान्ति हुई थी, वह वास्तव में विफल रही। उसके लिए

गृह्य युद्ध (Civil War) का रक्तपात हुआ और अन्त में राजा को भी प्राण-दंड दिया गया। परन्तु इस सबका परिणाम यह हुआ कि प्रजा-तन्त्र-राज्य के समय में देश में "सैनिकराज्य" (Military Despotism) की स्थापना हो गई; और जनता की स्वतंत्रता पर और भी आघात हुआ। इस राज्यक्रान्ति की विफलता का मुख्य कारण यह था कि राजा को नियमानुमोदित शासन के सूत्र में बाँधने के उद्देश्य के साथ एक धार्मिक प्रश्न भी लगा हुआ था। हम कह आये हैं कि धार्मिक प्रश्न पर ही "प्रलम्ब पार्लिमेंट" (Long Parliament) में दो दल हुए और उनमें से एक दल ने राजा का साथ दे दिया। "गौरव-पूर्ण राज्यक्रान्ति" के समय समस्त अँगरेज़ जाति एकमत थी। केवल थोड़े से कैथोलिक ही जेम्स द्वितीय के सहायक थे। इस समय केवल राजनीतिक प्रश्न था और नियमानुमोदित शासन की रक्षा के लिए प्योरिटन दल तथा हाई चर्च पार्टी दोनों ने मिलकर कार्य्य किया। राजनीतिक दलों में से भी दोनों दलों की "गौरव-पूर्ण राज्यक्रान्ति" से सहानुभूति थी। ह्विग-दल ने पार्लिमेंट की विजय की दृष्टि से और टोरी-दल ने सनातन शासन-प्रणाली में कोई भारी परिवर्तन न होने के कारण इसमें हृदय से योग दिया; और इस प्रकार जाति के समस्त दलों की सहायता होने के कारण "गौरव-पूर्ण राज्यक्रान्ति" पूर्णतया सफल रही।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६०५—जेम्स द्वितीय का राज्याभिषेक।

" १६८५—सेजमूर का युद्ध।

" १६८५—"ख़ूनी न्यायालय" (The Bloody Assizes)।

४ अप्रेल सन् १६८७—प्रथम "अनिषेध घोषणा" (First Declaration of Indulgence)।

२२ अप्रेल सन् १६८८—द्वितीय "अनिषेध घोषणा" (Second Declaration of Indulgence)।

सन १६८८—"गौरव-पूर्ण राज्य क्रान्ति" (The Glorious Revolution)।

" १६८९—"अधिकार-पत्र" (Bill of Rights)।

—

छठा परिच्छेद

विलियम और मेरी; तथा रानी एन

(१) अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति (१६८८-१७१४)

फ्रांस का राजा लूई चौदहवाँ (१६४३--१७१५)—इस समय योरप में फ्रांस के राजा लूई चौदहवें (Louis XIV) की शक्ति बहुत बढ़ी-चढ़ी थी। उसके पास उस युग के सर्वश्रेष्ठ मंत्री, इंजीनियर तथा सेनापति थे, और उसकी इच्छा थी कि योरप के समस्त राज्यों पर मेरा आधिपत्य हो जाय। वह भारतवर्ष के मुग़ल सम्राट् औरंगज़ेब का समकालीन था; और ये दोनों सम्राट् कई बातों में समान भी थे। लूई किसी पर विश्वास न करता था और उसके शासन का प्रधान अंश गुप्त-चर-विभाग था। वह पक्का कैथोलिक भी था और फ्रांस के प्रोटेस्टेंट दल (Hugenots) के साथ उसने बड़ा अत्याचार किया। हम बतला चुके हैं कि इँगलैंड के राजा चार्ल्स द्वितीय ने उससे "डोवर की गुप्त सन्धि" की थी; और उससे आर्थिक सहायता पाने की आशा से चार्ल्स ने इँगलैंड के कैथोलिकों को सुविधायें देने की उसकी शर्त मंज़ूर कर ली थी। जेम्स द्वितीय को भी लूई आर्थिक सहायता देता था; और हम पहले कह आये हैं कि जेम्स ने इँगलैंड से भागकर फ्रांस में ही शरण ली थी। लूई यही चाहता था, कि इँगलैंड के राजा मेरी मुट्ठी में रहें और योरपीय युद्धों में बराबर मेरा साथ दिया करें।

विलियम तृतीय की पर-राष्ट्रनीति—"गौरव-पूर्ण राज्यक्रान्ति" (Glorious Revolution) ने लूई चौदहवें के सब मन्सूबे बिगाड़ दिये। अब इँगलैंड में राजसिंहासन पर विलियम तृतीय था, जिसका समस्त जीवन लूई के विरुद्ध युद्ध करने में व्यतीत हुआ था। विलियम ने योरप के प्रोटेस्टेंट राज्यों का नेता बनकर लूई को ख़ूब तंग किया

था; और अब इँगलैंड के राजा होने पर वह फ्रांस की शक्ति को

चौदहवाँ लुई

रोकने की नीति का और भी दृढ़ता-पूर्वक पालन करने लगा। यदि लुई चौदहवें की नीति सफल हो जाती, तो योरप के राष्ट्रों के शक्ति-संतुलन (Balance of Power) में बड़ी बाधा पड़ती और फ्रांस की शक्ति इतनी बढ़ जाती कि अन्य राज्यों को सदा भय बना रहता। विलियम ने योरप में लूई की बढ़ती हुई शक्ति को रोकने के आशय से कुछ राज्यों का एक संघ बनाया था। उसके इँगलैंड के सिंहासन पर बैठने के समय से इँगलैंड की पर-राष्ट्रनीति में भारी परिवर्तन हो गया। अब जेम्स द्वितीय और चार्ल्स द्वितीय की फ्रांस से मित्रता की नीति का अन्त हो गया और "गौरवपूर्ण राज्य-क्रान्ति" के समय से इँगलैंड और फ्रांस के पारस्परिक युद्ध का काल आरम्भ हुआ।

विलियम तृतीय

फ्रांस से प्रथम युद्ध (१६८९—१६९७)—पहले नीदरलैंड प्रदेश, जिसमें

वर्तमान काल के हॉलैंड तथा बेलजियम राज्य हैं, स्पेन के अधीन था। सन् १६०९ में हॉलैंड तो स्वतंत्र हो गया, परन्तु बेलजियमवाले भाग में अभी तक स्पेन का ही राज्य था। लूई (चौदहवाँ) इस बेलजियमवाले भाग को जीतना चाहता था; जिसमें फ्रांस की सीमा राइन नदी के मुहाने तक पहुँच जाय। उस समय लूई की सेना इसी भाग में पहुँची हुई थी और स्पेन के शक्तिहीन होने के कारण उसे सफलता की पूर्ण आशा थी। इस भाग में फ्रांस का आधिपत्य स्थापित हो जाने से इँगलैंड तथा हॉलैंड दोनों के लिए भय था और इसलिए विलियम इसको कभी सहन न कर सकता था। इसके अतिरिक्त लूई इस समय विलियम को हटाकर फिर जेम्स द्वितीय को इँगलैंड का राजा बनाने का भी उपाय कर रहा था; और इसलिए "गौरव-पूर्ण राज्यक्रान्ति" के प्रबन्ध की रक्षा के हेतु इँगलैंड का फ्रांस के विरुद्ध युद्ध करना और भी आवश्यक हो गया।

रानी मेरी द्वितीय

विलियम स्वयं नीदरलेंड जाकर युद्ध में सम्मिलित हुआ; परन्तु उसे बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कई बार उसकी पराजय हुई, परन्तु अन्त में नामूर (Namur) का प्रसिद्ध गढ़ उसके अधिकार में आ गया; और इस विजय ने बेलजियमवाले भाग में फ्रांस का राज्य स्थापित न होने दिया। जल-युद्ध में भी पहले तो अँगरेज़ी सेना ब्रीची हेड (Breachy Head) के युद्ध में हार गई; परन्तु अन्त में लार्ड रसेल (Lord Russell) ने ला हेग (La Hague) के युद्ध में भारी विजय प्राप्त की।

वंशावली नम्बर ३
स्पेन के राजसिंहासन के उत्तराधिकारी
फ़िलिप द्वितीय
(स्पेन का राजा)
लूई = एनी
तेरहवाँ
(फ़्रांस का राजा)
फ़िलिप चतुर्थ
(स्पेन का राजा)
मेरिया = सम्राट् फ़र्डीनेंड
(आस्ट्रिया का सम्राट्)
लूई = मेरिया
चौदहवाँ थेरेसा
(फ़्रांस का राजा)
चार्ल्स द्वितीय
(स्पेन का राजा)
मार्गरेट = सम्राट् = ऐलिनर
थेरेसा
ल्यूपोल्ड
(आस्ट्रिया
का
सम्राट्)
बवेरिया का
राजकुमार
फ़्रांस का युवराज
लूई
फ़िलिप
(जिसे चार्ल्स द्वितीय ने अपना उत्तराधि-
कारी बनाया था; और जो "फ़िलिप पचम"
के नाम से स्पेन का राजा हुआ।)
आर्चड्यूक चार्ल्स
(जो बाद में आस्ट्रिया का
सम्राट् हुआ और जिसे इँगलैंडवाले
स्पेन का राजसिंहासन दिलाना
चाहते थे।)
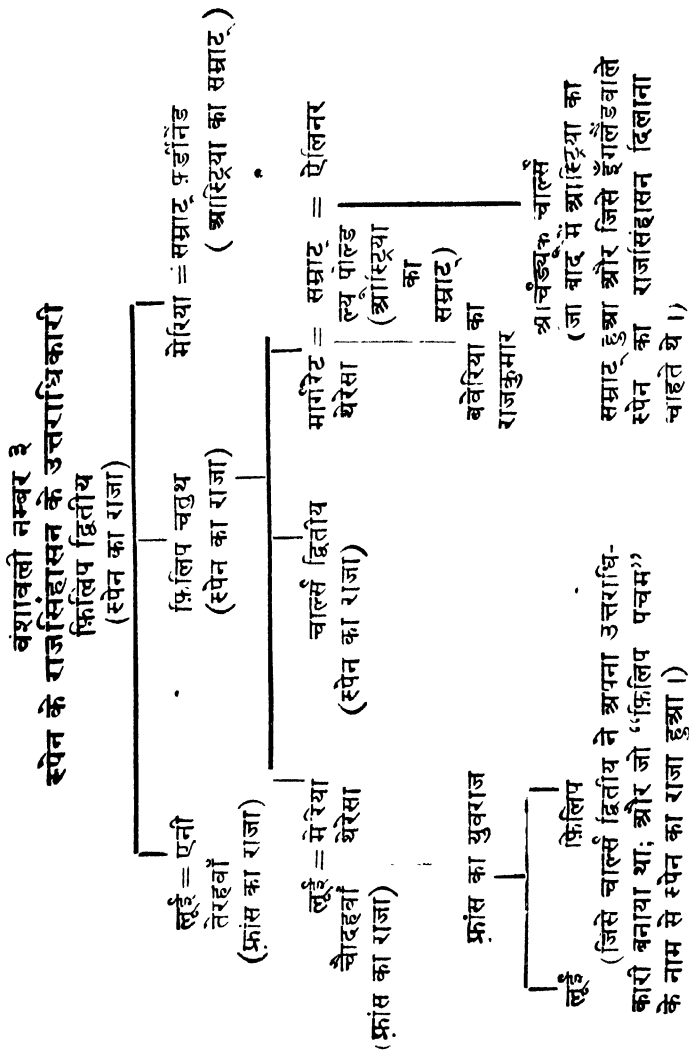
सन् १६९७ में रिस्विक की सन्धि (Peace of Ryswick) के अनुसार इंगलैंड और फ्रांस दोनों ने अपने जीते हुए प्रदेश लौटा दिये। लूई का, राइन नदी के मुहाने को फ्रांस के राज्य में मिलाने का, प्रयत्न सफल न हो सका और वह विलियम को इँगलैंड का राजा स्वीकृत करने के लिए भी बाध्य हुआ। अँगरेज़ी इतिहास में यह युद्ध "इँगलैंड के उत्तराधिकार का युद्ध" (War of the English Succession) कहलाता है; क्योंकि इसके परिणाम-स्वरूप विलियम तृतीय का राज्याधिकार अन्य राज्यों ने स्वीकार कर लिया।

"स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध" (१७०२–१७१३)—थोड़े ही दिनों बाद योरप में एक दूसरा बड़ा युद्ध हुआ, जो "स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध" (War of the Spanish Succession) के नाम से प्रसिद्ध है। स्पेन का राजा "चार्ल्स द्वितीय" वृद्ध हो चला था और उसके अधिक समय तक जीवित रहने की कोई आशा न थी। उसके कोई सन्तान न थी; और उसकी उत्तराधिकारिणी उसकी दो बहनें ही हो सकती थीं। एक बहन का विवाह फ्रांस के राजा लूई चौदहवें से और दूसरी का विवाह आस्ट्रिया के सम्राट् ल्यूपोल्ड (Emperor Leopold) से हुआ था। यदि फ्रांस या आस्ट्रिया में से किसी के राजवंश को स्पेन की गद्दी मिलती, तो "योरपीय शक्ति-सन्तुलन" (Balance of Power in Europe) में बड़ी बाधा पड़ने का भय था; और इस कारण योरप के समस्त राजनीतिज्ञों को स्पेन के उत्तराधिकार के विषय में बड़ी चिन्ता थी। स्पेनिश साम्राज्य में इस समय स्पेन के अतिरिक्त दक्षिण अमेरिका का उपनिवेश, नीदरलैंड का बेलजियमवाला भाग और इटली में मिलान, नेपिल्स और सिसिली प्रान्त सम्मिलित थे।

ऐसी अवस्था में विलियम तृतीय ने आस्ट्रिया और फ्रांस के राज्यों से बातचीत करके दो बार "बँटवारे की सन्धि" (Partition Treaty) कराई; जिसके अनुसार स्पेनिश साम्राज्य को उन दोनों राज्यों में विभक्त करना निश्चित हुआ। इसके थोड़े ही दिनों बाद चार्ल्स द्वितीय

की मृत्यु हो गई; और उसने अपनी वसीयत में लूई चौदहवें के पोते फ़िलिप ((Philip) को अपने समस्त साम्राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। इस वसीयत का समाचार पाते ही लूई ने "बँटवारे की सन्धियों" पर पानी फेर दिया और उसके पोते फ़िलिप ने जाकर स्पेन के राजसिंहासन पर अधिकार जमा लिया। अब लूई ने फ़िलिप को ही फ़्रांस के राज-सिंहासन का भी उत्तराधिकारी उद्घोषित कर दिया और बड़े अभिमान से कहा—"अब पिरेनीज़ (Pyrenees) पर्वत स्पेन और फ़्रांस को अलग नहीं रख सकता।"

इँगलैंड और स्पेन के उत्तराधिकार का प्रश्न—इन सब घटनाओं के कारण समस्त योरप में बड़ी हलचल मची। विशेषतया इँगलैंडवाले ऐसी अवस्था में कभी चुप न बैठ सकते थे। उन्होंने सोचा कि फ़िलिप के स्पेनिश साम्राज्य और फ़्रांस के स्वामी होने से फ़्रांस की शक्ति का मुक़ाबिला योरप का कोई राज्य न कर सकेगा; फ़्रांसवाले योरप में जो चाहेंगे, वह कर सकेंगे; और समस्त भूमंडल का व्यापार तथा उपनिवेश भी उन्हीं के हाथ में रहेंगे। फ़्रांसवाले राइन नदी के मुहाने पर अधिकार जमा लेंगे और इससे इँगलैंड तथा हालैंड दोनों को उनसे सदा भय बना रहेगा। लूई ने रिस्विक की सन्धि में विलियम को इँगलैंड का राजा स्वीकार कर लिया था; परन्तु अब अपनी शक्ति के मद में वह फिर जेम्स द्वितीय के लड़के को, इँगलैंड का सिंहासन प्राप्त करने के लिए, सहायता देने लगा। विलियम का समस्त जीवन फ़्रांस की शक्ति रोकने में व्यतीत हुआ था; परन्तु अब फ़्रांस की शक्ति इतनी अधिक बढ़ जाने के कारण उसके जीवन-कार्य के भंग होने के ढँग दिखाई देने लगे। ऐसी स्थिति में विलियम ने, योरपीय शक्ति-सन्तुलन की रक्षा के लिए, फ़्रांस के विरुद्ध कई राज्यों का एक संघ बनाया। इस संघ का यह उद्देश्य था कि स्पेन के साम्राज्य में कुछ बँटवारा कराके आस्ट्रिया के राजकुमार चार्ल्स (Archduke Charles) को स्पेन का राजसिंहासन दिलाया जाय।

इस प्रकार "स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध" आरम्भ हुआ। परन्तु इसी बीच में विलियम की मृत्यु हो गई और यह युद्ध रानी एन (Queen Anne) के राज्यकाल में, जो उसके पश्चात् इँगलैंड के राजसिंहासन पर बैठी थी, हुआ।

मार्लबरो की विजय—इस युद्ध में इँगलैंड की ओर से सेनापति जॉन चर्चिल ड्यूक आफ़ मार्लबरो (John Churchill, Duke of Marlborough) था। मार्लबरो ने भिन्न-भिन्न अवसरों पर भिन्न-भिन्न दलों का साथ दिया था। "बहिष्कार-प्रस्ताव" (Exclusion Bill) के समय उसने जेम्स (ड्यूक आफ़ यार्क) का साथ दिया था। परन्तु जब जेम्स "जेम्स द्वितीय" के नाम से राजा हुआ, तब वह उसके विरुद्ध हो गया और उसने "गौरव-पूर्ण राज्य-क्रान्ति" तथा विलियम तृतीय के राज्याभिषेक में बहुत काम किया। थोड़े ही दिनों बाद वह विलियम के भी विरुद्ध हो गया और उसने फिर पदच्युत जेम्स से पत्र-व्यवहार आरम्भ किया। उसकी अनिश्चित मनोवृत्ति को विलियम भली भाँति समझता था, परन्तु वह उसकी युद्ध-कला की निपुणता से भी परिचित था। मरते समय विलियम ने अपनी उत्तराधिकारिणी रानी एन को यह वसीयत की कि "स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध" के लिए मार्लबरो से अधिक योग्य सेनापति कोई दूसरा नहीं हो सकता। रानी एन ने, जो पहले ही उसकी स्त्री से परम मित्रता होने के कारण मार्लबरो को बहुत मानती थी, उसे "स्पेन के उत्तराधिकार

ड्यूक आफ़ मार्लबरो

क युद्ध" के लिए इँगलैंड की सेनाओं का प्रधान सेनापति बना दिया और युद्ध के संचालन के विषय में उसे पूर्ण अधिकार दे दिये।

मार्लबरो ने नीदरलैंड पहुँचकर वहाँ से फ्रांसीसियों को निकालने का कार्य्य आरम्भ किया। उसी समय समाचार मिला कि आस्ट्रिया की राजधानी वाइना (Vienna) नगर पर फ्रांसीसियों ने आक्रमण कर दिया है। यह समाचार पाते ही मार्लबरो नीदरलैंड से चल पड़ा और वैरियों के देश से निकलता हुआ सकुशल आस्ट्रिया जा पहुँचा। ब्लैन्हैम (Blenheim) के प्रसिद्ध युद्ध में मार्लबरो ने भारी विजय प्राप्त की और आस्ट्रिया के राज्य को घोर संकट से बचा लिया। उस युद्ध में मार्लबरो का सहकारी राजकुमार युगेन (Prince Eugene) था, जो आस्ट्रिया की सेना का सेनापति था। अब तक फ्रांसीसी सेना को स्थल युद्ध में इस बुरी तरह से किसी ने परास्त न किया था। अगले वर्ष फिर नीदरलैंड पहुँचकर मार्लबरो ने रैमील्स (Ramilles) के युद्ध में दूसरी भारी विजय प्राप्त की; और फ्रांसीसी सेना को नीदरलैंड से भगाकर बेलजियमवाले भाग में उनका अधिकार न जमने दिया। इन्हीं भारी विजयों के कारण मार्लबरो की गणना इँगलैंड के प्रसिद्ध सेनापतियों में की जाती है।

स्पेन में युद्ध—इसी समय एक दूसरी अँगरेज़ी सेना स्पेन से फ्रांसीसियों को निकालने का प्रयत्न कर रही थी। उसका सेनापति अर्ल आफ़ पीटरबरो (Earl of Peterborough) था। फ्रांस के राजकुमार फ़िलिप को, स्पेन के भूतपूर्व राजा की वसीयत के अनुसार, स्पेन का राज-सिंहासन मिला था; और इस कारण स्पेन की जनता फ़िलिप को अपने "जातीय राजा" के समान मानने लगी थी। इसी कारण उसके प्रति समस्त देशवासियों की सहानुभूति थी। छोटी-छोटी टोलियाँ बनाकर स्पेनवालों ने अँगरेज़ी सेना को ख़ूब छकाया और अन्त में पीटरबरो ने समझ लिया कि फ़िलिप को स्पेन के राज-सिंहासन से हटाना असम्भव है।

जल-युद्ध—समुद्र पर अँगरेज़ी सेना ने अच्छा काम कर दिखाया। अब तक इँगलैंड में कोई स्थायी जल-सेना न थी। आवश्यकता पड़ने पर कुछ अफ़सर तथा सैनिक थोड़े दिनों के लिए भरती कर लिये जाते थे; और कार्य्य समाप्त होने पर उस सेना का विसर्जन कर दिया जाता था। यह ढंग अच्छा न था; और इसलिए अब एक स्थायी जल-सेना तैयार की गई जिसके नेता उस समय रूक (Rooke) और शोवेल (Schovell) थे। अँगरेज़ी जल-सेना (English Navy) ने जाकर जिब्राल्टर (Gibraltar) पर अधिकार जमा लिया; और इस प्रकार यह "रूमसागर का फाटक" इँगलैंड के अधिकार में आ गया।

यूट्रेक्ट की सन्धि (१७१३)—परन्तु कई घटनाओं के कारण इस युद्ध का शीघ्र ही अन्त हो गया। इँगलैंड में ह्विग दल के स्थान पर टोरी दल का मन्त्रि-मंडल (Tory Ministry) स्थापित हो गया। टोरी पहले ही से योरपीय युद्धों में सम्मिलित होने की नीति के विरोधी थे; अतः उन्होंने मालबरो को पदच्युत करके अँगरेज़ी सेना को योरपीय क्षेत्रों से हटा लिया। इसी समय राजकुमार चार्ल्स (Archduke Charles), जिसको इँगलैंडवाले फ़िलिप के स्थान पर स्पेन का राजा बनाना चाहते थे, आस्ट्रिया का सम्राट् हो गया; और इसलिए अब इँगलैंड के लिए यह प्रयत्न करना मूर्खता का काम था कि चार्ल्स को स्पेन का भी राज्य दिलाया जाय। सन् १७१३ में यूट्रेक्ट की सन्धि (Peace of Utrecht) की गई; और इस प्रकार "स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध" समाप्त हुआ। इस सन्धि के अनुसार (१) लूई चौदहवें के पोते फ़िलिप को स्पेन के देश तथा स्पेन के अमेरिकावाले उपनिवेशों का राजा मान लिया गया; परन्तु यह निर्णय कर दिया गया कि फ़िलिप को फ़्रांस और स्पेन का संयुक्त राजा न बनाया जाय। (२) स्पेनिश साम्राज्य का इटलीवाला भाग तथा नीदरलैंड आस्ट्रिया के सम्राट् चार्ल्स को दिया गया; परन्तु यह ठहरा लिया गया कि वह हॉलैंडवालों को अपनी सीमा की रक्षा करने तथा व्यापार बढ़ाने के लिए सुभीते देगा। और (३) इँगलैंड

की पार्लिमेंट का यह निर्णय कि रानी एन के पश्चात् इँगलैंड का सिंहासन हनोवर वंश को मिलेगा, योरप के राज्यों ने स्वीकृत कर लिया। इँगलैंड को जिब्राल्टर (Gibraltar) और अमेरिका में नवास्कोटिया (Nova Scotia) और न्यू फ़ाउंडलैंड (Newfoundland) मिले। अँगरेज़ों को अमेरिका के दास-व्यापार का एकाधिकार दे दिया गया; और उन्हें अमेरिका में स्पेन के उपनिवेशों के व्यापार करने के लिए प्रतिवर्ष एक व्यापारी जहाज़ ले जाने की भी आज्ञा दी गई।

यूट्रेक्ट की सन्धि का प्रभाव—यूट्रेक्ट की सन्धि ने फ्रांस के राजा लूई चौदहवें के बड़े-बड़े मन्सूबों को पानी में मिला दिया। फ्रांस के राजकुमार को अवश्य स्पेन का राजा मान लिया गया, परन्तु यह निश्चित कर दिया गया कि फ्रांस और स्पेन के राष्ट्र एक दूसरे से पृथक रहेंगे। इससे "योरपीय शक्ति-सन्तुलन" को हानि पहुँचने की कोई सम्भावना न रह गई। नीदरलैंड में फ्रांस का आधिपत्य स्थापित हो जाने के कारण इँगलैंड को जो भय था, उसकी भी अब कोई सम्भावना न रही। जिब्राल्टर मिल जाने से "रूमसागर का फाटक" इँगलैंड को प्राप्त हुआ; और अमेरिका में कुछ उपनिवेश तथा दास-व्यापार का एकाधिकार मिल जाने से अमेरिका के समुद्रों पर भी इँगलैंड का यथेष्ट अधिकार हो गया। अब इँगलैंड की समुद्री शक्ति दिन पर दिन उन्नति करने लगी। इसी लिए कहा जाता है—"यदि आरमेडा के परास्त करने की तिथि से इँगलैंड की समुद्री शक्ति और उपनिवेश-सम्बन्धी तथा व्यापारिक उन्नति का आरम्भ माना जाय, तो यूट्रेक्ट की सन्धि से उस उन्नति का मार्ग पूर्णतया खुल जाना मानना चाहिए।"

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६८९—१६९७—"इँगलैंड के उत्तराधिकार का युद्ध" (War of the English Succession)

,, १६९७—रिसविक की सन्धि।
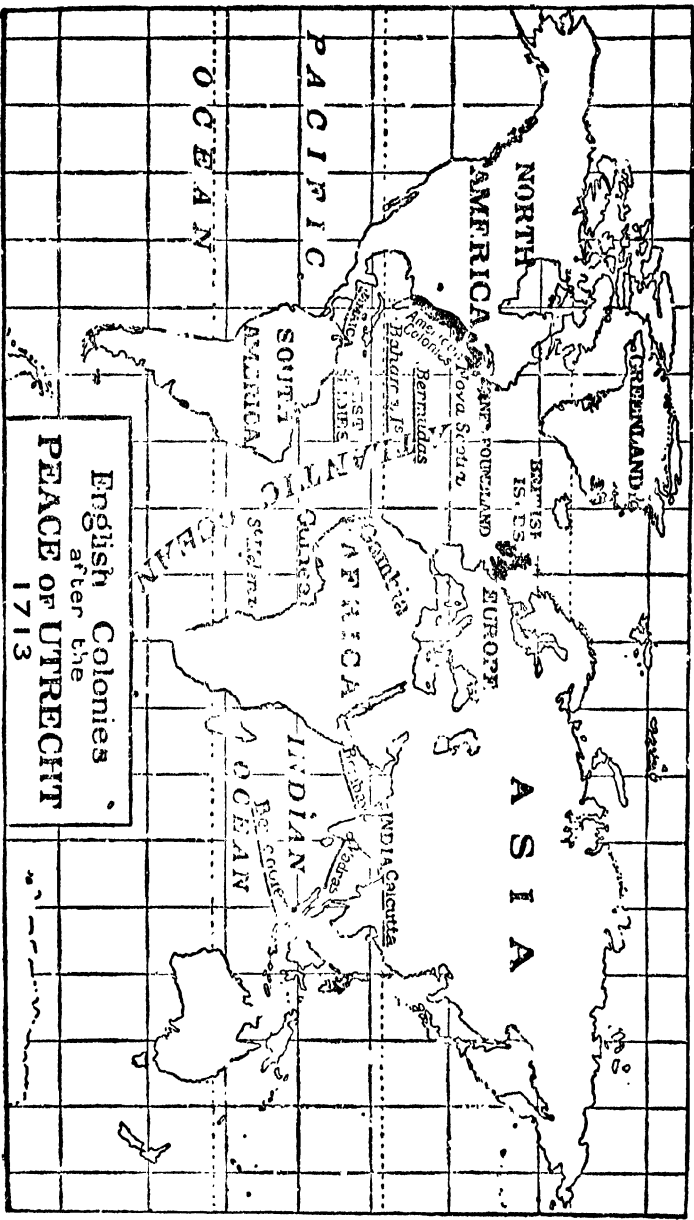
यूट्रेक्ट की सन्धि के बाद ब्रिटिश उपनिवेश

सन् १७०१—१७१३—"स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध" (War of the Spanish Succession).

,, १७०४—ब्लेन्हेम का युद्ध और जिब्राल्टर पर अधिकार।

,, १७०६—रैमील्स का युद्ध।

,, १७११—मार्लबरो का पदच्युत होना।

,, १७१३—यूट्रेक्ट की सन्धि।

सातवाँ परिच्छेद

विलियम और मेरी; तथा रानी एन

(१) गृह्य स्थिति (१६८८-१७१४)

स्कॉटलैंड में विद्रोह—विलियम और मेरी को राजसिंहासन देने की इँगलैंड की व्यवस्था को स्काटलैंड और आयरलैंडवालों ने सुगमता से स्वीकृत न किया। स्कॉटलैंड में डंडी के नवाब (Viscount Dundee) ने एक पहाड़ी सेना तैयार करके जेम्स द्वितीय को फिर राजा बनाने के उद्देश्य से विलियम तृतीय के विरुद्ध विद्रोह ठान दिया। इँगलैंड से तुरन्त सेना भेजी गई, जिसने जाकर स्कॉटलैंड की पहाड़ी सेना को किलेक्रेन्की (Killecrenkie) के युद्ध में परास्त किया। डंडी का नवाब युद्ध में मारा गया और सब पहाड़ी (Highlanders) भाग गये। विलियम ने घोषणा की कि जितने विद्रोही १ जनवरी सन् १६९२ तक मुझे राजा स्वीकृत करने की शपथ खा लेंगे, उन्हें क्षमा कर दिया जायगा। और तो सभी पहाड़ी सरदारों ने यह शपथ खाई, परन्तु ग्लेन्को (Glencoe) के सरदार ने इसी में अपना गौरव समझा कि मैं बिलकुल अन्तिम तिथि को ही शपथ लूँगा। संयोगवश वह अन्तिम तिथि को ठीक स्थान पर न पहुँच सका; और इसलिए उसके शत्रुओं को अच्छा अवसर मिल गया। झूठी-सच्ची बातें बनाकर विलियम से ग्लेन्को जाति को कड़ा दंड देने की आज्ञा प्राप्त की गई; और एक सेना ने जाकर बड़े धोखे से इस जाति का क़त्लआम (Massacre of Glencoe) किया। उनसे मित्रता दिखाकर शत्रुओं के भेजे हुए ये सैनिक उन्हीं के यहाँ ठहर गये और रात को उन्होंने सोते हुए लोगों को बड़ी क्रूरता से मार डाला। इस हत्या के लिए विलियम निर्दोष नहीं कहा जा

सकता; परन्तु वास्तव में दोष स्कॉटलैंड के उन मन्त्रियों का था, जिन्होंने ग्लैन्को जाति से शत्रुता होने के कारण विलियम को बहकाकर इस हत्याकांड के लिए आज्ञा प्राप्त की थी। शीघ्र ही विलियम ने उन मन्त्रियों को उनके पदों से हटा दिया, जिससे इस दुर्घटना के कारण स्कॉटलैंड में फैली हुई उत्तेजना कुछ कम हो जाय।

आयरलंड में विद्रोह—आयरलैंड में जेम्स द्वितीय स्वयं पहुँच गया; और वहाँ की कैथोलिक जनता ने उसका पक्ष लेकर विलियम के विरुद्ध विद्रोह शुरू किया। आयरलंड के अधिकांश निवासी कैथोलिक ही थे, परन्तु कुछ भागों में कैथोलिकों की जायदाद छीनकर प्रोटेस्टेंट अँगरेज़ों ने अपने उपनिवेश स्थापित कर लिये थे। विद्रोहियों ने इन प्रोटेस्टेंटों के लडनरी (Londonery) गढ़ को घेर लिया; परन्तु शीघ्र ही विलियम स्वयं सेना लेकर आयरलैंड पहुँचा और जेम्स द्वितीय के पक्षपातियों को बोयन के युद्ध (Battle of Boyne) में बुरी तरह परास्त किया। जेम्स आयरलैंड से भाग निकला और अब विद्रोहियों को सफलता की कोई आशा न रही। कैथोलिकों का बड़ा गढ़ लिमरिक (Limmerick) भी उनके हाथ से निकल जाने के कारण इस विद्रोह का अन्त हुआ और आयरलैंडवालों को विलियम तथा मेरी का राज्याधिकार स्वीकृत करना पड़ा।

लोक-सभा का उत्थान—"गौरव-पूर्ण राज्यक्रान्ति" (Glorious Revolution) से इँगलैंड में "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) का आरम्भ होता है "अधिकार-पत्र" (Bill of Rights) के विषय में, जो अँगरेज़ों का तीसरा स्वतन्त्रता-पत्र समझा जाता है, हम ऊपर लिख आये हैं। विलियम के राज्यकाल में पार्लिमेंट के अधिकारों में और भी वृद्धि हुई। अब पार्लिमेंट ने शासन-कार्य्य के लिए केवल एक वर्ष के लिए धन की स्वीकृति देने की प्रथा आरम्भ की, जिससे पार्लिमेंट की बैठक प्रतिवर्ष करना आवश्यक हो गया। पार्लिमेंट को राज्य के हिसाब-किताब की

जाँच करने का भी अधिकार मिल गया; और इस प्रकार राज्य की बागडोर बहुत कुछ पार्लिमेंट के हाथ में आ गई; क्योंकि समस्त शासन-कार्य्य का संचालन धन पर ही निर्भर होता है। धन की स्वीकृति लोक-सभा (House of Commons) ही देती थी, क्योंकि उसी में जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं; और इस प्रकार लोक-सभा ही अब पार्लिमेंट का प्रधान अंश बन गई। स्थायी, सेना रखने की भी स्वीकृति पार्लिमेंट से प्रतिवर्ष लेनी पड़ती थी; और यह स्वीकृति भी केवल एक ही वर्ष के लिए दी जाती थी। इस प्रकार देश की सेना पर भी पार्लिमेंट का बहुत कुछ अधिकार हो गया।

दलबन्दी के शासन का प्रारम्भ—विलियम समस्त जनता को प्रसन्न रखने के आशय से ह्विग तथा टोरी दोनों राजनीतिक दलों में से अपने मन्त्री नियुक्त करता था। परन्तु धीरे-धीरे उसे प्रतीत होने लगा कि ह्विग और टोरी परस्पर मत-भेद के कारण कभी एक साथ मिलकर कार्य नहीं कर सकते; और इससे शासन-कार्य में बड़ी बाधा पड़ती है। इस कठिनाई को दूर करने के लिए विलियम ने यह निश्चय किया कि यदि मन्त्रि-मण्डल (Cabinet) में एक ही प्रकार के राजनीतिक विचारवाले हों, तो कार्य अधिक सुगमता से हो सकेगा। इस समय लोक-सभा में ह्विग दलवालों की अधिक संख्या थी; और यह सोचकर कि मन्त्रियों को शासन-कार्य के संचालन के लिए बार-बार लोक-सभा ही से धन की स्वीकृति लेनी पड़ती है, विलियम ने यही उचित समझा कि ह्विग दलवालों को ही मन्त्रि-मंडल में नियुक्त किया जाय। अनुभव से इस ढंग में बहुत सुभीता मालूम हुआ; और इसलिए यही प्रणाली प्रचलित हो गई कि मन्त्रि-मंडल में एक से ही राजनीतिक विचारवाले नियुक्त किये जायँ; और लोक-सभा में जिस राजनीतिक दल के सदस्यों की अधिक संख्या हो, उसी दलवालों को मन्त्रि-मंडल में स्थान दिया जाय। वर्तमान समय में इसी ढंग से इँगलैंड के मन्त्रि-मंडल का काम चलता है; और इस प्रणाली को दलबन्दी का शासन (Party

Government) कहते हैं। वर्तमान मन्त्रि-मंडल में और भी कई विशेषतायें हैं जिनके विषय में आगे चलकर लिखा जायगा।

"धार्मिक सहनशीलता का नियम" (१६८९)—"गौरव-पूर्ण राज्य-क्रान्ति" के एक वर्ष बाद पार्लिमेंट ने एक बड़े महत्त्व का नियम पास किया जो "धार्मिक सहनशीलता का नियम" (Toleration Act) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार कैथेलिकों के अतिरिक्त अन्य सब प्रकार के धर्मावलम्बियों को पूर्ण स्वतन्त्रता दी गई कि वे जिस ढंग से चाहें ईश्वर की आराधना करें। अभी कैथेलिकों के प्रति घृणा कम न हुई थी और उनके विरुद्ध नियम अभी एक शताब्दी तक नहीं हटाये गये, परन्तु फिर भी इस नियम ने देश में काफ़ी धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित कर दी। यह वही समय था जब कि इँगलैंड का प्रसिद्ध दर्शन-शास्त्र का लेखक जॉन लॉक (John Locke) धार्मिक सहनशीलता के पक्ष में निबन्ध प्रकाशित कर रहा था।

"उत्तराधिकार-निर्णय" (१७०१)—विलियम तथा मेरी के कोई सन्तान न थी और उनके पश्चात् राजसिंहासन की उत्तराधिकारिणी मेरी की छोटी बहन एन का भी कोई पुत्र जीवित न था ऐसी अवस्था में पार्लिमेंट ने "उत्तराधिकार-निर्णय" (Act of Settlement) के अनुसार यह निश्चित किया कि सन्तान की अनुपस्थिति में एन के पश्चात् इँगलैंड का सिंहासन हनोवर* की रानी सोफ़िया (Electress Sophia) तथा उसकी सन्तान को मिलना चाहिए। सोफ़िया जेम्स प्रथम की दौहित्री थी; और ऐसी अवस्था में वंशगत अधिकार की दृष्टि से वही स्टुअर्ट-वंश के सिंहासन की उत्तराधिकारिणी हो सकती थी।

"उत्तराधिकार-निर्णय" के नियम में नियमानुमोदित शासन की पुष्टि के लिए भी कई धारायें रखी गई थीं। यथा—(१) भविष्य में केवल अँगरेज़ी चर्च के अनुयायी ही इँगलैंड के राजसिंहासन पर बैठ

---

* जर्मनी की एक रियासत।

सकेंगे। (२) बिना पार्लिमेंट की स्वीकृति के इँगलैंड किसी अन्य राष्ट्र से युद्ध न करेगा। (३) राजा का क्षमापत्र मन्त्रियों को पार्लिमेंट के सम्मुख अभियोग से न बचा सकेगा। (इससे मंत्रि-मंडल अपनी नीति के लिए अब पूर्णतया जनता के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हो गया।) (४) राजा न्यायाधीशों को तब तक पदच्युत नहीं कर सकेगा, जब तक पार्लिमेंट उससे ऐसा करने के लिए प्रार्थना न करे। (इससे न्यायाधीशों को स्वतन्त्रता मिल गई; और न्याय करते समय उनको इस बात का भय न रहा कि कहीं हमारे निर्णय से राजा अप्रसन्न न हो जाय।)

विलियम तथा मेरी का चरित्र—विलियम साहसी, वीर तथा योग्य राजनीतिज्ञ था। उसकी नीति का मुख्य उद्देश्य यही था कि फ्रांस के राजा लूई चौदहवें की बढ़ती हुई शक्ति को रोका जाय जिससे योरपीय शक्ति-सन्तुलन में बाधा न पड़ने पावे। युद्ध में कई बार वह स्वयं सेनापति रहा और युद्ध-कला में उसने बड़ी निपुणता दिखाई। इँगलैंड के राजा होने पर उसने नियमानुमोदित शासन का कभी उल्लंघन न किया। धार्मिक विचारों में वह महात्मा कैल्विन का अनुयायी था; और इसलिए इँगलैंड की हाई चर्च पार्टी (High Churchmen) की सहानुभूति उसके प्रति न थी। विलियम इँगलैंड में कभी सर्वप्रिय न हो सका; क्योंकि वह योरपीय राजनीति की ही ओर विशेष ध्यान देता था; और फिर उसका स्वभाव भी रूखा था, परन्तु उसकी योग्यता के कारण सब लोग उसका आदर करते थे।

रानी मेरी बड़ी हँसमुख और दयालु थी। इँगलैंड की जनता उससे हार्दिक प्रेम करती थी। उसकी मृत्यु विलियम से आठ वर्ष पूर्व ही हो गई। मेरी की दयालुता की यादगार ग्रीनिच का अस्पताल अब तक विद्यमान है।

रानी एन (Queen Anne) (१७०२-१७१३)—विलियम की मृत्यु के पश्चात् जेम्स द्वितीय की दूसरी पुत्री एन इँगलैंड के सिंहासन पर बैठी। रानी एन स्थापित अँगरेज़ी चर्च की हार्दिक समर्थक होने के

कारण हाई चर्च पार्टी के सिद्धान्त मानती थी, जिससे देश की इस शक्तिशाली धार्मिक संस्था से उसे पूर्ण सहायता मिली। राजनीतिक दलों में एन टोरी दलवालों को पसन्द करती थी; परन्तु उनके युद्ध के विरोधी होने के कारण रानी को कुछ दिनों तक ह्विग दल में से ही मन्त्री चुनने पड़े।

स्कॉटलैंड और इँगलैंड का संयुक्त राज्य (Union with Scotland); (१७०७)--"स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध" के अतिरिक्त, जिसका पिछले परिच्छेद में उल्लेख किया जा चुका है, रानी एन के राज्यकाल में सबसे महत्त्वपूर्ण घटना यह हुई कि इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड में एक संयुक्त राज्य स्थापित हो गया। जेम्स प्रथम के समय से इगलैंड तथा स्काटलैंड के राजसिंहासन सम्मिलित हो गये थे, परन्तु दोनों देशों की पार्लिमेंट तथा शासन-प्रणालियाँ अभी पृथक् ही थीं। इस समय स्कॉटलैंडवालों को कई शिकायतें थीं। उन्हें व्यापारिक स्वतन्त्रता न थी; और यह देखकर उनका असन्तोष बढ़ता जाता था कि इँगलैंड का व्यापार तो ख़ूब उन्नति कर रहा है, परन्तु स्काटलैंडवालों को नये उपनिवेशों से व्यापार करने के लिए कोई सुभीता नहीं है। धीरे-धीरे स्काटलैंड की जनता में यह विचार फैलने लगा कि जब तक इँगलैंड से बिलकुल सम्बन्ध न हटा लिया जायगा, तब तक स्कॉटलैंड की इन कठिनाइयों का अन्त न होगा। सन् १७०२ में स्कॉटलैंड की पार्लिमेंट ने यह निर्णय किया कि एन की मृत्यु के पश्चात् इँगलैंड का जो राजा हो, वही स्कॉटलैंड का भी राजा न होना चाहिए। उस समय स्कॉटलैंड के लिए किसी अन्य प्रोटेस्टेंट राजकुमार को राजा चुन लिया जायगा। इस निर्णय से इँगलैंड में बड़ी सनसनी फैली। दोनों देशों के पूर्णतया पृथक् हो जाने का यही परिणाम हो सकता था कि जिस प्रकार दोनों में पहले परस्पर युद्ध चल रहा था, वही दशा फिर हो जाती।

ऐसी अवस्था में इँगलैंड की पार्लिमेंट ने दोनों देशों को एक संयुक्त राज्य में मिलाने का प्रस्ताव किया जिससे दोनों देशों के निवासियों को

कोई शिकायत न रहे। यह प्रस्ताव स्कॉटलैंड की पार्लिमेंट ने भी स्वीकृत कर लिया। सन् १७०७ में दोनों देशों की पार्लिमेंट ने "संयुक्त राज्य-नियम" (Act of Union) पास किया, जिसके अनुसार इँगलैंड और स्कॉटलैंड की पार्लिमेंटें एक कर दी गईं। यह निश्चय हुआ कि इँगलैंड के प्रतिनिधियों के अतिरिक्त स्कॉटलैंड से १६ प्रतिनिधि लार्ड-सभा के लिए और ४५ प्रतिनिधि लोक-सभा के लिए भेजे जायँगे; संयुक्त राज्य का नाम ग्रेट ब्रिटेन (Great Britain) होगा, और उसके दोनों भागों की प्रजा को एक-से अधिकार प्राप्त होंगे। परन्तु इँगलैंड और

रानी एन

स्कॉटलैंड के क़ानून तथा चर्च पृथक् ही रखे गये, क्योंकि इन दोनों बातों में दोनों देशों में बहुत अन्तर था। इस संयुक्त राज्य के स्थापित होने से दोनों देशों को लाभ हुआ। अब स्कॉटलैंड को व्यापारिक उन्नति का पूरा अवसर मिल गया और इँगलैंड का यह भय जाता रहा कि कहीं उत्तर से स्कॉटलैंडवाले आक्रमण न कर दें। दोनों देशों की जनता की भी इस संयुक्त राज्य के प्रति पूर्ण सहानुभूति थी, क्योंकि दोनों देशों की पार्लिमेंटों ने मिलकर "संयुक्त-राज्य नियम" की धाराओं का निश्चय किया था और दोनों देशों के प्रतिनिधियों ने उसे स्वीकृत किया था।

ह्विग तथा टोरी दल—रानी एन के राज्य-काल में ह्विग तथा टोरी दल में बराबर झगड़ा रहा। इस काल तक पहुँचते-पहुँचते इन दोनों राजनीतिक दलों का भली भाँति संघटन हो चुका था। दोनों दलों के अलग-अलग नेता थे और उन्होंने अपने दल के लिए निश्चित सिद्धान्त बना लिये थे, जिन पर उनकी सारी नीति निर्भर थी। इस समय इन

दोनों दलों में निम्नलिखित प्रश्नों पर मतभेद था—(१) ह्विग "नियमानुमोदित शासन" के पक्षपाती थे, पर टोरी अभी तक राजा के "दैवी अधिकार" का ही समर्थन करते थे। (२) ह्विग धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित करना चाहते थे, पर टोरी हाई चर्च पार्टी के कट्टर अनुयायी थे; और उनका मत था कि अँगरेज़ी चर्च के विरोधियों को किसी प्रकार की सुविधायें न दी जायँ। (३) ह्विग "स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध" जारी रखने के पक्ष में थे, परन्तु टोरी पहले तो यह चाहते थे कि इँगलैंड केवल जल-युद्ध में सम्मिलित हो और फिर वे इस युद्ध की नीति के बिलकुल विरोधी हो गये। (४) ह्विग एन के पश्चात् हनोवर वंश को इँगलैंड का राजसिंहासन देना चाहते थे, परन्तु टोरी चाहते थे कि जेम्स द्वितीय का पुत्र, जो अपने पिता की मृत्यु होने पर अपने को "जेम्स तृतीय" कहता था और जो इतिहास में ओल्ड प्रिटंडर (Old Pretender)* के नाम से प्रसिद्ध है, इँगलैंड का राजा हो।

टोरी मन्त्रि-मंडल—एन के राज्य के आरम्भिक काल में मन्त्रि-मंडल ह्विग दलवालों के हाथ म रहा। परन्तु रानो ह्विगों से सन्तुष्ट न थी और कई कारणों से पार्लिमेंट में भी इस दलवालों की संख्या कम होने लगी। ह्विग धार्मिक स्वतन्त्रता के पक्षपाती थे और टोरी अब उन्हें अँगरेज़ी चर्च का शत्रु कहकर बदनाम करने लगे। अँगरेज़ी चर्च के एक उपदेशक सेकवेरेल (Sacheverill) ने ह्विग दल के विरुद्ध व्याख्यान देने शुरू किये। ह्विग मन्त्रियों ने सेकवेरेल पर अभियोग चलाया; और इससे टोरियों को यह दिखाने का अच्छा अवसर मिल गया कि ह्विग दलवाले उपदेशकों को दंड देकर अँगरेज़ी चर्च को दबाना चाहते हैं। पार्लिमेंट के नये चुनाव में टोरियों की संख्या अधिक रही और रानी ने तुरन्त मन्त्रि-मंडल में ह्विगों के स्थान पर टोरियों को नियुक्त किया। इस टोरी मन्त्रि-मडल के नेता हार्ले, अर्ल आफ़ ऑक्सफ़ोर्ड (Harley, Earl of Oxford) और सेंट जॉन

*Pretender शब्द का अर्थ है 'मिथ्या अधिकार जतलानेवाला'।

वाईकाउट बोलिंगब्रोक (St. John, Viscount Bolingbroke) थे। इस मन्त्रि-मडल ने मार्लबरो को पदच्युत करके यूट्रेक्ट की सन्धि के द्वारा स्पेन के "उत्तराधिकार का युद्ध" समाप्त किया, जिसके विषय में हम ऊपर लिख आये हैं। इससे कुछ ही दिन पहले मार्लबरो की धमपत्नी का रानी एन से झगड़ा हो गया था और इस कारण दरबार में मार्लबरो का अब पहले की तरह आदर न रह गया था।

रानी एन के अन्तिम दिवस—रानी एन का स्वास्थ्य ठीक न था और अधिक काल तक उसके जीवित रहने की कोई आशा न थी। बोलिंगब्रोक चाहता था कि एन के पश्चात् हनोवर-वंश को राजसिंहासन न मिले और जेम्स द्वितीय का पुत्र (ओल्ड प्रिटेंडर) इँगलैंड का राजा हो। अपने उद्देश्य की पूर्त्ति के लिए पहले अपने सहकारी मन्त्री अर्ल आफ़ ऑक्सफ़ोर्ड को किसी प्रकार मन्त्रि-मडल से हटाया और ओल्ड प्रिटेंडर से पत्र-व्यवहार आरम्भ किया। सबसे बड़ी कठिनता यह थी कि इँगलैंड की जनता कैथोलिक राजा को कभी स्वीकृत न कर सकती थी और ओल्ड प्रिटेंडर अपने कैथोलिक मत पर दृढ़ था। इसी बीच में, जब कि बोलिंगब्रोक की तदबीरें पूरी नहीं हुई थीं, रानी एन की भी मृत्यु हो गई और "उत्तराधिकार-निर्णय" (Act of Settlement) के अनुसार हनोवर वंश की रानी सोफ़िया का पुत्र "जार्ज प्रथम" के नाम से इँगलैंड का राजा बना दिया गया। अपने प्रयत्न की विफलता पर बोलिंगब्रोक ने कहा—"मंगलवार को अर्ल आफ़ ऑक्सफ़ोर्ड मन्त्रि-मंडल से हटा और रविवार को रानी की मृत्यु भी हो गई। संसार भी क्या ही विचित्र है; और भावी हमारे बने-बनाये खेल को किस सुगमता से बिगाड़ देती है।"

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६८९—किलेक्रेन्की का युद्ध (Battle of Killecren kie)।

सन् १६८९--"धार्मिक सहनशीलता का नियम" (Toleration Act)।

,, १६९२—ग्लेन्को का हत्याकांड (Massacre of Glencoe)।

,, १६९४—रानी मेरी द्वितीय की मृत्यु।

,, १७०१—"उत्तराधिकार-निर्णय" (Act of Settlement)।

,, १७०१—विलियम तृतीय की मृत्यु तथा रानी एन का राज्याभिषेक।

,, १७०७—इँगलैंड और स्कॉटलैंड का संयुक्त राज्य (Union with Scotland)।

,, १७१४—रानी एन की मृत्यु।

आठवाँ परिच्छेद

स्टुअर्ट-काल में इँगलैंड की दशा

(१) राजनीतिक उन्नति

राजा तथा पार्लिमेंट का संघर्ष—सत्रहवीं शताब्दी राजनीतिक आन्दोलन तथा राजा और पार्लिमेंट के संघर्ष का काल है। स्टुअर्ट राजा "दैवी अधिकार" (The Divine Right of Kings) जतलाते थे। उनका कहना था कि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का प्रतिनिधि है और उसके कार्य में किसी को हस्तक्षेप न करना चाहिए। हम बतला चुके हैं (देखो पृष्ठ ८७-८८) कि ट्यूडर राजाओं को स्वेच्छाचारी बनने में जो सुविधायें थीं, वे स्टुअर्ट-काल तक आते-आते ग़ायब हो चुकी थीं। देश की स्थिति में भारी परिवर्तन हो गया था और सत्रहवीं शताब्दी की जनता निरंकुश शासन को कभी नहीं सह सकती थी। ऐसी दशा में स्टुअर्ट राजाओं और पार्लिमेंट का संघर्ष अनिवार्य-सा हो गया। संघर्ष विशेषतः इन प्रश्नों पर हुआ—(१) क्या राजा के लिए कर लगाने से पहले सदा पार्लिमेंट की स्वीकृति लेना आवश्यक है? (२) क्या राजमन्त्री अपनी नीति के लिए पार्लिमेंट के सम्मुख उत्तरदायी हैं? (३) क्या राजा अपराध का बिना नियमानुसार निर्णय किये हुए भी किसी को बन्दीगृह में भेज सकता है? (४) क्या राजा अपने धार्मिक विचार मनवाने के लिए देश को बाध्य कर सकता है? (५) क्या राजा का सिंहासन पर रहना पार्लिमेंट की अनुमति पर निर्भर है? (६) शासन की समस्त नीति राजा के हाथ में है या पार्लिमेंट के?

राजनीतिक आन्दोलन—इन प्रश्नों पर राजा और पार्लिमेंट में ख़ूब संघर्ष हुआ। यह संघर्ष जेम्स प्रथम ही के समय से शुरू हो गया था

परन्तु चार्ल्स प्रथम के राजत्वकाल में इसने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। पहले तो पार्लिमेंट ने कुछ राजनियम बनाकर राजा को नियमानुमोदित शासन में बाँधने की चेष्टा की। "अधिकार-याचना" (Petition of Right) नामक नियम पास किया गया; और ग्यारह वर्ष के स्वेच्छाचारी राज्य के बाद जब "प्रलम्ब पार्लिमेंट" (Long Parliament) की बैठक हुई तब और बहुत से राजनीतिक सुधार किये गये। परन्तु जब चार्ल्स प्रथम के कार्यों से पार्लिमेंट ने देखा कि उसके स्वेच्छाचार तथा अनुचित व्यवहारों को रोकने के लिए केवल राजनियम बनाने से काम नहीं चलता, तब उसको राजा के विरुद्ध शस्त्र उठाने पड़े। गृह-युद्ध (Civil War) के पश्चात् राजा को प्राणदण्ड दिया गया। और देश में प्रजातन्त्र राज्य (Commonwealth) स्थापित कर दिया गया परन्तु प्रजातन्त्र राज्य के "सैनिक शासन" का रूप धारण कर लेने के कारण वह सफल न हो सका; और ग्यारह वर्ष के उपरान्त जब "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) हुआ तब जनता ने उसे पसन्द किया। परन्तु राजनीतिक आन्दोलन का कार्य बराबर चलता रहा और सन् १६७९ में चार्ल्स द्वितीय के समय में "स्वतन्त्रता-नियम" (Habeas Corpus Act) पास किया गया। जेम्स द्वितीय के राज्यकाल में जब फिर नियमों का स्पष्ट रूप से उल्लंघन होने लगा तो देशवासियों ने विलियम को निमन्त्रित किया। जेम्स द्वितीय ने गद्दी छोड़कर फ्रांस में जाकर शरण ली और "गौरवपूर्ण राज्यक्रांति" (Glorious Revolution) के बाद स्थिर रूप से "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) की स्थापना हुई।

"नियमानुमोदित शासन" की स्थापना—"गौरवपूर्ण राज्यक्रांति" के समय से राजा और पार्लिमेंट के संघर्ष का अन्त माना जाता है। इस संघर्ष में पार्लिमेंट की विजय हुई और उसके अधिकारों का भली भाँति निर्णय हो गया। "अधिकार-पत्र" (Bill of Rights) तथा "उत्तराधिकार-निर्णय" (Act of Settlement) के अनुसार पार्लिमेंट को

और भी अधिकार मिल गये और सत्रहवीं शताब्दी का आन्दोलन पूर्ण-तया सफल रहा। इसके पश्चात् भी राजनीतिक क्षेत्र में बहुत-से सुधारों की आवश्यकता पड़ी; परन्तु अब इस बात में कोई सन्देह न रहा कि देश के शासन की बागडोर वास्तव में पार्लिमेंट ही के हाथ में है और शासन-कार्य जनता के प्रतिनिधियों की अनुमति से ही चलेगा। जितने प्रश्नों पर राजा और पार्लिमेंट में संघर्ष हुआ था उनका निर्णय पार्लि-मेंट ही के पक्ष में हुआ। राजकरों की स्वीकृति का पूर्ण अधिकार, राज-मन्त्रियों के कार्यों की देख-भाल, सेना पर अधिकार, राजसिंहासन के उत्तरा-धिकार का निर्णय आदि सभी प्रश्नों पर पार्लिमेंट ही की विजय हुई। इस प्रकार "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Govern-ment) की नींव पक्की हो गई और "स्वेच्छाचारी शासन" (Abso-lute Rule) के पुनः प्रचलित होने की कोई संभावना न रह गई।

(२) धार्मिक दल

प्योरिटन दल—सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैंड में तीन मुख्य धार्मिक दल थे। एक तो कैथालिक दल जो अभी तक रोम के पोप को अपना धर्मगुरु मानता था, दूसरा अँगरेज़ी चर्च दल जो एलिज़ेबेथ-द्वारा स्थापित चर्च की रीतियों को मानता था और तीसरा प्योरिटन दल जो जेनेवा के महात्मा कैलविन के सिद्धान्तों का अनुयायी था। ये लोग उपासना को आडम्बर-रहित बनाना और चर्च के पदाधिकारियों को जनता-द्वारा चुनना चाहते थे। जेम्स प्रथम ने हैम्पटन कोर्ट की धर्मसभा (Hampton Court Conference) में इनको अँगरेज़ी चर्च में मिलाना चाहा; परन्तु यह प्रयत्न विफल रहा। इस पर राजा ने प्योरिटन दल को कई तरह से दबाना शुरू किया; और इससे तंग आकर सन् १६२० में कुछ प्योरिटन, जो "धार्मिक यात्री" (Pilgrim Fathers) के नाम से प्रसिद्ध हैं, देश छोड़कर अमेरिका में जा बसे। चार्ल्स प्रथम के राजत्व-काल में लॉड (Laud) द्वारा प्योरिटन दलवालों

पर बहुत-से अत्याचार हुए और अँगरेज़ी चर्च की रीतियों को न मानने के अपराध में "धार्मिक न्यायालय" (High Commission Court) से इन्हें कड़े-कड़े दंड दिलाये गये।

प्योरिटन दल को चैन से रहने का अवसर प्रजातन्त्र शासनकाल में मिला। गृह युद्ध में राजा से युद्ध करनेवाले विशेषतया इसी दल के लोग थे और प्रजातन्त्र-राज्य में इन्हीं की प्रधानता रही। देश के नाचघर तथा मनोविनोद के सब स्थान बन्द कर दिये गये, यहाँ तक कि रविवार को छुट्टी मनाने की भी मनाही कर दी गई। परन्तु "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) के पश्चात् प्योरिटन दलवालों पर फिर अत्याचार होने लगे। उनके विरुद्ध कड़े-कड़े नियम बनाये गये जो उस काल के प्रधान मंत्री के नाम पर क्लैरेंडन कोड (Clarendon Code) के नाम से प्रसिद्ध हैं। देश के "स्थापित चर्च" की रीतियों को न मानने के कारण प्योरिटन दलवाले डिसेन्टर्स (Dissenters) तथा नान-कन्फ़र्मिस्ट (Non-conformist) कहलाने लगे; परन्तु सन् १६८९ में "धार्मिक सहनशीलता-नियम" (Toleration Act) के पास होने से अन्य प्रोटेस्टेन्ट धर्मावलम्बियों की भाँति इन लोगों को भी अपने ढङ्ग से प्रार्थना करने की स्वतन्त्रता मिल गई।

कैथोलिक दल—कैथोलिक दल के प्रति सत्रहवीं शताब्दी भर जनता की सदा घृणा रही। उनके विरुद्ध कड़े-कड़े नियम बनाये गये और वे कभी सुख से न रह सके। जेम्स प्रथम के समय में कैथोलिकों ने शासन अपने हाथ में करने के लिए "बारूद का षड्यन्त्र" (Gun-powder Plot) रचा। परन्तु वह प्रयत्न निष्फल रहा और उनके विरुद्ध पहले से भी अधिक कड़े नियम बना दिये गये। चार्ल्स द्वितीय स्वयं कैथोलिक था और "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) के बाद उसने कैथोलिकों को सुविधायें देने का बहुत कुछ प्रयत्न किया। फ्रांस के राजा लूई चौदहवें ने उसे इस कार्य्य में सहायता दी और इसी सहायता के बल पर उसने कई बार "अनिषेध घोषणा" (Declara-

tion of Indulgence) प्रकाशित की। परन्तु जनता के विरोध के कारण इस प्रकार की घोषणायें लौटानी पड़ीं। पार्लिमेंट ने "परीक्षा-नियम" (Test Act) पास कर दिया जिससे अँगरेज़ी चर्च के अनुयायियों के अतिरिक्त और कोई राज्य में कर्मचारी नहीं हो सकता था। "गौरवपूर्ण राज्यक्रान्ति" (Glorious Revolution) के पश्चात् कैथेलिकों ने जेम्स द्वितीय तथा उनकी सन्तान के पक्षपातियों (Jacobites) का साथ दिया: और इस कारण देशवासी उनसे और भी अधिक घृणा करने लगे।

अँगरेज़ी चर्च-दल—सत्रहवीं शताब्दी में अँगरेज़ी चर्च-दल (English Church Party) ही की प्रधानता रही। प्रजातन्त्र राज्य के काल को छोड़कर, जिसमें प्योरिटन दलवालों के हाथ में शासन था, शेष सब कालों में राज्य के प्रधान कर्मचारी अँगरेज़ी चर्च-दल ही के लोग होते थे। अँगरेज़ी चर्च ही देश का जातीय चर्च (National Church) था। इस दल को हाई चर्च-पार्टी (High Church-Men) भी कहते हैं। ये लोग सदा राज्य-पक्ष के समर्थक रहे, परन्तु जेम्स द्वितीय जैसे पक्के कैथेलिक राजा का इन्होंने भी विरोध किया। रानी एन अँगरेज़ी चर्च की बड़ी समर्थक थीं और उसके राज्यकाल में अँगरेज़ी चर्च-दल अर्थात् हाई चर्च-पार्टी की प्रतिष्ठा और भी अधिक बढ़ गई।

(३) उपनिवेश तथा व्यापार

अमेरिकन उपनिवेश—सत्रहवीं शताब्दी में अँगरेज़ों ने भूमंडल के भिन्न भिन्न भागों में उपनिवेश स्थापित किये। हम बतला चुके हैं कि रानी एलिज़ेबेथ के राज्यकाल में वाल्टर रेले (Walter Raleigh) ने उत्तरी अमेरिका में वर्जीनिया (Virginia) नाम का उपनिवेश स्थापित किया था। सत्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में नये उपनिवेशों के स्थापित होने का एक अपूर्व कारण प्रस्तुत हो गया। बहुत-से लोग, जो

अपने धार्मिक विचारों के कारण इँगलैंड में सताये जा रहे थे, देश छोड़कर अमेरिका में जाकर बसने लगे। सन् १६२० में लगभग २०० प्योरिटन, जो इतिहास में "धार्मिक यात्री" (Pilgrim Fathers) के नाम से प्रसिद्ध हैं, मेफ़लावर (Mayflower) नामक जहाज़ में इँगलैंड छोड़कर अमेरिका में बसने के लिए रवाना हुए। ज्यों-ज्यों इँगलैंड में प्योरिटन दल के विरुद्ध कड़े नियम बनते गये, त्यों-त्यों बहुत-से प्योरिटन देश छोड़ने के लिए बाध्य हुए। अमेरिका में उनके स्थापित किये हुए छोटे-छोटे उपनिवेशों का समूह न्यू इँगलैंड (New England) के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सन् १६२४ में कुछ कैथालिक भी, जो इँगलैंड में प्योरिटनों से भी अधिक सताये जा रहे थे, उत्तरी अमेरिका पहुँचे; और उन्होंने चार्ल्स-प्रथम की कैथोलिक रानी हैनरिटा मेरिया (Henrietta Maria) के नाम पर दक्षिण में मेरीलैंड (Maryland) नामक उपनिवेश स्थापित किया। इन उपनिवेशों की सफलता देखकर इँगलैंड-निवासियों का उत्साह बढ़ने लगा, और जहाँ पहले केवल धार्मिक अत्याचारों (Religious Persecution) से बचने के लिए ही लोग देश छोड़ते थे, वहाँ अब धीरे-धीरे व्यापार तथा विदेश की सैर आदि के लिए भी बहुत-से अँगरेज़ प्रतिवर्ष अमेरिका पहुँचने लगे। सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक उत्तरी अमेरिका के समस्त पूर्वीय तट पर अँगरेज़ी उपनिवेश (English Colonies) स्थापित हो गये। इनमें उत्तर के उपनिवेशों में अधिकतर प्योरिटन तथा अन्य प्रोटेस्टेंटों और दक्षिण में अधिकतर कैथोलिकों की बस्तियाँ थीं।

भारतवर्ष में व्यापारिक कोठियाँ—सत्रहवीं शताब्दी में इँगलैंड-निवासी भारतवर्ष भी पहुँचने लगे। उनके भारतवर्ष आने का मुख्य कारण अपना व्यापार फैलाना था। सन् १६०० में रानी एलिज़बेथ ने ईस्ट इंडिया कम्पनी (East India Company) को पूर्वीय देशों से व्यापार करने के लिए आज्ञापत्र (Charter) प्रदान किया था।

भारतवर्ष के मुग़ल सम्राट् जहाँगीर के दरबार में इँगलैंड से दो राजदूत हॉकिन्स (Hawkins) और सर टामस रो (Sir Thomas Roe) भेजे गये; और उन्होंने अँगरेज़ों के लिए भारतवर्ष में व्यापार की आज्ञा प्राप्त की। सन् १६१२ में भारतवर्ष की पहली अँगरेज़ी व्यापारिक कोठी (Factory) सूरत (Surat) में स्थापित हुई। सन् १६४० में चन्द्रगिरि के राजा से कुछ ज़मीन किराये पर लेकर वहाँ फ़ोर्ट सेंट जॉर्ज (Fort St. George) बनाया गया। सन् १६६१ में चार्ल्स द्वितीय को पुर्तगाल की राजकुमारी से विवाह करने पर दहेज़ में बम्बई (Bombay) मिला और सन् १६६९ में चार्ल्स ने उसे ईस्ट इंडिया कंपनी को किराये पर दे दिया। सन् १६९० में अँगरेज़ों ने बंगाल के आस-पास तीन गाँव मोल लिये, जिनमें एक कालीघाट था, जो बाद में कलकत्ता (Calcutta) नामक प्रसिद्ध नगर हुआ और भारतवर्ष में अँगरेज़ी राज्य स्थापित हो जाने पर बहुत दिनों तक ब्रिटिश इंडिया की राजधानी रहा।

हॉलैंड तथा फ्रांस से मुक़ाबला—उपनिवेश स्थापित करने तथा व्यापार बढ़ाने के कार्य में इँगलैंडवालों का हॉलैंड तथा फ्रांसवालों से मुक़ाबला था। इसी मुक़ाबले के कारण इँगलैंड का तीन बार हॉलैंडवालों से युद्ध हुआ जिसका उल्लेख पहले हो चुका है। हॉलैंड से युद्ध के बाद अमेरिका में हॉलैंडवालों का उपनिवेश न्यू एम्स्टर्डम (New Amsterdam) इँगलैंड के हाथ आया; और अब उसका नाम बदलकर न्यू यॉर्क (New York) रखा गया। अब तक उत्तरी तथा दक्षिणी अँगरेज़ी उपनिवेश एक दूसरे से अलग थे; परन्तु न्यू यॉर्क ने इन दोनों को मिला दिया और उत्तरी अमेरिका का समस्त पूर्वीय तट अँगरेज़ों के अधीन हो गया। हॉलैंड से युद्धों का यह परिणाम हुआ कि पूर्व में हॉलैंड की शक्ति तो पूर्वीय द्वीप-समूह (East Indies) में अधिक रही और भारतवर्ष का व्यापार अँगरेज़ों के हाथ रहा। पश्चिम में अमेरिका के महाद्वीप पर अँगरेज़ों की प्रधानता

रही; परन्तु पश्चिमी द्वीप-समूह (West Indies) अधिकतर हॉलैंड के अधीन रहा।

विलियम के राज्याभिषेक के समय से हॉलैंड से मित्रता हो गई और अब फ्रांस के विरुद्ध युद्ध का काल आरम्भ हुआ। इँगलैंड और फ्रांस का अमेरिका के उपनिवेश तथा भारतवर्ष के व्यापार के लिए मुक़ाबला था: और इन दोनों देशों में लगभग सवा सौ वर्ष (१६८९-१८२५) तक झगड़ा चला। सत्रहवीं शताब्दी में इस झगड़े का प्रारम्भ मात्र ही था। परन्तु "स्पेन के उत्तराधिकारी के युद्ध" में अँगरेज़ों ने जो कई बार विजय प्राप्त की, उसमे यह विदित होने लगा था कि उपनिवेश तथा व्यापार के मुक़ाबले में फ्रांस के विरुद्ध भी इँगलैंड की विजय ही होगी।

ब्रिटिश साम्राज्य का आरम्भ—सत्रहवीं शताब्दी के अमेरिकन उपनिवेशों तथा भारतवर्ष की व्यापारिक कोठियों को वर्तमान ब्रिटिश साम्राज्य की नींव समझना चाहिए। इन्हीं छोटे छोटे उपनिवेशों तथा व्यापारिक केन्द्रों के बढ़ने से इतना बड़ा साम्राज्य बना, जिसके विषय में कहा जाता है कि इसमें सूर्य कभी अस्त नहीं होता। सोलहवीं शताब्दी तक इँगलैंड की गणना योरप के शक्तिशाली राष्ट्रों में न थी; परन्तु सत्रहवीं शताब्दी तक आते आते इँगलैंड की समुद्री शक्ति काफ़ी बढ़ चुकी थी और उसकी भावी औपनिवेशिक उन्नति के लक्षण पूर्णतया विद्यमान होने लगे थे।

(४) सामाजिक दशा

नगर तथा ग्राम—रानी एलिज़बेथ के राज्यकाल से देश में जो उन्नति शुरू हुई थी, वह बराबर बढ़ती गई। लन्दन नगर धीरे-धीरे देश की सभ्यता तथा व्यापार का केन्द्र होता जा रहा था। सत्रहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध तक यह नगर बहुत गन्दा था और प्लेग आदि रोग प्रायः फैला करते थे, परन्तु सन् १६६६ की भयङ्कर अग्नि (Great Fire) के

बाद लन्दन नये और अच्छे ढङ्ग से बसाया गया और क्रिस्टोफ़र रेन (Christopher Wren) द्वारा बनी हुई सुन्दर इमारतों ने नगर की शोभा को और भी बढ़ा दिया। सन् १६९४ में लन्दन में बैंक आफ़ इँगलैंड (Bank of England) की स्थापना हुई, जिसकी गणना ब्रिटिश जाति के व्यापार की उन्नति होने के कारण धीरे-धीरे दुनिया के प्रसिद्ध बैंकों में होने लगी।

परन्तु अन्य नगरों की दशा उतनी सन्तोषजनक न थी। गलियों की सफ़ाई तथा रोशनी का कोई प्रबन्ध न था और रात में घर से कहीं बाहर जाना कठिन होता था। दूकानों में आजकल की भाँति लिखे हुए साइनबोर्ड आदि नहीं होते थे। दूकानों के बाहर कुछ विलक्षण ढँग के चिह्न बना दिये जाते थे जिनसे पता चलता था कि इस दूकान में क्या बिकता है। मकानों पर नम्बर न होते थे और बिना जाने किसी मकान का पता लगाने में बड़ी कठिनाई होती थी। पुलिस का उचित प्रबन्ध न था और आये दिन चोरियाँ हुआ करती थीं।

ग्रामों की दशा और भी ख़राब थी। अभी तक बड़ी-बड़ी दलदलें और जङ्गल भरे पड़े थे। ग्राम की स्त्रियों को बहुत काम करना पड़ता था। रसोई बनाना, शराब निकालना, कपड़े सीना आदि उन्हीं का काम था और वही बीमारों की भी देखभाल करती थीं; क्योंकि उस काल में डाक्टर ग्रामों में बिलकुल न मिलते थे।

यात्रा की कठिनाइयाँ—अभी तक देश के किसी भाग में अच्छी सड़कें न थीं। सत्रहवीं शताब्दी में पाल-गाड़ियों (Stage Coaches) का प्रयोग होने लगा; परन्तु सड़कें ख़राब होने के कारण वे प्रायः कीचड़ में धँस जाया करती थीं और आस-पास से घोड़े मँगाकर उन्हें खींचकर निकाला जाता था। लन्दन से यार्क तक जाने में पूरे चार दिन लगते थे। जो गाड़ियाँ दिन भर में चालीस मील चल सकती थीं, वे उन दिनों सबसे तेज़ गाड़ियाँ (Flying Ooaches) समझी जाती थीं, सड़कों के किनारे सरायें होती थीं, जहाँ गाड़ीवाले अपने घोड़े बदलते थे। प्रत्येक

गाड़ी के साथ सवारों का पहरा रहता था; परन्तु फिर भी डाकुओं से जान न बचती थी। इन्हीं पाल-गाड़ियों-द्वारा डाक भी जाती थी। प्रत्येक चौराहे पर जब गाड़ीवाला ज़ोर से घंटी बजाता था, तब आसपास के लोग आकर उसे अपनी चिट्ठियाँ दे जाते थे। इन पाल-गाड़ियों का भाड़ा बहुत होता था; और इसलिए ग़रीब लोगों को ठेलों (Wagons) पर जाना पड़ता था, जिन पर लादकर सामान भी भेजा जाता था। ठेले बहुत धीरे-धीरे चलते थे और रास्ते में प्रायः उलट भी जाते थे। ऐसी अवस्था में बहुत-से लोग पैदल चलने या घोड़े पर जाने को ही अच्छा समझते थे।

सामाजिक जीवन—सत्रहवीं शताब्दी में लोगों के खान-पान तथा वस्त्रों में भी उन्नति हुई। शराब के स्थान पर चाय और क़हवे का प्रयोग होने लगा और कई तरह की मिठाइयाँ भी बनने लगीं। देश में बहुत-से क़हवाघर (Coffee Houses) खुल गये, जहाँ लोग मिलकर जलपान करते और गपशप लड़ाते थे। इन क़हवाघरों को वर्तमान क्लबों (Clubs) का प्राचीन रूप समझना चाहिए। यहीं राजनीतिक विषयों पर भी वाद-विवाद होता था। पीछे धीरे-धीरे प्रत्येक राजनीतिक दल वालों ने अपने-अपने अलग-अलग क़हवाघर स्थापित कर लिये।

सत्रहवीं शताब्दी के वस्त्र, विशेषतया "पुनः राज्य-स्थापन" (Restoration) के बाद, एलिज़ेबेथ के राज्यकाल के वस्त्रों से भी अधिक भड़कीले होते थे। पुरुषों में यह फ़ैशन चल पड़ा था कि सिर के बाल मुँड़वाकर नक़ली बालों की टोपियाँ (Wigs) पहनते थे, जिनकी लागत भी बहुत होती थी और जो भारी भी बहुत होती थीं। स्त्रियाँ भी पुरुषों का अनुसरण करके नक़ली घूँघरवाले बालों से शृङ्गार करने लगी थीं। वे अपना सौन्दर्य बढ़ाने के लिए कपोलों पर नक़ली तिल बनाती थीं। यह फ़ैशन रानी एन के राज्यकाल तक रहा। इस काल में टोरी स्त्रियाँ बायें और ह्विग स्त्रियाँ दाहिने कपोल पर तिल बनाती थीं।

देश में बहुत-सी नृत्य तथा नाट्यशालायें भी बनने लगीं। प्योरिटनों ने प्रजातन्त्र-काल में इन सबको बन्द करवा दिया था; परन्तु "पुनः

राज्य-स्थापन" के बाद ये और भी अधिक संख्या में दिखाई पड़ने लगीं। नाटकों में जनता की रुचि बढ़ती गई और अब स्त्रियाँ भी अभिनय या पार्ट करने लगीं। परन्तु देशवासियों की रुचि अभी भद्दी ही थी; और

सत्रहवीं शताब्दी के वस्त्र

अपराधियों को कोड़े लगने आदि के बेहूदे दृश्य देखने के लिए सैकड़ों आदमियों की भीड़ पहुँच जाती थी। शिक्षा का अभी बड़ा अभाव था। स्त्री-शिक्षा तो थी ही नहीं: और पुरुषों में भी प्रति सैकड़े दो-चार से अधिक शिक्षित न थे।

(५) साहित्य तथा विज्ञान

विज्ञान—"वर्तमान विज्ञान के जन्मदाता" बेकन (Bacon) के विषय में हम पहले लि– –ाये हैं। सत्रहवीं शताब्दी में विज्ञान में

और भी अधिक उन्नति हुई और सन् १६६० में प्रसिद्ध "रायल सोसाइटी" (Royal Society) की स्थापना हुई, जिसका आज्ञापत्र (Charter) चार्ल्स द्वितीय ने प्रदान किया। वर्तमान काल में संसार के प्रायः सभी प्रसिद्ध वैज्ञानिक इस सोसाइटी के सदस्य हैं। सत्रहवीं शताब्दी के विज्ञान के सम्बन्ध में सबसे प्रसिद्ध नाम सर आइज़क न्यूटन (Sir Isaac Newton) का है, जिसने आकर्षण-शक्ति का सिद्धान्त (Law of Attraction) ढूँढ़ निकाला और जिसने बतलाया कि पृथ्वी तथा तारागण आदि एक दूसरे की आकर्षण-शक्ति के द्वारा ही विश्वमंडल में स्थित हैं।

साहित्य—सत्रहवीं शताब्दी का प्रसिद्ध कवि जान मिल्टन (John Milton) था, जो पक्का प्योरिटन था और जो प्रजातन्त्र-काल में राजसभा के विदेशी विभाग का मन्त्री (Foreign Secretary) था। मिल्टन के पश्चात् अँगरेज़ी साहित्य में पद्य की ओर कम ध्यान रह गया, परन्तु गद्य में खूब उन्नति हुई। इस काल के प्रसिद्ध गद्य-लेखक ये थे—(१) जान बुनियन (John Bunyan) Pilgrim's Progress का लेखक; (२) स्विफ़्ट (Swift) Gulliver's Travels का लेखक; (३) डेनियल डीफ़ो (Daniel Defoe) Robinson Crusoe का लेखक; और (४) एडिसन (Addison) प्रसिद्ध निबन्ध-लेखक तथा स्पेक्टेटर (Spectator) पत्र का सम्पादक।

मिल्टन—बाल्यावस्था

समाचारपत्र—"विलियम और मेरी" के राज्यकाल में समाचार पत्रों को स्वतंत्रता (Liberty of Press) मिल गई; और इसी समय

से समाचारपत्रों का वास्तविक प्रारम्भ हुआ। राजनीतिक दलों ने पत्रों द्वारा अपने सिद्धान्तों का प्रचार आरंभ किया। स्पेक्टेटर (Spectator) के सम्पादक एडिसन (Addison) ने ह्विग सिद्धान्तों का समर्थन किया; और स्विफ़्ट (Swift) ने टोरी सिद्धान्तों की पुष्टि के लिए बहुत-से लेख प्रकाशित किये। धीरे-धीरे समाचारपत्र बढ़ते गये; और अब वर्तमान काल में हम देखते हैं कि देश के सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन के लिए समाचारपत्र कितने आवश्यक हो गये हैं।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १६२०—"धार्मिक यात्रियों" (Pilgrim Fathers) का इँगलैंड छोड़कर अमेरिका में जा बसना।

" १६३४—मिल्टन की "Comus" का प्रकाशन।

" १६६२—"रायल सोसाइटी" (Royal Society) की स्थापना।

" १६६७—मिल्टन के "Paradise Lost" का प्रकाशन।

" १६७८—बुनियन की "Pilgrim's Progress" का प्रकाशन।

" १६८७—न्यूटन की "Principia" का प्रकाशन।

Model Questions

(Stuart Period)

1. What were the causes of the Thirty Years' War ? What was the attitude of the King (James I) and of the people of England towards it ? What part did England play in this war ?

2. Analyse briefly the causes of the struggle between King and Parliament during the Stuart Period. What were the points at issue in this struggle ? (*Hint*—see Section I, Chapter 8.)

3. Write a short account of the reign of Charles I during the period between 1629 and 1640.

4. Under what circumstances did the Long Parliament meet ? Give some account of its beneficial measures.

(*Hint*—The financial pressure of the Bishop wars forced the King to summon Parliament after eleven years of arbitrary rule. The Long Parliament sought to abolish the extraordinary powers of the Crown.)

5. Explain the term "Divine Right of Kings". What were the points at issue in the struggle of James I with his Parliament ?

6. Write a short account of the Great Civil War.

7. Narrate the circumstances which led to the execution of Charles I.

8. Write a short sketch of the career of Oliver Cromwell under the following headings :—

(a) His position in the Commonwealth, (b) His Domestic Policy, (c) His Foreign Policy, and (d) An estimate of what he did for England.

9 Describe the various forms of Government that were tried in England during the period between 1649 and 1660

(*Hint*—(1) The "Rump" and the Council of State, (2) The Instrument of Government, (3) Scheme of Majors-General, (4) The Humble Advice and Petition, and (5) Monarchy restored in its usual form with the Restoration.)

10. Comment on the following:—

(a) "Cromwell was frankly a military despot, governing for the nation's good."

(*Hint*—Military character of Cromwell's rule; the "New Model Army" was always supreme—tried to raise the moral standard of the people, to preserve order, and to raise England's status abroad.)

(b) "Cromwell's greatness at home was a mere shadow of his greatness abroad."

(*Hint*—Explain the vigorous foreign policy of Cromwell and his achievements against the Dutch.)

11. Narrate the circumstances leading to the Restoration. Why was the Restoration welcomed by the people ?

12. Give an account of the important measures of the "Convention" and "Cavalier" Parliaments.

13. Describe the foreign policy of Charles II and compare it with that of (a) Cromwell, and (b) William III.

14. Give a short account of Louis XIV's relations with England.

(*Hint*—Cromwell—Friendship with Louis XIV, in order to fight against the Dutch and to raise England's status in Continental politics. Charles II and James II—Friendship with Louis XIV degenerated into a subservience to the French policy—the two English monarchs were merely the pensioners of the French King. William and Anne—England's war against Louis XIV's growing power—grand designs of the French King were successfully checkmated.)

15. Narrate the circumstances which led to the expulsion of James II from England. Explain the term "Glorious Revolution."

16. What was the effect of the Revolution of 1688 upon the English Constitution? Discuss the constitutional importance of the Bill of Rights and the Act of Settlement

17 Give a brief account of the War of the Spanish Succession What was England's interest in the war?

18. "It at the Armada England entered the race for Colonial expansion, she won it at the Treaty of Utrecht." Explain.

(*Hint*—The Naval Supremacy of England begins from her victory over the Armada; the terms of the Treaty of Utrecht made her a really strong maritime Power.)

19 How did the Whig and the Tory parties come into existence? What different principles did the two parties stand for in the reign of Queen Anne?

20 Narrate the circumstances which led to the Scottish Union of 1707.

21 Describe the position of the various religious parties in the Stuart Period.

22. Carefully narrate the story of British Colonisation in the 17th Century.

23. Give a brief account of the general progress in the country in the 17th Century.

24. Discuss the constitutional importance of the following Acts:—

Petition of Right, Grand Remonstrance, Habeas Corpus Act, Bill of Rights, Act of Settlement.

25. Write short notes on :—

Gunpowder Plot, Buckingham, Hampton Court Conference, Archbishop Laud, Solemn League and Covenant, Self-Denying Ordinance, Pride's Purge, Ship Money, Pilgrim Fathers, Execution of Raleigh, Secret Treaty of Dover, Declaration of Indulgence, Impeachment of Danby, Earl of Clarendon, Marlborough, Navigation Act, Test Act, Exclusion Bill, Massacre of Glencoe, Toleration Act.

तीसरा खण्ड

हनोवर-शासन

तथा

आधुनिक ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना

पहला परिच्छेद

जॉर्ज प्रथम और जॉर्ज द्वितीय का राजत्वकाल

(१) ह्विग-शासनकाल

(१७१४–६३)

जॉर्ज प्रथम और जॉर्ज द्वितीय—"उत्तराधिकार-निर्णय" (Act of Settlement) के अनुसार यह निश्चित हो चुका था कि रानी एन के पश्चात् इँगलैंड का राज-सिंहासन जेम्स प्रथम की दौहित्री सोफ़िया (Sophia) को, जो जर्मनी की हनोवर रियासत की रानी थी, मिलेगा। सोफ़िया का एन से पहले ही देहान्त हो चुका था; इसलिए सन् १७१४ में रानी एन की मृत्यु होने पर सोफ़िया के पुत्र को राज्य मिला जो "जॉर्ज प्रथम" (१७१४–१७२७) के नाम से ब्रिटेन का पहला हनोवरियन राजा हुआ। उस समय जॉर्ज प्रथम की अवस्था ५४ वर्ष की थी और उसको हनोवर का राजा रह चुकने के कारण शासन-कार्य का भी अनुभव था। परन्तु इँगलैंड में आकर उसको यह कठिनाई हुई कि जर्मन होने के कारण न तो उसको अँगरेज़ी भाषा ही

जॉर्ज प्रथम (१७१४-२७)

वंशावली नं० ४

हनोवरियन राजाओं की वंशावली

जेम्स प्रथम

|

राजकुमारी एलिज़बेथ = फ्रेडरिक, पेलेटिनेट का राजा

|

सोफ़िया = हनोवर का राजा

|

जॉर्ज प्रथम (१७१४–१७२७)

|

जॉर्ज द्वितीय (१७२७–१७६०)

|

फ्रेडरिक, प्रिंस आफ़ वेल्ज़

|

जॉर्ज तृतीय (१७६०–१८२०)

|

जॉर्ज चतुर्थ (१८२०–१८३०) | विलियम चतुर्थ (१८३०–१८३७) | एडवर्ड, ड्यूक आफ़ कैंट

|

महारानी विक्टोरिया = राजकुमार एलबर्ट
(१८३७–१९०१)

|

एडवर्ड सप्तम = रानी एलेक्ज़ेंड्रा
(१९०१–१९१०)

|

जॉर्ज पंचम = रानी मेरी
(१९१०–१९३६)
(हाउस आफ़ विंडसर)
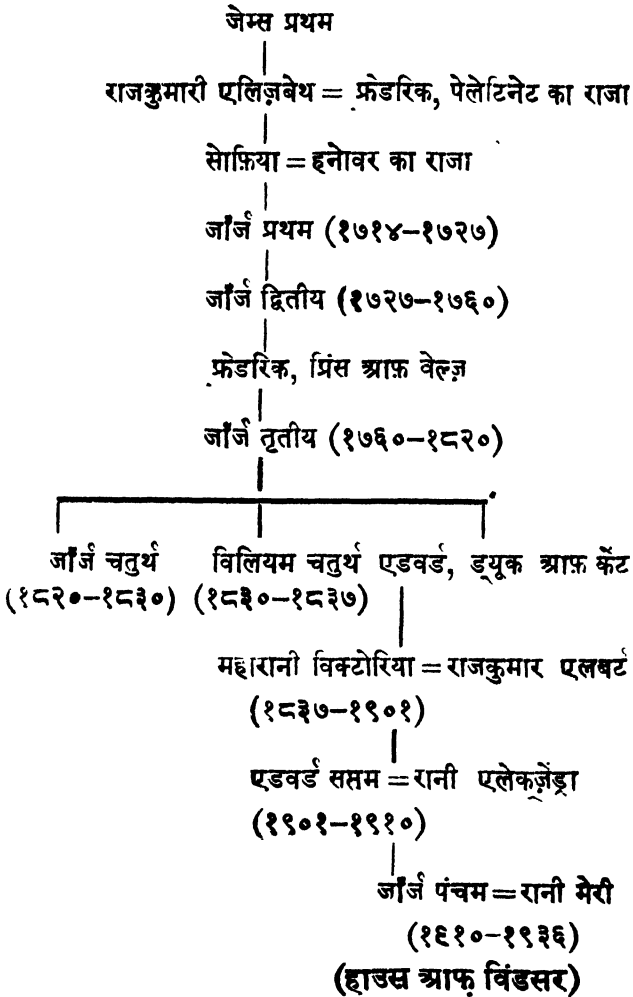
का ज्ञान था और न वह इँगलैंड की राजनीति ही को अच्छी तरह समझता था।

हनोवर-वंश के अगले राजा "जॉर्ज द्वितीय" (१७२७-१७६०) का भी यही हाल था; परन्तु उसने थोड़ी-बहुत अँगरेज़ी भाषा सीख ली थी। जॉर्ज द्वितीय वीर योद्धा भी था; और कई युद्धों में वह स्वयं अँगरेज़ी सेना का नेता बना था। पहले दोनों जॉर्जों के राजत्वकाल में उनके अँगरेज़ी भाषा तथा इँगलैंड की राजनीति को न समझने के कारण देश का शासन-कार्य बहुत कुछ मन्त्रि-मंडल (Cabinet) के हाथ में आ गया। और यह बड़े महत्त्व की बात है कि अपने देश हनोवर में स्वेच्छाचारी राजा होने पर भी उन्होंने ब्रिटेन में 'नियमानुमोदित शासन' (Constitutional Government) का कभी उल्लघन नहीं किया।

जॉर्ज द्वितीय (१७२७—६०)

ह्विग-शासनकाल—सन् १७१४ से १७६३ तक देश का शासन-कार्य ह्विग-दल के मन्त्रि-मंडल के हाथ में रहा। उस समय टोरी दलवाले देश में बहुत बदनाम थे; क्योंकि उन्होंने हनोवर-वंश को सिंहासन से वंचित रखने का प्रयत्न किया था; और सब लोग उन्हें पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंश का समर्थक समझते थे। इस कारण हनोवर-वंश के पहले दोनों राजाओं ने टोरियों पर विश्वास न करके ह्विग-दलवालों को ही मन्त्रि-मंडल में स्थान दिया। ह्विग-दलवाले धनी थे

और इस कारण लॉर्ड सभा में उनकी संख्या अधिक थी। चुनाव में खूब धन व्यय करके उन्होंने लोक-सभा में भी अपने समर्थकों की संख्या बढ़ा ली; और इस प्रकार लगभग आधी शताब्दी तक शासन-कार्य में बड़े-बड़े ह्विग-वंशों की ही प्रधानता रही।

(२) जेकोबाइट विद्रोह

सन् १७१५ का जेकोबाइट विद्रोह—पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंश के समर्थक इतिहास में जेकोबाइट (Jacobite) नाम से प्रसिद्ध हैं; क्योंकि जेम्स शब्द के स्थान पर लैटिन भाषा में "जेकोबस" शब्द का प्रयोग होता है। जेकोबाइट दल ने विलियम तृतीय के राजत्वकाल में जेम्स द्वितीय को पुनः राजा बनाने के लिए स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड में निष्फल विद्रोह खड़े किये थे। जेम्स द्वितीय की मृत्यु होने के बाद उन्होंने उसके लड़के जेम्स एडवर्ड (James Edward) को, जो इतिहास में "ओल्ड प्रिटेंडर" (Old Pretender*) के नाम से प्रसिद्ध है, राजा बनाना चाहा और जैसा कि हम बतला चुके हैं, रानी एन के राजत्वकाल में उन्होंने इँगलैंड के टोरियों की सहायता से हनोवर-वंश को राजसिंहासन से वंचित रखने का यथाशक्ति प्रयत्न किया। परन्तु इसमें भी उन्हें सफलता न हुई। अब हनोवर राज्य स्थापित होने पर बहुत-से जेकोबाइट तथा टोरी इँगलैंड छोड़कर फ्रांस पहुँच गये और फ्रांसीसियों की सहायता से ओल्ड प्रिटेंडर को राजा बनाने का उपाय सोचने लगे।

स्टुअर्ट-वंश स्कॉटलैंड का प्राचीन राजवंश होने के कारण वहीं जेकोबाइट दल की संख्या अधिक थी। जॉर्ज प्रथम के राज्याभिषेक के एक ही वर्ष बाद जब अर्ल आफ़ मार (Earl of Mar) ने हनोवर राज्य के विरुद्ध युद्ध ठान दिया, तब स्कॉटलैंड के बहुत-से पहाड़ियों

---

* Pretender शब्द का अर्थ है "मिथ्या अधिकार जतलाने-वाला"।

(Highlanders) ने उसका साथ दिया। कुछ समय बाद ओल्ड प्रिटेंडर स्वयं स्कॉटलैंड पहुँच गया; परन्तु उसकी अयोग्यता देखकर उसके समर्थकों का उत्साह ठंडा पड़ गया। इसी बीच में फ्रांस के राजा लूई चौदहवें (Louis XIV) की, जिसकी सहायता पर जेकोबाइट दल की शक्ति निर्भर थी, मृत्यु हो गई; और ऐसी अवस्था में ओल्ड प्रिटेंडर निराश होकर फ्रांस को लौट गया।

"सप्तवार्षिक नियम" (१७१६)—इस जेकोबाइट विद्रोह के कारण शासनप्रणाली में एक बड़ा परिवर्तन हुआ। ऐसी अशान्ति के काल में नया चुनाव करना ठीक नहीं समझा गया, और इसलिए "सप्त-वार्षिक नियम" (Septennial Act) द्वारा यह निश्चित किया गया कि पार्लिमेंट की अवधि सात वर्ष होनी चाहिए। अब तक "त्रैवार्षिक नियम"* (Triennial Act) के अनुसार पार्लिमेंट की अवधि केवल तीन वर्ष की होती थी, परन्तु अब इस नियम के अनुसार पार्लिमेंट का चुनाव सात वर्ष के लिए होने की प्रथा चल गई। "सप्तवार्षिक नियम" लगभग दो सौ वर्ष तक प्रचलित रहा; परन्तु जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा, सन् १९११ में पार्लिमेंट की अवधि घटाकर सात वर्ष के स्थान पर पाँच वर्ष कर दी गई।

सन् १७४५ का जेकोबाइट विद्रोह—सन् १७४५ में, जॉर्ज द्वितीय के राजत्वकाल में, जेकोबाइट दल ने फिर स्टुअर्ट-वंश का राज्य स्थापित करना चाहा। "ओल्ड प्रिटेन्डर" अभी जीवित था, परन्तु इस समय उसका पुत्र चार्ल्स एडवर्ड (Charles Edward), जो "यंग प्रिटेन्डर" (Young Pretender) कहलाता है, बहुत सर्वप्रिय हो रहा था। "यंग प्रिटेन्डर" सुन्दर तथा प्रसन्नचित्त युवक था। उसके स्कॉटलैंड पहुँचते ही सब पहाड़ी जातियाँ उससे आ मिलीं और हनोवर राज्य के विरुद्ध बड़ा भयङ्कर विद्रोह उठ खड़ा हुआ। यंग प्रिटेन्डर एडिनबरा से चलकर कार्लाइल होता हुआ इंगलैंड पहुँचा, और उसकी

---

* देखो पृष्ठ १०२।

"यंग प्रिटेन्डर राजकुमार चार्ली"

सेना डरबी (Derby) तक, जो लन्दन से कुल १२५ मील है, बेधड़क पहुँच गई। ऐसी अवस्था में इँगलैंड की जनता में बड़ी घबराहट फैली और लोग अपना रुपया लेने के लिए बैंकों को पहुँचने लगे। कहते हैं कि स्वयं जॉर्ज द्वितीय इतना घबराया कि उसने हनोवर भाग जाने की कुल तैयारी कर डाली। यंग प्रिटेन्डर ने फ़ालकर्क (Falkirk) नामक स्थान पर विजय प्राप्त की; परन्तु शीघ्र ही जॉर्ज द्वितीय के पुत्र ड्यूक आफ़ कंबरलैंड (Duke of Cumberland) ने उसे कलोडन (Culloden) के युद्ध में परास्त किया। जेकोबाइट दल के बहुत-से लोग मार डाले गये और स्वयं यंग प्रिटेन्डर बड़ी कठिनाइयाँ सहकर किसी प्रकार फ्रांस की ओर भाग निकला।

पदच्युत जेम्स द्वितीय के वंश को सिंहासन दिलाने का यह अन्तिम प्रयत्न था। इसके पश्चात् हनोवरियन राजाओं को इस प्रकार की किसी आपत्ति का सामना न करना पड़ा। स्कॉटलैंड की स्वतन्त्र पहाड़ी जातियों के, जिन्होंने जेकोबाइट दल का साथ दिया था, हथियार छीन लिये गये और उनको अपने जातीय वस्त्र पहनने तक की मनाही कर दी गई। तब से पहाड़ी जातियाँ शान्तिपूर्वक रहने लगीं; परन्तु अभी तक स्कॉटलैंड में यंग प्रिटेन्डर की सुन्दरता तथा साहस के जोशीले गीत गाये जाते हैं; और पहाड़ी लोग उसे "सुन्दर राजकुमार चार्ली" (Bonnie* Prince Charlie†) के नाम से याद करते हैं।

जेकोबाइट दल की विफलता के कारण—जेकोबाइट दल ने तीन बार विद्रोह किया; पहली बार विलियम तृतीय के राजत्वकाल में पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के पक्ष में, दूसरी बार जॉर्ज प्रथम के राजत्वकाल में जेम्स द्वितीय के पुत्र ओल्ड प्रिटेन्डर (Old Pretender) के पक्ष में, तीसरी बार जॉर्ज द्वितीय के राजत्वकाल में जेम्स द्वितीय के पोते यंग प्रिटेन्डर (Young Pretender) के पक्ष में;

* Bonnie = सुन्दर।

† Charlie = यंग प्रिटेन्डर के नाम (चार्ल्स एडवर्ड) का छोटा रूप।

परन्तु तीनों बार उनका प्रयत्न निष्फल रहा। इसका मुख्य कारण यह था कि जेकोबाइट दलवाले अधिकतर कैथोलिक थे और इँगलैंड में इस समय कैथोलिकों के प्रति बड़ी घृणा फैली हुई थी। इसके अतिरिक्त जब जेकोबाइटों ने अपना मनोरथ सिद्ध करने के लिए फ्रांस में अपना अड्डा जमाया और फ्रांस के सम्राट् लूई चौदहवें (Louis XIV) से सहायता लेनी शुरू की, तब इससे इँगलैंड-निवासी और भी चिढ़ गये और इँगलैंड के शत्रु की सहायता के भरोसे अकड़नेवालों के साथ उनकी कुछ भी सहानुभूति न रही। स्कॉटलैंड की कुछ पहाड़ी जातियों के अतिरिक्त ब्रिटेन में किसी ने भी जेकोबाइटों का साथ न दिया और कुछ दिन के बाद अपने मुख्य समर्थक लूई चौदहवें की मृत्यु के पश्चात् ये लोग और भी ढीले हो गये। धीरे-धीरे यह दल बिलकुल छिन्न भिन्न हो गया और हनोवरियन राजाओं का सिंहासन बिलकुल निर्भय हो गया।

(३) वाल्पोल का मन्त्रित्व
(१७२०--४२)

दक्षिण सागर का बुलबुला—यूट्रेक्ट की सन्धि में ब्रिटेन को स्पेन के दक्षिण अमेरिकावाले उपनिवेशों से व्यापार करने के लिए एक जहाज़ प्रतिवर्ष भेजने का अधिकार मिल गया था। ब्रिटिश सरकार ने यह अधिकार एक व्यापारिक कम्पनी को दे दिया, जो "दक्षिण सागर कम्पनी" (South Sea Company) के नाम से प्रसिद्ध है। सबको यही आशा थी कि इस कम्पनी को बहुत लाभ होगा; और इस कारण उसके हिस्सों (Shares) का भाव प्रतिदिन बढ़ता गया। धीरे-धीरे यह दशा हो गई कि सौ पाउंड के हिस्सों के लिए एक हज़ार पाउंड देने से भी उनका मिलना दुर्लभ हो गया। परन्तु कुछ ही दिनों में इस कम्पनी का दिवाला निकल गया; और उसमें बहुत-से देश-वासियों का हिस्सा होने के कारण यह एक जातीय विपत्ति-सी हो गई। दक्षिण सागर का बुलबुला (The South Sea Bubble)

इतना फूल गया था कि उसका टूटना अनिवार्य-सा हो गया था। ऐसी आपत्ति के समय जॉर्ज प्रथम ने वाल्पोल को, जो अपनी अर्थ-शास्त्र की निपुणता के लिए प्रसिद्ध था, अपना प्रधान मन्त्री बनाया। वाल्पोल ने पहले स्वयं इस कम्पनी में सम्मिलित होकर बहुत धन उपार्जन किया था; परन्तु थोड़े ही दिनों पीछे वह उससे अलग हो गया था और उसने यह जतला दिया था कि ऐसी कम्पनी का अवश्य दिवाला निकलेगा।

वाल्पोल का मंत्रित्व—वाल्पोल (Walpole) की शिक्षा ईटन कालिज (Eton College) में हुई थी, जहाँ के हाल में उसका चित्र अब तक लगा हुआ है। सन् १७०२ में उसका पार्लिमेंट में प्रवेश हुआ; और अपनी योग्यता के कारण वह शीघ्र ही प्रसिद्ध हो गया। वह सदा ह्विग-दल का पक्षपाती रहा। जॉर्ज प्रथम के राज्याभिषेक के समय जब ह्विग-दल का मन्त्रि-मंडल स्थापित हुआ, तब उसमें वाल्पोल भी सम्मिलित था; परन्तु कुछ मतभेद के कारण थोड़े ही दिनों बाद वह उससे पृथक् हो बैठा था। अब सन् १७२० में "दक्षिण सागर के बुलबुले" के टूटने पर वह मन्त्रि-मंडल का नेता बनाया गया। जॉर्ज प्रथम तथा जॉर्ज द्वितीय दोनों उस पर विश्वास रखते थे; और इसी कारण वह सन् १७४२ तक (पूरे बाइस वर्ष) प्रधान मन्त्री रहा।
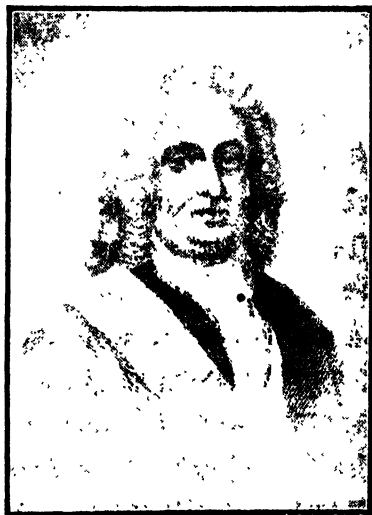
वाल्पोल

प्रथम प्रधान मन्त्री—वाल्पोल इँगलैंड का प्रथम प्रधान मन्त्री माना जाता है। अब तक राजा स्वयं मन्त्रि-मंडल के प्रधान होते थे।

परन्तु जॉर्ज प्रथम, जर्मन होने के कारण, अँगरेज़ी भाषा तक न समझता था; और इसलिए धीरे-धीरे उसने मन्त्रि-मंडल की बैठकों में जाना बन्द कर दिया था। ऐसी अवस्था में मन्त्रियों में से ही एक व्यक्ति मन्त्रि-मंडल का प्रधान होने लगा और वह प्रधान मन्त्री (Prime Minister) कहलाने लगा। यह पद सबसे पहले वाल्पोल ने ग्रहण किया। इस परिवर्तन का सबसे बड़ा परिणाम यह हुआ कि राजा का मन्त्रि मंडल पर बिलकुल दबाव न रहा और प्रधान मन्त्री ही सब तरह से मन्त्रि-मंडल का नेता होने लगा। वाल्पोल ने उन मन्त्रियों को, जो उसकी नीति के विरोधी थे, पदत्याग करने पर बाध्य किया, और धीरे-धीरे यह प्रथा चल गई कि मन्त्रि-मंडल में अपने सहकारियों की नियुक्ति पूर्णतया प्रधान मन्त्री के अधिकार में रहा करे। इस प्रकार इस समय से मन्त्रि-मंडल (Cabinet) के वर्तमान रूप के पूर्व चिह्न प्रकट होने लगे।

वाल्पोल की गृह्य नीति—वाल्पोल की नीति का सारांश यह है—"विदेश से युद्ध न हो और देश में सुख-शान्ति रहे"। वह यह नहीं चाहता था कि देश में किसी प्रकार के आन्दोलन का अवसर आवे। उसका सिद्धान्त था—"सोते हुए कुत्तों को जगाना बुद्धिमानी नहीं है"। वह स्वयं बहुत ईमानदार था; परन्तु पार्लिमेंट में अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए उसे सदस्यों को पद आदि देकर अथवा कभी-कभी धन देकर भी प्रसन्न करना पड़ता था; परन्तु फिर भी वाल्पोल को बहुत-से विरोधियों का मुक़ाबला करना पड़ा। रानी एन के राजत्व-काल के टोरी मन्त्री बोलिंगब्रोक ने इँगलैंड में आकर क्रॉफ़्ट्समैन (Craftsman) नामक पत्र द्वारा वाल्पोल की नीति का विरोध किया। स्वयं पार्लिमेंट में छोटी अवस्था के कुछ सदस्य, जो "बॉयज़" (Boys) कहलाते थे, वाल्पोल के विरोधी थे। उन्हीं में विलियम पिट भी था, जो आगे चलकर इँगलैंड का इतना प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ तथा प्रधान मंत्री हुआ।

आर्थिक नीति—वाल्पोल अर्थ-शास्त्र में पूर्णतया निपुण था। "दक्षिण सागर के बुलबुले" के टूटने के बाद देश की व्यापारिक तथा

आर्थिक दशा का सुधार करना उसी का काम था। वह "स्वतन्त्र व्यापार" (Free Trade) का पक्षपाती था और उसने व्यापारिक वस्तुओं पर महसूल बहुत कम कर दिया था। बहुत-से व्यापारी बिना महसूल दिये चोरी से विदेश से माल मँगाते थे। इसे रोकने के लिए वाल्पोल ने एक प्रस्ताव (Excise Bill) उपस्थित किया, जिसके अनुसार बन्दरगाह के बदले देश की दूकानों पर, जहाँ जाकर माल बिकता था, महसूल वसूल करने का प्रबन्ध किया गया था। प्रस्ताव अच्छा था, परन्तु व्यापारियों ने उसका विरोध किया। यह कहा गया कि सरकारी कर्मचारी आकर दूकानों का निरीक्षण करेंगे; और बहुधा घरों में ही दूकान होने के कारण गृहस्थों को इससे बड़ी कठिनाई होगी। वाल्पोल आन्दोलन से बहुत घबराता था, इसलिए उसने यह प्रस्ताव वापस ले लिया।

पर-राष्ट्रनीति—इँगलैंड के इतिहास में वाल्पोल युद्ध-नीति का सबसे बड़ा विरोधी हुआ है। उसने सदा यही प्रयत्न किया कि इँगलैंड को किसी विदेशी युद्ध में सम्मिलित न होना पड़े। परन्तु एक अवसर पर उसे इस नीति पर दृढ़ रहने में बड़ी कठिनाई हुई। यूट्रेक्ट की सन्धि के अनुसार अँगरेज़ स्पेन के दक्षिण अमेरिकावाले उपनिवेशों से व्यापार करने के लिए केवल एक जहाज़ प्रतिवर्ष भेज सकते थे। उन्होंने यह ढंग निकाला कि बन्दरगाह पर तो एक ही जहाज़ जाता था, परन्तु उसके ख़ाली होने पर रात को अन्य जहाज़ों द्वारा उस पर बहुत-सा सामान पहुँचा दिया जाता था। समुद्र-तट की रक्षा करनेवाले स्पेन के सिपाहियों को इस ढग का पता लग गया और उन्होंने अँगरेज़ व्यापारियों को नियम उल्लंघन करने के अपराध में दंड दिलाना आरम्भ किया। इस पर इँगलैंड-निवासियों में बड़ी उत्तेजना फैली; और पार्लिमेंट में यह प्रस्ताव उपस्थित किया गया कि स्पेन के विरुद्ध युद्ध ठान देना चाहिए। वाल्पोल ने इस प्रस्ताव का विरोध करते हुए कहा—"झगड़ा मोल लेना

बहुत सहज बात है। परन्तु महाशयो! कितने मन्त्री ऐसे हैं जो बिना युद्ध किये झगड़े का निबटारा करा सकते हैं?"

अन्त में जैंकिंस (Jenkins) नामक एक अँगरेज़ कप्तान ने एक दिन अपना एक कान बोतल में बन्द करके लोक-सभा में भेजा और कहा कि बड़े अपमानपूर्वक मेरा यह कान स्पेनवालों ने काटा है। सम्भवतः वाल्पोल को युद्ध करने पर बाध्य करने के आशय से ही यह ढंग रचा गया था। इस पर लोक-सभा ने बड़े जोश से युद्ध करने का प्रस्ताव पास किया। यह देखकर वाल्पोल ने कहा—"अभी युद्ध का समाचार सुनकर सब लोग खुशी के घंटे बजा रहे हैं, परन्तु शीघ्र ही सबको हाथ मलकर पछताना पड़ेगा।"

वाल्पोल का पतन—ऐसी अवस्था में वाल्पोल को त्यागपत्र देकर अलग हो जाना चाहिए था; परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। स्पेन से युद्ध आरम्भ हुआ, पर वाल्पोल उसका उचित प्रबन्ध न कर सका। लोक-सभा में उसके समर्थकों की संख्या धीरे धीरे घटती गई और इस कारण उसे बाध्य होकर त्यागपत्र देना ही पड़ा। प्रधान मन्त्री तभी तक अपने पद पर आरूढ़ रह सकता है, जब तक लोक-सभा में उसके समर्थकों की संख्या उसके विरोधियों की संख्या से अधिक हो। इस प्रकार सन् १७४२ में वाल्पोल के मन्त्रित्व का अन्त हुआ।

(४) जॉन वेस्ली तथा मेथोडिस्ट दल

जॉन वेस्ली तथा मेथोडिस्ट दल—अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ में इँगलैंड में धर्म की बड़ी बुरी अवस्था थी। धार्मिक विषयों में लोगों की बहुत कम रुचि रह गई थी, और नगरों के लोग प्रायः भोग-विलास में ही जीवन व्यतीत करते थे। लोगों का यह विचार हो चला था कि धर्म एक व्यर्थ का बखेड़ा है और ईश्वरोपासना आदि के नाम पर लोग हँसते थे। ऐसे समय में लोगों को धर्म के पथ पर लाने का कार्य जॉन वेस्ली (John Wesley) ने किया। उसे सहायता देनेवालों में उसका भाई

चार्ल्स वेस्ली (Charles Wesley) तथा उसका मित्र जॉर्ज ह्वाइट-फ़ील्ड (George Whitefield) था। जॉन वेस्ली "अँगरेज़ी चर्च" (English Church) का एक पादरी था, जिसने ऑक्सफ़ोर्ड और तत्पश्चात् लन्दन में धार्मिक विषयों पर खुले मैदान व्याख्यान देना शुरू किया। थोड़े समय बाद "अँगरेज़ी चर्च" के सिद्धान्तों से कुछ मतभेद हो जाने के कारण उसे एक पृथक् संस्था स्थापित करनी पड़ी। वह नियमित रूप से जीवन व्यतीत करने की ओर विशेष ध्यान देता था; और इसलिए उसके अनुयायी मेथोडिस्ट (Methodist*) कहलाने लगे। लन्दन में पहली मेथोडिस्ट संस्था सन् १७३९ में स्थापित की गई थी।

मेथोडिस्ट दल का प्रभाव—मेथोडिस्ट दल के नियमित जीवन तथा उसके खुले मैदान के व्याख्यानों का देश पर बड़ा प्रभाव पड़ा। धर्म में फिर से लोगों की रुचि होने लगी और उनमें मनुष्य-मात्र की सेवा करने का भाव फैलने लगा। देश में बहुत-से अस्पताल तथा सेवक-

जॉन वेस्ली

मंडल स्थापित किये गये और निःस्वार्थ होकर समाज की सेवा करना एक उच्च आदर्श माना जाने लगा। दासत्व-निवारण, बन्दीगृह के सुधार

* Methodist शब्द का अर्थ है "नियमित रूप से जीवन व्यतीत करनेवाले"।

आदि को भी, जिनका आगे चलकर वर्णन किया जायगा, एक प्रकार से मेथोडिस्ट दल के प्रचार ही का परिणाम समझना चाहिए।

(५) आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध (१७४०-१७४८) (War of the Austrian Succession)

सन् १७४० में आस्ट्रिया के सम्राट् चार्ल्स षष्ठ की मृत्यु हुई। उसके कोई पुत्र न था; अत: उसने यह वसीयत की थी कि मेरे समस्त राज्य की उत्तराधिकारिणी मेरी पुत्री मेरिया थेरेसा (Maria Theressa) हो। एक स्त्री के राजत्वकाल में फ्रांस आदि आस-पास के राज्यों ने आस्ट्रिया का कुछ भाग दबा लेने का अच्छा अवसर समझा। जर्मनी की प्रशा (Prussia) नामक उन्नतिशील रियासत ने, जिसका शासक उस समय प्रसिद्ध राजा फ्रेडरिक (Frederick, the Great) था, आस्ट्रिया के एक सूबे सिलीशिया (Silisea) पर अधिकार जमा लिया। इँगलैंड की जनता ने मेरिया थेरेसा के प्रति बहुत सहानुभूति दिखाई; परन्तु वाल्पोल के शान्तिपूर्ण शासनकाल में इँगलैंड उसको सहायता न दे सका। वाल्पोल के पतन के बाद जॉर्ज द्वितीय स्वयं सेना लेकर जर्मनी पहुँचा और डेटिंजन (Dettingen) नामक स्थान पर उसने भारी विजय प्राप्त की। परन्तु कुछ दिनों बाद जॉर्ज द्वितीय के पुत्र ड्यूक आफ़ कंबरलैंड (Duke of Cumberland) को फ्रांस और प्रशा की सेना ने फान्टेनाव (Fontenoy) के युद्ध में बुरी तरह परास्त किया। अन्त में सन् १७४८ में एक्स ला चेपेल (Aix la Chapelle) की संधि हुई, जिसके अनुसार सबने मेरिया थेरेसा का उत्तराधिकार स्वीकृत कर लिया। फ्रांस ने इस युद्धकाल में यंग प्रिटेंडर को सहायता दी थी; और इसी सहायता के भरोसे सन् १७४५ के जेकोबाइट दल के विद्रोह (देखो पृष्ठ १९१) ने इतना भयंकर रूप धारण किया था। इस सन्धि के समय फ्रांस ने इँगलैंड में हनावर-वंश का उत्तराधिकार निश्चित

रूप से स्वीकृत कर लिया; और इसके बाद जेकोबाइट दल निराश होकर कुछ दिनों में छिन्न-भिन्न हो गया।

(६) विलियम पिट तथा सप्तवार्षिक युद्ध

अमेरिका और भारतवर्ष में अँगरेज़ तथा फ़ांसीसी—अठारहवीं शताब्दी में अँगरेज़ों और फ़ांसीसियों में व्यापार बढ़ाने तथा उपनिवेश स्थापित करने के लिए प्रतिद्वन्द्विता होने लगी। हम बतला चुके हैं कि अँगरेज़ों ने उत्तरी अमेरिका के पूर्वीय तट पर उपनिवेश स्थापित कर लिये थे (देखो पृष्ठ १७१–७२)। फ़ांसीसियों ने भी उत्तरी अमेरिका में उपनिवेश स्थापित किये थे। जिस प्रकार इँगलैंड से बहुत-से प्योरिटन तथा कैथेलिक, धार्मिक अत्याचारों के कारण, देश छोड़कर यहाँ आ बसे थे, उसी प्रकार फ़ांस से बहुत-से प्रोटेस्टेंट (Huge-nots) लूई चतुर्दश के अत्याचारों से बचने के लिए और बहुत-से कैथोलिक राजा की दी हुई सस्ती भूमि के लालच से अमेरिका में आ बसे थे। फ़ांसीसियों के उपनिवेश उत्तर में कैनेडा (Canada) तथा दक्षिण मे लूसीनिया (Louisinia) थे; और अब उन्होंने इन उपनिवेशों के मिलाने के आशय से बहुत-से दुर्ग बनाना आरम्भ किया। अँगरेज़ी उपनिवेश पूर्वीय समुद्र-तट तथा एलेघेनी पर्वतमाला के बीच में थे; और इन प्राकृतिक असुविधाओं के कारण उनकी उन्नति का मार्ग बन्द-सा जान पड़ता था।

भारतवर्ष में अँगरेज़ों और फ़ांसीसियों का, व्यापार के लिए, मुक़ाबला था। दोनों जातियों की व्यापारिक कोठियाँ पास-पास थीं और दोनों में दो बार युद्ध भी हो चुका था। पहला युद्ध "आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध" के काल में हुआ, परन्तु उससे किसी को कुछ लाभ न हुआ। दूसरे युद्ध में भारतवर्ष के दक्षिण के शासक भी सम्मिलित थे। उसमें अँगरेज़ों और फ़ांसीसियों को बराबर-बराबर लाभ रहा, और दक्षिण की कुछ रियासतों में अँगरेज़ों का और कुछ में फ़ांसीसियों का प्रभुत्व स्थापित हो गया।

सप्तवार्षिक युद्ध (१७५६–६३)—दोनों जातियों में व्यापार तथा उपनिवेश-सम्बन्धी प्रतिद्वन्द्विता बढ़ती ही जा रही थी; और इस कारण दोनों में युद्ध होना अनिवार्य्य-सा हो गया था। अमेरिका में

सन् १७५६ में उत्तरी अमेरिका

फ्रांसीसियों के दुर्ग बनते देखकर अँगरेज़ बहुत घबरा रहे थे। उन्होंने ड्यूकेन (Duquesne) नामक दुर्ग पर अधिकार जमाने के लिए जेनरल ब्रेडॉक (General Braddock) को भेजा, परन्तु यह प्रयत्न

विफल रहा और वह स्वयं मारा गया। तत्पश्चात् फ्रांसीसियों ने माइनार्का (Minorca) पर, जो उस समय अँगरेज़ों के अधीन था, आक्रमण किया। इस घटना से दोनों जातियों में स्पष्ट रूप से युद्ध ठन गया। इस युद्ध ने शीघ्र ही भयङ्कर रूप धारण किया। यह युद्ध पूरे सात वर्ष तक चलता रहा; और अमेरिका, योरप तथा भारतवर्ष में जहाँ कहीं ये दोनों जातियाँ थीं, इनमें ख़ूब युद्ध हुआ। इस युद्ध में "आस्ट्रिया के उत्तराधिकार" के युद्ध की दलबन्दी बदल गई। आस्ट्रिया ने फ्रांस का साथ दिया और प्रशा का प्रसिद्ध राजा फ्रेडरिक इँगलैंड की ओर रहा।

युद्ध के आरम्भ में अँगरेज़ों पर बड़ी आपत्तियाँ आईं। जहाज़ी अफ़सर बिंग (Admiral Byng) को माइनार्का की रक्षा के लिए भेजा गया; परन्तु वह बिना युद्ध किये ही डरकर भाग आया। इस कायरता के कारण अँगरेज़ी सरकार ने उसे गोली से मरवा डाला।

विलियम पिट (लार्ड चैथम)

विलियम पिट—ऐसे घोर संकट के काल में इँगलैंड को विलियम पिट (William Pitt) की योग्यता ने बचाया। पिट का जन्म २५ नवम्बर सन् १७०८ को हुआ था। उसका दादा टॉमस पिट भारतवर्ष में मद्रास का गवर्नर रह चुका था। पिट ने सेना में नौकरी शुरू की। लन्दन में रहने के कारण उसे पार्लिमेंट में भी सम्मिलित होने का अवसर मिल गया। वह भाषण देने में बड़ा कुशल था और वाल्पोल के मन्त्रित्वकाल में उसने उसकी नीति का बड़े ज़ोरों से विरोध किया था।

वह सच्चा देश-प्रेमी था। जनता उसका विश्वास करती थी और उसे Great Commoner (जनता का नेता) कहा करती थी।

सप्तवार्षिक युद्ध छिड़ने के समय न्यूकैसिल (Newcastle) इँगलैंड का प्रधान मन्त्री था। परन्तु वह युद्ध का संचालन भली भाँति न कर सका; और इसलिए उसने यही उचित समझा कि पिट को अपना सहकारी बना ले। इस प्रकार सन् १७५७ में पिट तथा न्यूकैसिल के "संयुक्त मन्त्रित्व" (Coalition Ministry) का आरम्भ हुआ। न्यूकैसिल लोगों को पद आदि का लोभ देकर पार्लिमेंट में मन्त्रि-मडल के समर्थकों की संख्या बढ़ाता था; और पिट ने "युद्ध-सचिव" (War Minister) होकर सप्तवार्षिक युद्ध के संचालन का भार लिया।

सप्तवार्षिक युद्ध में पिट की नीति—युद्ध के संचालन में पिट ने बड़ी बुद्धिमानी से काम लिया। उसने प्रशा के राजा फ्रेडरिक को धन तथा सेना की सहायता देना आरम्भ किया, जिससे वह फ्रांस के विरुद्ध अच्छी तरह युद्ध कर सके। इससे यही अभिप्राय था कि फ्रांस जर्मनी ही के युद्ध में इतना फँस जाय कि वह अमेरिका तथा भारतवर्ष को काफ़ी सेना आदि न भेज सके। पिट का कथन था—"हम लोग कैनेडा को जर्मनी में एल्ब नदी के तट पर जीतेंगे।" राजा फ्रेडरिक अपने समय का बड़ा योग्य शासक हुआ है। इँगलैंड से सहायता पाकर उसने फ्रांस को जर्मनी में इतना छकाया कि फ्रांस अन्य युद्धक्षेत्रों में अपनी पूरी शक्ति का प्रयोग न कर सका। पिट ने सप्तवार्षिक युद्ध के लिए योग्य नेता भी नियुक्त किये एक वर्ष पहले जहाँ अँगरेज़ संकट में पड़े हुए थे, वहाँ अब वे प्रत्येक क्षेत्र में जीतने लगे।

कैनेडा पर अँगरेजों का अधिकार—पिट ने जनरल वूल्फ़ (General Wolfe) को कैनेडा की राजधानी क्वेबेक (Quebec) पर अधिकार जमाने के लिए भेजा। वहाँ का फ्रांसीसी जनरल मांटकाम (General Montcalm) युद्ध से बचना चाहता था; और इस कारण वूल्फ़ को बहुत दिनों तक नगर का घेरा डाले पड़ा रहना पड़ा।

अन्त में वूल्फ़ ने सेंट लारेन्स नदी पार की और अब्राहम की पहाड़ी (Heights of Abraham) पर अँगरेज़ी और फ्रांसीसी सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। वूल्फ़ और मांटकाम दोनों रणक्षेत्र में मारे गये; परन्तु अँगरेज़ी सेना की अपेक्षा फ़्रांसीसियों की बहुत हानि हुई और क्येबेक पर अँगरेज़ों का अधिकार हो गया। कुछ ही दिनों पीछे कैनेडा का दूसरा प्रसिद्ध नगर मांटरीयल (Montreal) भी फ़्रांसीसियों के हाथ से निकल गया और इस प्रकार समस्त कैनेडा अँगरेज़ों के अधीन हो गया।

वूल्फ़

भारतवर्ष में फ़्रांस की शक्ति का अन्त—भारतवर्ष में भी अँगरेज़ों ने कई भारी विजय प्राप्त कीं। इसी समय राबर्ट क्लाइव (Robert Clive) ने बंगाल के नवाब को प्लासी (Plassey) के युद्ध में परास्त करके उत्तरी भारतवर्ष में अँगरेज़ी राज्य की नींव डाली। दक्षिण-भारत में अँगरेज़ों ने वांडवाश (Wandewash) के युद्ध में फ़्रांसीसियों को बुरी तरह नीचा दिखाया। कुछ दिनों पीछे भारतवर्ष की मुख्य फ़्रांसीसी कोठी पांडीचेरी पर भी अँगरेज़ों का अधिकार हो गया; और इस प्रकार भारतवर्ष में भी फ़्रांसीसियों की शक्ति का अन्त हुआ।
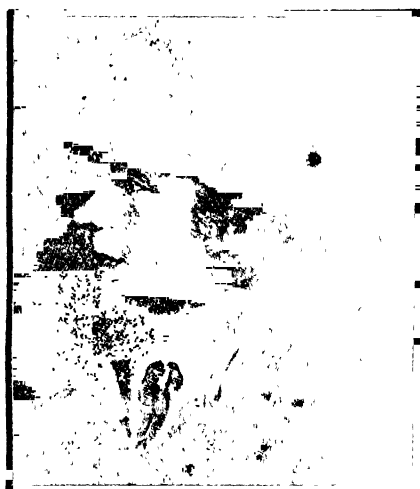
पिट का त्याग-पत्र—सन् १७६३ ई० में स्पेन ने फ़्रांस का साथ देना शुरू किया। पिट को पहले ही इसकी ख़बर मिल चुकी

थी और वह चाहता था कि शीघ्र ही स्पेन के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा कर दी जाय। परन्तु उसके सहकारी इससे सहमत न थे, इसलिए पिट ने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया। थोड़े ही दिनों पीछे न्यूकैसिल ने भी त्याग-पत्र दे दिया। और इस प्रकार इस "संयुक्त मन्त्रि-मंडल" का, जिसने इतनी योग्यता से सप्तवार्षिक युद्ध का संचालन किया था, अन्त हुआ। सन् १७६० में जॉज द्वितीय की मृत्यु हो चुकी थी और परवर्ती सम्राट् जॉर्ज तृतीय ने अपनी शक्ति बढ़ाने के आशय से अब टोरियो को मन्त्रि-मंडल में स्थान दिया। इस प्रकार पिट तथा न्यूकैसिल के संयुक्त मन्त्रित्व के समाप्त होने के साथ ही ह्विगदल की शक्ति का भी अन्त हो गया।

पेरिस की सन्धि (१७६३)—सन् १७६३ में पेरिस की सन्धि से सप्तवार्षिक युद्ध का अन्त हुआ। कैनेडा तथा उत्तरी अमेरिका के समस्त फ्रांसीसी उपनिवेशों पर अँगरेज़ों का अधिकार हो गया। इस युद्ध में सम्मिलित होने से स्पेन की भी बड़ी हानि हुई और अमेरिका में स्पेन का उपनिवेश फ्लोरिडा (Florida) भी अँगरेज़ों के अधीन हो गया। भारतवर्ष में पांडीचेरी इत्यादि फ्रांसीसियों की व्यापारिक कोठियाँ उनको लौटा दी गईं; परन्तु यह ठहरा लिया गया कि वे स्थान केवल व्यापार के काम में लाये जायँगे। वहाँ अधिक सैनिक रखने तथा दुर्ग आदि बनाने की पूर्णतया मनाही कर दी गई।

इस सन्धि से इँगलैंड की शक्ति योरप में ही नहीं बल्कि समस्त भूमंडल में बड़ी ज़बरदस्त हो गई। फ्रांसीसियों की शक्ति का अमेरिका तथा भारतवर्ष दोनों क्षेत्रों में अन्त हुआ। व्यापार बढ़ाने तथा उपनिवेश स्थापित करने की प्रतिद्वन्द्विता में अँगरेज़ों की ही विजय हुई और ब्रिटेन के वर्तमान काल के बड़े साम्राज्य के पूर्व चिह्न अब स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगे।

पिट की मृत्यु—पेरिस की सन्धि से पिट सन्तुष्ट न हुआ। वह चाहता था कि जो कुछ थोड़े बहुत अधिकार फ्रांस को अमेरिका तथा

भारतवर्ष में छोड़ दिये गये थे, वे भी ले लिये जायँ और फ्रांस की शक्ति का पूर्णतया अन्त कर दिया जाय। इस समय वह रोगग्रस्त था;
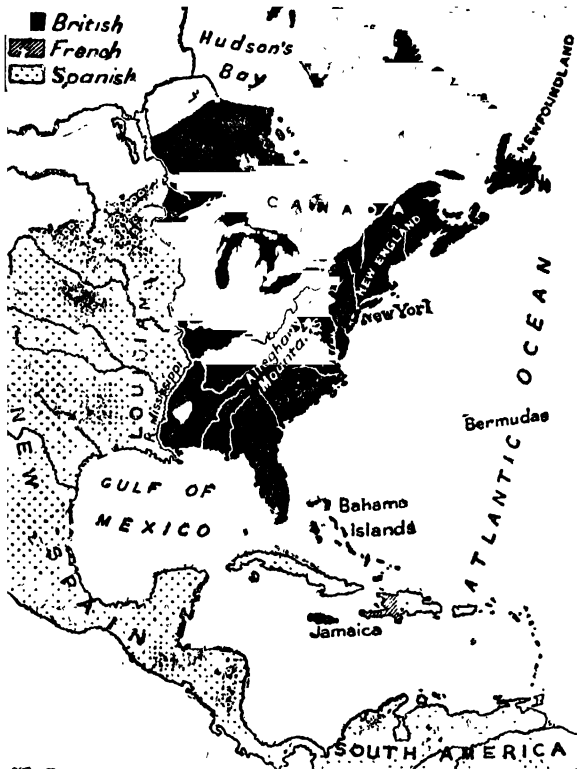
सप्तवार्षिक युद्ध के बाद उत्तरी अमेरिका

परन्तु इस सन्धि का समाचार पाते ही उसने लोक-सभा में आकर पूरे चार घंटे भाषण दिया था। जार्ज तृतीय के राजत्वकाल में पिट अर्ल आफ़ चैथेम (Earl of Chatham) बना दिया गया और सन् १७६६ में वह दूसरी बार मन्त्रि-मंडल का नेता बनाया गया। परन्तु इस समय उसका स्वास्थ्य ठीक न था, इसलिए उसे शीघ्र ही त्यागपत्र देना पड़ा।

सन् १७७८ में, सत्तर वर्ष की अवस्था में, यह योग्य राजनीतिज्ञ परलोक सिधारा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन १७१४—जॉर्ज प्रथम का राज्याभिषेक।
" १७१५—जेकोबाइट विद्रोह।
" १७१६—"सप्तवार्षिक नियम" (The Septennial Act)।
" १७२०—"दक्षिण सागर का बुलबुला" (The South Sea Bubble)।
" १७२१—वालपोल के मन्त्रित्व का आरम्भ।
" १७२७—जॉर्ज प्रथम की मृत्यु तथा जॉर्ज द्वितीय का राज्याभिषेक।
" १७३९—इँगलैंड में प्रथम मेथाडिस्ट संस्था।
" १७४२—वाल्पोल का पतन।
" १७४०-४८—"आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध" (War of the Austrian Succession)।
" १७४५—अन्तिम जेकोबाइट विद्रोह।
" १७५६-६३—"सप्तवार्षिक युद्ध" (The Seven Years War)।
" १७५७ ६१—पिट युद्ध-सचिव।
" १७६०—जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु।
" १७६६—पिट का पुनः मन्त्रित्व।
" १७७८—पिट की मृत्यु।

—

दूसरा परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय तथा अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध

जॉज तृतीय तथा स्वेच्छाचार की अभिलाषा—सन् १७६० में जॉर्ज द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पोता "जॉर्ज तृतीय" के नाम से राजा हुआ।

जॉर्ज तृतीय (१७६०-१८२०)

जॉर्ज द्वितीय के लड़के का पहले ही देहान्त हो चुका था। जॉर्ज तृतीय पहला हनोवरियन राजा था, जिसका जन्म तथा पालन-पोषण इँगलैंड ही में हुआ था। पहले दोनों जॉर्जों को अँगरेज़ी भाषा तथा इँगलैंड के राजनीतिक प्रश्नों को भले प्रकार न समझने के कारण, समस्त शासन-कार्य मन्त्रि-मंडल ही पर छोड़ देना पड़ा था। जॉर्ज तृतीय ने खोई हुई राजकीय शक्ति को पुनः प्राप्त करने की चेष्टा की; परन्तु पिछले पचास वर्ष में मन्त्रि-मंडल इतना काफ़ी शक्तिशाली हो चुका था कि उसके हाथ से शासनकार्य निकालना अब आसान काम न था। इसलिए जार्ज तृतीय ने अपने स्वेच्छाचार की अभिलाषा की पूर्ति का यह उपाय निकाला कि केवल साधारण योग्यता के मनुष्यों को मन्त्रि-मंडल में स्थान दिया जाय जिससे वह सुगमता से उन्हें अपने इच्छानुसार चला सके। इस नीति के हानिकारक परिणाम को पाठक शीघ्र ही देखेंगे।

टोरियों का मन्त्रि-मंडल में प्रवेश—जॉर्ज तृतीय ह्विग दलवालों से बहुत ही चिढ़ता था और उन्हें राजशक्ति का वैरी समझता था। उसने निश्चित किया कि स्वेच्छाचार स्थापित करने के लिए टोरियों ही को अपना विश्वासपात्र बनाना ठीक होगा। इससे पहले टोरी दलवाले, जेकोबाइट दल के पक्षपाती होने के कारण, हनोवर-वंश के शत्रु माने जाते थे। परन्तु जेकोबाइट दल अब टूट चुका था; इसलिए जोर्ज तृतीय को टोरियों से किसी प्रकार का भय न था। पिट तथा न्यूकैसिल के ह्विग मन्त्रि-मंडल के टूटने पर जार्ज ने टोरियों ही को शासनकार्य सुपुर्द करना चाहा; परन्तु लोक-सभा में टोरी दल की संख्या बढ़ाने में उसे पूरे दस वर्ष लग गये। सन् १७७० में जॉर्ज को अपने मन का सा लॉर्ड नार्थ (Lord North) नामक एक टोरी प्रधान मन्त्री मिल गया। नार्थ राजशक्ति का पूर्ण पक्षपाती था; और उसके मन्त्रित्व-काल में शासन-कार्य की बागडोर बहुत कुछ जार्ज तृतीय के हाथ में आ गई।

अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध

(War of the American Independence)

(१७७५-८३)

सप्तवार्षिक युद्ध के बाद अमेरिकन उपनिवेशों की दशा—जॉर्ज तृतीय तथा नार्थ ने शासन-कार्य में कई भूलें कीं; परन्तु उनकी सबसे बड़ी भूल यह थी कि वे अमेरिकन उपनिवेशों को सन्तुष्ट न रख सके। कहा जाता है कि "वूल्फ़ के क्वेबेक विजय करने के समय से वर्तमान संयुक्त अमेरिकन राज्य का इतिहास आरम्भ होता है।" सप्तवार्षिक युद्ध के बाद कैनेडा पर अँगरेज़ी सरकार का अधिकार हो जाने के कारण अमेरिका के पूर्वीय तट के अँगरेज़ी उपनिवेशों को फ्रांसीसियों का भय न रहा। इस कारण अब उन्हें इँगलैंड की सहायता की भी उतनी परवाह न रही; और अब वे अपने प्राचीन देश (Mother Country) का अनुचित व्यवहार कभी सहन न कर सकते थे। शासन-कार्य

में उन्हें शिकायत का अधिक अवसर न था। प्रत्येक उपनिवेश के लिए इँगलैंड की सरकार की ओर से गवर्नर नियुक्त होकर आता था जिसको उपनिवेशों की कौन्सिलों की सम्मति के अनुसार शासन करना होता था। परन्तु व्यापार के विषय में उपनिवेशों को कई प्रकार की असुविधायें थीं जिन्हें वे अनुचित समझते थे।

स्टाम्प एक्ट—सप्तवार्षिक युद्ध में अधिक व्यय हो जाने के कारण इँगलैंड की सरकार ने यह कहा कि अमेरिका की रक्षा के लिए जो सेना रखी जाती है, उसके व्यय का कुछ भार उपनिवेशों को भी उठाना चाहिए। इसी आशय से इँगलैंड की पार्लिमेंट ने स्टाम्प एक्ट (Stamp Act) पास किया, जिसके अनुसार अमेरिकावालों को क़ानूनी दस्तावेज़ों पर स्टाम्प लगाना आवश्यक हो गया। स्टाम्प की आमदनी से अमेरिकन सेना का तिहाई ख़र्च वसूल हो सकता था; और शेष दो तिहाई ख़र्च का भार इँगलैंड की सरकार स्वयं उठाने के लिए तैयार थी। अमेरिकावालों ने स्टाम्प एक्ट का बड़े ज़ोरों से विरोध किया और "प्रतिनिधि नहीं तो टैक्स भी नहीं"* का सिद्धान्त लेकर यह आन्दोलन आरम्भ किया कि इँगलैंड की पार्लिमेंट को, जिसमें अमेरिका से कोई प्रतिनिधि नहीं बुलाया जाता, अमेरिकन उपनिवेशों पर किसी प्रकार का कर लगाने का अधिकार नहीं है। यह आन्दोलन इतना बढ़ गया कि कुछ ही दिनों बाद पार्लिमेंट को स्टाम्प एक्ट रद करना पड़ा।

चाय पर महसूल—इसके बाद पार्लिमेंट ने अमेरिका को जानेवाली चाय आदि वस्तुओं पर कर लगा दिया। यह कर बहुत अधिक न था; परन्तु वही सिद्धान्त का प्रश्न था कि इँगलैंड की पार्लिमेंट का, जिसमें उपनिवेशों के प्रतिनिधि नहीं होते, लगाया हुआ कर सर्वथा अनुचित है। पार्लिमेंट ने अमेरिकावालों को सन्तुष्ट करने के आशय से चाय सस्ती करने का प्रबन्ध किया और ईस्ट इंडिया कम्पनी को अपने जहाज़ सीधे

* "No Taxation without Representation."

अमेरिका ले जाने की आज्ञा दे दी। परन्तु अमेरिकावालों ने प्रण कर लिया था कि इस प्रकार के महसूलों का पूर्णतया विरोध करेंगे; इसलिए जब ईस्ट इंडिया कम्पनी के जहाज़ बॉस्टन (Boston) बन्दरगाह पर आये, तब कुछ लोग अमेरिका के "लाल हब्शियों" का भेस बनाकर उन जहाज़ों में घुस पड़े। सारी चाय, जो सस्ती बिकने के लिए आई थी, समुद्र में फेंक दी गई और जहाज़ों में आग लगा दी गई।

युद्ध का प्रारम्भ—दुर्भाग्यवश इँगलैंड में इस समय विलियम पिट जैसा कोई योग्य राजनीतिज्ञ न था जो अमेरिकन उपनिवेशों का आन्दोलन शान्त कर सकता। लार्ड नॉर्थ बिलकुल राजा के कहने पर चलता था; और जॉर्ज तृतीय का मत था—"उपनिवेशों के ऐसे आन्दोलन के समय दबने का यही अर्थ हो सकता है कि साम्राज्य से हाथ धो बैठा जाय।" इँगलैंड की सरकार ने सेना भेजकर बलपूर्वक आन्दोलन दबाना चाहा। यह देखकर अमेरिकावाले भी अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए पूर्ण रूप से तत्पर हो गये। इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध करने के लिए एक सेना तैयार की गई, जिसका सेनापति वर्तमान संयुक्त अमेरिकन राज्य का जन्मदाता जॉर्ज वाशिंग्टन (George Washington) था। इस आन्दोलन में कैनेडा को मिलाने का प्रयत्न विफल रहा; परन्तु पूर्वीय तट के सब अँगरेज़ी उपनिवेश एक हो गये और उन्होंने फ़िलाडेल्फ़िया (Philadelphia) नगर में अपने प्रतिनिधियों की एक कांग्रेस
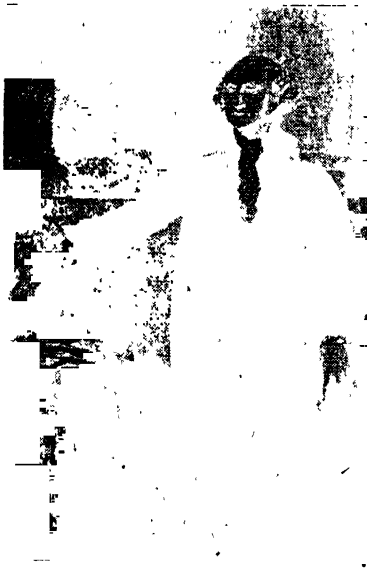
जॉर्ज वाशिंग्टन

करके यह घोषणा कर दी कि अब अमेरिका के अँगरेज़ी उपनिवेश स्वतन्त्र हैं और जॉर्ज तृतीय के अधीन नहीं हैं। यह "स्वतन्त्रता-घोषणा" (Declaration of Independence) ४ जुलाई*

सन् १७८३ में अमेरिका के संयुक्त राज्य

* इस घटना की स्मृति के लिए प्रत्येक वर्ष ४ जुलाई को "संयुक्त अमेरिकन राज्य" में बड़े समारोह से उत्सव मनाया जाता है।

सन् १७७६ को की गई; और इसी तिथि से वर्तमान "संयुक्त अमेरिकन राज्य" (United States of America) का प्रारम्भ समझना चाहिए।

युद्ध की मुख्य घटनायें—अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध (War of the American Independence) लगभग आठ वर्ष तक चला। दो वर्ष तक यह नहीं कहा जा सकता था कि किस ओर की विजय होगी। परन्तु सन् १७७७ में इँगलैंड के जनरल बरगाऊन (General Burgoyne) की सेरटोगा (Saratoga) नामक स्थान पर बुरी तरह पराजय हुई। इसके बाद इँगलैंड के वैरियों—स्पेन और फ्रांस—ने यह सोचा कि इँगलैंड की शक्ति को धक्का पहुँचाने का यह अच्छा अवसर है। उन्होंने अमेरिकावालों की सहायता करना शुरू किया। इँगलैंड बड़े संकट में पड़ गया और सन् १७८१ में लॉर्ड कॉर्नवालिस (Lord Cornwallis) के, जो बाद में भारतवर्ष का दूसरा गवर्नर-जनरल हुआ, यॉर्क टाउन (York Town) नामक स्थान पर परास्त होने से इँगलैंड को अब सफलता की बिलकुल आशा न रही।

वार्शेल्ज़ की सन्धि (१७८३) (Peace of Versailles)—सन् १७८३ में वार्शेल्ज़ की सन्धि के अनुसार इँगलैंड को अमेरिका के पूर्वीय तट के उपनिवेशों की स्वतन्त्रता स्वीकृत कर लेनी पड़ी। अब अमेरिका में केवल कैनेडा (Canada), न्यूफ़ाउंडलैंड (Newfoundland) तथा नवा स्कोशिया (Nova Scotia) इँगलैंड के अधीन रह गये और पूर्वीय तट के अन्य उपनिवेशों में "संयुक्त अमेरिकन राज्य" (United States of America) नाम का प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। धीरे-धीरे इस "संयुक्त-राज्य" के निवासियों की एक पृथक् जाति बन गई और वे अमेरिकन कहलाने लगे। यही अमेरिकन जाति, जिसका जन्म हुए केवल डेढ़ सौ वर्ष हुए हैं, आजकल इतनी उन्नतिशील हो रही है और संसार की प्रथम श्रेणी की जातियों में गिनी जाती है।

इस प्रकार जॉर्ज तृतीय और लॉर्ड नार्थ के दूरदर्शी राजनीतिज्ञ न होने के कारण अमेरिका के अँगरेज़ी उपनिवेश सदा के लिए इँगलैंड के हाथ से निकल गये।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १७६०—जॉर्ज तृतीय का राज्याभिषेक।
,, १७६५—स्टाम्प एक्ट।
,, १७६७—चाय पर महसूल।
,, १७७०-८२—लार्ड नार्थ का मन्त्रित्व।
,, १७७३—चाय के जहाज़ों का बॉस्टन बन्दरगाह में ध्वंस।
,, १७७५--८३—अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध।
जुलाई सन् १७७६—अमेरिकन उपनिवेशों की "स्वतन्त्रता-घोषणा"।
सन् १७७७—बरगाऊन का सेरेटोगा नामक स्थान पर परास्त होना।
,, १७८१—कार्नवॉलिस का यॉर्क टाउन नामक स्थान पर परास्त होना।
,, १७८३—वार्सेल्ज़ की सन्धि तथा "अमेरिकन संयुक्त राज्य" की स्वतन्त्रता का स्वीकृत होना।

तीसरा परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय तथा छोटा पिट

(फ्रांस की राज्यक्रांति तथा आयरलैंड से संयोग)

(१) छोटा पिट तथा फ्रांस को राज्यक्रांति का युद्ध

छोटे पिट का मन्त्रित्व—(१७८३-१८०१) लार्ड नार्थ ने "अमेरिका की स्वतन्त्रता के युद्ध" के समाप्त होने के एक वर्ष पहले ही त्याग-पत्र दे दिया था। परन्तु थोड़े ही दिनों बाद नये ह्विग दल के नेता जेम्स फ़ाक्स (James Fox) से मिलकर वह फिर अधिकारारूढ़ हो गया। नार्थ तथा फ़ॉक्स का संयुक्त "मन्त्रि-मंडल" (The Coalition Ministry) शासन-कार्य का संचालन भली भाँति न कर सका। इसलिए सन् १७८३ में जार्ज तृतीय ने विलियम पिट को प्रधान मन्त्री बनाया। विलि-यम पिट के पिता का भी नाम पिट ही था, जिसके योग्य शासन तथा सप्तवार्षिक युद्ध की नीति की सफलता के विषय में हम पहले लिख आये हैं। पिता और पुत्र के नामों में पहचान करने के लिए पिता को "बड़ा पिट"

छोटा पिट

(Pitt, the Elder) और पुत्र को "छोटा पिट" (Pitt, the Younger) कहते हैं। प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्त होने के समय छोटे पिट की अवस्था कुल २४ वर्ष की थी। उस समय पार्लिमेंट में उसके समर्थकों की संख्या भी अधिक न थी। परन्तु पिट ने अपने कार्य में इतनी योग्यता दिखाई कि अगले चुनाव में उसके समर्थकों की संख्या एकदम बढ़ गई और सन् १८०१ तक वह राजा तथा जनता दोनों का विश्वासपात्र बना रहा। जॉर्ज तृतीय ने शासन-कार्य बिलकुल पिट के भरोसे छोड़ दिया; और इसलिए पिट के प्रधान मन्त्री होने के समय से जॉर्ज तृतीय के "स्वेच्छाचारी राज्य" (Personal Rule)* का अन्त समझना चाहिए।

पिट तथा सुधार के प्रस्ताव—पिट की शासन-नीति बड़ी उदार थी और उसने सुधार के कई प्रस्ताव उपस्थित किये। वह ऐडम स्मिथ की प्रसिद्ध पुस्तक "Wealth of Nations" के "स्वतन्त्र व्यापार" (Free Trade) के सिद्धान्तों को मानता था। उसने फ्रांस से एक व्यापारिक सन्धि की, जिसके अनुसार दोनों देशों ने एक दूसरे की व्यापारिक वस्तुओं को अपने देश में बिना कर दिये ही आने का सुभीता कर दिया। पिट ने लोक-सभा के चुनाव की परिपाटी में भी सुधार करना चाहा, परन्तु इस प्रयत्न में उसे सफलता न हुई। पिट "दास-व्यापार" को हटाने का भी पक्षपाती था; परन्तु अमीर लोगों के विरोध के कारण वह इस सम्बन्ध में भी कुछ न कर सका। पिट ही के शासन-काल में "पिट्स इंडिया एक्ट" (१७८४) (Pitt's India Act) स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार ईस्ट इंडिया कम्पनी के कार्यों की देख-भाल करने के लिए छः सदस्यों की एक समिति (Board of Control) स्थापित की गई। भारतवर्ष के ब्रिटिश राज्य की बागडोर सन् १८५८ तक इसी समिति के हाथ में रही।

---

* देखो पृष्ठ २०९।

पिट को अपने सुधार के कार्य में पूर्ण सफलता न मिलने का यही कारण था कि देश अभी ऐसे बड़े-बड़े सुधारों के लिए तैयार न था।

फ्रांस की "राज्यक्रान्ति"—इसी समय योरप में "फ्रांस की राज्यक्रान्ति" (The French Revolution) नामक एक प्रसिद्ध घटना के कारण पिट के सुधार का कार्य बिलकुल ही रुक गया। फ्रांस की सरकार पूर्णतया स्वेच्छाचारी थी; और शासन-कार्य कुछ थोड़े से दरबारियों के हाथ में था जो जनता के हित की ओर लेशमात्र भी ध्यान न देते थे। कर बड़े ही अनुचित ढङ्ग से लगाये जाते थे। ऊँची श्रेणी के लोगों से कर न लिया जाता था और उसका सारा भार बेचारी साधारण जनता पर पड़ता था। दो प्रसिद्ध लेखकों—रूसो (Rousseau) और वॉलटायर (Voltaire)—ने अपने ज़ोरदार लेखों में शासन-प्रणाली की त्रुटियों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया। इसी समय "अमेरिका की स्वतंत्रता के युद्ध" की सफलता देखकर फ्रांस की जनता में अपने देश में स्वतंत्रता स्थापित करने का उत्साह बढ़ने लगा।

सन् १७८९ में धन की कमी के कारण फ्रांस का राजा लूई सोलहवाँ (Louis XVI) देश की प्राचीन प्रतिनिधि-सभा (States General) को, जिसकी पौने दो सौ वर्ष से कोई बैठक न हुई थी, बुलाने के लिए बाध्य हुआ। देश में उत्तेजना फैली ही हुई थी। इस प्रतिनिधि-सभा ने बड़े जोश से शासन-प्रणाली के सुधार का कार्य आरम्भ कर दिया और देश में "नियमानुमोदित शासन" की स्थापना करने की चेष्टा की। परन्तु शीघ्र ही यह विदित होने लगा कि राजा तथा उसके दरबारी पग पग पर बाधा डालने का प्रयत्न करते हैं। यह देखकर जनता का जोश उबल पड़ा और उत्तेजित देशवासियों ने सरकारी दफ़्तरों इत्यादि को लूटना-जलाना शुरू कर दिया। १४ जुलाई सन् १७८९ को कुछ लोगों ने जाकर फ्रांस के प्रसिद्ध बन्दीगृह बैस्टील (Bastille) को तोड़ डाला और उसके क़ैदियों को मुक्त कर दिया। ऐसी घटनायें देखकर लूई सोलहवाँ राजधानी छोड़कर भाग निकला, परन्तु थोड़ी ही दूर जाने के बाद

लोग उसे बलपूर्वक वापिस ले आये। धीरे-धीरे जनता में यह विचार फैलने लगा कि राजा के जीवित रहते "नियमानुमोदित शासन" की स्थापना असम्भव है। एक दूसरी प्रतिनिधि-सभा (National Convention) बुलाई गई, जिसके आज्ञानुसार २१ जनवरी सन् १७९३ को राजा लूई सोलहवें को फाँसी दे दी गई और कुछ ही मास पीछे उसकी रानी की भी यही दशा हुई।

इसके बाद फ्रांस में "प्रजातन्त्र राज्य" (Republic) स्थापित हुआ जिसमें वास्तविक अधिकार उन्हीं नेताओं के हाथ में रहा जिन्होंने इस "राज्यविप्लव" में मुख्य भाग लिया था। "प्रजातन्त्र राज्य" के अधिकारियों ने अपनी स्थिति पुष्ट करने के लिए अपने विरोधियों को चुन-चुनकर निहत करना शुरू किया और जिन लोगों के विषय में लेशमात्र भी यह सन्देह था कि वे राजपक्ष के समर्थक हैं उन सबको फाँसी दे दी गई। फ्रांस मे कई वर्ष तक इसी प्रकार भीषण हत्याकांड होते रहे और "स्वतन्त्रता" के नाम पर इतना रक्तपात हुआ कि नया शासन "भयंकर शासन" (Reign of Terror) के नाम से पुकारा जाने लगा।

इँगलैंड के राजनीतिज्ञों की सम्मतियाँ—पहले इँगलैंड-निवासियों को "फ्रांस की राज्यक्रांति" के प्रति पूर्ण सहानुभूति थी। उन्होंने समझा था कि फ्रांसवाले भी इँगलैंड की भाँति "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) की स्थापना के लिए आन्दोलन कर रहे हैं। ह्विग दल ने हृदय से "फ्रांस की राज्यक्रांति" का स्वागत किया और उसके नेता फ़ॉक्स (Fox) ने फ्रांस की घटनाओं की खूब प्रशंसा की। परन्तु धीरे-धीरे इँगलैंड-निवासियों को यह विदित होने लगा कि फ्रांस में स्वतन्त्रता के नाम पर रक्त की धारा बहाई जा रही है और बहुत से निर्दोष नागरिक नित्य स्वतन्त्रता देवी की भेंट चढ़ाये जाते हैं। इँगलैंड की "गौरव-पूर्ण राज्यक्रांति" (Glorious Revolution) इससे बिलकुल अलग ढङ्ग की थी। उससे नियमानुमोदित शासन की भी भली भाँति स्थापना हो गई थी और उसमें रक्तपात का

नाम भी न था। फ्रांस के हत्याकांडों का समाचार पाकर इँगलैंड के राजनीतिज्ञों की सम्मति बदलने लगी और वे फ्रांस के "राज्यविप्लव के पक्षपातियों के "स्वतन्त्रता के समर्थक" के स्थान पर अत्याचारी, हत्यारे तथा देश की शान्ति के वैरी" समझने लगे। इसी समय बर्क (Burke) ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "Reflections on the French Revolution" प्रकाशित की, जिसमें उसने फ्रांस की राज्यक्रान्ति के दोष भली भाँति दिखलाये।

"फ्रांस की राज्यक्रान्ति" का पिट की शासन-नीति पर प्रभाव—"फ्रांस की राज्यक्रान्ति" के काल में पिट को भी अपनी शासन-नीति बदलनी पड़ी। पहले उसका विचार था कि फ्रांस की घटनाओं का अन्य देशों पर कुछ प्रभाव न पड़ेगा। परन्तु जब उसने देखा कि फ्रांस के क्रान्तिकारी अन्य देशों में भी अपने विचार फैलाने का प्रयत्न कर रहे हैं, तो उसे इँगलैंड के बचाने की फ़िक्र पड़ी। उसने अपनी उदार शासन-नीति छोड़ दी और सुधार आदि के प्रश्नों का कुछ काल के लिए नाम तक न लिया। "स्वतन्त्रता-नियम" (Habeas Corpus Act) स्थगित कर दिया गया और इँगलैंड में राज्यविप्लव के सिद्धान्तों का प्रचार करनेवालों को बन्दीगृह भेज दिया गया। बहुत-सी राजनीतिक मंडलियाँ तोड़ दी गई। जिन विदेशियों के विषय में कुछ भी सन्देह हुआ, उन्हें इँगलैंड से निकाल दिया गया। इन सब बातों का यही आशय था कि कहीं राज्यविप्लव के सिद्धान्त इँगलैंड में भी न फैल जायँ, जिससे यहाँ भी फ्रांस के से हत्याकांड होने लगें।

"फ्रांस की राज्यक्रान्ति का युद्ध" (१७९३–१८०२)—फ्रांस के नये प्रजातन्त्र राज्य ने यह घोषणा कर दी कि जो देश राजकीय शासन हटाकर स्वतन्त्रता स्थापित करने का प्रयत्न करेंगे, उन्हें पूर्ण सहायता दी जायगी। इस घोषणा से योरप के समस्त राज्यों में बड़ी हलचल मची। परन्तु पिट अभी अपनी "शान्तिप्रिय नीति" पर दृढ़ रहा। थोड़े ही दिनों में फ्रांसीसियों ने बेलजियम पर अपना अधिकार जमा लिया

और इस प्रकार अपने देश की सीमा राइन नदी के मुहाने तक बढ़ा ली। इससे इंगलैंड की स्थिति को बड़ा भय था; परन्तु पिट अब भी युद्ध के झगड़े से बचना ही चाहता था। इसी समय फ्रांस ने स्वयं इँगलैंड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी; और इसलिए पिट को युद्ध करना ही पड़ा। इस प्रकार एक भयङ्कर युद्ध आरम्भ हुआ जो "फ्रांस की राज्य-क्रान्ति का युद्ध" (French Revolutionary War) कहलाता है।

"प्रथम संघ की विफलता"—पिट ने फ्रांस के विरुद्ध युद्ध करने के लिए हॉलैंड, आस्ट्रिया, प्रशा तथा स्पेन का "संघ" (Coalition) बनाया। परन्तु इतने राज्य कभी मिलकर कार्य न कर सकते थे। आपस की फूट तथा फ्रासीसियों की विजय के कारण यह "सघ" थोड़े ही दिनों में टूट गया और फ्रास का मुक़ाबला करने के लिए इँगलैंड बिलकुल अकेला रह गया।

नेपोलियन की उन्नति—इसी समय फ्रांस का प्रसिद्ध जेनरल नेपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) बहुत महत्त्व-पूर्ण विजय प्राप्त, कर रहा था। वह सेना के एक छोटे पद से बढ़कर अपनी योग्यता के कारण बराबर उन्नति करता गया। धीरे-धीरे उसका यश इतना फैल गया कि वह फ्रांस के "प्रजातन्त्र राज्य" का सर्वश्रेष्ठ सैनिक अफ़सर माना जाने लगा। जेनरल नेपोलियन फ्रास से भारी सेना लेकर रवाना हुआ और सबसे पहले उसने आस्ट्रियावालों को निकालकर इटली (Italy) पर अपना अधिकार जमाया। इसके बाद रूमसागर में माल्टा (Malta) को विजय करता हुआ वह मिस्र देश (Egypt) में पहुँचा और शीघ्र ही मिस्र को भी जीतकर वहाँ उसने अपना अधिकार जमा लिया। इसके बाद नेपोलियन का यह इरादा था कि आगे बढ़कर एशिया माइनर, फ़ारस, अफ़ग़ानिस्तान, भारतवर्ष आदि जीतकर समस्त पूर्वीय देशों में फ्रांस के प्रजातंत्र राज्य का आधिपत्य स्थापित किया जाय।

नाइल का युद्ध (१७९८)—इस समय ब्रिटेन की स्थिति बड़ी नाज़ुक थी; परन्तु प्रसिद्ध जहाज़ी अफ़सर नेल्सन (Admiral

Nelson) की योग्यता ने ब्रिटिश जाति को संकट से बचा लिया। नेपोलियन के मिस्र देश जीत लेने का समाचार पाते ही नेल्सन एक अँगरेज़ी जहाज़ी बेड़ा लेकर रवाना हुआ; और मिस्र पहुँचकर नाइल (Nile) नदी के मुहाने पर उसने जल-युद्ध में फ़्रांसीसियों को पूर्णतया परास्त किया। नेल्सन को इस विजय से मिस्र में फ़्रांसीसियों की शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा और उनके समस्त पूर्व को जीतने के मन्सूबे टूट गये। रूम सागर में अँगरेज़ों की शक्ति प्रधान हो गई और नेपोलियन आगे बढ़ने का इरादा छोड़कर फ़्रांस लौट गया।
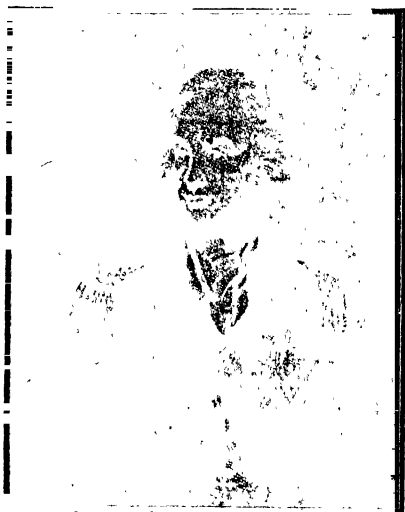
नेल्सन

फ़्रांस के विरुद्ध "द्वितीय संघ"—फ़्रांस लौटने पर नेपोलियन वहाँ के प्रजातन्त्र राज्य का "संरक्षक" (First Consul) नियत हुआ और इस समय से फ़्रांस के शासन का वास्तविक संचालन उसी के हाथ में आ गया। फ़्रांस का मुक़ाबला करने के लिए इँगलैंड ने दूसरी बार कई राज्यों का "संघ" बनाया; परन्तु "प्रथम संघ" की भाँति यह "द्वितीय संघ" (Second Coalition) भी शीघ्र ही टूट गया और इँगलैंड फिर अकेला रह गया। उसी समय नेल्सन ने डेन्मार्क देश में कोपेन्हेगेन (Copenhagen) के जलयुद्ध में भारी विजय प्राप्त की और इस कारण इँगलैंड पर कोई आपत्ति न आ सकी।

एमीन्स की सन्धि १८०२—फ़्रांस तथा इँगलैंड दोनों युद्ध करते करते थक गये थे; इसलिए सन् १८०२ में एमीन्स की सन्धि (Peace of Amiens) की गई। इसमें कोई विशेष बात तय नहीं हुई। दोनों देश जानते थे कि इस संधि के अधिक काल तक ठहरने की सम्भावना नहीं है। इस संधि का समाचार इँगलैंड पहुँचने पर शेरीडन (Sheridan) ने कहा था—"इस संधि से दोनों ओरवाले प्रसन्न हैं क्योंकि कुछ काल के लिए युद्ध रुक गया, परन्तु किसी के लिए अभिमान करने का अवसर नहीं है।" पाठक पढ़ेंगे कि एमीन्स की संधि के थोड़े ही दिनों बाद इँगलैंड और फ़्रांस में फिर भयंकर युद्ध छिड़ गया।

(२) छोटा पिट तथा आयरलैंड से संयोग

आयरलैंड की दशा—"फ़्रांस की राज्यक्रान्ति के युद्ध" के अतिरिक्त पिट के शासनकाल में दूसरी बड़ी घटना यह हुई कि आयरलैंड भी इँगलैंड तथा स्काटलैंड के संयुक्त राज्यों में सम्मिलित हो गया। आयरलैंड के निवासियों को इस समय बहुत-सी असुविधायें थीं। हेनरी सप्तम के राजत्वकाल के "पायनिंग्स नियम" (Poyning's Act) के अनुसार इँगलैंड की पार्लिमेंट की स्वीकृति के बिना आयरलैंड की पार्लिमेंट कोई नियम न बना सकती थी। इस प्रकार अपनी पृथक् पार्लिमेंट होने पर भी आयरलैंड का शासन वास्तव में पूर्णतया इँगलैंड ही के हाथ में था। इँगलैंडवाले आयरलैंड की कैथोलिक जनता से घृणा करते थे और उसे दबाने के लिए बहुत-से अनुचित नियम बने हुए थे। कैथोलिक लोग भूमिपति नहीं हो सकते थे और उनको पार्लिमेंट में तथा सरकारी पदों पर स्थान न मिल सकता था। आयरलैंडवालों को बहुत-सी व्यापारिक असुविधायें भी थीं और वहाँ के किसानों को पेट भर अन्न मिलना भी दुर्लभ था।

ग्रेटन तथा आयरलैंड की पार्लिमेंट की स्वतन्त्रता—"अमेरिकन स्वतन्त्रता के युद्ध" के काल में आयरलैंडवालों ने भी ग्रेटन (Grattan)

के नेतृत्व में अपनी स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन करना शुरू किया। इँगलैंड की सरकार के इस समय यह भय था कि कहीं आयरलैंड-वाले अन्य राज्यों से मिलकर विद्रोह न ठान दें। इसलिए "पायनिग्स नियम" हटाकर आयरलैंड की पार्लिमेंट के स्वतन्त्रतापूर्वक नियम बनाने की आज्ञा दे दी गई। परन्तु आयरलैंड की कैथोलिक जनता केवल इतने से कभी संतुष्ट न हो सकती थी। कैथोलिकों के तो पार्लिमेंट में स्थान पाने की भी मनाही थी; इसलिए आयरलैंड की पार्लिमेंट की स्वतन्त्रता से उनको कुछ भी लाभ न हुआ।

यूनाइटेड आइरिशमैन तथा सन् १७९८ का विद्रोह—"फ्रांस की राज्यक्रान्ति" का समाचार पाकर आयरलैंडवालों का भी उत्साह बढ़ा। वूल्फ़ टोन (Wolfe Tone) के नेतृत्व में प्रोटेस्टेंट तथा कैथोलिक दोनों धार्मिक दलों ने मिलकर यूनाइटेड आइरिशमैन (United Irish Men) नामक एक संस्था स्थापित की। इस संस्था का यही उद्देश्य था कि आयरलैंड के स्वतन्त्र बनाने के लिए पूर्ण दृढ़ता से आन्दोलन किया जाय। सन् १७९८ में फ्रांसीसियों की सहायता के भरोसे आयरलैंडवालों ने विद्रोह ठान दिया; परन्तु वह विद्रोह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया; और विद्रोहियों का दल विनेगर हिल (Vinegar Hill) के युद्ध में बुरी तरह परास्त हुआ।

पिट तथा आयरलैंड से संयोग (१८००)—ऐसी अवस्था में पिट ने समझ लिया कि आयरलैंड में शान्ति स्थापित करने का एक-मात्र उपाय यही हो सकता है कि आयरलैंड के भी इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड के संयुक्त-राज्य में मिला लिया जाय। आयरलैंडवालों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया; परन्तु जब पिट ने यह वचन दिया कि आयरलैंड के कैथोलिकों को सब प्रकार की सुविधायें दे दी जायँगी, तब आयरलैंड की पार्लिमेंट ने "संयुक्त-राज्य का प्रस्ताव" (Act of Union) स्वीकार कर लिया। उसके अनुसार इँगलैंड, स्कॉटलैंड तथा आयरलैंड एक संयुक्त-राज्य में सम्मिलित हो गये और तीनों देशों की एक ही पार्लिमेंट हो गई,

जिसमें आयरलैंड से चार बड़े पादरी तथा २८ सदस्य लार्ड-सभा के लिए और १०० प्रतिनिधि लोक सभा के लिए बुलाना निश्चित हुआ।

कैथॉलिकों के उद्धार का प्रश्न तथा पिट का त्यागपत्र—अब पिट ने अपने वचन के अनुसार आयरलैंड के कैथोलिकों को सुविधायें देने का प्रस्ताव उपस्थित किया। परन्तु जॉर्ज तृतीय ने उसे स्वीकार न किया। राजा का कहना था कि मैंने राज्याभिषेक के समय प्रोटेस्टेंट चर्च की रक्षा करने की शपथ खाई है और इस प्रस्ताव के मानने से मेरी वह शपथ टूट जायगी। इस पर पिट ने तुरन्त त्यागपत्र दे दिया और इस प्रकार आयरलैंड को सन्तुष्ट करने का प्रस्ताव अधूरा रह गया। आयर-लैंड में अधिकांश कैथोलिकों ही की बस्ती है, इस कारण कैथालिकों को सुविधाये मिले बिना आयरलैंड में कभी शान्ति स्थापित न हो सकती थी। "स्कॉटलैंड का संयोग" सफल हुआ था, परन्तु "आयरलैंड के संयोग" से देशवासी सन्तुष्ट न हो सके; और इस कारण आयरलैंड का राजनीतिक आन्दोलन बराबर जारी रहा।

पिट का द्वितीय मन्त्रिमंडल तथा पिट की मृत्यु—पिट ने एमीन्स की सन्धि के एक वर्ष पहले अपने पद से त्यागपत्र दे दिया था। परन्तु जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा, फ्रांस और इँगलेंड में थोड़े ही दिन बाद फिर भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया; और इसलिए जॉर्ज तृतीय को पिट जैसे योग्य राजनीतिज्ञ की फिर आवश्यकता पड़ी। सन् १८०४ में पिट दूसरी बार प्रधान मन्त्री हुआ; परन्तु इस समय उसकी वृद्धावस्था थी और उसका स्वास्थ्य भी ठीक न था। उसके "द्वितीय मन्त्रि-मंडल" के काल में इँगलैंड ने ट्राफ़लगर (Trafalgar) की प्रसिद्ध विजय प्राप्त की; परन्तु इसके थोड़े ही दिनों बाद जनवरी सन् १८०६ में यह प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ परलोक सिधारा।

पिट की नीति की समालोचना—पिट बहुत-से सुधार करना चाहता था; परन्तु "फ्रांस की राज्यक्रान्ति" के कारण उसको अपनी शासन-नीति बदलनी पड़ी थी। "युद्ध-सचिव" (War Minister)

के कार्य में वह अपने पिता की भाँति योग्य न था। बड़े पिट की नीति सप्तवार्षिक युद्ध में पूर्णतया सफल रही थी; परन्तु छोटे पिट के फ्रांस के विरुद्ध बनाये हुए "संघ" शीघ्र ही टूट जाते थे। पिट "फ्रांस की राज्य-क्रान्ति" भली भाँति न समझ सका; और युद्ध के संचालन के लिए भी वह योग्य अफ़सर नियुक्त न कर सका। परन्तु फिर भी यह मानना पड़ेगा कि यह पिट ही की योग्यता का परिणाम था कि ऐसे विकट समय में भी इँगलड पर कोई आपत्ति न आई; और "फ्रांस की राज-क्रान्ति" के काल में, जब कि योरप के अन्य राज्यों में हलचल मची हुई थी, इँगलैंड में शान्ति बनी रही। रहा आयरलैंड का प्रश्न, सो उसके विषय में पिट की नीति बहुत उदार थी। और यदि उसका कैथोलिकों को सुविधायें देने का प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया जाता, तो आयरलैंड की जटिल समस्या भी हल हो जाती।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १७८२—आयरलैंड की पार्लिमेंट की स्वतन्त्रता।
,, १७८३—छोटे पिट के मन्त्रित्व का प्रारम्भ।
,, १७८९—"फ्रांस की राज्यक्रांति" का प्रारम्भ।
,, १७९३—"फ्रांस की राज्यक्रांति के युद्ध" का प्रारम्भ।
,, १७९८—नेल्सन की नाइल की विजय।
,, १८००—इँगलैंड और आयरलैंड का संयोग।
,, १८०१—नेल्सन की कोपेन्हेगेन की विजय।
,, ,, —पिट का पद-त्याग।
,, १८०२—एमीन्स की सन्धि।
,, १८०४-१८०६—पिट का द्वितीय मन्त्रि-मंडल।
,, १८०६—पिट की मृत्यु।

चौथा परिच्छेद

जॉर्ज तृतीय तथा नेपोलियन से युद्ध

नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध (१८०३-१८१५)—एमीन्स की सन्धि अधिक काल तक स्थायी न रही। फ्रांस के प्रजातन्त्र राज्य का सरक्षक (First Consul) नेपोलियन बराबर अपनी शक्ति बढ़ा रहा था। सन्धि के होते हुए भी उसने योरप के कई राज्यों पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया। इँगलैंड ने सन्धि के समय माल्टा (Malta) ख़ाली करना स्वीकृत कर लिया था; परन्तु नेपोलियन की बढ़ती हुई शक्ति से समस्त योरप को भय था, इसलिए इँगलैंड के लिए रूमसागर में एक स्थान अपने अधिकार में रखना आवश्यक हो गया। ऐसी अवस्था में इँगलैंड ने माल्टा ख़ाली करने से इनकार कर दिया। इस प्रश्न पर इँगलैंड और फ्रांस में फिर भयंकर युद्ध छिड़ गया।

इँगलैंड पर आक्रमण का निष्फल प्रयत्न—नेपोलियन ने स्पेन को अपनी ओर मिला लिया और फ्रांस तथा स्पेन के जहाज़ी बेड़ों को मिलाकर इँगलैंड पर आक्रमण करने का प्रयत्न किया। अँगरेज़ों को धोखा देने के आशय से वह संयुक्त बेड़ा पहले पश्चिमी द्वीप-समूह की ओर चला; और यह प्रबन्ध किया गया कि जब अँगरेज़ी बेड़ा उसका पीछा करने के लिए इँगलिश चैनेल से रवाना हो जाय, उस समय तुरन्त लौटकर इँगलैंड के ख़ाली तट पर आक्रमण कर दिया जाय। अँगरेज़ पहले धोखे में आ गये; परन्तु उन्हें शीघ्र ही नेपोलियन की चालाकी का पता लग गया; इस कारण उसका इँगलैंड पर आक्रमण करने का प्रयत्न सफल न हो सका।

ट्राफ़लगर की विजय तथा नेल्सन की मृत्यु (१८०५)—अगले वर्ष अँगरेज़ी जहाज़ी अफ़सर नेल्सन (Admiral Nelson)

ने फ्रांस और स्पेन के संयुक्त बेड़े को स्पेन ही के तट पर ट्राफ़लगर (Trafalgar) के युद्ध में बुरी तरह से परास्त किया। युद्ध आरम्भ
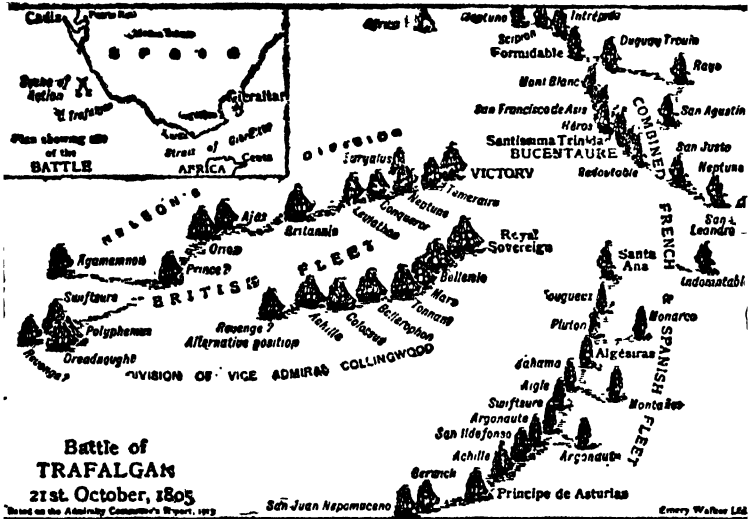
ट्राफ़लगर का युद्ध

होने के समय नेल्सन ने अपने सैनिकों को झंडी-द्वारा यह समाचार भेजा—"मुझे आशा है कि प्रत्येक व्यक्ति इँगलैंड के प्रति अपने कर्तव्य का पालन करेगा।" और बड़े जोश से यह भी कहा—"आज सायंकाल के समय तक मैं या तो लार्ड-सभा में या वेस्टमिन्स्टर के क़ब्रस्तान में स्थान पाने का अधिकारी हो जाऊँगा!" युद्ध में नेल्सन मारा गया; परन्तु मृत्यु से कुछ ही समय पहले उसको यह समाचार मिल चुका था कि अँगरेज़ों की पूर्ण विजय हुई है। इँगलैंड के प्रसिद्ध जहाज़ी अफ़सरों में नेल्सन का स्थान सबसे ऊँचा है और उसकी महत्त्व-पूर्ण विजयों की यादगार में ब्रिटेन में कई स्थानों पर स्मारक चिह्न बने हुए हैं। पिछले युद्ध में उसकी नाइल तथा कोपेन्हेगन की विजयों ने इँगलैंड को संकट से बचाया था। अब उसकी ट्राफ़लगर की विजय से अँगरेज़ी जहाज़ी बेड़े

की इतनी धाक जम गई कि इसके बाद नेपोलियन ने फिर कभी इँगलैंड का जलयुद्ध में मुक़ाबला करने का साहस न किया।

नेपोलियन की उन्नति का पूर्ण रूप—परन्तु स्थल-युद्धों में नेपोलियन ख़ूब विजयी हो रहा था। उसकी विजयों के कारण फ़्रांस के निवासी उसे देवता की भाँति पूजने लगे थे और उन्हीं की सम्मति से यह निश्चित कर दिया गया था कि नेपोलियन अपने "फ़्रेंच प्रजातन्त्र राज्य" के "संरक्षक" (First Consul) के पद पर जीवन-काल तक आरूढ़ रहेगा। जनता की इस भक्ति का लाभ उठाकर थोड़े ही दिन पीछे नेपोलियन ने अपने को "फ़्रांस का सम्राट्" (Emperor of the French) उद्घोषित कर दिया और इस प्रकार फ़्रांस का प्रजातन्त्र राज्य अब नेपोलियन के साम्राज्य (Napoleonic Empire) के रूप में परिणत हो गया।

नेपोलियन

इस समय सम्राट् नेपोलियन "विश्वविजयी" होने के मन्सूबे बाँध रहा था; और कुछ काल तक योरप के समस्त राज्य उसके नाम से थर्राने लगे थे। उसने आस्ट्रिया को आस्टरलिज़ (Austerlitz), प्रशा को येना (Jena) और रूस को फ़्रेडलैंड (Friedland) के युद्धों में परास्त किया था। इन विजयों के बाद नेपोलियन की शक्ति ने अपना पूर्ण रूप धारण किया और हॉलैंड, इटली, पोलैंड

तथा जर्मनी की बहुत-सी रियासतें उसके अधीन हो गई थीं। केवल इँगलैंड ही उसकी शक्ति का बराबर मुक़ाबला करता रहा।

इँगलैंड के व्यापार पर विफल आघात (Napoleon's Continental System)—इँगलैंड पर आक्रमण के प्रयत्न की विफलता के बाद नेपोलियन ने अँगरेज़ों का व्यापार नष्ट करना चाहा। वह अँगरेज़ों को "दूकानदारों की जाति" (Nation of Shopkeepers) कहा करता था। उसने सोचा था कि अँगरेज़ों का व्यापार नष्ट होने से उनकी समस्त शक्ति नष्ट हो जायगी। जितने राज्यों पर उसका दबाव था, उन सबको उसने बाध्य किया कि वे अँगरेज़ों से किसी प्रकार का व्यापारिक सम्बन्ध न रखें और अपने देश में अँगरेज़ी माल न आने दें। इसके जवाब में इँगलैंड ने भी यह घोषणा कर दी कि जो जहाज़ बिना किसी अँगरेज़ी बन्दरगाह पर ठहरे योरप में व्यापार करेंगे, वे सब पकड़कर नष्ट कर दिये जायँगे। परन्तु नेपोलियन का अँगरेज़ों के व्यापार को आघात पहुँचाने का प्रयत्न सफल न हो सका। प्रतिदिन के काम की बहुत-सी वस्तुएँ जैसे चाय और चीनी, अँगरेज़ी उपनिवेशों के अतिरिक्त और कहीं से मिल ही न सकती थीं। इन वस्तुओं की दर बढ़ने लगी; अतः स्वयं नेपोलियन के मित्रों ने भी उसकी आज्ञा की परवाह न करके इँगलैंड के साथ गुप्त रूप से व्यापारिक सम्बन्ध जारी रखा।

"प्रायद्वीप का युद्ध" (The Peninsular War)*—पुर्तगाल ने नेपोलियन की इँगलैंड से व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ देने की आज्ञा नहीं मानी थी; इसलिए उसने सेना भेजकर पुर्तगाल पर अपना अधिकार जमा लिया। कुछ समय बाद नेपोलियन को स्पेन पर भी अपना अधिकार जमा लेने का अवसर मिल गया। स्पेन के राजा चार्ल्स चतुर्थ

---

* इसका यह नाम इसलिए पड़ा कि यह युद्ध "आइबेरियन प्रायद्वीप" (Iberian Peninsula) में हुआ था, जो पुर्तगाल तथा स्पेन के दो राज्यों में विभक्त है।

और उसके लड़के में झगड़ा चल रहा था। दोनों ने नेपोलियन से सहायता माँगी। नेपोलियन ने यह निश्चय किया कि शासन-कार्य के लिए दोनों अयोग्य हैं; और उसने अपने भाई जोसफ़ (Joseph) को स्पेन का राजा बनाकर भेज दिया। स्पेनवाले एक विदेशी राजा के अधीन रहना कभी पसन्द न कर सकते थे; अतः उन्होंने तुरन्त जोसफ़ के विरुद्ध विद्रोह ठान दिया।

स्पेनिश जाति के विद्रोह में इँगलैंड ने पूर्ण सहायता दी; और शीघ्र ही सर आर्थर वेलेज़ली (Sir Arthur Wellesley) के नेतृत्व में एक अँगरेज़ी सेना आइबेरियन प्रायद्वीप को भेजी गई। आर्थर का भाई मार्क्विस वेलेज़ली (Marquis Wellesley) भारतवर्ष का गवर्नर-जनरल रह चुका था और स्वयं आर्थर ने मराठों के युद्ध में खूब यश प्राप्त किया था। आर्थर ने आते ही फ़ासीसियों को पुतगाल से निकाल बाहर किया और स्पेन पहुँचकर उन्हें टेलेवेरा (Talavera) के युद्ध में परास्त किया। यह समाचार पाकर नेपोलियन ने एक बहुत बड़ी सेना स्पेन को भेजी। आर्थर ने यह सोचकर कि मेरी सेना थोड़ी है, अपने बचाव का प्रबन्ध किया। उसने समुद्र के निकट तीन पुश्ते (Torres Vedras) बनाये जिनकी आड़ में उसकी सेना सुरक्षित रह सके; और यदि आवश्यकता हो तो समुद्र की राह से इँगलैंड लौट आने का भी सुभीता रहे। परन्तु इसकी आवश्यकता न पड़ी और नेपोलियन की भेजी हुई सेना स्पेन के उजाड़ खेतों में खाने तक का सहारा न पाकर शीघ्र ही फ़्रांस लौट गई।

अब आर्थर ने आगे बढ़ना शुरू किया और सेलेमेन्का (Salamanca) के युद्ध में फ़्रांसीसियों को परास्त करके बड़े समारोह से स्पेन की राजधानी मेड्रिड (Madrid) में उसने प्रवेश किया। जोसफ़ निराश होकर राजधानी से भाग निकला और अँगरेज़ों को पूर्ण सफलता हुई। इसके बाद आर्थर ने विटोरिया (Vittoria) की प्रसिद्ध विजय प्राप्त की, जिसके परिणाम-स्वरूप सब फ़्रांसीसी सेनायें स्पेन छोड़कर भाग

निकलीं। "प्रायद्वीप के युद्ध" में आर्थर ने बड़ा नाम पाया और वह ड्यूक आफ़ वेलिंग्टन (Duke of Wellington) बना दिया गया।

नेपोलियन का पतन—रूस ने भी कुछ समय बाद नेपोलियन की, इँगलैंड से व्यापारिक सम्बन्ध तोड़ देने की, आज्ञा मानना बन्द कर दिया। इसलिए सन् १८१२ में नेपोलियन ने रूस पर आक्रमण किया। वह मास्को (Moscow) तक पहुँच गया; परन्तु उसके आने पर रूसियों ने स्वयं नगर में आग लगा दी। नेपोलियन को लौटना पड़ा; परन्तु इस समय शीत ऋतु आरम्भ हो गई थी; इस कारण उसकी बहुत-सी सेना रूस जैसे ठंडे देश में बर्फ़ से तबाह हो गई।

ड्यूक आफ़ वेलिंग्टन

नेपोलियन की इस विपत्ति से उसके वैरियों का उत्साह बढ़ गया; और आस्ट्रिया, प्रशा तथा रूस ने मिलकर उसे लीपज़िग (Liepzig) के युद्ध में बुरी तरह परास्त किया। इसके बाद उन्होंने उसकी राजधानी पेरिस पर आक्रमण कर दिया। नेपोलियन को अपने राजसिंहासन से त्यागपत्र देने पर बाध्य किया गया और उसे एल्बा (Elba) द्वीप में जाकर शरण लेनी पड़ी। फ्रांस के भूतपूर्व राजा लूई सोलहवें के भाई को "लूई अठारहवें" के नाम से फ्रांस का राजा बनाया गया; और यह निश्चित हुआ कि वियना नगर में सब राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित होकर योरप के समस्त राजनीतिक प्रश्नों का निर्णय करेंगे।

"शत दिवस" (The Hundred Days)—फ्रांस का नया राजा लूई अठारहवाँ देश में सर्वप्रिय न हो सका और योरपीय

राजनीतिक प्रश्नों के निर्णय के सम्बन्ध में भी बहुत-से झगड़े होने लगे। नेपोलियन ने इस अवसर से लाभ उठाया और वह एल्बा द्वीप से भागकर फिर फ्रांस आ पहुँचा। उसके नाम में इतना जादू था कि उसके आते ही लूई अठारहवाँ भाग निकला और नेपोलियन फिर फ्रांस का सम्राट् हो गया। इस बार वह कुल सौ दिन राज-सिंहासन पर रह सका; इस कारण उसके दूसरे शासन का काल इतिहास में "शत दिवस" (The Hundred Days) के नाम से प्रसिद्ध है।

नेपोलियन ने घोषणा की कि अब मैं शान्तिप्रिय नीति का अनुसरण करूँगा; परन्तु योरप के राज्यों को उसकी इस बात का विश्वास न हो सकता था। प्रशा ने ब्लेचर (Blucher) को और इँगलैंड ने "प्रायद्वीप के युद्ध" के प्रसिद्ध योद्धा ड्यूक आफ़ वेलिंग्टन (Duke of Wellington) को नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध करने को भेज दिया। समस्त योरपीय राज्य इस बात पर तुले हुए थे कि नेपोलियन को, जिसकी "विश्वविजय" की नीति ने अन्य राज्यों को भयभीत कर रखा था, योरप से निकाल कर दम लेंगे।

वाटरलू का युद्ध (१८१५)—नेपोलियन ने वेलिंग्टन की सेना पर, जो वाटरलू (Waterloo) के मैदान में थी, आक्रमण किया। इस प्रकार योरपीय इतिहास के सबसे प्रसिद्ध युद्ध का प्रारम्भ हुआ। नेपोलियन ने ऐसा प्रबन्ध किया था कि ब्लेचर की सेना वाटरलू तक न पहुँच सके। परन्तु जिस अफ़सर को उसने इस प्रबन्ध का भार सौंपा था, वह ब्लेचर को न रोक सका। जिस समय वाटरलू के रणक्षेत्र में घमासान युद्ध हो रहा था, उस समय ब्लेचर की सेना वेलिंग्टन से आ मिली; और दोनों ने मिलकर नेपोलियन को पूर्णतया परास्त किया।

नेपोलियन को दूसरी बार राजसिंहासन से त्यागपत्र देने को बाध्य किया गया। इस बार उसे क़ैद करके सेंट हेलेना (St. Helena) भेज दिया गया। सेंट हेलेना में इँगलैंड की सरकार ने नेपोलियन के साथ अच्छा व्यवहार न किया, और उसके अपमान से पीड़ित

होकर छः वर्ष बाद सन् १८२२ में यह प्रसिद्ध योद्धा परलोक सिधारा।

वीयना की कांग्रेस (The Cngress of Vienna)—नेपोलियन के पतन के पश्चात् योरपीय राज्यों के प्रतिमिधियों ने वीयना
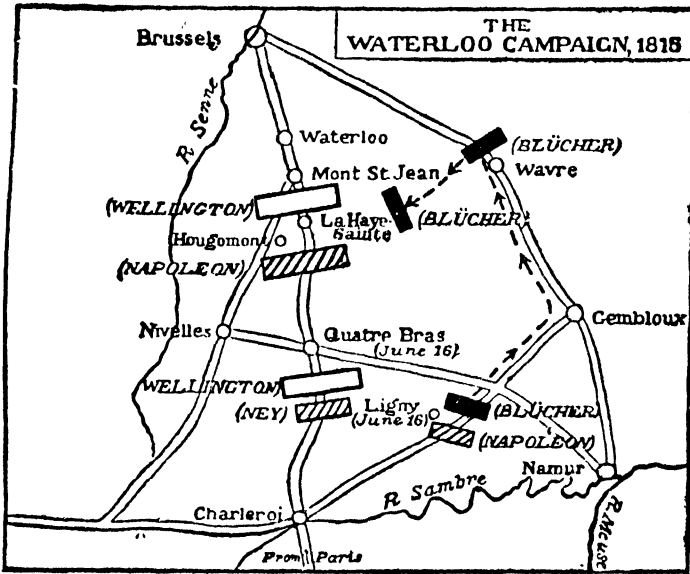
वाटरलू का युद्ध (सन् १८१५)

नगर में सम्मिलित होकर समस्त राज्यों की सीमा के निर्णय का कार्य पुनः आरम्भ किया। फ्रांस की राज्यक्रान्ति तथा नेपोलियन के राजत्वकाल से पहले योरपीय राज्यों की जो सीमा थी, अधिकतर वही सीमा फिर कर दी गई। अठारहवें लूई* का फ्रांस का राजसिंहासन दिया गया। परन्तु

* यह फ्रांस के भूतपूर्व सम्राट् लूई सोलहवें का भाई था। हम बतला चुके हैं कि लूई सोलहवाँ "फ्रांस की राज्यक्रान्ति" के समय मार डाला गया था। अब लगभग पच्चीस वर्ष बाद उसके कुटुम्ब को फिर राजसिंहासन मिल गया।

जो भाग नेपोलियन ने जीतकर फ़्रांस के राज्य में मिला लिये थे, वे सब वापस कर दिये गये। समस्त नीदरलैंड में एक राज्य स्थापित कर दिया गया और आरेंज रियासत के राजकुमार को उसका राजा बनाया गया। इटली के राज्य वहाँ के भूतपूर्व राजाओं को वापस मिल गये; और स्पेन में चार्ल्स चतुर्थ, जिसको हटाकर नेपोलियन ने अपने भाई जोसफ़ को राज्य दे दिया था, फिर राजा बना दिया गया। आस्ट्रिया को इटली में, प्रशा को जर्मनी में और रूस को पोलैंड में कुछ भाग दे दिये गये।

अब रहा इँगलैंड, सो उसको माल्टा (Malta), मॉरीशस (Mauritius) तथा केप आफ़ गुडहोप (Cape of Good Hope) मिले। माल्टा मिल जाने से इँगलैंड का रूम सागर पर अधिकार हो गया और केप आफ़ गुडहोप के इँगलैंड के हाथ में आने से वर्तमान "संयुक्त दक्षिण अफ्रिका" का प्रारम्भ समझना चाहिए।

नेपोलियन के पतन में इँगलैंड की सहायता—नेपोलियन के विरुद्ध, जिसके नाम से समस्त योरप थर्राता था, युद्ध करने का भार अधिकतर इँगलैंड ही ने उठाया। इँगलैंड ने कई बार फ़्रांस के विरुद्ध योरपीय राज्यों के "संघ" बनाये; परन्तु नेपोलियन की स्थल-युद्धों की विजयों के कारण वे "संघ" शीघ्र ही टूट जाते थे और फ़्रांस का मुक़ाबला करने के लिए इँगलैंड अकेला रह जाता था। इँगलैंड ही की 'नाइल' की विजय के कारण नेपोलियन के समस्त पूर्वीय देशों को जीतने के मनसूबे पूरे न हो सके; और ट्राफ़लगर की विजय के बाद तो नेपोलियन ने फिर कभी इँगलैंड के विरुद्ध जल-युद्ध करने का साहस ही न किया। इँगलैंड ही की सहायता के कारण "प्रायद्वीप के युद्ध" में फ़्रांसीसियों के सब प्रयत्न विफल रहे; और अन्त में नेपोलियन के भाई जोसफ़ को स्पेन का राजसिंहासन छोड़कर भागना पड़ा। वाटरलू के युद्ध में, जिसके परिणामस्वरूप नेपोलियन का अन्तिम पतन हुआ, इँगलैंड के ही प्रसिद्ध योद्धा वेलिंग्टन ने विजय प्राप्त की थी। "फ़्रांस की राज्यक्रान्ति" तथा नेपोलियन के विरुद्ध युद्धों का काल इँगलैंड के लिए बड़े संकट का था;

परन्तु अँगरेज़ी जहाज़ी बेड़े की शक्ति ने इँगलैंड पर कोई आपत्ति न आने दी। इँगलैंड की जल-शक्ति ही आड़े समय में उसके काम आई; और उसी के भरोसे ब्रिटिश जाति आजकल समस्त भूमंडल के इतने बड़े भाग के अपने अधीन किये हुए है।

युद्ध के बाद इँगलैंड की दशा—इँगलैंड ने नेपोलियन का सफलता से मुक़ाबला किया; परन्तु युद्ध के बाद देश की आर्थिक तथा व्यापारिक दशा सुधरने में कई वर्ष लग गये। युद्ध-काल में सरकार का व्यय अधिक बढ़ गया था, इस कारण बहुत दिनों तक प्रजा पर अधिक कर लगाने पड़े। बहुत-से सिपाही युद्ध के बाद बेकार फिरने लगे, और व्यापार की दशा अभी तक सन्तोषजनक न होने के कारण कई वर्ष तक देश में बहुत-से मनुष्यों को कोई काम-धन्धा न मिलता था। कृषि की भी बहुत समय तक बड़ी बुरी दशा रही। संयोगवश वर्षा भी कई वर्ष तक अच्छी न हुई; इस कारण देश की पैदावार बहुत घट गई। ऐसी अवस्था में सरकार ने देश की पैदावार को बाहर के अनाज के मुक़ाबले से बचाने के लिए एक नियम (Corn Law) बनाया, जिसके अनुसार निश्चित हुआ कि जब तक देश की अनाज की दर सन्तोषजनक न हो जाय, तब तक बाहर से देश में अनाज न आने पावे। इस नियम के कारण कुछ दिनों तक इँगलैंड में ग़रीबों को पेट भर अन्न मिलना भी कठिन हो गया; और इस कारण देश में कई जगह उपद्रव भी खूब हुए। परन्तु थोड़े ही दिनों में यह संकट का काल समाप्त हो गया; और जैसा कि छठे परिच्छेद में बतलाया जायगा, "व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution) का प्रारम्भ हो जाने के कारण इँगलैंड की दशा शीघ्र ही फिर सन्तोषजनक हो गई।

जॉर्ज तृतीय की मृत्यु (१८२०)—वाटरलू के युद्ध के पाँच वर्ष बाद सन् १८२० में इँगलैंड का राजा जॉर्ज तृतीय परलोक सिधारा। उसने पूरे साठ वर्ष (१७६०-१८२०) राज्य किया और उसके समय में "अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध", "फ्रांस की राज्यक्रान्ति",
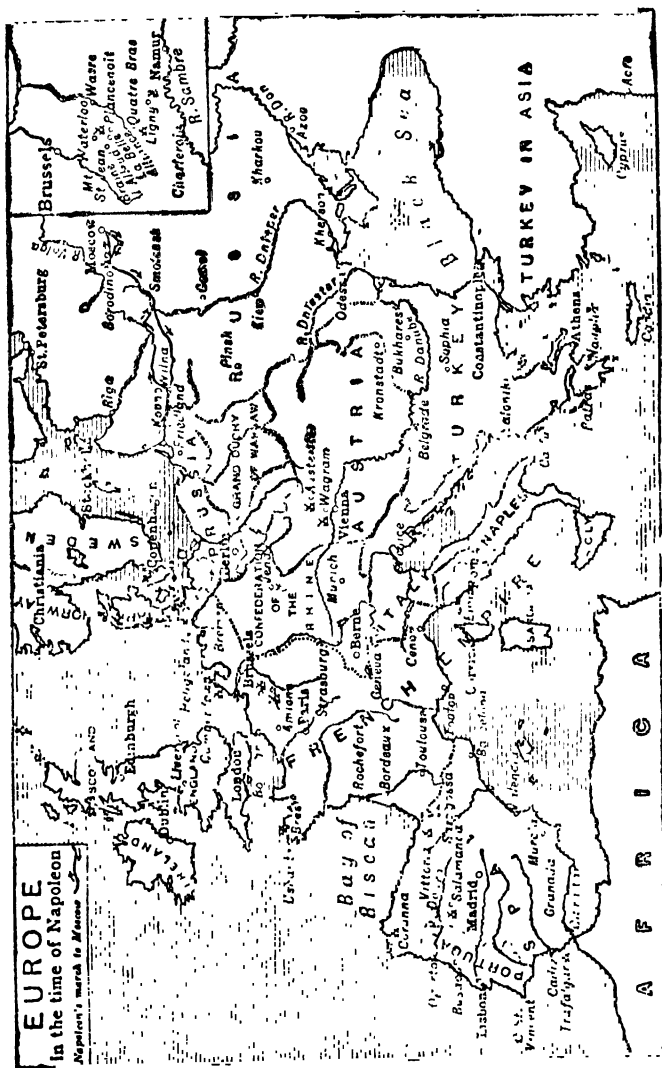
योरप (नेपोलियन के समय में)

"नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध" इत्यादि अति महत्त्वपूर्ण घटनायें हुईं जिनके कारण उसका राजत्वकाल इतिहास में प्रसिद्ध है। वृद्धावस्था तथा मानसिक दुर्बलता के कारण मृत्यु के दस वर्ष पूर्व ही से वह शासन-कार्य के अयोग्य हो गया था; और उसके पुत्र ने "संरक्षक" (Regent) होकर राज्य का संचालन आरम्भ कर दिया था। अब यह पुत्र "जॉर्ज चतुर्थ" के नाम से राजा हो गया।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १८०३—नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध का आरम्भ।
,, १८०५—नेल्सन की ट्राफ़लगर की विजय तथा उसकी मृत्यु।
,, १८०८-१८१४—"प्रायद्वीप का युद्ध" (The Peninsular War)।
,, १८१४—नेपोलियन का पद-त्याग तथा उसका एल्बा द्वीप में शरण लेना।
,, १८१५—वाटरलू का युद्ध तथा नेपोलियन की अन्तिम पराजय।
,, १८२०—जॉर्ज तृतीय की मृत्यु।
,, १८२१—सेंट हेलेना में नेपोलियन की मृत्यु।

पाँचवाँ परिच्छेद

जॉर्ज चतुर्थ तथा विलियम चतुर्थ

(१८२०-१८३७)

जॉर्ज चतुर्थ (१८२०-१८३०)—जॉर्ज चतुर्थ घमंडी, व्यभिचारी तथा आलसी था। शासन-कार्य में भी उसकी अधिक रुचि न थी; इस कारण उसके राजत्वकाल में उसके पिता जॉर्ज तृतीय की प्राप्त की हुई राज-शक्ति स्थिर न रह सकी।

रानी केरोलीन (Queen Caroline)—जॉर्ज चतुर्थ ने अपनी स्त्री केरोलीन के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार किया। बहुत दिनों से दोनों अलग रहते थे। राजा होने पर जॉर्ज ने पार्लिमेंट में केरोलीन के परित्याग का प्रस्ताव उपस्थित कराया; परन्तु दुखिया रानी के प्रति जनता की सहानुभूति हो जाने के कारण वह प्रस्ताव स्वीकृत न हुआ। जिस दिन वेस्टमिनिस्टर एबे (Westminster Abbey) में जॉर्ज चतुर्थ का राज्याभिषेक संस्कार हो रहा था, उस समय रानी केरोलीन ने भी उस संस्कार में सम्मिलित होना चाहा; परन्तु राजा के सिपाहियों ने उसे अन्दर न जाने दिया। इस अपमान के कारण रानी के हृदय पर इतनी चोट लगी कि वह दूसरे ही महीने परलोक सिधारी।

केटो स्ट्रीट का षड्यन्त्र—हम बतला चुके हैं कि नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध समाप्त होने के बाद इंगलैंड को अपनी आर्थिक तथा व्यापारिक दशा सुधारने में कई वर्ष लग गये थे। बहुत दिनों तक बेचारे ग़रीबों को पेट भर अन्न भी न मिलता था; और सरकार के सुधार आदि के विरोधी होने के कारण देश में असन्तोष भी फैला हुआ था। केटो स्ट्रीट के कुछ लोगों ने राजा तथा मन्त्रियों के प्राण लेने के लिए षड्यन्त्र रचा;

परन्तु उसका शीघ्र ही पता लग गया और उसमें सम्मिलित होनेवालों को फाँसी दी गई।
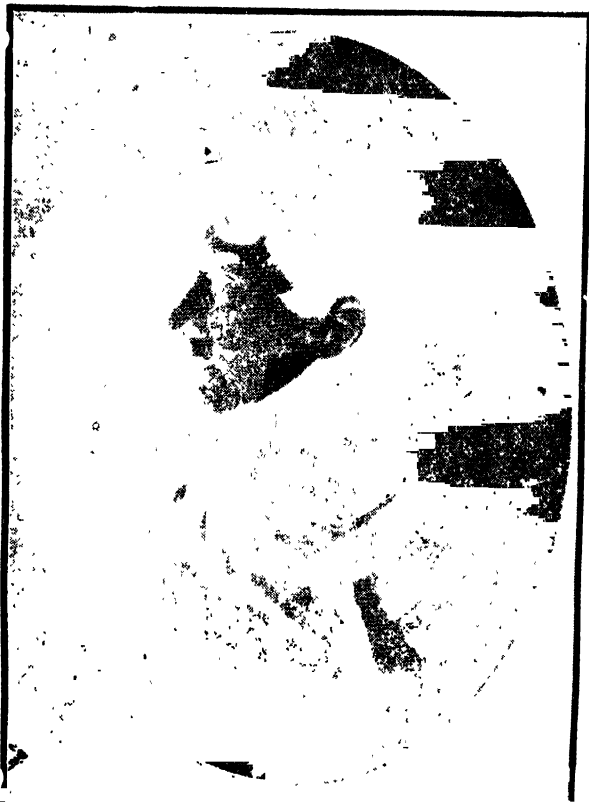
जॉर्ज चतुर्थ

केनिंग तथा यूनान की स्वतन्त्रता का युद्ध—सन् १८२२ में जॉर्ज केनिंग (George Canning) प्रधान मन्त्री तथा विदेशी विभाग का मन्त्री (Foreign Secretary) नियुक्त हुआ। उसके विचार बड़े उदार थे; और योरपीय राज्यों में जहाँ कहीं स्वतन्त्रता के

लिए आन्दोलन होता था, वहाँ उसकी पूर्ण सहानुभूति रहती थी। जब यूनान के निवासियों ने तुर्कों के अत्याचारी शासन से तंग आकर विद्रोह ठान दिया, तब केनिंग ने यूनानियों की पूर्ण सहायता की। इँगलैंड में और बहुत-से लोग भी यूनानियों की स्वतन्त्रता के पक्षपाती थे। प्रसिद्ध कवि लार्ड बायरन (Lord Byron) ने स्वयं यूनान जाकर "यूनान की स्वतन्त्रता के युद्ध" (Greek War of Independence) में अपने प्राण निछावर किये थे। इँगलैंड तथा रूस की सहायता के कारण यूनानियों को सफलता हुई और टर्की को यूनान की स्वतन्त्रता स्वीकृत करनी पड़ी।

जॉर्ज केनिंग

परन्तु आगे चलकर इँगलैंड की नीति बिलकुल बदल गई। इसके बाद रूस की शक्ति को पूर्व की ओर बढ़ने से रोकने के लिए इँगलैंड ने टर्की का प्रत्येक अवसर पर साथ दिया और उसको रूसियों के आक्रमणों से बचाया।

कैथोलिकों का उद्धार (१८२९) (The Catholic Emancipation)—सन् १८२७ में केनिंग की मृत्यु के बाद नेपोलियन को परास्त करनेवाला प्रसिद्ध योद्धा वेलिंग्टन (Wellington) प्रधान-मन्त्री हुआ। इस समय कैथोलिकों के उद्धार के लिए आन्दोलन हो रहा था। हम बतला चुके हैं कि 'आयरलैंड के संयोग" के समय पिट ने कैथोलिकों के उद्धार का प्रयत्न किया था, परन्तु जॉर्ज तृतीय के विरोध के कारण उसे सफलता न हुई थी। अब आयरलैंड में डेनियल ओकोनेल (Daniell O'Connell) नामक एक बैरिस्टर ने "कैथोलिक

समाज" (Catholic Association) नामक एक संस्था स्थापित करके कैथोलिकों के उद्धार के लिए बड़े ज़ोरों से आन्दोलन शुरू किया। सन् १८२८ में ओकोनेल पार्लिमेंट का सदस्य चुना गया; परन्तु कैथोलिक होने के कारण वह पार्लिमेंट की बैठकों में सम्मिलित न हो सकता था। उसके चुनाव से बड़ी उत्तेजना फैली और विद्रोह के ढंग दिखाई पड़ने लगे। प्रधान मन्त्री वेलिंग्टन इस सुधार के पक्ष में न था; परन्तु आन्दोलन बराबर बढ़ता गया, इसलिए उसे अपनी नीति बदलनी पड़ी। सन् १८२९ में "कैथोलिकों के उद्धार का नियम" (The Catholic Emancipation Act) स्वीकृत हुआ और कैथोलिकों को पार्लिमेंट के सदस्य होने की आज्ञा मिल गई। "परीक्षा-नियम" (The Test Act), जिसके अनुसार "अँगरेज़ी चर्च" के अनुयायियों को ही सरकारी नौकरी मिल सकती थी, एक वर्ष पहले ही टूट गया था। अब कैथोलिकों और प्रोटेस्टेंटों के पुराने झगड़े का अन्त हुआ और दोनों दल देश में शान्तिपूर्वक रहने लगे।

विलियम चतुर्थ (१८३०–३७)—सन् १८३० में जॉर्ज चतुर्थ की मृत्यु के बाद उसका भाई "विलियम चतुर्थ" (William IV) के नाम से राजा हुआ। विलियम बहुत दिनों तक "जहाज़ी सेना" (Navy) में अफ़सर रह चुका था; इस कारण वह "जहाज़ी राजा" (The Sailor King) के नाम से प्रसिद्ध है।

ह्विग-दल का पुनः शक्तिशाली होना—विलियम चतुर्थ के राज्याभिषेक के समय से ह्विग-दल के पुनः शक्तिशाली होने का काल आरम्भ होता है। ह्विग-दल जॉर्ज प्रथम तथा जॉर्ज द्वितीय के राजत्वकाल में शक्तिशाली रह चुका था; परन्तु जॉर्ज तृतीय तथा जॉर्ज चतुर्थ के राजत्वकाल में टोरी-दल शक्तिमान् हो गया था। इस समय सुधार आदि के आन्दोलन के कारण लगभग पचास वर्ष बाद देश का शासन-कार्य्य फिर ह्विग-दल के हाथ में आया। इस काल के प्रसिद्ध ह्विग-नेता लार्ड ग्रे (Lord Grey) तथा लार्ड मेल्बोर्न (Lord Melbourne)

थे जिन्होंने सुधार के कई महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत कराये। इस काल के सबसे प्रसिद्ध "पार्लिमेंट सुधार के नियम"* का उल्लेख सातवें

विलियम चतुर्थ

परिच्छेद में किया जायगा। इस परिच्छेद में हम केवल ह्विग-नेताओं के अन्य सुधारों का उल्लेख करते हैं।

गुलामों का उद्धार—दास-व्यापार की प्रथा लगभग ढाई सौ वर्षों से चली आ रही थी। योरपीय उपनिवेशों में खानें आदि खोदने का कठोर परिश्रम करने के लिए लोग कठिनाई से मिलते थे; इसलिए अफ्रीका के हब्शियों को पकड़कर उनसे इस प्रकार का काम लिया जाने

* विलियम चतुर्थ के राजत्वकाल के पार्लिमेंट-सुधार के प्रथम नियम (First Reform Act, 1832) के लिए पृष्ठ २६१ देखो।

लगा। कुछ लोगों ने हब्शियों को पकड़ लाने का व्यवसाय शुरू कर दिया और उन्हें लाकर बिलकुल पशुओं की भाँति बेचना आरम्भ कर दिया। इन मोल लिये हुए ग़ुलामों के साथ उनके स्वामी बड़ा बुरा व्यवहार करते थे। कभी-कभी उनसे इतना कड़ा परिश्रम लिया जाता था कि वे बेचारे हाँपते-हाँपते मर जाते थे।

'मेथोडिस्ट संस्था' के स्थापित होने से जनता में दया-भाव बढ़ने लगा और कुछ दयावान् लोगों ने दास-व्यापार के रोकने के लिए आन्दोलन आरम्भ किया। सन् १७७२ में प्रधान न्यायाधीश मेन्सफ़ील्ड (Chief Justice Meansfield) ने यह निर्णय कर दिया कि ब्रिटेन की भूमि पर पैर रखते ही प्रत्येक ग़ुलाम स्वतन्त्र हो जाता है। परन्तु ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों में दास-व्यापार अभी जारी रहा। इसी समय दो दयावान् व्यक्तियों—क्लार्कसन (Clarkson) तथा विल्बरफ़ोर्स (Wilberforce)—ने यह प्रण किया कि हम अपना समस्त जीवन ग़ुलामों के उद्धार के आन्दोलन में व्यतीत करेंगे। इस आन्दोलन के प्रभाव से सन् १८०७ में समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में दास-व्यापार बन्द करने की आज्ञा दे दी गई; परन्तु जो हब्शी ग़ुलाम हो चुके थे, उन्हें अभी स्वतन्त्र न किया गया। सन् १८३३ में इन ग़ुलामों को स्वतन्त्र कर देने का प्रस्ताव भी स्वीकृत हो गया; और १ अगस्त सन् १८३४ को समस्त ब्रिटिश साम्राज्य के ग़ुलामों के स्वतन्त्र हो जाने से इस अत्याचारपूर्ण प्रथा का पूर्णतया अन्त हुआ।

नागरिक शासन का सुधार—सन् १८३५ में एक और बड़े महत्त्व का नियम स्वीकृत हुआ जिसके अनुसार नागरिक शासन (Municipal Government) का सुधार किया गया। अब तक बहुत-से नगरों में केवल थोड़े से ही नागरिकों को "नगर-मंडलियों" (Corporation) के चुनाव में वोट देने का अधिकार था; परन्तु इस नियम के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति को, जो नगर का कर देता हो (Rate-payer), वोट देने का अधिकार मिल गया। इस प्रकार नगरों में

वास्तविक "प्रतिनिधि-शासन" (Representative Government) की स्थापना हुई। आजकल इँगलैंड के प्रत्येक नगर का शासन चुने हुए सदस्यों (Aldermen) की एक मंडली के अधीन है और उसका प्रधान लॉर्ड मेयर (Lord Mayor) कहलाता है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १८२०—जॉर्ज चतुर्थ का राज्याभिषेक।
" १८२१-१८२९—"यूनान की स्वतन्त्रता का युद्ध"।
" १८२२-१८२७—केनिंग का मन्त्रित्व।
" १८२८-१८३०—वेलिंग्टन का मन्त्रित्व।
" १८२९—"कैथोलिकों के उद्धार का नियम" (The Catholic Emancipation Act)
" १८३०—जॉर्ज चतुर्थ की मृत्यु तथा विलियम चतुर्थ का राज्याभिषेक।
" १८३३—दास-व्यापार का अन्त।
" १८३५—नागरिक शासन का सुधार।
" १८३७—विलियम चतुर्थ की मृत्यु।

छठा परिच्छेद

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में व्यावसायिक, वैज्ञानिक तथा सामाजिक उन्नति

(१) अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के आविष्कार

"व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution)—अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इँगलैंड के व्यवसाय तथा व्यापार में बड़ी भारी उन्नति हुई। बहुत-सी कलों का आविष्कार हुआ, जिनके द्वारा कारबार में बड़ा सुभीता होने लगा। सबसे पहले सूत कातने तथा कपड़ा बुनने के लिए कलें बनाई गईं; और तब धीरे-धीरे अन्य प्रकार के व्यवसायों में भी कलों का प्रयोग होने लगा। वर्तमान-काल में जो इँगलैंड समस्त भूमंडल में व्यवसाय तथा व्यापार के लिए प्रसिद्ध हो रहा है, उसकी इस उन्नति का इसी समय से प्रारम्भ समझना चाहिए। देश में सैंकड़ों पुतलीघर बनने लगे; और इँगलैंड, जहाँ अब तक केवल कृषि का ही सहारा था, कारबार का केन्द्र हो गया। इस परिवर्तन के कारण देश का जीवन ही बिलकुल नये ढंग का हो गया; इसलिए इतिहास में यह परिवर्तन "व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है।

कलों का आविष्कार तथा कपड़े के व्यापार की उन्नति—अब तक कपड़ा बनाने के लिए घरों में स्त्रियाँ हाथ के चरखे पर सूत काता करती थीं और गाँव के जुलाहे हाथ के करघे पर उसका सूत बुन देते थे। सन् १७६४ में हारग्रीव्स (Hargreaves) ने एक मशीन (Spinning Jenny) बनाई जिसके द्वारा एक आदमी चरखे से

आठ गुना सूत कात सकता था। सन् १७६७ में आर्कराइट (Ark-wright) ने पानी के ज़ोर से चलनेवाला चरखा (Water Frame) बनाया; और सन् १७७५ में क्रॉम्पटन (Crompton) ने इन दोनों आविष्कारों का प्रयोग करके एक ऐसी मशीन (The Mule) बनाई, जो पानी से चलती थी और चरखे से कई गुना ज़्यादा सूत कातती थी। सूत कातने के साथ-साथ कपड़ा बुनने के व्यवसाय में भी शीघ्र ही उन्नति होने लगी; और सन् १७८५ में कार्टराइट (Cartwright) ने पानी से चलनेवाला करघा भी बना डाला।
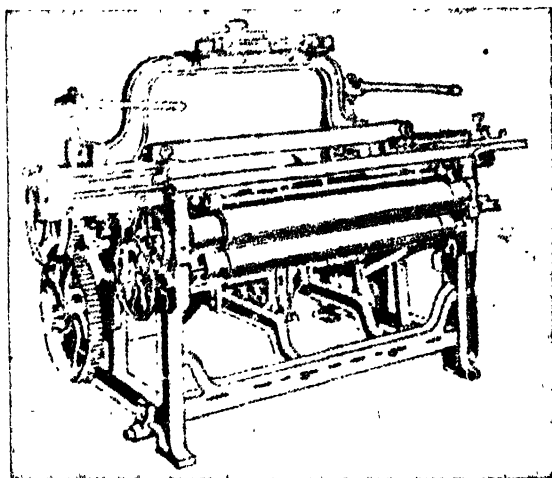
कपड़ा बुनने की नई मशीन

वॉट तथा भाप के एंजिन का आविष्कार—सन् १७८५ में जेम्स वॉट (James Watt) ने एक बड़ा महत्त्वपूर्ण आविष्कार किया। उसने भाप से चलनेवाला एंजिन बनाया, जिसके द्वारा मशीनों के चलाने में बड़ा सुभीता हो गया। सूत कातने तथा कपड़ा बुनने की मशीनें अब हाथ तथा पानी के स्थान पर भाप से चलाई

जाने लगीं; और थोड़े ही दिनों में लैंकाशायर प्रान्त में, जो आजकल सूती कपड़े के व्यवसाय का केन्द्र है, लाखो रुपये साल का कपड़ा बनने लगा। भाप के एंजिन के आविष्कार ने सचमुच व्यावसायिक संसार में क्रान्ति कर दी। इँगलैंड के वेस्टमिन्स्टर एबे में—जहाँ देश के प्रसिद्ध राजाओं, योद्धाओं, राजनीतिज्ञों तथा कवियों के स्मारक चिह्न हैं—जेम्स वॉट की भी यादगार बनी हुई है।

पुतलीघरों का बनाना तथा लोहे और कोयले की आवश्यकता—अब इँगलैंड में बहुत बड़े बड़े पुतलीघर (Factories) बनने लगे और कलों का प्रचार दिन पर दिन बढ़ता गया। कलों के बनाने के लिए लोहे की आवश्यकता होने लगी; इसलिए लोहे के कारबार में भी ख़ूब उन्नति हुई। पुतलीघरों के एंजिनों में कुछ दिनों तक लकड़ी के कोयले से काम लिया गया; परन्तु उसकी आग बहुत देर तक न ठहरती थी; इसलिए उसके स्थान पर पत्थर के कोयले का प्रयोग होने लगा। भाग्यवश इँगलैंड के उत्तर तथा पश्चिम में पत्थर के कोयले की बहुत-सी खानें थीं; इस कारण देश में पुतलीघर की स्थापना के कार्य में बड़ी सुविधा हुई। वर्तमान समय में इँगलैंड में जितने बड़े-बड़े व्यावसायिक नगर हैं, वे प्रायः कोयले की खानों ही के आसपास बसे हुए हैं।

सड़कों का सुधार—देश में व्यवसाय तथा व्यापार की उन्नति होने के कारण अच्छी सड़कों की भी आवश्यकता पड़ने लगी। स्टुअर्ट शासन-काल के अन्तिम परिच्छेद में हम बतला चुके हैं कि अठारहवीं शताब्दी के आरम्भ तक देश की सड़कें इतनी ख़राब थीं कि गाड़ियों के पहिये सड़क के गड्ढों में फँस जाते थे और गड्ढों में कीचड़ होने के कारण कभी-कभी गाड़ियों को खींचकर निकालने के लिए आसपास के गाँवों से घोड़े मँगाने पड़ते थे। अब देश में बहुत-सी अच्छी सड़कें बनाई गईं जिनके द्वारा व्यापार में बड़ी सुविधा होने लगी। सड़क बनाने के काम में स्कॉटलैंड के मेकेडम (Macadem) नामक एक इंजीनियर

ने बड़ा नाम पाया। उसने रोमन ढंग की सड़कें बनाईं जो प्रत्येक ऋतु में काम दे सकती थीं।

थोड़े ही दिनों पीछे गैस की रोशनी का आविष्कार हुआ और सड़कों पर रोशनी का उचित प्रबन्ध कर दिया गया। सन् १८०७ में लन्दन की पॉल मॉल (Pall Mall) नामक सड़क पर पहले-पहल गैस के हंडे लगाये गये और सन् १८१४ तक लन्दन की प्रायः सब सड़कों पर गैस की रोशनी हो गई।

नहरों का बनना—इसी समय कुछ लोगों का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ कि यदि देश में नहरें बना दी जायँ, तो कोयले आदि के सड़कों द्वारा भेजने की अपेक्षा बहुत कम ख़र्च पड़े। इंगलैंड की सबसे पहली नहर ड्यूक आफ़ ब्रजवाटर (Duke of Bridgewater) ने मैन्चेस्टर नगर तक कोयला पहुँचाने के लिए ब्रिंडले (James Brindley) नामक इंजीनियर की सहायता से सन् १७६७ में बनवाई थी। नहरें क्रमशः बढ़ती गईं और थोड़े ही दिनों में इँगलैंड की बड़ी-बड़ी नदियों को नहर काटकर मिला दिया गया।

"व्यावसायिक क्रान्ति" का प्रभाव तथा उसके दोष—"व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution) के काल के इन नये-नये आविष्कारों के कारण देश का जीवन बिलकुल नये ढंग का हो गया। देश की सम्पत्ति बढ़ने लगी और इसी के भरोसे इँगलैंड नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध करने का भार सह सका। कलों का व्यवहार बढ़ जाने से कोयले और लोहे की आवश्यकता पड़ने लगी; इसलिए देश के उत्तरी तथा पश्चिमी भागों में ही नये व्यावसायिक केन्द्र बने, जहाँ इन दोनो वस्तुओं के मिलने की सुविधा है। इँगलैंड के निवासियों का अब व्यवसाय ही प्रधान उद्यम हो गया और कृषि की ओर बहुत कम ध्यान रह गया। आजकल इँगलैंड में अनाज आदि अधिकतर विदेश से मँगाया जाता है और उसके बदले कारख़ानों का बना हुआ सामान वहाँ से विदेश भेजा जाता है। इस परिवर्तन के कारण देश के पूर्वीय

तथा दक्षिणी भागों का, जहाँ अब तक भूमि उपजाऊ होने के कारण घनी आबादी थी, इतना महत्त्व न रह गया; और अब उत्तर तथा पश्चिम के व्यावसायिक केन्द्रों की ओर आबादी बढ़ने लगी। इँगलैंड अब कृषक देश के स्थान पर व्यावसायिक देश हो गया; और इसलिए गाँवों की अपेक्षा नगरों की संख्या बढ़ने लगी। नया व्यवसाय भी नये ही ढंग का हुआ। कलों के आविष्कार के कारण छोटे-छोटे कारीगरों का युग (Domestic Stage of Production) समाप्त हुआ; और उसके स्थान पर बड़े-बड़े पुतलीघरों (Factory System) की स्थापना हुई जिनमें हज़ारों लाखों आदमी मज़दूरी पर काम करते हैं।

इस परिवर्तन से सामाजिक दशा के कुछ दोष भी प्रकट होने लगे। ग्रामों की शुद्ध हवा में रहने के स्थान पर अब जन-संख्या नगरों की ही ओर खिंचने लगी; यहाँ तक कि नगरों में रहने भर का ठिकाना मिलना दुर्लभ हो गया। पुतलीघरों की स्थापना से छोटे कारीगरों का कारबार चौपट हो गया और बहुत-से लोग मज़दूरी लेकर कारख़ानों में नौकरी करने पर बाध्य हुए। मज़दूरों की दशा बहुत दिनों तक बड़ी असन्तोष-जनक रही और उनका काम ढूँढ़ने में भी बहुधा बड़ी कठिनाई पड़ने लगी। पुतलीघरों के स्वामी केवल अपने लाभ की परवाह करते थे; और मज़दूरों के स्वास्थ्य आदि का ध्यान छोड़कर कभी-कभी उनसे प्रतिदिन अठारह घंटे तक काम लेते थे। इस परिच्छेद के तीसरे अधिकरण में हम बतलावेंगे कि इन सामाजिक दोषों का किस प्रकार सुधार हुआ।

(२) वैज्ञानिक उन्नति का काल (उन्नीसवीं शताब्दी)

स्टीफ़ेन्सन तथा रेलगाड़ी का आविष्कार—उन्नीसवीं शताब्दी में और भी बड़े बड़े आविष्कार हुए जिनके सामने अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध के आविष्कार तुच्छ जान पड़ने लगे। जेम्स वॉट भाप का एंजिन बना चुका था, परन्तु उसका केवल कलों के चलाने में प्रयोग हो सकता था। जॉर्ज स्टीफ़ेंसन (George Stephenson)

ने भाप-द्वारा गाड़ियों को खींचने के लिए एंजिन बनाया; और इस प्रकार लोहे की पटरी पर चलनेवाली रेलगाड़ी का आविष्कार हुआ।

जॉर्ज स्टीफ़ेंसन

इँगलैंड में पहली रेल की पटरी मैन्चेस्टर और लिवरपूल के बीच में सन् १८३० में बनाई गई। उस पर स्टीफ़ेंसन का प्रसिद्ध एंजिन राकेट (Rocket) लगभग ३५ मील प्रतिघंटे की गति से रेलगाड़ी खींच सकता था। महारानी विक्टोरिया ने रेल-द्वारा पहली यात्रा सन् १८४२ में की और सन् १८४६ में, "सस्ती रेल-यात्रा-नियम" (Cheap Trains Act) के अनुसार, रेल का किराया एक पेनी प्रति मील हो जाने के कारण सभी श्रेणियों के लोगों को रेलगाड़ी से लाभ उठाने का अवसर मिला।

भाप के जहाज़—जल-यात्रा के लिए भाप-द्वारा चलनेवाले जहाज़ों का आविष्कार रेलगाड़ी से भी कई वर्ष पहले हो चुका था। सन् १८१२ में हेनरी बेल (Henry Bell) की कामेट (Comet) नामक भाप की नाव स्कॉटलैंड की नदियों पर किराये पर चलने लगी। फिर धीरे-धीरे समुद्र-यात्रा के लिए भी भाप के जहाज़ बनाये जाने लगे। भाप का पहला अँगरेज़ी जहाज़, जिसने एटलांटिक महासागर पार किया, ग्रेट वेस्टर्न (Great Western)
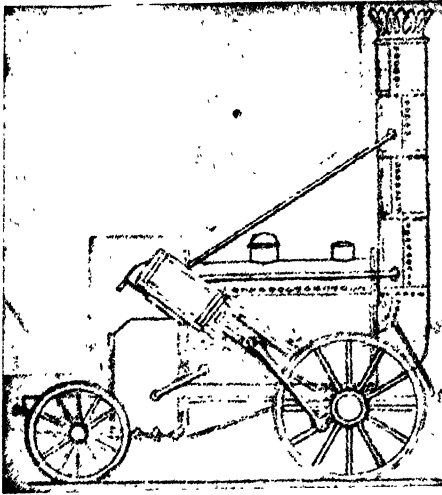
स्टीफ़ेंसन का राकेट
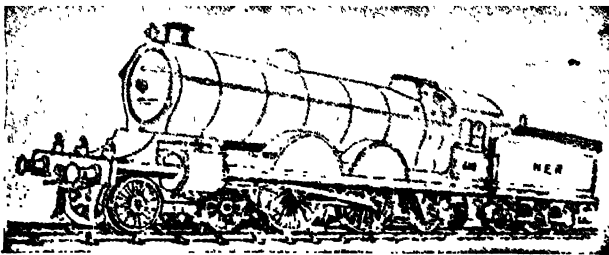
आजकल का एंजिन

था। यह यात्रा सन् १८३८ में हुई और इसमें पूरे चौदह दिन लगे थे। परन्तु आजकल इतने अच्छे भाप के जहाज़ बनने लगे हैं कि वे एटलांटिक महासागर को साढ़े चार दिन में पार कर सकते हैं।

रेलगाड़ी तथा भाप के जहाज़ों ने मनुष्य-मात्र का बड़ा उपकार किया; और उन्हीं की सहायता से दुनिया के व्यापार में इतनी आश्चर्यजनक उन्नति हो सकी।

रोलैंड हिल तथा डाक के प्रबन्ध का सुधार—अठारहवीं शताब्दी में डाक का प्रबन्ध सन्तोषजनक न था। चार्ल्स प्रथम के राजत्व-काल से डाक का प्रबन्ध सरकार ने ले लिया था; परन्तु चिट्ठियाँ भेजने का महसूल अधिक होता था; इस कारण साधारण श्रेणी के लोग बहुत कम चिट्ठियाँ भेजते थे। महसूल प्रति मील के हिसाब से लिया जाता था; और देश ही में भिन्न-भिन्न स्थानों को चिट्ठियाँ भेजने का भिन्न-भिन्न महसूल लगता था। डाक के प्रबन्ध के सुधार का आन्दोलन रोलैंड हिल (Rowland Hill) ने किया। उसी के अनुरोध से सन् १८४० में डाक का महसूल सस्ता और देश के प्रत्येक भाग के लिए एक-सा कर दिया गया। एक

'कामेट' नामक भाप का पहला जहाज़
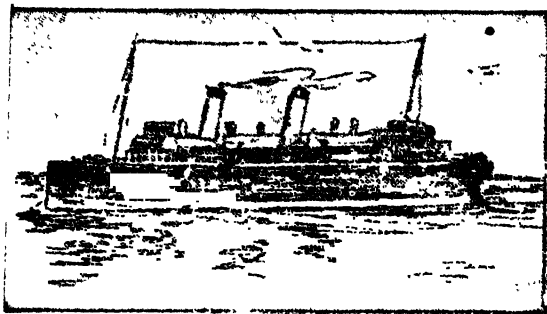
आधुनिक जहाज़

पेनी में आधे आउन्स की चिट्ठी ब्रिटेन के चाहे जिस भाग को भेजी जाने

लगी। इस सुधार से डाकख़ाने की आय में कमी पड़ने के स्थान पर उसकी प्रतिदिन वृद्धि होने लगी; क्योंकि अब सस्ता महसूल हो जाने के कारण बहुत-से लोग चिट्ठियाँ भेजने लगे। इसी समय रेल तथा भाप के जहाज़ के आविष्कार के कारण डाक के प्रबन्ध में और भी सुविधा होने लगी।

बिजली का आविष्कार तथा टेलीग्राफ़ और टेलीफ़ोन—वैज्ञानिक संसार में उन्नीसवीं शताब्दी की सबसे प्रसिद्ध घटना बिजली का आविष्कार है। बिजली के काम में खोज शुरू करनेवाला फ़ैरेडे (Faraday, 1791-1867) नामक प्रसिद्ध वैज्ञानिक था, जिसके परिश्रम ने समस्त संसार का बड़ा उपकार किया। बिजली ही के आविष्कार के कारण टेलीग्राफ़ (Telegraph), केबिल ((Cable), टेलीफ़ोन (Telephone) आदि का आविष्कार हो सका। इँगलैंड में टेलीग्राफ़ की पहली लाइन सन् १८४४ में बनाई गई, और सन् १८५१ में समुद्र के पार तार भेजने के लिए एटलांटिक महासागर में तार (Cable) लगाया गया। सन् १८७६ में टेलीफ़ोन का आविष्कार हुआ जिसके द्वारा बहुत दूर बैठे हुए मनुष्य आपस में बात-चीत कर सकते हैं।

समाचार-पत्र—डाक, तार आदि की सुविधायें हो जाने के कारण समाचारपत्रों में भी ख़ूब उन्नति हुई। हम बतला चुके हैं कि इँगलैंड में समाचार-पत्रों का प्रकाशन रानी एन के राजत्वकाल में आरम्भ हो चुका था। अब टेलीग्राफ़ के द्वारा देश के समाचार और केबिल के द्वारा देशान्तर के समाचार मँगाकर समाचार-पत्रों में प्रकाशित किये जाने लगे; और डाक का अच्छा तथा सस्ता प्रबन्ध होने के कारण ये समाचार-पत्र सस्ते मूल्य में मिलने लगे। वर्तमान समय में समाचार-पत्र सामाजिक जीवन के प्रधान अङ्ग माने जाते हैं; और देशवासियों को राजनीतिक प्रश्नों की ओर प्रवृत्त करने तथा सरकार का ध्यान देश की आवश्यकताओं की ओर आकर्षित करने का भी अधिकतर कार्य इन्हीं समाचार-पत्रों के द्वारा होता है।

अन्य वैज्ञानिक आविष्कार (बीसवीं शताब्दी)—वैज्ञानिक आविष्कार क्रमशः बढ़ते जा रहे हैं। जीवन के प्रत्येक कार्य में प्रतिदिन नई सुविधायें होती जा रही हैं। आजकल सड़कों पर मोटरें (Motor Car) दौड़ती हैं, आकाश में वायुयान (Aeroplane) चक्कर लगाते हैं। समुद्र में पानी के नीचे चलनेवाले जहाज़ (Submarines) भी बन गये हैं। अब समाचार बे-तार के टेलीग्राफ़ (Wireless Telegraph) द्वारा भी भेजे जाने लगे हैं और वायु यान-द्वारा डाक भेजने का भी प्रबन्ध किया जा रहा है। अभी बीसवी शताब्दी का केवल चौथाई भाग ही व्यतीत हुआ है; और यदि इसी प्रकार उन्नति होती रही, तो इस शताब्दी के अन्त तक वैज्ञानिकों की बुद्धि न मालूम और क्या क्या चमत्कार दिखलावेगी।

(३) उन्नीसवीं शताब्दी के सामाजिक सुधार

सामाजिक सुधार का काल—"व्यावसायिक क्रान्ति" (The Industrial Revolution) के दोषों को दूर करने तथा अन्य सामाजिक समस्याओं का निराकरण करने के लिए उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत-से नियम बनाये गये। इनमें से "ग़ुलामों का उद्धार", "कैथोलिकों का उद्धार" तथा नगरों में "प्रतिनिधि-शासन" की स्थापना के विषय में हम पहले ही बतला चुके हैं। इस परिच्छेद में हम सामाजिक सुधार के अन्य मुख्य-मुख्य नियमों का उल्लेख करते हैं।

पुतलीघरों के सुधार के नियम (Factory Laws)—पुतलीघरों में मज़दूरों की दशा बहुत असन्तोषजनक थी। उनको कभी-कभी कोयलों की भट्टीवाले कमरों में १६ तथा १८ घंटे काम करना पड़ता था। कभी-कभी एंजिन आदि के फट जाने से बहुत-से मज़दूरों की जानें भी जाती थीं। पुतलीघरों के मज़दूरों को, अधिक परिश्रम करने के कारण, प्रायः क्षयरोग हो जाता था। स्त्रियाँ और छोटे-छोटे बच्चे भी पुतलीघरों में नौकर रख लिये जाते थे; और उनसे ज़मीन के नीचे कोयले

की अँधेरी खानों में काम लिया जाता था, जिससे उनके स्वास्थ्य पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता था।

पुतलीघरों के मज़दूरों की यह हीन दशा देखकर इँगलैंड के अर्ल ऑफ़ शेफ़्टसबरी (Earl of Shaftesbury) नामक एक दयावान् व्यक्ति के हृदय पर बड़ी चोट लगी। उसने सोचा कि यदि यही दशा जारी रही तो कुछ दिनों में, ब्रिटिश जाति का बहुत बड़ा भाग दुर्बल तथा रोगग्रस्त होने के कारण, देश की जातीय शक्ति कम होने लगेगी। उसी के अनुरोध से पार्लिमेंट ने कई नियम स्वीकृत किये जो "पुतलीघरों के सुधार के नियम" (Factory Laws) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस प्रकार का पहला नियम सन् १८३३ में स्वीकृत हुआ। इन नियमों-द्वारा इन बातों का निर्णय किया गया—(१) पुतलीघरों के मज़दूरों से दस घंटे प्रतिदिन से अधिक काम न लिया जाय। (२) पुतलीघरों में हवा, रोशनी आदि का उचित प्रबन्ध होना चाहिए। (३) स्त्रियों तथा दस वर्ष से कम उम्र के बच्चों के लिए खानों में या ज़मीन के नीचे काम करने की मनाही कर दी गई। और (४) मशीनों के फटने आदि से मज़दूरों की रक्षा करने का भार पुतलीघरों के स्वामियों पर रखा गया।

पुतलीघरों के लिए निरीक्षक (Factory Inspectors) नियुक्त किये गये जो जाकर देखने लगे कि इन नियमों का ठीक-ठीक पालन हो रहा है या नहीं। जिन पुतलीघरों में इन नियमों का उल्लंघन होता था उनके स्वामियों को कड़े दंड दिये जाने लगे।

"दरिद्र-संरक्षण-नियम" में संशोधन—हम बतला चुके हैं कि रानी एलिज़बेथ के राजत्वकाल में "दरिद्र संरक्षण-नियम" (Poor Laws) स्वीकृत हुए थे, जिनके अनुसार ग़रीबों तथा अपाहिजों की सहायता करने का प्रबन्ध किया गया था। "फ्रांस की राज्यक्रान्ति" के भीषण युद्ध के काल में इंगलैंड में दरिद्रों की संख्या अधिक बढ़ गई थी; इसलिए यह नियम कर दिया गया था कि उनको "दरिद्रालय"

(Poor House) में न बुलाकर उन्हीं के मकान पर आवश्यकतानुसार सहायता दे दी जाय। बहुत-से लोगों ने इस नियम का दुरुपयोग करना आरम्भ किया। प्रायः ऐसा होता था कि काफ़ी आमदनी होने पर भी लोग सहायता के लिए प्रार्थनापत्र भेज देते थे। इसको रोकने के लिए सन् १८३४ में एक नया "दरिद्र-संरक्षण-नियम" स्वीकृत किया गया, जिसके अनुसार यह निर्णय हुआ कि बुड्ढों, अपाहिजों, विधवाओं तथा रोगियों के अतिरिक्त किसी को उसके घर पर सहायता न दी जाय। इसके अतिरिक्त और जो लोग सहायता चाहें उन्हें "दरिद्रालय" में रक्खा जाय और वहाँ उनसे पूरा परिश्रम लेकर तब उन्हें पेट भर अन्न दिया जाय। इसका यही आशय था कि वास्तव में मनुष्य की जीविका का कोई साधन न रहे तभी वह "दरिद्रालय" की शरण ले।

देश के दरिद्रों की जीविका का प्रबन्ध करना भी वर्तमान काल की बड़ी कठिन समस्या हो रही है; और ब्रिटिश सरकार को सेना के आधे व्यय के बराबर दरिद्रों की सहायता में ख़र्च करना पड़ता है।

"व्यावसायिक संघों" की स्थापना—उन्नीसवीं शताब्दी में पुतलीघरों में काम करनेवालों की संख्या प्रतिदिन बढ़ती गई और प्रत्येक व्यवसाय के मज़दूरों ने एक दूसरे की सहायता करने के लिए "व्यावसायिक संघ" (Trade Unions) स्थापित किये। इन संघों ने अपने व्यवसायवालों की मज़दूरी बढ़वाने के लिए कई बार बड़े बड़े आन्दोलन किये और पुतलीघरों के स्वामियों को मज़दूरी बढ़ाने पर बाध्य करने के लिए मज़दूरों ने हड़ताल (Strike) कर देने का अच्छा ढङ्ग निकाल लिया। सन् १८०० में सरकार ने एक नियम (Combination Act) बनाया जिसके अनुसार मज़दूरों का मिलकर अपने "व्यावसायिक संघ" बनाना क़ानून के विरुद्ध ठहराया गया। सन् १८१५ में यह नियम हटा दिया गया; परन्तु हड़ताल करना अभी तक देश के क़ानून का उल्लंघन ही समझा जाता था। मज़दूरों की संख्या बराबर बढ़ती जाने के कारण

सरकार उनको कुछ सुविधायें देने के लिए बाध्य हुई; और सन् १८७० में उन्हें "व्यावसायिक संघ" स्थापित करने की नियमानुसार आज्ञा मिल गई। सन् १९०६ में इन "व्यावसायिक संघों" के लिए कई प्रकार की सुविधायें कर दी गई और तब से मज़दूरों की दशा बराबर सुधरती गई। आजकल पार्लिमेंट में "मज़दूर-दल" (Labour Party) नामक एक राजनीतिक दल भी है जिसका उद्देश्य ही यह है कि देश के मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा की जाय।

शिक्षा-विभाग का सुधार—उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षा-विभाग में भी बहुत कुछ सुधार हुआ। सन् १८७० में महाशय फ़ार्स्टर (W. E. Forster) के अनुरोध से पार्लिमेंट ने "प्रारम्भिक शिक्षा-नियम" (Elementary Education Act) स्वीकृत किया, जिसके अनुसार "शिक्षालय-समितियों" (School Boards) की स्थापना हुई और उनको देश के प्राइमरी स्कूलों की देख-भाल का कार्य सौंपा गया। सन् १८७६ में यह नियम कर दिया गया कि छः से बारह वर्ष तक की अवस्था के प्रत्येक बालक को शिक्षा पाने के लिए स्कूल जाना आवश्यक है। सन् १८९१ में प्राइमरी स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा का भी प्रबन्ध कर दिया गया।

अभी थोड़े दिन हुए, सन् १९१८ में शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष महाशय फ़िशर (Right Hon. H. A. L. Fisher) के अनुरोध से एक बड़ा महत्त्वपूर्ण "शिक्षा-नियम" (The Education Act of 1918) स्वीकृत हुआ है। इस नियम की मुख्य-मुख्य धारायें ये हैं—(१) पाँच से चौदह वर्ष तक के प्रत्येक बालक को स्कूल जाना होगा। (२) बारह वर्ष से कम अवस्थावाला कोई बालक किसी प्रकार की मज़दूरी न करने पावेगा। बारह से चौदह वर्ष की अवस्थावाले बालक रविवार को दो घंटे मज़दूरी कर सकते हैं, परन्तु स्कूल के दिन उनसे इस प्रकार का कोई काम न लिया जायगा। (३) स्कूलों में शारीरिक शिक्षा, खेल-कूद, तैरने आदि का भी प्रबन्ध किया जाय और

प्रतिमास छात्रों का डाक्टरी निरीक्षण होना चाहिए, जिससे उनके स्वास्थ्य का पता लगता रहे। (४) जिन छात्रों में कोई प्राकृतिक दोष पाया जाय, उनकी शिक्षा के लिए विशेष प्रकार के स्कूल खोले जायँ

इन नियमों से पता लगता है कि इँगलैंड में बालकों की शिक्षा तथा स्वास्थ्य की ओर सरकार कितना अधिक ध्यान देती है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन १७६४—हारग्रीव्स की सूत कातने की मशीन (Hargreave's Spinning Jenny)।

" १७६७—आर्कराइट का पानी से चलनेवाला चरखा (Arkwright's Water Frame)।

" " —जेम्स ब्रिंडले (James Brindley) द्वारा इँगलैंड में पहली नहर का बनना।

" १७७५ क्रॉम्पटन की सूत कातने की मशीन (Crompton's Mule)।

" १७८५—कॉर्टराइट का पानी से चलनेवाला करघा (Cartwright's Power Loom)।

" " —वॉट (Watt) द्वारा भाप के एंजिन का आविष्कार।

" १८०७—लन्दन की पॉल मॉल सड़क पर गैस की रोशनी।

" १८१२—हेनरी बेल की "कॉमेट" (Comet) नामक भाप की नाव।

" १८३०—स्टीफ़ेंसन का रेलगाड़ी का 'राकेट" (Rocket) नामक एंजिन।

" १८३३—"पुतलीघर के सुधार का नियम" (Factory Laws)

सन् १८३४—"दरिद्र-सरक्षण नियमों" (Poor Laws) में संशोधन।

" १८३८—"ग्रेट वेस्टर्न" (The Great Western) नामक भाप के जहाज़ का एटलांटिक महासागर पार करना।

" १८४०—डाक के प्रबन्ध का सुधार।

" १८४४—इँगलैंड में तार की पहली लाइन।

" १८४६—"सस्ती-रेल-यात्रा-नियम" (Cheap Trains Act)।

" १८५१—एटलांटिक महासागर में केबिल (Cable) लगना।

" १८७०—"व्यावसायिक संघों" (Trade Unions) के स्थापित करने की आज्ञा मिलना।

" " —फ़ॉस्टर महाशय का "प्रारम्भिक शिक्षा-नियम" (Forster's Elementary Education Act)

" १८७६—टेलीफ़ोन (Telephone) का आविष्कार।

" १९०६—"व्यावसायिक संघों" को विशेष सुविधायें।

" १९१८—फ़िशर महोदय का "शिक्षा-नियम" (Fisher's Education Act of 1918)।

सातवाँ परिच्छेद

पार्लिमेंट के सुधार का आन्दोलन

तथा

वर्तमान शासन-प्रणाली

(१) पार्लिमेंट के सुधार के नियम

पार्लिमेंट के चुनाव की प्रणाली के दोष—उन्नीसवीं शताब्दी तक आते-आते "नियमानुमोदित शासन" (Constitutional Government) की स्थापना हो चुकी थी; परन्तु पार्लिमेंट अभी वास्तव में जनता की प्रतिनिधि सभा न थी। अभी बहुत-से स्थानों को, जो "व्यावसायिक क्रान्ति" के कारण अब बड़े नगर हो गये थे, अपने प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न मिला था। परन्तु बहुत-से ऐसे स्थान*, जो अब बिलकुल ग्राम रह गये थे, बराबर अपने प्रतिनिधि भेजते थे। दूसरी अनुचित बात यह थी कि प्रतिनिधियों की संख्या निर्धारित करने में उनके स्थानों की जन-संख्या का बिलकुल ध्यान न रखा जाता था। चुनाव के नियम भी बहुत असन्तोषजनक थे। काफ़ी जायदादवाले लोग ही वोटर हो सकते थे और साधारण जनता का पार्लिमेंट के चुनाव से कोई सम्बन्ध न था।

पार्लिमेंट के सुधार का पहला नियम (१८३२)—छोटा पिट पहला राजनीतिज्ञ था, जिसने चुनाव की प्रणाली का सुधार करना चाहा था, परन्तु धनी लोगों के विरोध के कारण उसका प्रयत्न सफल न हो सका था। "फ्रांस की राज्यक्रान्त" के काल में इँगलैंड की सरकार इतनी घबराई हुई थी कि इस प्रकार के सुधार आदि के प्रश्नों पर विचार करना

---

* ऐसे स्थान Rotten Boroughs कहलाते थे।

ही असम्भव था। परन्तु वाटरलू के युद्ध के बाद पार्लिमेंट के सुधार का आन्दोलन बड़े ज़ोरों से उठा और सन् १८३१ में लार्ड जॉन रसेल (Lord John Russel) ने इस सुधार के लिए एक प्रस्ताव उपस्थित किया। लोक सभा (House of Commons) में बड़ी कठिनाई से केवल एक सम्मति अधिक होने के कारण यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, परन्तु लार्ड-सभा (House of Lords) ने उसे अस्वीकृत कर दिया। अगले साल नई पार्लिमेंट का चुनाव हुआ

अठारहवीं शताब्दी का चुनाव

और उसमें वही सुधार का प्रस्ताव फिर उपस्थित किया गया। इस बार लोक-सभा में १०९ के बहुमत से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ; परन्तु लार्ड-सभा ने फिर इसका विरोध किया। सुधारवादियों को अपने आन्दोलन में दृढ़ देखकर राजा विलियम चतुर्थ ने दबाव डालकर लार्ड-सभा में भी यह प्रस्ताव स्वीकृत करा दिया; और इस प्रकार सन् १८३२ में पार्लिमेंट के "सुधार का पहला प्रस्ताव" (First Reform Bill) "राजनियम" (Act) बन गया। इस नियम के अनुसार जिन स्थानों की जन-संख्या २,००० से कम थी, उनको पार्लिमेंट की लोक-सभा में प्रतिनिधि भेजने का अधिकार न रहा; और जिनकी जन-संख्या २,००० और ४,००० के बीच में थी, उनको केवल एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार रह गया। इस प्रकार जो जगहें ख़ाली हुईं,

उनको भरने के लिए उन स्थानों को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया गया जो "व्यावसायिक क्रान्ति" के कारण अब बढ़कर नगर हो गये थे। चुनाव के नियमों में भी संशोधन किया गया। वोटरों की जायदाद की शर्त हटा दी गई और प्रत्येक मनुष्य को, जो १० पाउंड सालाना किराये के मकान में रहता हो, या जिसके पास ५० पाउंड सालाना लगान की भूमि हो, वोट देने का अधिकार दे दिया गया। इस प्रकार पार्लिमेंट में, जिसमें अब तक ज़मींदार तथा धनिक लोग ही भरे हुए थे, मध्यम श्रेणी के लोगों का भी प्रवेश हो गया।

चार्टिस्ट आन्दोलन (१८४८)—महारानी विक्टोरिया के राजत्व-काल के आरम्भिक भाग में राजनीतिक सुधार के लिए एक बहुत बड़ा आन्दोलन उठा। इस समय कॉर्न लॉ (Corn Law) के कारण अनाज बड़ा महँगा था, इसलिए बेचारे मज़दूरों को पेट भर अन्न मिलना भी दुर्लभ था। कुछ लोगों का यह विचार था कि इस असन्तोषजनक अवस्था के सुधार का एकमात्र उपाय यही है कि सब देशवासियों को राजनीतिक अधिकार दे दिये जायँ। फ़ीयरगस ओकॉनर (Feargus O'Connor) ने एक बहुत बड़ा प्रार्थनापत्र तैयार किया जो People's Charter ("जनता का अधिकार-पत्र") कहलाता है और जिसके समर्थक "चार्टिस्ट" (Chartists) नाम से प्रसिद्ध हैं। उसमें समस्त देशवासियों को वोट देने का अधिकार, गुप्त वोट और लोक-सभा के सदस्यों के वेतन आदि के लिए प्रार्थना की गई थी; परन्तु पार्लिमेंट में यह प्रार्थना-पत्र स्वीकृत न हुआ। इस पर चार्टिस्ट दलवालों ने विराट् सभायें करके बड़े ज़ोरों से आन्दोलन आरम्भ किया; परन्तु उनके कुछ नेताओं के पकड़े जाने से यह दल धीरे-धीरे टूट गया। चार्टिस्ट दलवाले जो सुधार चाहते थे वे अनुचित न थे और, जैसा कि हम अभी बतलावेंगे, समय आने पर पार्लिमेंट ने धीरे-धीरे इन सब सुधारों के लिए प्रस्ताव स्वीकृत कर लिये।

पार्लिमेंट के सुधार का दूसरा नियम (१८६७)—सन् १८३२ के "सुधार नियम" के अनुसार मध्यम श्रेणी के लोगों को वोट देने का अधिकार मिल चुका था; परन्तु देश के कारीगर और मज़दूर अब भी इस अधिकार से वंचित थे। सन् १८६७ में, डिसरायली के मन्त्रित्व-काल में, "पार्लिमेंट के सुधार का दूसरा नियम" (Second Reform Act) स्वीकृत हुआ। उसके अनुसार नगरों के सब मकानदारों को वोट देने का अधिकार दे दिया गया। मकानदारों की श्रेणी में नगर के साधारण कारीगर तक आ जाते थे; अतः नगरों के अधिकांश निवासी पार्लिमेंट के चुनाव में वोट देने के अधिकारी हो गये।

पार्लिमेंट के सुधार का तीसरा नियम (१८८४)—सन् १८८४ में ग्लैडस्टन के मन्त्रित्व-काल में "पार्लिमेंट के सुधार का तीसरा नियम" (Third Reform Act) स्वीकृत हुआ। उसके अनुसार गाँवों तथा नगरों दोनों के लिए यह नियम कर दिया गया कि प्रत्येक मकानदार वोट देने का अधिकारी है। अब बहुत-से मज़दूर तथा गाँव के साधारण किसान तक वोटर हो गये। इस प्रकार पार्लिमेंट की लोक-सभा में देश की समस्त श्रेणियों के प्रतिनिधियों का प्रवेश हो जाने के कारण वह धीरे-धीरे वास्तविक जातीय सभा का रूप धारण करने लगी।

बैलट एक्ट तथा गुप्त वोट (१८७२)—पार्लिमेंट के सुधार के तीसरे नियम से कुछ वर्ष पहले सन् १८७२ में एक बड़ा आवश्यक नियम स्वीकृत हो चुका था, जो बैलट एक्ट (Ballot Act) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार यह निश्चित किया गया कि वोट ऐसे ढँग से लिया जाय जिससे यह पता न लग सके कि किसने किसके लिए वोट दिया है। वोटर जिसे वोट देना चाहे, उसके नाम के सामने एक चिह्न बनाकर काग़ज़ को स्वयं एक बन्द सन्दूक़ में, जो "बैलट बाक्स" कहलाता है, डाल दे। इसके पहले जब गुप्त वोट का कोई प्रबन्ध न था, वोटर स्वतन्त्रतापूर्वक अपना मत प्रकाशित करने से झिझकते

थे। परन्तु अब वोटरों को किसी प्रकार का भय न रहा; और चुनाव में दबाव डालकर वोट प्राप्त करने की प्रथा बहुत कम हो गई।

पार्लिमेंट एक्ट (१९११) तथा लोक-सभा की प्रधानता— सन् १९११ में प्रसिद्ध पार्लिमेंट एक्ट (Parliament Act) स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार पार्लिमेंट की लोक-सभा (House of Commons) तथा लार्ड-सभा (House of Lords) का पारस्परिक सम्बन्ध निर्धारित हुआ। अर्थ-सम्बन्धी प्रस्तावों (Money Bills) पर, जिनमें कर आदि का प्रश्न होता था, लार्ड-सभा का कोई अधिकार न रहा; और इस प्रकार के प्रस्तावों पर वाद-विवाद करने का पूर्ण अधिकार लोक-सभा को दे दिया गया। शासन-कार्य्य का संचालन कर पर ही निर्भर है; अतः पार्लिमेंट में अब लोक-सभा ही की प्रधानता हो गई। यह भी निश्चित कर दिया गया कि जिन नियमों को लोक-सभा तीन बार स्वीकृत कर दे, यदि उन्हें लार्ड-सभा अस्वीकृत भी करे, तो भी वे राजा के हस्ताक्षर के बाद राजनियम बन सकते हैं। इस प्रकार नियम बनाने के कार्य में भी लोक-सभा ही प्रधान रही।

इस नियम के अनुसार पार्लिमेंट की अवधि में भी परिवर्तन हुआ। जॉर्ज प्रथम के राजत्वकाल के "सप्तवार्षिक नियम" (देखो पृष्ठ १९१) के अनुसार पार्लिमेंट का चुनाव सात वर्ष के लिए होता था; परन्तु अब यह अवधि घटाकर पाँच वर्ष कर दी गई। इसी समय से लोक-सभा के सदस्यों को ४०० पाउंड सालाना वेतन देने की प्रथा का प्रारंभ हुआ; और इस सुविधा के कारण ऐसे लोग भी, जो अब तक अपने काम-धन्धे की हानि के भय से चुनाव के लिए खड़े न होते थे, पार्लिमेंट के सदस्य हो सकते हैं।

चुनाव के नियमों में संशोधन तथा स्त्रियों का लोक-सभा में प्रवेश— सन् १९१८ में पार्लिमेंट के चुनाव के नियमों में और कई संशोधन किये गये। Representation of People Act के अनुसार लोक-सभा के सदस्यों की संख्या कुछ बढ़ा दी गई; और २१ वर्ष

से अधिक अवस्था के सब पुरुषों को वोट देने का अधिकार दे दिया गया। यह नियम पार्लिमेंट के सुधार के पहले तीन नियमों से भी बढ़कर रहा। इसमें एक और बड़े महत्त्व की यह बात निश्चित की गई कि स्त्रियाँ भी लोक-सभा की सदस्य होने की अधिकारिणी हैं और ३० वर्ष से अधिक अवस्था की प्रत्येक स्त्री को, जिसका अपना घर का मकान हो या जिसके पति का घर का मकान हो, पार्लिमेंट के चुनाव में वोट देने का अधिकार दे दिया गया।

परन्तु सन् १९१८ के नियम में एक कमी रह गई। पुरुष २१ वर्ष ही की आयु में वोटर हो जाते थे परन्तु स्त्रियाँ ३० वर्ष की आयु से पहले वोटर न हो सकती थीं। अभी कुछ दिन हुए (सन् १९२८ में) पार्लिमेंट ने एक नियम स्वीकृत किया है जो सामाजिक भाषा में Flappers Vote Bill के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार पुरुषों की भाँति स्त्रियाँ भी २१ ही वर्ष की आयु में वोटर होने की अधिकारिणी हो जाती हैं। आजकल चुनाव के नियमों में स्त्रियों और पुरुषों को बराबर अधिकार हैं और यह विचार फैलने लगा है कि केवल स्त्री होने के कारण किसी व्यक्ति को किसी राजनीतिक अधिकार से वंचित रखना सर्वथा अनर्थ है।

आजकल ब्रिटेन में २१ वर्ष से अधिक के सब स्त्री-पुरुष (यदि उनमें पागलपन आदि दोष न हों) पार्लिमेंट के वोटर होते हैं। इस प्रकार पार्लिमेंट की लोक-सभा अब पूर्ण रूप से जनता की प्रतिनिधि-सभा हो गई है और लोक-सभा ही के हाथ में शासन की बागडोर होने के कारण ब्रिटेन का शासन अब वास्तविक "जनता का शासन" (Democracy) कहला सकता है।

(२) वर्तमान शासन-प्रणाली

"नियमानुमोदित राजा"—इँगलैंड के राजनीतिक इतिहास का सारांश यह समझना चाहिए कि देश के शासन-कार्य की बागडोर
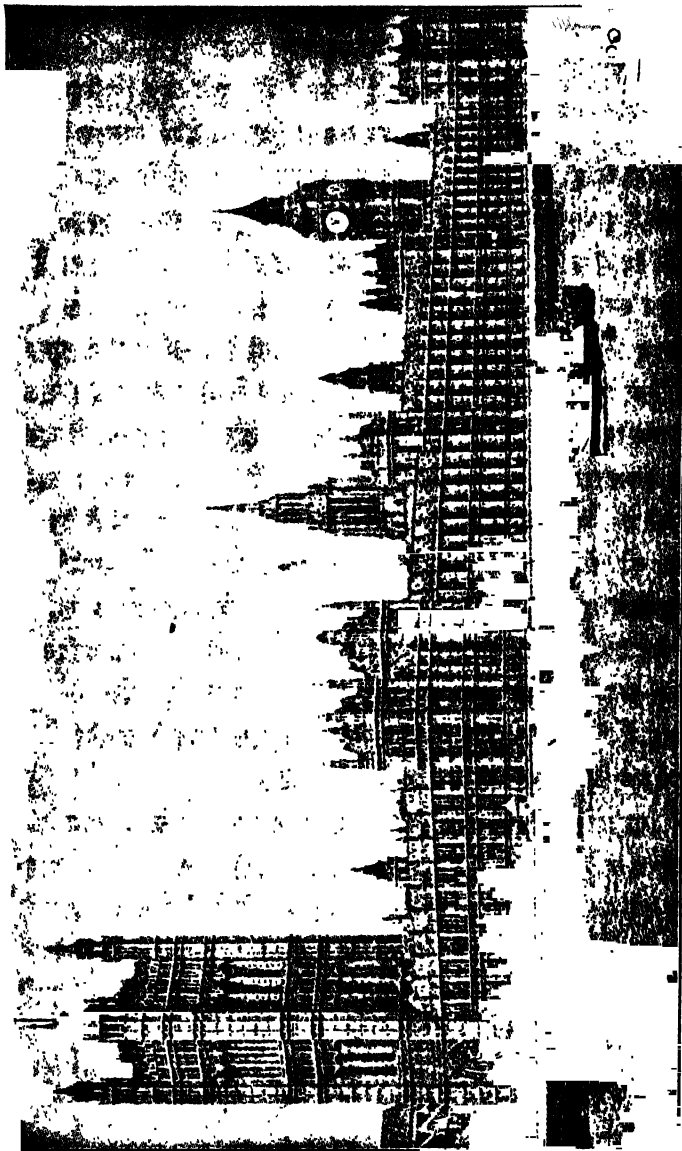
ब्रिटिश पार्लिमेंट के भवन

धीरे-धीरे राजा के हाथ से निकलकर पार्लिमेंट के हाथ में आ गई। आजकल इँगलैंड का राजा "नियमानुमोदित राजा" (Constitutional Monarch) होता है; अर्थात् जनता के चुने हुए मन्त्रियों की सम्मति के बिना वह कुछ नहीं कर सकता। शासन कार्य वास्तव में इन मन्त्रियों के ही हाथ में है; परन्तु सब कारवाई राजा ही के नाम से की जाती है। राज्य के समस्त कर्मचारी राजा ही के नौकर कहलाते हैं और न्यायालयों में न्याय का काय भी राजा ही के नाम से होता है। प्रधान मन्त्री को पार्लिमेंट के वाद विवाद तथा मन्त्रि-मंडल के गुप्त निर्णय आदि की राजा को रिपोर्ट भेजनी पड़ती है। पार्लिमेंट के चुनाव के लिए निमन्त्रण भी सदा राजा ही के नाम से भेजा जाता है। राजा का व्यक्तिगत रूप से भी बड़ा प्रभाव होता है; और किसी संस्था में राजा का सम्मिलित होना उस संस्था के लिए बड़े सम्मान की बात मानी जाती है। महारानी विक्टोरिया अपने व्यक्तिगत प्रभाव से अपनी समस्त प्रजा की प्रेमपात्र बन गई थीं। उनके मन्त्री प्रायः उनसे राजनीतिक विषयों में परामर्श लेते थे। एडवर्ड सप्तम ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव ही से कई अवसरों पर योरप में युद्ध न छिड़ने दिया। इसके अतिरिक्त राजा अपनी समस्त प्रजा का प्रतिनिधि माना जाता है, और वर्तमान समय में ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भाग एक राजा के अधीन होने के कारण ही सुगमता से एक साथ सम्बद्ध हैं।

पार्लिमेंट; लोक-सभा तथा लार्ड-सभा पार्लिमेंट के दो भाग होते हैं। एक लार्ड सभा है (House of Lords) जिसके सदस्य प्रायः बड़े बड़े घरानों के लोग होते हैं। देश की कोई बड़ी सेवा करने के कारण कुछ बड़े घरानों के लोगों को पुश्तैनी उपाधियाँ* दे दी जाती हैं, जिनके कारण उन घरानों के सबसे बड़े पुत्र वह उपाधि धारण करने

* Duke, Marquis, Earl, Viscount, Baron आदि।

तथा लार्ड-सभा में सम्मिलित होने के अधिकारी हो जाते हैं। बड़े घरानों के सदस्यों के अतिरिक्त उसमें इँगलैंड तथा उत्तरी आयरलैंड के चर्च के बड़े पादरी भी सम्मिलित होते हैं। स्काटलैंड के चर्च में पादरी न होने के कारण, वहाँ के चर्च का कोई प्रतिनिधि लार्ड-सभा में नहीं होता।

पार्लिमेंट का दूसरा भाग लोक सभा (House of Commons) कहलाता है। उसमें आजकल ६१५ सदस्य होते हैं, जिनमें ४९२ इँगलैंड से, ३६ वेल्ज़ से, ७४ स्काटलैंड से और १३ उत्तरी आयरलैंड से चुने जाते हैं। हम बतला चुके हैं कि पार्लमेंट में आजकल लोक-सभा ही की प्रधानता है। अर्थ-सम्बन्धी प्रस्तावों पर वाद-विवाद करने का पूर्ण अधिकार लोक-सभा ही को है। अन्य विषयों में भी यदि लोक-सभा दृढ़ हो जाय और लार्ड-सभा का विरोध होते हुए भी किसी नियम को बार-बार पास किया जाय तो तीसरी बार के बाद लार्ड-सभा की अस्वीकृति भी उसे राजनियम बनने से नहीं रोक सकती। मन्त्रि-मंडल पर भी लोक-सभा ही का दबाव रहता है और उसी के विरोधी हो जाने पर मन्त्रियों को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ता है। लोक-सभा का प्रधान स्पीकर (Speaker) कहलाता है और सभा के कार्यों के नियमानुसार संचालन का भार उसी पर होता है। वर्तमान समय में लोक-सभा में तीन राजनीतिक दल हैं; एक कन्ज़रवेटिव (Conservative) जो प्राचीन टोरी-दल की भाँति सुधार आदि को कम पसन्द करते हैं; दूसरे लिबरल (Liberals) जो प्राचीन ह्विग-दल की भाँति पक्के सुधारवादी हैं; और तीसरे लेबर पार्टी (Labour Party) जिसका उद्देश्य मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा करना है। लोक-सभा में जिस राजनीतिक दल की संख्या अधिक होती है, उसी दल का नेता प्रधान मन्त्री बनाया जाता है।

नियम बनाने की प्रणाली—पार्लिमेंट का मुख्य काम राजनियम बनाना है। पहले नियम "प्रस्ताव" (Bill) के रूप में लोक-सभा या

लार्ड-सभा में उपस्थित किया जाता है; परन्तु अर्थ-सम्बन्धी प्रस्ताव (Money Bills) पहले लोक-सभा ही में पेश होते हैं। प्रत्येक सभा में "प्रस्ताव" स्वीकृत होने से पहले उस पर तीन बार विचार किया जाता है, जिसका यह आशय है कि राजनियम बहुत सोच-विचार करके स्वीकृत किये जायँ। पहली बार "प्रस्ताव" पढ़कर सुना दिया जाता है और उसके छपने की आज्ञा दे दी जाती है। दूसरी बार प्रस्ताव के मुख्य सिद्धान्तों पर वाद-विवाद होता है; और इसके बाद उसकी धारायें निर्धारित करने के लिए एक उपसमिति नियत कर दी जाती है। तीसरी बार इन धाराओं पर अलग अलग वाद-विवाद होता है और उनमें बहुत-सी धाराओं का संशोधन भी कर दिया जाता है। इसके पश्चात् यदि प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, तो वह दूसरी सभा में भेज दिया जाता है जहाँ उस पर फिर उसी प्रकार तीन बार विचार होता है। यदि दूसरी सभा ने भी उसे स्वीकृत किया तो इसके बाद यह पार्लिमेंट की दोनों सभाओं का पास किया हुआ नियम राजा के पास उसके हस्ताक्षर के लिए जाता है। पार्लिमेंट के स्वीकृत किये हुए नियम पर राजा प्रायः सदा हस्ताक्षर कर देता है और इसके बाद वह नियम "राजनियम" (Act) हो जाता है।

पार्लिमेंट से नियम पास होने के लिए साधारणतः लोक-सभा तथा लार्ड-सभा दोनों की स्वीकृति आवश्यक है। परन्तु सन् १९११ के पार्लिमेंट एक्ट (Parliament Act of 1911) के अनुसार यह निश्चित हो गया है कि यदि लोक-सभा चाहे तो लार्ड-सभा के लौटाये हुए प्रस्ताव को दोबारा स्वीकृत करके उसे फिर लार्ड-सभा में भेज सकती है। यदि दूसरी बार भी उसे लार्ड-सभा ने लौटा दिया और लोक-सभा फिर भी अपनी सम्मति पर दृढ़ रही और उसे फिर स्वीकृत किया तो ऐसी स्थिति में लार्ड-सभा का विरोध होते हुए भी लोक-सभा के तीन बार के स्वीकृत नियम को समस्त पार्लिमेंट का स्वीकृत नियम मान लिया जायगा और उसे बिना लार्ड-सभा में भेजे सीधा राजा के हस्ताक्षर के लिए भेज दिया जायगा। इस प्रकार लोक-सभा की दृढ़ता के सम्मुख

लार्ड-सभा की अस्वीकृति बेकार हो जाती है; परन्तु लार्ड-सभा के स्वीकृत प्रस्ताव को यदि लोक-सभा लौटा दे तो वह फिर राजनियम नहीं बन सकता। पार्लिमेंट में लोक-सभा की प्रधानता उचित भी है क्योंकि लोक-सभा ही में जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं। आजकल लोक-सभा ही वास्तविक पार्लिमेंट मानी जाती है और लार्ड-सभा की स्थिति केवल सम्मति देनेवाले मंडल (Advisory Body) के समान रह गई है।

मन्त्रि-मडल—पार्लिमेंट के बनाये हुए नियमों के अनुसार शासन-कार्य का संचालन "मन्त्रि-मडल" (Cabinet) द्वारा होता है। प्राचीन काल के मन्त्री केवल राजा के सम्मुख उत्तरदायी होते थे और पार्लिमेंट का उन पर कुछ भी दबाव न होता था। माध्यमिक काल में पार्लिमेंट ने अभियोग (Impeachment) द्वारा मन्त्रियों पर अपना अधिकार जतलाने का अच्छा ढंग निकाल लिया; और इसके बाद सत्रहवीं शताब्दी में यह सिद्धान्त निश्चित हो गया कि राजमन्त्री अपने कार्य के लिए जनता के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हैं। इस प्रकार धीरे-धीरे वर्तमान "सचिव-तन्त्र शासन" (Cabinet Government) का प्रारम्भ हुआ।

वर्तमान मन्त्रि-मडल की विशेषतायें—"सचिव-तन्त्र शासन" को समझने के लिए वर्तमान "मन्त्रि-मंडल" की निम्नलिखित विशेषताओं को भली भाँति समझ लेना चाहिए—

(१) "मन्त्रि-मंडल" के सब सदस्य एक ही राजनीतिक दल के होते हैं। यह प्रथा विलियम तृतीय के राजत्वकाल से चली आती है। इससे बड़ा सुभीता यह होता है कि सब मन्त्री एक ही प्रकार की नीति का अनुसरण करते हैं, जिससे शासन-कार्य का संचालन सुगमता-पूर्वक हो सकता है। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि दो दलों के नेता आपस में समझौता करके "संयुक्त मन्त्रि-मंडल" (Coalition Ministry) स्थापित कर लेते हैं।

(२) मन्त्रि-मंडल का प्रधान पहले राजा होता था; परन्तु जब से जार्ज प्रथम ने, अँगरेज़ी भाषा न जानने के कारण, मन्त्रि-मंडल की बैठकों में जाना धीरे-धीरे बन्द कर दिया, तब से यह प्रथा चली आती है कि मन्त्रियों ही में से एक "प्रधान मन्त्री" (Prime Minister) होकर मन्त्रि-मंडल का नेता हो जाता है। हम बतला चुके हैं कि इँगलैंड में प्रधान मन्त्री के पद को सबसे पहले वाल्पोल ने सुशोभित किया था। आजकल मन्त्रि-मंडल की बैठकों से राजा का कोई सम्बन्ध नहीं रहता। मन्त्री लोग जो चाहते हैं, स्वतन्त्रतापूर्वक कर लेते हैं, और उन पर राजा का दबाव नाममात्र ही रह गया है।

(३) मन्त्रि-मंडल की नीति प्रधान मन्त्री ही निर्धारित करता है। मन्त्रि-मंडल के अन्य सदस्यों को वह स्वयं नियुक्त करता है और वे सब अपने नेता की ही नीति का अनुसरण करते हैं। यदि कोई मन्त्री प्रधान मन्त्री की नीति से सहमत न हो तो वह त्यागपत्र देकर अलग हो जाता है; परन्तु मन्त्रि-मंडल में रहते हुए वह अपने नेता की नीति का विरोध नहीं कर सकता।

(४) पार्लिमेंट के प्रधान भाग अर्थात् लोक-सभा में जिस राजनीतिक दल की अधिक संख्या होती है, उसी का नेता प्रधान मन्त्री बनाया जाता है। इससे बड़ा सुभीता यह होता है कि मन्त्रि-मंडल को लोक-सभा से अपनी नीति के स्वीकृत कराने में बड़ी आसानी होती है। इस प्रकार जनता की प्रतिनिधि-सभा तथा मन्त्रि-मंडल दोनों की नीति सदा एक रहती है।

(५) जिस राजनीतिक दल के सदस्य मन्त्रि-मंडल में हों, उस दल का यदि लोक-सभा में बहुमत न रहे, तो ऐसी अवस्था में मन्त्रि-मंडल के सब सदस्यों को त्यागपत्र देना पड़ता है। इसके बाद जिस दल का अब बहुमत हो गया हो, उसका नेता प्रधान मन्त्री होकर, अपना नया मन्त्रि-मंडल स्थापित करता है।

(६) मन्त्रि-मंडल अपनी नीति के लिए लोक सभा के सम्मुख उत्तरदायी है। यदि मन्त्रि-मंडल की ओर से उपस्थित किया हुआ कोई प्रस्ताव लोक-सभा में अस्वीकृत हो, तो इसका यह अर्थ समझा जाता है कि जनता के प्रतिनिधियों को मन्त्रियो पर विश्वास नहीं रहा। ऐसी अवस्था में मन्त्रि-मंडल को तुरन्त त्यागपत्र देना पड़ेगा। इस प्रकार प्रधान मन्त्री तथा उसके सहकारी तभी तक मन्त्रि-मंडल में रह सकते हैं, जब तक लोक-सभा उनकी नीति का समर्थन करती रहे।

(७) मन्त्रि-मंडल के सदस्य राज्य के भिन्न-भिन्न विभागों की देखभाल करते हैं। प्रत्येक मन्त्री अपने विभाग के संचालन के लिए व्यक्तिगत रूप से उत्तरदायी है, और समस्त मन्त्रि-मंडल सम्मिलित रूप से भी उत्तरदायी होता है। यदि लोक-सभा किसी मन्त्री के विरुद्ध "अविश्वास का प्रस्ताव" (Vote of No Confidence) पास कर दे, तो उसके साथ उसके समस्त सहकारियों को भी त्यागपत्र देना पड़ता है।

इस प्रकार ग्रेट ब्रिटेन का शासन-कार्य जनता की अनुमति पर निर्भर है। देश के लिए नियम बनाने का कार्य वास्तव में लोक-सभा के हाथ में है, जिसमें जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं; और इन नियमों के अनुसार शासन-कार्य का संचालन मन्त्रि-मंडल करता है, जिसके सदस्य लोक-सभा के विश्वासपात्र होते हैं।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १८३२—पार्लिमेंट के सुधार का पहला नियम।
" १८४८—चार्टिस्ट आन्दोलन।
" १८६७—पार्लिमेंट के सुधार का दूसरा नियम।
" १८७२—बैलट एक्ट तथा गुप्त वोट।
" १८८४—पार्लिमेंट के सुधार का तीसरा नियम।

सन् १६११—"पार्लिमेंट एक्ट" (The Parliament Act of 1911)

" १६१८—Representation of People Act.

" १६२८—Flappers Vote Bill.

आठवाँ परिच्छेद

महारानी विक्टोरिया का राजत्वकाल

(१८३७-१९०१)

सर्वप्रिय महारानी विक्टोरिया—विलियम चतुर्थ के कोई सन्तान न थी, इसलिए सन् १८३७ में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसकी भतीजी विक्टोरिया (Victoria) ब्रिटेन की रानी हुई। उसके राज्याभिषेक के समय से हनोवर का ब्रिटेन से कोई सम्बन्ध न रहा, क्योंकि हनोवर में स्त्रियाँ राज्य करने की अधिकारिणी नहीं समझी जाती थीं। विक्टोरिया की अवस्था उस समय अठारह वर्ष की थी; परन्तु अपनी योग्यता तथा अच्छे स्वभाव के कारण वह शीघ्र ही अपनी समस्त प्रजा की प्रेमपात्र बन गई। सन् १८४० में विक्टोरिया का कॉबर्ग* के राजकुमार एलबर्ट (Prince Albert of Coburg) से विवाह हुआ और अपने पति से उसे शासन-कार्य में अच्छी सहायता मिलने लगी। परन्तु बीस ही वर्ष बाद सन् १८६१ में राजकुमार एलबर्ट की मृत्यु हो गई। अपने पति के देहान्त के बाद रानी बड़े सादे ढंग से रहने लगी और उसने अपने जीवन का शेष भाग अपनी प्रजा का हित करने में व्यतीत किया। रानी विक्टोरिया निपुण राजनीतिज्ञ भी थी; उस काल की राजनीति पर उसका व्यक्तिगत रूप से बहुत प्रभाव पड़ा; और उसके मन्त्री उससे जटिल प्रश्नों पर प्रायः परामर्श लेते थे।

विक्टोरिया; भारतवर्ष की महारानी (१८७७)—इस समय तक आते-आते अँगरेज़ भारतवर्ष में भी एक बड़ा साम्राज्य स्थापित कर

---

* कॉबर्ग जर्मनी की एक रियासत है।

चुके थे और ईस्ट इंडिया कम्पनी, जो पहले केवल व्यापारियों की मंडली थी, अब एक बड़े साम्राज्य की शासक हो गई थी। सन् १८५७ में भारतवर्ष में एक भीषण विद्रोह हुआ, जो "ग़दर" (Mutiny) के

महारानी विक्टोरिया

नाम से प्रसिद्ध है। इस उपद्रव के शान्त होने के बाद ईस्ट इंडिया कम्पनी का अन्त हुआ और रानी विक्टोरिया ने ब्रिटिश भारतवर्ष का शासन स्वयं अपने हाथ में ले लिया। इस समय से यहाँ का गवर्नर-जनरल

"वाइसराय" (Viceroy*) कहलाने लगा; और "पिट्स इंडिया एक्ट" के समय के बने हुए बोर्ड आफ़ कंट्रोल (Board of Control) के स्थान पर ब्रिटेन के मन्त्रि-मंडल के एक सदस्य को, जो "सेक्रेटरी ऑफ़ स्टेट फ़ार इंडिया" (Secretary of State for India) कहलाता है, भारत-सरकार के कार्य की देखभाल का भार सौंपा गया। इसके कुछ वर्ष बाद सन् १८७७ में विक्टोरिया ने "भारतवर्ष की महारानी" (Empress of India) की उपाधि ग्रहण की, जिसके उपलक्ष में भारतवर्ष में बड़े समारोह से उत्सव मनाया गया।

(१) सर रॉबर्ट पील तथा कॉर्न लॉ के विरुद्ध आन्दोलन

सर रॉबर्ट पील—सर रॉबर्ट पील (Sir Robert Peel) विक्टोरिया के राज्य के आरम्भिक काल का बड़ा प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री हुआ है। उसकी शिक्षा इंगलैंड के प्रसिद्ध हैरो तथा ऑक्सफ़ोर्ड के शिक्षालयों में हुई थी। सन् १८०६ में वह पार्लिमेंट की लोक-सभा का सदस्य हो गया और अपनी योग्यता के कारण उसने शीघ्र ही खूब नाम पैदा कर लिया। सन् १८१२ से १८१८ तक वह आयरलैंड का चीफ़ सेक्रेटरी रहा; और इसके बाद सन् १८२२ में

सर रॉबर्ट पील

वह मन्त्रिमंडल का "होम सेक्रेटरी" (देशीय विभाग का मन्त्री) हो गया।

---

* Viceroy = राजा का प्रतिनिधि।

पील ने तुरन्त ही "क़ानून फ़ौजदारी" (Criminal Code) के सुधार का कार्य आरम्भ किया; और जिन छोटे-छोटे अपराधों पर अब तक प्राणदंड दिया जाता था, उनमें दंड कम कर दिया गया। इसके अतिरिक्त पील ने दूसरा महत्त्वपूर्ण सुधार यह किया कि नगरों में शान्ति रखने के लिए बुड्ढे चौकीदारों के स्थान पर बाक़ायदा पुलिस (Police) का प्रबन्ध कर दिया। इँगलैंड की वर्तमान पुलिस का, जो अपनी योग्यता के कारण जगत्प्रसिद्ध हो रही है, इसी समय से प्रारम्भ होता है।

पील का मन्त्रित्व (१८४१-१८४६); आर्थिक सुधार—सन् १८४१ में पील प्रधान मन्त्री हो गया। उसके मन्त्रित्व-काल में बहुत-से आर्थिक सुधार हुए। व्यापारिक माल पर महसूल कम कर दिया गया और उसके स्थान पर "इन्कमटैक्स" (Income Tax) या लोगों की आय पर कर वसूल करने की प्रथा आरम्भ की गई। इस समय देश में "स्वतन्त्र-व्यापार-वादियों" (Free Traders) की संख्या बढ़ती जा रही थी, जिनका मत था कि व्यापारिक माल पर कर आदि लगाने से देश के व्यापार की उन्नति में बड़ी बाधा पड़ती है। पील पहले इस सिद्धान्त का विरोधी था; परन्तु धीरे-धीरे वह "स्वतन्त्र-व्यापार-वादी" हो चला था। देश के बैंकों का भी सुधार करने का प्रयत्न किया गया और सन् १८४४ में "बैंक-सुधार-नियम" (Banks Charter Act) के अनुसार बैंकों के नोटों की संख्या निश्चित कर दी गई, जिससे कोई बैंक अधिक नोट निकालकर देश के व्यापार आदि को धक्का न पहुँचा सके।

पील तथा आयरलैंड की समस्या—इस समय आयरलैंड के निवासी ब्रिटेन से पृथक् होकर अपने देश में स्वराज्य स्थापित करने के लिए आन्दोलन कर रहे थे। पील ने आयरलैंड के किसानों की शिकायतों की जाँच करने के लिए एक कमीशन बैठाया और कैथोलिकों को संतुष्ट करने के लिए उनके शिक्षालयों को सरकार की ओर से सहायता दिलाई। इसके अतिरिक्त देश में शिक्षा फैलाने के लिए तीन बड़े नये कॉलिज खोले गये, जो रानी विक्टोरिया के नाम पर क्वीन्स कॉलिज

(Queen's College) कहलाये। परन्तु आयरलैंड-निवासी केवल इतनी बातों से संतुष्ट न हो सकते थे, अतः स्वराज्य के लिए उनका आन्दोलन बराबर जारी रहा।

कार्न लॉ का अन्त तथा पील का पतन—हम बतला चुके हैं कि नेपोलियन के विरुद्ध युद्ध समाप्त होने के बाद इँगलैंड की कृषि की दशा बहुत असन्तोषजनक थी। ऐसी अवस्था में कॉर्न लॉ (Corn Law) स्वीकृत हुआ था, जिसके अनुसार विदेश से आनेवाले अनाज पर बहुत काफ़ी महसूल लगा दिया गया था, जिससे वह देशी अनाज के मुक़ाबिले में सस्ता न बिक सके। इस नियम से भूमिपतियों को तो लाभ हुआ, परन्तु इसके कारण अनाज की दर बढ़ जाने से साधारण जनता को बड़ी असुविधा होगई। "स्वतन्त्र-व्यापार-वादियों" ने कॉर्न लॉ की विरोधी एक संस्था (Anti-Corn-Law League) स्थापित की, जिसके नेता रिचर्ड कॉब्डेन (Richard Cobden) और जॉन ब्राइट (John Bright) थे, और इस नियम के विरुद्ध बड़े ज़ोरों से आन्दोलन शुरू किया इसी समय आयरलैंड में, जहाँ के लोग अब तक अनाज की जगह आलू खाकर जीवन-निर्वाह करते थे, आलू की फ़सल मारी गई, जिससे अनाज की महँगी लोगों के लिए असह्य हो गई। ऐसी अवस्था में पील को कॉर्न लॉ हटाना पड़ा। इस प्रकार इस मनहूस नियम का, जिसके कारण अनाज महँगा हो रहा था, अन्त हुआ।

पील के समर्थकों में अधिकतर भूमिपति ही थे, जो अपने स्वार्थ के कारण कॉर्न लॉ का रद होना कभी पसन्द नहीं कर सकते थे। अपने समर्थकों के असन्तुष्ट हो जाने के कारण पील को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा: और थोड़े ही दिनों बाद यह योग्य राजनीतिज्ञ परलोक सिधारा।

पील के राजनीतिक विचार तथा उसके कार्यों की आलोचना—पील टोरी-दल का नेता था। उसके नेतृत्व में इस दल के राजनीतिक सिद्धान्त बड़े उदार होने लगे। "टोरी" नाम से लोग अब

तक "नियमानुमोदित शासन" के विरोधी समझे जाते थे, इसलिए पील ने यह नाम बदल कर अपने दल को कंज़रवेटिव दल (Conservatives) अर्थात् "प्राचीन शैली का समथक" कहना शुरू किया था। इसके जवाब में ह्विग-दलवाले अपने को लिबरल (Liberal) अर्थात "सुधारवादी" कहने लगे।

लोक-सभा में अपनी शक्ति स्थायी करने के लिए पील का काम बिना अपना दल बनाये न चल सकता था; परन्तु वास्तव में वह दलबन्दी के बखेड़ों को पसन्द न करता था*। जो बात उसे उचित मालूम होती थी उसे वह, अपने दल के सिद्धान्तों का विचार छोड़कर भी, तुरन्त करने के लिए अग्रसर हो जाता था। पील के दल के भूमिपति कॉर्न लॉ के हटाने के विरोधी थे; परन्तु उसने भूखी जनता के हितार्थ यह नियम हटा दिया। पील के अनुयायी बहुत दिनों तक "पीलाइटस" (Peelites) नाम से प्रसिद्ध रहे। उन्हीं में ग्लैडस्टन भी था, जो स्वयं आगे चलकर इंगलैंड का बड़ा प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री हुआ।

(२) "पूर्वीय समस्या"

(The Eastern Question)

"पूर्वीय समस्या" का अर्थ—समस्त योरपीय राज्य प्रायः ईसाई हैं। उनमें केवल टर्की ही एक ऐसा राज्य है जहाँ की शासक जाति अर्थात् तुर्क लोग मुसलमान हैं। धर्म का भेद होने के कारण टर्की की सभ्यता भी योरपीय सभ्यता से भिन्न है। इन कारणों से टर्की की स्थिति बहुत दिनों तक योरपीय राजनीतिज्ञों के लिए एक पूरी समस्या रही। यह समस्या इसलिए और भी कठिन हो गई कि टर्की के साम्राज्य के

---

* उसके सम्बन्ध में प्रसिद्ध है—"The most Liberal of the Conservatives and the most Conservative of the Liberals."

कई सूबों के निवासी ईसाई थे, जो मुसलमान तुर्कों का शासन कभी पसन्द न कर सकते थे।

टर्की योरप के बिलकुल पूर्वीय कोने में है और तुर्कों का राज्य एशिया के पश्चिमी सिरे तक फैला हुआ है। इसलिए इँगलैंड को योरप की इस "पूर्वीय समस्या" (Eastern Question) का निबटारा करने में विशेष रूप से सम्मिलित होना पड़ा। कारण यह था कि अँगरेज़ों को अपने साम्राज्य के एशियाई भाग की रक्षा की सदा चिन्ता लगी रहती है। अँगरेज़ों के अतिरिक्त दूसरी योरपीय जाति, जिसका एशिया में राज्य फैला हुआ है, रूसियों की है। इस कारण "पूर्वीय समस्या" से अधिकतर इँगलैंड और रूस का ही सम्बन्ध रहा।

लार्ड पामर्स्टन तथा इँगलैंड की "पूर्वीय नीति"—इँगलैंड की पूर्वीय नीति लार्ड पामर्स्टन (Lord Palmerston) ने निर्धारित की। पामर्स्टन बहुत दिनों तक अँगरेज़ी सरकार के "विदेशी विभाग का मन्त्री" (Foreign Secretary) था; और इसके पश्चात् "प्रधान मन्त्री" (Prime Minister) हुआ। उसका मत था कि इँगलैंड का हित इसी में है कि टर्की का साम्राज्य टूटने न पावे। यदि तुर्कों की शक्ति नष्ट हो गई, तो रूसियों को एशिया माइनर की ओर फैलने के लिए खुला मैदान मिल जायगा। इससे एशिया में रूस की शक्ति अधिक बढ़ जायगी; और ऐसी अवस्था में इँगलैंड के एशियाई साम्राज्य (भारतवर्ष) को सदा रूसियों का भय लगा रहेगा। रूसियों ने टर्की के कुछ भागों पर अधिकार जमाने के उद्देश्य से कई बार तुर्कों से युद्ध किया, परन्तु अँगरेज़ों ने तुर्कों को सहायता देकर रूसियों का यह प्रयत्न सफल न होने दिया।

क्रीमिया का युद्ध (The Crimean War) (१८५४-१८५६)—हम बतला चुके हैं कि यूनानवाले सन् १८२९ में ही तुर्कों के शासन से स्वतन्त्र हो चुके थे। टर्की के साम्राज्य के अन्य ईसाई प्रान्त भी स्वतन्त्र होने के लिए आन्दोलन कर रहे थे। रूसवालों ने टर्की की

शक्ति कम करने का यह अच्छा अवसर समझा; और ईसाई प्रजा को मुसलमान तुर्कों के विरुद्ध खूब भड़काया। रूस के सम्राट् निकोलस प्रथम (Nicholas I) ने यह प्रस्ताव किया कि टर्की के साम्राज्य में ईसाइयों के जेरूसलम आदि जो पवित्र स्थान हैं, वे स्वतन्त्र कर दिये जायँ। तुर्कों के इसे अस्वीकार करने पर रूसियों ने तुरन्त टर्की पर आक्रमण कर दिया और उसके कई प्रान्तों पर अधिकार जमा लिया।

इँगलैंड ने इस प्रश्न को धार्मिक दृष्टि से नहीं देखा। उसने रूस की शक्ति को रोकने के आशय से टर्की का साथ दिया और रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। फ्रांस में इस समय नेपोलियन का भतीजा "नेपोलियन तृतीय" शासन कर रहा था। अपने चचा की भाँति युद्धक्षेत्र में यश प्राप्त करने के उद्देश्य से उसने भी टर्की का साथ दिया। इस प्रकार फ्रांसीसियों और अँगरेज़ों ने, जिनमें पीढ़ियों से वैर चला आता था, अब मिलकर रूसियों के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। यह युद्ध रूस के दक्षिणी प्रायद्वीप क्रीमिया में हुआ था, इस कारण यह "क्रीमिया का युद्ध" (Crimean War) कहलाता है।

फ्रांसीसी और अँगरेज़ी सेनाओं ने मिलकर रूस के प्रसिद्ध गढ़ सेबास्टपूल (Sebastpool) पर घेरा डाला; परन्तु इसी समय क्रीमिया का कड़ा जाड़ा शुरू हो जाने के कारण उन्हें वह कार्य कुछ काल के लिए स्थगित करना पड़ा। थोड़े ही दिनों में रूसियों की सेना बेलेक्लावा (Balaclava) तथा इन्करमैन (Inkerman) के युद्धों में बुरी तरह परास्त हुई और अन्त में सेबास्टपूल का गढ़ भी उनके हाथ से निकल गया।

ऐसी अवस्था में रूसियों को पेरिस की सन्धि (Peace of Paris) करनी पड़ी और वे इँगलैंड के प्रधान मन्त्री पामर्स्टन की सब शर्तें स्वीकृत करने के लिए बाध्य हुए। यह निश्चित किया गया कि टर्की के साम्राज्य पर कोई आघात न होने पावे। "कृष्ण सागर" (Black Sea) से रूसियों को अपना जहाज़ी बेड़ा हटाना पड़ा और उन्हें

सेबास्टपूल का गढ़ फिर बनाने की भी मनाही कर दी गई। इन शर्तों से रूस की जलशक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा और टर्की का साम्राज्य नष्ट होने से बच गया।

बालकन युद्ध* (The Balkan War) (१८७७-१८७८)—लगभग बीस वर्ष बाद "पूर्वीय समस्या" के सम्बन्ध में फिर भयकर युद्ध छिड़ गया। तुर्की साम्राज्य के बलगेरिया (Bulgaria) आदि ईसाई प्रान्तों ने मुसलमान तुर्कों के शासन से तङ्ग आकर विद्रोह ठान दिया। रूस का टर्की पर सदा से दाँत था; अतः उसने ऐसे अवसर से फिर लाभ उठाना चाहा। ईसाई विद्रोहियों को सहायता देने के लिए रूस ने अपनी सेना भेजनी शुरू की; और शीघ्र ही इस सेना ने तुर्कों की राजधानी कान्सटेन्टीनोप्ल (Constantinople) पर अधिकार जमा लिया।

तुर्कों के ईसाइयों के साथ बहुत अत्याचार करने के कारण इँगलैंड ने इस बार युद्ध में टर्की का साथ नहीं दिया था। परन्तु साथ ही साथ इँगलैंड यह भी सहन नहीं कर सकता था कि रूस टर्की को नष्ट करके एशिया में अपनी शक्ति बढ़ाने का मार्ग साफ़ कर ले। कान्सटेन्टीनोप्ल पर रूसियों का अधिकार हो जाने का समाचार पाकर इँगलैंड का चुप बैठे रहना असम्भव था। इँगलैंड के प्रधान मन्त्री डिसरायले (Disraeli) ने रूसियों पर दबाव डालना शुरू किया। अन्त में यह निश्चित हुआ कि समस्त पूर्वीय राज्यों के प्रतिनिधि सम्मिलित होकर टर्की के प्रश्न का निबटारा करें। सन् १८७८ में बर्लिन (Berlin) में समस्त योरपीय राज्यों की कांग्रेस हुई, जिसका प्रधान जर्मनी का प्रसिद्ध मन्त्री प्रिंस बिस्मार्क (Prince Bismarck) था। इस कांग्रेस ने यह निर्णय

---

* इस युद्ध के परिणाम-स्वरूप बालकन प्रायद्वीप के वर्तमान स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना हुई; इसलिए यह "बालकन युद्ध" (The Balkan War) कहलाता है। इसको कभी कभी "रूस और टर्की का युद्ध" (Russo-Turkish War) भी कहते हैं।

किया कि रूमानिया, सर्विया तथा मांटीनीग्रो के ईसाई प्रान्त स्वतन्त्र राज्य बना दिये जायँ। बलगेरिया को भी थोड़ी सी स्वतन्त्रता दे दी गई और दो ईसाई प्रान्तों का शासन आस्ट्रिया को सौंपा गया। एशिया माइनर के तट का साइप्रस (Cyprus) द्वीप इँगलैंड को दे दिया गया; परन्तु यह ठहरा लिया गया कि अंगरेज़ी जहाज़ी बेड़े को टर्की के एशियाई भाग की रक्षा का भार लेना होगा।

इस निबटारे से टर्की के साम्राज्य के बहुत से प्रान्त स्वतन्त्र हो जाने के कारण तुर्कों की शक्ति तो अवश्य कम हो गई, परन्तु रूसवाले इससे कोई लाभ न उठा सके। इँगलैंड की "पूर्वीय नीति" का केवल यही उद्देश्य था कि टर्की को नष्ट करके कहीं रूस एशिया माइनर की ओर अपनी शक्ति न बढ़ा ले। परन्तु अब इस निबटारे में इस बात का कोई भय न रहा।

इँगलैंड की "पूर्वीय नीति" में परिवर्तन—तुर्कों का अपनी ईसाई प्रजा के साथ बड़ा अनुचित व्यवहार होता था; इस कारण टर्की का साम्राज्य बहुत दिनों तक कभी न ठहर सकता था। इँगलैंड ने तुर्कों के शत्रु रूसियों की शक्ति को रोकने के आशय से कई बार टर्की का साथ दिया और उसे नष्ट हो जाने से बचाया। परन्तु धीरे-धीरे इँगलैंड-वाले भी समझ गये कि टर्की के अधःपतन को रोकना असम्भव है। पिछले योरपीय महायुद्ध में टर्की के जर्मनी का साथ देने के कारण स्वयं इँगलैंड ने तुर्कों के विरुद्ध युद्ध किया और अन्य योरपीय राज्यों को टर्की की शक्ति नष्ट करने में सहायता दी।

(३) लार्ड पामर्स्टन का मन्त्रित्व
(१८५५–१८६५)

पामर्स्टन की पर-राष्ट्रनीति—"पूर्वीय समस्या" के सम्बन्ध में इँगलैंड की नीति निर्धारित करनेवाला लार्ड पामर्स्टन (Lord Palmerston) अपने समय का बड़ा प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ हुआ है। सन् १८३० से १८५१ तक वह पर-राष्ट्र-विभाग का मन्त्री (Foreign Secretary)

रहा और उसके बाद सन् १८५५ में वह प्रधान मन्त्री (Prime Minister) होकर "मन्त्रि-मंडल" का नेता हो गया। उसने कई बार संकट के समय टर्की की सहायता की और उसे रूसियों के हाथों से नष्ट होने से बचाया। उसका मत था कि टर्की के साम्राज्य के टूट जाने से रूस को एशिया माइनर की ओर बढ़ने का खुला मैदान मिल जायगा, और इससे एशिया में रूस की शक्ति बढ़ जाने के कारण अँगरेज़ों के एशियाई साम्राज्य (भारतवर्ष) के लिए एक स्थायी भय का कारण प्रस्तुत हो जायगा। इसी लिए उसने "क्रीमिया के युद्ध" में टर्की का पक्ष लेकर रूसियों से युद्ध किया और उसे टर्की की कमज़ोरी से लाभ न उठाने दिया।

इसके अतिरिक्त पामस्टन ने योरप की कई जातियों की, जो अपने देश में जातीय राज्य तथा नियमानुमोदित शासन स्थापित करने के लिए आन्दोलन कर रही थीं, बहुत बड़ी सहायता की। बेलजियमवालों के प्रति जो हालैंड का आधिपत्य हटाकर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहते थे, उसकी पूर्ण सहानुभति थी, और उसने इटलीवालों की भी, जो अपने देश की छोटी-छोटी रियासतों को एक जातीय राज्य में सम्मिलित करना चाहते थे, पूर्ण सहायता की।

गृह्य नीति—परन्तु योरप के अन्य राज्यों के जातीय आन्दोलनों में सहायता देनेवाला पामस्टन अपने देश में इस प्रकार के आन्दोलनों को सदा दबाने का प्रयत्न करता रहा*। उसके मन्त्रित्व-काल में इँगलैंड के सुधारवादियों की एक न चली और पार्लिमेंट के सुधार का दूसरा नियम उसकी मृत्यु के कहीं दो वर्ष बाद स्वीकृत हो सका। उसका मत था कि इँगलैंड की पार्लिमेंट का जो कुछ सुधार पहले नियम के अनुसार हो चुका है, वह बहुत काफ़ी है और जनता को इससे अधिक राजनीतिक अधिकार मिलना ठीक नहीं है।

* "Conservative at home and Revolutionary abroad."

पामर्स्टन के कार्यों की आलोचना—दस वर्ष प्रधान मन्त्री रहने के बाद सन् १८६५ में लार्ड पामर्स्टन की मृत्यु हुई। शासन-कार्य में वह अपने सहकारियों की अनुमति की बहुत कम परवाह करता था; और कभी-कभी रानी विक्टोरिया तक को अपनी कारवाई का पता न लगने देता था। इसी कारण सन् १८५१ में रानी ने उसे "परराष्ट्र-विभाग के मन्त्री" के पद से हटा दिया था; परन्तु "क्रीमिया के युद्ध" के छिड़ते ही रानी को पूर्वीय समस्या के इस ज्ञाता की फिर आवश्यकता पड़ी और वह "प्रधान मन्त्री" बना दिया गया। पामर्स्टन की "पूर्वीय" नीति ने रूसियों के मन्सूबे सफल न होने दिये; और योरपीय राज्यों के जातीय आन्दोलनों का समर्थन करने के कारण इँगलैंड का यश देशान्तरों में खूब फैल गया। पामर्स्टन के मन्त्रित्वकाल में "भारतवर्ष का ग़दर" (The Indian Mutiny, 1857) हुआ; और इसी योग्य राजनीतिज्ञ ने भारतवर्ष में काफ़ी सेना भेजकर ब्रिटिश साम्राज्य के इस बहुमूल्य भाग को अँगरेज़ों के हाथ से निकलने से बचाया।

(४) मिस्र तथा सूडान

(Egypt and Soudan)

मिस्र का टर्की के आधिपत्य से स्वतन्त्र होना (१८६३)—मिस्र पहले टर्की के साम्राज्य का एक भाग था। टर्की के सुलतान की ओर से वहाँ एक वाइसराय शासन करता था। वाइसराय मुहम्मद अली (Viceroy Mohammad Ali) अपने को मिस्र का स्वतन्त्र राजा बनाने के उपाय सोचने लगा और धीरे-धीरे उसने अपनी शक्ति बढ़ाना प्रारम्भ किया। सन् १८३९ में मुहम्मद अली ने सीरिया (Syria) पर अपना अधिकार जमा लिया और एक बहुत बड़ी सेना लेकर सुलतान की राजधानी कान्सटेन्टीनोप्ल (Constantinople) पर आक्रमण कर दिया। ऐसे संकट के समय में ब्रिटेन ने टर्की का साथ दिया और मुहम्मद अली को ऐसी बुरी तरह से परास्त किया कि बेचारा मिस्र देश

को भाग गया और सीरिया पर फिर टर्की के सुलतान का अधिकार स्थापित हो गया। परन्तु मिस्र में मुहम्मद अली की शक्ति बराबर बनी रही और अवसर पाकर उसने घोषणा कर दी कि मैं टर्की के सुलतान का वाइसराय नहीं हूँ, बल्कि मिस्र देश का स्वतन्त्र शासक हूँ। उसके उत्तराधिकारी इस्माइल पाशा (Ismail Pasha) ने सन् १८६३ में "ख़दीव" (Khedive) की उपाधि धारण कर ली, जिस नाम से मिस्र के प्राचीन राजा पुकारे जाते थे। इस प्रकार अब मिस्र देश में एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित हो गया।

मिस्र में ब्रिटेन तथा फ़्रांस का हस्तक्षेप—मिस्र के पास ही "लालसागर" तथा "रूमसागर" के बीच में "स्वेज़ नहर" (Suez Canal) खुल जाने से इस देश का ब्रिटेन तथा फ़्रांस से घनिष्ठ सम्बन्ध होने लगा। अब तक योरप से एशिया जानेवाले जहाज़ों को केप आफ़ गुड होप की राह से अफ्रिका का चक्कर लगाकर जाना पड़ता था; परन्तु इस नहर के खुल जाने से लालसागर तथा रूमसागर होकर जहाज़ ले जाने का सुभीता हो गया। स्वेज़ नहर एक फ़्रांसीसी कम्पनी ने बनाई थी; परन्तु मिस्र की सरकार ने भी उस कम्पनी के हिस्से ख़रीदे थे। इस्माइल पाशा के समय में मिस्र की सरकार का व्यय इतना बढ़ गया कि उसे फ़्रांस और ब्रिटेन से ऋण लेना पड़ा। इस्माइल पाशा को स्वेज़ कम्पनी के हिस्से भी बेच देने पड़े। ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री डिसरायले (Disraeli) ने इस अवसर से लाभ उठाकर सब हिस्से ख़रीद लिये; परन्तु फिर भी मिस्र की सरकार फ़्रांस तथा ब्रिटेन का ऋण न चुका सकी; और सन् १८७९ में उसे यह स्वीकृत करने के लिए बाध्य होना पड़ा कि ब्रिटेन और फ़्रांस को, अपना ऋण वसूल करने के लिए, मिस्र के आर्थिक विभाग की देखभाल करने का अधिकार है।

मिस्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य (१८८२)—विदेशी जातियों के इस हस्तक्षेप का विरोध करने के लिए मिस्र में अरबी पाशा (Arabi Pasha) नामक एक सैनिक अफ़सर के नेतृत्व में एक भयंकर

आन्दोलन उठा। अरबी पाशा ने विदेशियों को भगाना शुरू किया। यह समाचार पाकर फ्रांस तथा ब्रिटेन में बड़ी सनसनी फैली; परन्तु फ्रांस ने इस सम्बन्ध में कुछ भी न किया और मिस्र के आन्दोलन को दबाने का भार पूर्णतया ब्रिटेन को ही उठाना पड़ा। परिणाम यह हुआ कि अँगरेज़ों ने अरबी पाशा की सेना को परास्त किया और सन् १८८२ में मिस्र की सरकार को ब्रिटेन का आधिपत्य (British Protectorate over Egypt) स्वीकृत करना पड़ा। इसके परिणाम-स्वरूप "ख़दीव" बस नाममात्र को ही मिस्र का राजा रह गया और देश का शासन वास्तव में अँगरेज़ी कॉन्सल जेनरल (Consul General) लार्ड क्रोमर (Lord Cromer) के हाथ में आ गया।

सूडान का विद्रोह—इससे कुछ वर्ष पहले मिस्र के ख़दीव ने सूडान (Soudan) देश पर अपना अधिकार जमा लिया था। सन् १८८३ में सूडानवालों ने मिस्र सरकार के विरुद्ध विद्रोह ठान दिया। इस विद्रोह का नेता एक जोशीला मुसलमान था जो अपने आपको इस्लाम का नया नबी मेहदी (Prophet Mehdi) कहता था। मिस्र सरकार पर अपना आधिपत्य होने के कारण ब्रिटेन ने जेनरल गॉर्डन (General Gordon) को यह विद्रोह शान्त करने के लिए भेजा। परन्तु वह प्रयत्न सफल न हो सका और गॉर्डन स्वयं युद्ध में मारा गया। इसके बाद कुछ वर्ष तक सूडान मिस्र राज्य से पृथक् रहा; परन्तु सन् १८९८ में लार्ड किचनर (Lord Kitchener) ने सूडानवालों को ओमडरमेन (Omdurman) के युद्ध में परास्त किया; और इसके परिणाम-स्वरूप सूडान में ब्रिटेन और मिस्र का संयुक्त शासन स्थापित हो गया।

मिस्र का वर्तमान स्वतन्त्र राज्य (१९२२)—सन् १८८२ से मिस्र पर अँगरेज़ों का बराबर आधिपत्य रहा। नाम के लिए "ख़दीव" मिस्र का राजा होता था; परन्तु समस्त शासन-कार्य का संचालन अँगरेज़ी कॉन्सल जेनरल करता था। सन् १९१४ में योरपीय महायुद्ध

के प्रारम्भ होने पर जब मिस्र के "ख़दीव" अब्बास हिल्मी (Abbas Hilmi) ने ब्रिटेन के शत्रु टर्की का साथ दिया, तब ब्रिटेन ने उसे राज-सिंहासन से हटाकर उसके चचा हुसेन कमाल (Hussein Kamal) को मिस्र का सुलतान (Sultan of Egypt) बनाया; और साथ ही अपना आधिपत्य और अधिक दृढ़ करने के लिए कॉन्सिल जेनरल के स्थान पर एक हाई कमिश्नर (High Commissioner) मिस्र के शासन की देखभाल करने के लिए नियुक्त किया। हुसेन कमाल बस नाममात्र का ही सुलतान था और युद्ध-काल में मिस्र का शासन वास्तव में अँगरेज़ों के ही हाथ में रहा। परन्तु युद्ध समाप्त होने पर सन् १९२० में ब्रिटेन ने मिस्र के सुलतान को यथेष्ट अधिकार दे दिये। इसके बाद सन् १९२२ की सन्धि के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने मिस्र को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी, परन्तु सन्धि में कुछ शर्तें ऐसी भी रखी गईं जिनसे ब्रिटिश सरकार को, आवश्यकता पड़ने पर, मिस्र की विदेशी नीति में हस्तक्षेप का अभी तक अधिकार बना हुआ है।

(५) डिसरायले और ग्लैडस्टन

डिसरायले और ग्लैडस्टन—पामर्स्टन की मृत्यु के बाद ब्रिटेन के राजनीतिक क्षेत्र में दो प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों का प्रवेश होता है—एक डिसरायले (Benjamin Disraeli) और दूसरा ग्लैडस्टन (William Ewart Gladstone)। इन दोनों के राजनीतिक सिद्धान्त एक दूसरे के विपरीत थे और इन दोनों में, मन्त्रि-मंडल के नेता होने के लिए, ख़ूब मुक़ाबला रहा, जिसमें कभी एक और कभी दूसरे की विजय हुई। कितने ही वर्षों तक यही दोनों व्यक्ति राजनीतिक क्षेत्र में मुक़ाबले के नेता रहे।

ग्लैडस्टन का पहला मन्त्रित्व (१८६८-१८७४)—ग्लैडस्टन पहली बार सन् १८६८ में प्रधान मन्त्री हुआ। वह पहले कन्ज़रवेटिव दल में था और रॉबर्ट पील का अनुयायी था; परन्तु धीरे-धीरे विचारों

में परिवर्तन होने के कारण वह पक्का लिबरल (Liberal) हो गया। वह अपनी वक्तृत्व-शक्ति के लिए प्रसिद्ध है और उसका लोक-सभा में बड़ा प्रभाव था। उसके पहले मन्त्रित्व-काल में बहुत-से सुधार हुए। एजूकेशन एक्ट* (Education Act), जिसने शिक्षा-विभाग का इतना सुधार किया और बैलट एक्ट† (Ballot Act), जिससे गुप्त रूप से वोट देने की प्रणाली का प्रारम्भ हुआ, इसी काल में स्वीकृत हुए थे। आयरलैंड की कैथोलिक जनता का असन्तोष शान्त करने के लिए ग्लैडस्टन ने वहाँ के सरकारी प्रोटेस्टेंट चर्च को सहायता देना बन्द कर दिया (Disestablishment of the Irish Church); और देश के किसानों की शिकायतें दूर करने का भी प्रयत्न किया। परन्तु आयरलैंड-निवासी केवल इतने से कभी सन्तुष्ट न हो सकते थे।

इसी समय योरप में एक बड़ा प्रसिद्ध युद्ध हुआ जो "फ्रांस तथा जर्मनी का युद्ध" (Franco-German War, 1870-71) के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध के परिणाम-स्वरूप नेपोलियन तृतीय को, जो फ्रांस का सम्राट् हो गया था, त्यागपत्र देना पड़ा; और फ्रांस में प्रजातन्त्र राज्य (The French Republic) स्थापित हो गया जो अब तक चला आता है। जर्मनी में सब छोटी रियासतों ने प्रशा के राजा विलियम प्रथम को अपना सम्राट् स्वीकार किया और इस प्रकार "जर्मन साम्राज्य" (German Empire) का प्रारम्भ हुआ, जो योरपीय महायुद्ध के समय तक विद्यमान था। ग्लैडस्टन के नेतृत्व में इँगलैंड ने इस युद्ध में किसी पक्ष की भी सहायता नहीं की थी, इसलिए डिस्रायली ने उसे यह कहकर बदनाम करना शुरू किया कि उसकी शान्तिप्रिय नीति के कारण योरपीय राजनीतिक क्षेत्र में इँगलैंड की कोई स्थिति न रह जायगी। सन् १८७४ के चुनाव में ग्लैडस्टन के

---

* देखो पृष्ठ २५८।

† देखो पृष्ठ २६४।

समर्थकों की संख्या बहुत कम रह गई; इसलिए उसे प्रधान मन्त्री के पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

डिसूरायले (लार्ड बेकन्सफील्ड) का मन्त्रित्व (१८७४-१८८०)—ग्लैडस्टन के इस पतन के बाद डिसूरायले (Disraeli,

डिसरायले (अर्ल बेकन्सफील्ड)

Earl of Beaconsfield) प्रधान मन्त्री हुआ। वह यहूदी था और उसने राजनीतिक विषयों पर अपने विचार उपन्यासरूप में प्रकाशित करके ख़ूब यश प्राप्त कर लिया था। कहा जाता है—"यदि लोग ग्लैडस्टन की ओर उसकी वक्तृत्व-शक्ति के कारण आकर्षित होते थे, तो डिसरायले की ओर लोगों के आकर्षित होने का कारण उसके महान् विचार थे।" कॉर्न लॉ के विरुद्ध आन्दोलन के समय उसने रॉबर्ट पील

की "स्वतन्त्र व्यापार-नीति" का बड़े ज़ोरों से विरोध किया था। इसके बाद वह कन्ज़रवेटिव-दल (Conservatives) का नेता हो गया; परन्तु फिर भी वह सुधार-पक्ष का विरोधी न था। सन् १८६७ में पार्लिमेंट के "सुधार के दूसरे नियम" (Second Reform Act) के लिए उसी ने प्रस्ताव उपस्थित किया था।

डिस्रायली के मन्त्रित्व-काल की सबसे प्रसिद्ध घटना "बालकन युद्ध" अर्थात् रूस और टर्की की लड़ाई है जिसके विषय में हम "पूर्वीय समस्या" (Eastern Question) का विवेचन करते हुए लिख आये हैं*। डिस्रायली ने रूस पर दबाव डालकर टर्की के प्रश्न का समस्त योरपीय राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा निबटारा कराया। बर्लिन की सन्धि (Treaty of Berlin, 1878) के अनुसार टर्की के साम्राज्य के कई प्रान्त स्वतन्त्र हो जाने के कारण तुर्की की शक्ति तो अवश्य कम हो गई परन्तु रूसवाले इससे कोई लाभ न उठा सके। इसके अतिरिक्त ब्रिटेन को साइप्रस (Cyprus) द्वीप मिल गया जिससे ब्रिटिश साम्राज्य के एशियाई भाग की रक्षा के काय में बड़ा सुभीता हो गया। डिस्रायली ही ने इस्माइल पाशा से स्वेज़ कम्पनी (Suez Company) के हिस्से ख़रीदकर मिस्र देश पर ब्रिटिश आधिपत्य (British Protectorate over Egypt) की नींव डाली थी†। डिसरायली की टर्की को रूस के पंजे से बचाने की नीति का ग्लैडस्टन ने विरोध किया। इस समय ईसाई प्रान्तों के सतानेवाले मुसलमान तुर्कों के प्रति इँगलैंड की सहानुभूति न होने के कारण सन् १८८० के चुनाव में डिस्रायली के कन्ज़रवेटिव दल की हार हुई। डिस्रायली को त्यागपत्र देना पड़ा और इसके एक ही वर्ष बाद वह परलोक सिधारा।

ग्लैडस्टन का पुन: प्रधान मन्त्री होना—डिस्रायली के पतन के

* देखो पृष्ठ २८३।

† देखो पृष्ठ २८७।

बाद लिबरल-दल का नेता ग्लैडस्टन पुनः शक्तिमान् होकर प्रधान मन्त्री हो गया। इस बार वह सन् १८८० से १८८५ तक प्रधान मन्त्री रहा। उसके इस दूसरे मन्त्रित्व-काल में "पार्लिमेंट के सुधार का तीसरा नियम" (Third Reform Act) स्वीकृत हुआ। सन् १८८५ में अपनी शान्तिप्रिय पर-राष्ट्रनीति के कारण उसे फिर त्यागपत्र देना पड़ा; परन्तु शीघ्र ही वह पुनः शक्तिमान् होकर तीसरी बार प्रधान मन्त्री हुआ। इस बार उसने "आयरलैंड के स्वराज्य" (Irish Home Rule Bill) का प्रस्ताव उपस्थित किया; परन्तु उसके अस्वीकृत हो जाने के कारण उसे फिर त्यागपत्र देना पड़ा। सन् १८६२ में ग्लैडस्टन चौथी बार प्रधान मन्त्री हुआ, परन्तु इस समय उसके आयरलैंड को स्वराज्य दिलाने के पक्षपाती होने के कारण स्वयं उसी के दल में फूट पड़ गई थी। इस प्रकार सन् १८९४ में उसका चौथा तथा अन्तिम मन्त्रित्व-काल भी समाप्त हुआ।

ग्लैडस्टन की पर-राष्ट्रनीति—ग्लैडस्टन युद्ध से बहुत घबराता था। उसका मत था कि जहाँ तक हो सके युद्ध से बचा जाय और सार्वराष्ट्रीय झगड़ों का आपस में समझौता करके निबटारा कर लिया जाय। "फ्रांस और जर्मनी के युद्ध" (Franco-German War) में वह किसी ओर से भी सम्मिलित न हुआ; और संयुक्त अमेरिकन राज्य की उत्तरी तथा दक्षिणी रियासतों के गृह्य युद्ध (The American Civil War) में भी उसने किसी पक्ष का साथ न दिया। परन्तु इँगलैंड में एल्बमा (Albama) नामक एक जहाज़ दक्षिणी रियासतों की सहायता के लिए बना था, जिसने अमेरिका पहुँचकर उत्तरी रियासतों को बहुत हानि पहुँचाई थी। उस समय ग्लैडस्टन तुरन्त संयुक्त अमेरिकन राज्य से समझौता करने को तैयार हो गया; और एल्बमा के कारण जिन रियासतो की हानि हुई थी, उन्हें उसके बदले में रुपया चुका दिया।

अपने दूसरे मन्त्रित्व-काल में उसने दक्षिण अफ्रिका की बोअर जाति

से, जो ब्रिटेन के आधिपत्य के विरुद्ध युद्ध कर रही थी, सन्धि कर ली और उनके ट्रांसवाल नामक प्रजातन्त्र राज्य (Boer Republic of Transvaal) की स्वतन्त्रता को स्वीकृत कर लिया। मिस्र देश में अरबी पाशा के विदेशियों के विरुद्ध आन्दोलन को शान्त करने में
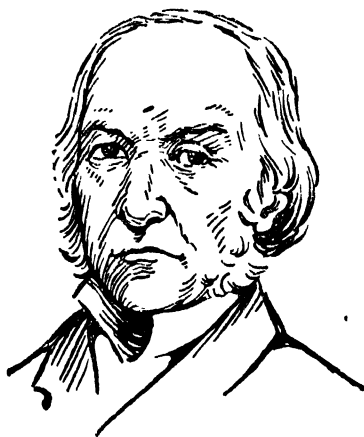
ग्लैडस्टन

ग्लैडस्टन पूर्णतया सफल रहा; और मिस्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य (British Protectorate over Egypt) स्थापित हो गया। परन्तु वह सूडान का विद्रोह न दबा सका और उसकी भेजी हुई अँगरेज़ी सेना का अफ़सर जनरल गार्डन स्वयं सूडान में मारा गया।

ग्लैडस्टन की शान्तिप्रिय नीति से सबसे बड़ा भय यह था कि ब्रिटेन का सार्वराष्ट्रीय क्षेत्र में कुछ भी मान न रह जायगा; और उसके सब मामलों में समझौता करने के लिए तैयार हो जाने से अन्य राष्ट्र शायद यह समझने लगेंगे कि ब्रिटेन को अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं है। ग्लैडस्टन की पर-राष्ट्रनीति से देशवासी सन्तुष्ट न थे, इसी कारण उसे अपने पहले और दूसरे मन्त्रित्व से त्यागपत्र देना पड़ा था।

ग्लैडस्टन तथा आयरलैंड की समस्या—ग्लैडस्टन को आयरलैंड की समस्या ने भी खूब परेशान किया। उसने पहले मन्त्रित्व-काल में आयरलैंड की कैथोलिक जनता को सन्तुष्ट करने के लिए वहाँ के प्रोटेस्टेंट चर्च को सरकारी सहायता देना बन्द कर दिया था (Disestablishment of the Irish Church) और किसानों की भी कुछ शिकायतें दूर करने का प्रयत्न किया था। परन्तु आयरलैंड की जनता को सन्तुष्ट करना बहुत कठिन काम था। आयरलैंड के फ़ीनियन समाज (Fenian Society) ने क्रान्तिकारी उपायों का प्रयोग करना प्रारम्भ कर दिया था; और वहाँ का प्रसिद्ध नेता पार्नेल (Parnell) आयरलैंड तथा ब्रिटेन के संयोग को तोड़कर देश में स्वराज्य स्थापित करने के लिए आन्दोलन कर रहा था।

धीरे-धीरे ग्लैडस्टन ने भी समझ लिया कि स्वराज्य के बिना आयरलैंड में शान्ति स्थापित करना असम्भव है। उसने दो बार पार्लिमेंट में आयरलैंड के स्वराज्य का प्रस्ताव (Irish Home Rule Bill) उपस्थित किया; परन्तु वह दोनों बार अस्वीकृत हुआ और इसी कारण उसको अपने तीसरे और चौथे मन्त्रित्व से त्यागपत्र देना पड़ा था। ग्लैडस्टन का मत ठीक था। उसके प्रस्ताव के अस्वीकृत होने के कारण आयरलैंड का आन्दोलन बढ़ता गया; और जैसा कि आगे चलकर बतलाया जायगा, अन्त में स्वराज्य दे देने ही से आयरलैंड की समस्या का निबटारा हुआ।

ग्लैडस्टन की मृत्यु तथा लिबरल-दल का शक्तिहीन होना—सन् १८९५ में ग्लैडस्टन की मृत्यु हुई। उसके आयरलैंड को स्वराज्य

देने के प्रस्ताव के कारण स्वयं उसके दल में फूट पड़ गई थी। अब उसकी मृत्यु के पश्चात् लिबरल-दल, जिसका वह नेता था, स्पष्ट रूप से दो भागों में विभक्त हो गया। उसका एक भाग आयरलैंड को स्वराज्य देने का पक्षपाती होने के कारण "स्वराज्यवादी" (Home Ruler) कहलाने लगा; और दूसरा भाग, जो आयरलैंड तथा ब्रिटेन का संयोग पूर्ववत् स्थापित रखना चाहता था, "संयोगवादी दल" (Unionists) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इस फूट के कारण लिबरल-दल शक्तिहीन हो गया और सन् १९०६ तक उसकी यही हीन दशा बनी रही।

यूनियनिस्ट-दल का शासन—लिबरल-दल के टूटने पर देश का शासन-कार्य "संयोगवादी-दल" (यूनियनिस्ट-दल) के हाथ में आया। इस दल का नेता लॉर्ड सालिसबरी (Lord Salisbury) था और आयरलैंड को स्वराज्य देने के समस्त विरोधी इस दल में सम्मिलित हो गये थे। महारानी विक्टोरिया के राजत्वकाल के शेष भाग में मन्त्रि-मंडल का संचालन इसी दल के द्वारा होता रहा।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १८३७—महारानी विक्टोरिया का राज्याभिषेक।
" १८३०-१८५१—पामर्स्टन, परराष्ट्र-विभाग का मन्त्री।
" १८४१-१८४६—रॉबर्ट पील का मन्त्रित्व।
" १८४६—कॉर्न लॉ का अन्त।
" १८५४-१८५६—क्रीमिया का युद्ध।
" १८५५-१८६५—पामर्स्टन का मन्त्रित्व।
" १८५७—भारतवर्ष का विद्रोह।
" १८५८—भारतवर्ष का शासन ब्रिटिश सम्राट् के हाथ में आना।
" १८६८-१८७४—ग्लैडस्टन का पहला मन्त्रित्व।
" १८७४-१८८०—डिसरायले का मन्त्रित्व।
" १८७७—विक्टोरिया का "भारतवर्ष की महारानी" की उपाधि धारण करना।

सन् १८७७ १८७८—बालकन युद्ध (टर्की और रूस का युद्ध)।
,, १८८०-१८८५—ग्लैडस्टन का दूसरा मन्त्रित्व।
,, १८८२—मिस्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य।
,, १८८६—ग्लैडस्टन का तीसरा मन्त्रित्व।
,, १८८६-१८९२—लार्ड सालिसबरी तथा यूनियनिस्ट-दल का शासन।
,, १८९२-१८९४—ग्लैडस्टन का चौथा तथा अन्तिम मन्त्रित्व।
,, १८९५-१९०१—लार्ड सालिसबरी का पुनः प्रधान मन्त्री होना।
,, १९०१—महारानी विक्टोरिया की मृत्यु।
,, १९२२—मिस्र की पूर्ण स्वतन्त्रता।

नवाँ परिच्छेद

ब्रिटिश साम्राज्य के स्वतन्त्र प्रदेश

उन्नीसवीं शताब्दी में उपनिवेशों की उन्नति—उन्नीसवीं शताब्दी वर्तमान ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना का काल माना जाता है। जॉर्ज तृतीय के राजत्व-काल में अमेरिका के अँगरेज़ी उपनिवेशों के स्वतन्त्र हो जाने से इँगलैंड को बहुत धक्का पहुँचा था; परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में बहुत-से नये उपनिवेश स्थापित हो जाने के कारण वह हानि पूरी हो गई। सन् १८१५ में नेपोलियन की पराजय के पश्चात् अँगरेज़ों को दक्षिण-अफ्रिका में केप कालोनी (Cape Colony), भारतवर्ष के दक्षिण का लङ्का द्वीप (Ceylon), तथा मारीशस (Mauritius), गाइना (Guiana) आदि प्राप्त हुए। इसके बाद कैनेडा (Canada), आस्ट्रेलिया (Australia) तथा दक्षिण-अफ्रिका (South-Africa) में उपनिवेशों के फैलने तथा उनके पारस्परिक संघटन के द्वारा वर्तमान ब्रिटिश साम्राज्य के "स्वतन्त्र प्रदेशों" (Self-Governing Dominions) की स्थापना हुई। उन्नीसवीं शताब्दी की इस औपनिवेशिक उन्नति के परिणाम-स्वरूप ब्रिटिश साम्राज्य आजकल भूमंडल के लगभग चौथाई भाग में फैला हुआ है।

(१) कैनेडा तथा न्यूफ़ाउंडलैंड

कैनेडा का दो भागों में विभक्त होना (१७९१)—कैनेडा में पहले फ्रांसीसियों के उपनिवेश थे; परन्तु जैसा कि हम बतला चुके हैं, सन् १७६३ में सप्तवार्षिक युद्ध के पश्चात् ये सब उपनिवेश अँगरेज़ों के अधीन हो गये। "अमेरिकन संयुक्त राज्य" (United States of America) की स्थापना के बाद बहुत-से अँगरेज़ दक्षिण से जाकर

कैनेडा में बसने लगे; और इस प्रकार धीरे-धीरे वहाँ अँगरेज़ों तथा फ्रांसीसियों की जन-संख्या लगभग आधी-आधी हो गई। कैनेडा के अँगरेज़ अधिकतर प्रोटेस्टेंट थे; परन्तु वहाँ के फ्रांसीसी कट्टर कैथोलिक थे; और इस धार्मिक मतभेद के कारण दोनों में पारस्परिक सहानुभूति न हो सकी। दोनों में प्रायः झगड़ा रहने लगा। ऐसी अवस्था में सन् १७९१ में छोटे पिट (Pitt, the Younger), ने कैनेडा को दो प्रान्तों में विभक्त कर दिया। एक अपर कैनेडा (Upper Canada) जिसमें अधिकांश प्रोटेस्टेंट अँगरेज़ बसे हुए थे; और दूसरा लोअर कैनेडा (Lower Canada), जिसके अधिकांश निवासी कैथोलिक फ्रांसीसी थे। दोनों प्रान्तों के लिए ब्रिटिश सम्राट् की ओर से अलग अलग गवर्नर नियुक्त होकर आते थे और दोनों में चुने हुए सदस्यों की छोटी छोटी कौंसिलें भी होती थीं।

कैनेडा को स्वराज्य (१८४०)—इसके कुछ वर्ष बाद कैनेडा के दोनों प्रान्तों के निवासियों में यह लहर फैली कि हमको अपना शासन स्वयं करने का अधिकार मिल जाना चाहिए। सन् १८३७ में, रानी विक्टोरिया के राज्याभिषेक के थोड़े ही दिनों बाद, कैनेडावालों का आन्दोलन इतना बढ़ गया कि इंगलैंड के प्रधान मन्त्री राबर्ट पील ने कहा—"शीघ्र ही ब्रिटेन के समस्त उपनिवेशों में आयर्लैंड की भाँति भयंकर अशान्ति रहने लगेगी"। इस समय लार्ड डरहम (Lord Durham) को कैनेडा की स्थिति सँभालने के लिए भेजा गया। उसकी रिपोर्ट के अनुसार सन् १८४० में कैनेडा के दोनों प्रान्त मिला दिये गये और शासन-कार्य का संचालन मन्त्रियों-द्वारा होने लगा, जो अपनी नीति के लिए देश की चुनी हुई काउन्सिल के सम्मुख उत्तरदायी होते थे। इस प्रकार कैनेडा में ब्रिटेन की भाँति जनता के प्रतिनिधियों-द्वारा शासन अर्थात् स्वराज्य की स्थापना हो गई।

वर्तमान "कैनेडा का संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (१८६७)—धीरे-धीरे कैनेडा के निवासियों में पारस्परिक सहानुभूति बढ़ती गई

और कैथोलिक फ्रांसीसी तथा प्रोटेस्टेंट अँगरेज़ मिलकर शान्तिपूर्वक रहना सीख गये। सन् १८६७ में उत्तरी अमेरिका के अन्य ब्रिटिश उपनिवेश भी कैनेडा में मिला दिये गये और इस प्रकार वर्तमान "कैनेडा के संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (Self-Governing Federal Dominion of Canada) का प्रारम्भ हुआ। अलग-अलग उपनिवेशों का स्वराज्य क़ायम रहा; और आजकल वे अपना गृह्य प्रबन्ध पृथक् रूप से स्वतन्त्रतापूर्वक करते हैं। इसके अतिरिक्त समस्त कैनेडा के संयुक्त रूप से शासन के लिए उपनिवेशों के प्रतिनिधियों की दो काउन्सिलें हैं, जिनके सम्मुख कैनेडा के मन्त्री अपनी नीति के लिए उत्तरदायी हैं। कैनेडा का गवर्नर-जनरल तथा अलग-अलग उपनिवेशों के गवर्नर ब्रिटिश सम्राट् की ओर से नियुक्त किये जाते हैं।

कैनेडा के पास ही न्यूफ़ाउंडलैंड द्वीप (Newfoundland) है। इसे भी स्वराज्य मिला हुआ है; परन्तु यह कैनेडा के संयुक्त राज्य में सम्मिलित नहीं है।

(२) ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड

ऑस्ट्रेलिया के उपनिवेश की स्थापना—ऑस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड का कप्तान कुक (Captain Cook) ने लगभग सन् १७७० में पता लगाया था। आस्ट्रेलिया पहले बिलकुल उजाड़ देश समझा जाता था और बहुत दिनों तक वहाँ ब्रिटेन के केवल आजन्म क़ैदियों ही की बस्ती (British Convict Settlement) रही। परन्तु सोने की खानों का पता लगने तथा ऊन के व्यापार के फैलाने से इस देश का महत्त्व बढ़ने लगा और सन् १८२१ में यहाँ क़ैदियों के अतिरिक्त अन्य अँगरेज़ों को भी बसने की आज्ञा दे दी गई। इसके बाद सन् १८४० में क़ैदियों का यहाँ भेजना बिलकुल बन्द कर दिया गया; और अब आस्ट्रेलिया में सुन्दर उपनिवेश दिखाई देने लगे। इनमें से दो मुख्य हैं—न्यू साउथ वेल्ज़ (New South Wales) जिसकी

राजधानी आजकल सिडनी (Sydney) है; और विक्टोरिया (Victoria) जिसका मुख्य नगर मेलबोर्न (Melbourne) है।

वर्तमान "आस्ट्रेलिया का संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य"—आस्ट्रेलिया के उपनिवेशों को भी धीरे-धीरे स्वराज्य मिल गया; और सन् १८५० तक यहाँ कोई ऐसा उपनिवेश न रहा जिसके निवासियों को अपना गृह्य प्रबन्ध स्वतन्त्रतापूर्वक करने का अधिकार न हो। इसके बाद सन् १९०० में ये सब उपनिवेश आपस में मिला दिये गये और इस प्रकार वर्तमान "आस्ट्रेलिया के संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (Self-Governing Federal Dominion of Australia) का प्रारम्भ हुआ। कैनेडा की भाँति आस्ट्रेलिया के उपनिवेशों को भी पृथक् रूप से स्वराज्य मिला हुआ है; और समस्त आस्ट्रेलिया के संयुक्त शासन का संचालन भी कैनेडा के संयुक्त राज्य की ही भाँति होता है। आस्ट्रेलिया से लगभग सौ मील की दूरी पर न्यूज़ीलैंड (New Zealand) द्वीप है। इसे भी स्वराज्य मिला हुआ है, परन्तु यह आस्ट्रेलिया के संयुक्त राज्य में सम्मिलित नहीं है।

(३) दक्षिण-अफ़्रिका

दक्षिण-अफ़्रिका के उपनिवेशों की स्थापना—पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में अफ़्रिका की केप आफ़ गुड होप से होकर पुर्तगालवालों ने योरप से भारतवर्ष के लिए रास्ता ढूँढ़ निकाला था। सन् १६५१ में हालेंडनिवासियों ने यहाँ केप कालोनी (Cape Colony) नामक उपनिवेश स्थापित किया; और उसमें बसनेवाले धीरे-धीरे बोअर (Boer) कहलाने लगे। सन् १८१५ में वाटरलू के युद्ध के बाद केप कालोनी अँगरेज़ों के अधीन हो गई। सन् १८३३ में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य भागों की भाँति यहाँ भी दास-व्यापार की मनाही कर दी गई। बोअर लोगों के पास बहुत-से दास होते थे; इसलिए दास-व्यापार की मनाही हो जाने पर वे केप कालोनी छोड़कर नेटाल (Natal) में

जा बसे। जब नेटाल को भी अँगरेज़ों ने अपने अधीन कर लिया, तब बोअर लोगों ने वहाँ भी रहना पसन्द न किया; और आगे बढ़कर उन्होंने ट्रान्सवाल (Transvaal) तथा आरेंज़ फ़्री स्टेट (Orange Free State) नामक अपने दो अलग स्वतन्त्र उपनिवेश स्थापित कर लिये।

प्रथम बोअर-युद्ध (१८७७-१८८१)—इसी समय बोअर लोगों को ट्रान्सवाल उपनिवेश में सोने की खानों का पता लगा और सोने के लालच से बहुत-से विदेशी भी वहाँ जाकर बसने लगे। बोअरों ने इन विदेशियों (Outlanders) के साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया; और उनके वहाँ बसने तथा सोने की खान खोदने में तरह तरह की बाधायें डालना चाहा। अँगरेज़ों ने विदेशियों का पक्ष लेकर बोअरों के विरुद्ध युद्ध ठान दिया और सन् १८७७ में ट्रान्सवाल को अपने अधीन कर लिया। परन्तु शीघ्र ही ट्रान्सवाल में विद्रोह उठ खड़ा हुआ और अँगरेज़ों की भेजी हुई सेना को बोअरों ने मेजूबा पहाड़ी (Majuba Hill) पर बुरी तरह से परास्त किया। ऐसी अवस्था में, सन् १८८१ में, अँगरेज़ों को ट्रान्सवाल से हटना पड़ा और उनका बोअरों के इस उपनिवेश को अपने अधीन करने का प्रयत्न विफल रहा।

द्वितीय बोअर-युद्ध (१८९९-१९०२)—धीरे-धीरे सोने की खानों के कारण ट्रान्सवाल की ख्याति बढ़ती गई और विदेशी वहाँ अधिक संख्या में आकर बसने लगे। बोअरों का इन विदेशियों के प्रति वही बुरा बर्ताव जारी रहा; इसलिए अँगरेज़ों ने दूसरी बार फिर विदेशियों का पक्ष लेकर बोअरों के विरुद्ध युद्ध किया। पहले कुछ दिनों तक अँगरेज़ों की बराबर हार होती गई; और सन् १८९६ में जेम्सन (Jameson) का ट्रान्सवाल पर आक्रमण बिलकुल विफल रहा। परन्तु लॉर्ड राबर्ट्स (Lord Roberts) के अँगरेज़ी सेना के सेनापति हो जाने पर अँगरेज़ों की विजय होने लगी। राबर्ट्स ने बोअरों के दोनों उपनिवेशों (ट्रान्सवाल तथा आरेंज फ़्री स्टेट) के मुख्य नगरों—

ब्लूमफ़ॉनटेन (Bloemfontein) तथा प्रिटोरिया (Pretoria) पर अपना अधिकार जमा लिया। इसके बाद बोअरों को युद्ध जारी रखने का साहस न रहा। राबर्ट्स के विलायत लौट जाने पर लॉर्ड किचनर (Lord Kitchener) दक्षिण-अफ्रिका की अँगरेज़ी सेना का सेनापति हुआ; और सन् १९०२ में बोअरों को अँगरेज़ों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। इस युद्ध के परिणाम-स्वरूप बोअरों के दोनों उपनिवेश, ट्रान्सवाल तथा आरेंज फ्री स्टेट, ब्रिटिश राज्य में मिला लिये गये। केप कॉलोनी तथा नेटाल में पहले ही से अँगरेज़ों का राज्य था। अब इन दोनों बोअर उपनिवेशों के भी मिल जाने से समस्त दक्षिण-अफ्रिका अँगरेज़ों के अधीन हो गया।

वर्तमान "दक्षिण-अफ्रिका का संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (१९०९)—कैनेडा तथा आस्ट्रेलिया की भाँति दक्षिण-अफ्रिका के उपनिशों को भी सन् १९०६ में स्वराज्य दे दिया गया। इसके बाद सन् १९०९ में चारों उपनिवेशों को मिला दिया गया; और इस प्रकार वर्तमान "दक्षिण-अफ्रिका के सयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" (Self-Governing Federal Dominion of South Africa) का प्रारम्भ हुआ। चारों उपनिवेशों को पृथक् रूप से स्वराज्य मिला हुआ है; और उन चारों के सयुक्त शासन का संचालन कैनेडा तथा आस्ट्रेलिया के संयुक्तराज्य के ढग पर होता है।

अपने उपनिवेशों में स्वराज्य होने के कारण बोअर लोग अब बिलकुल संतुष्ट हैं। उनके संतुष्ट होने का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि लुई बोथा (Louis Botha) ने, जो द्वितीय बोअर-युद्ध में बोअर-सेना का सेनापति था, बहुत प्रसन्नतापूर्वक "संयुक्त दक्षिण-अफ्रिका" का प्रथम प्रधान मन्त्री होना स्वीकृत किया था।

(४) "स्वतन्त्र प्रदेशों" की शासन-प्रणाली

"स्वतन्त्र प्रदेश"—कैनेडा, न्यूफ़ाउंडलैंड, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड तथा दक्षिण-अफ्रिका ब्रिटिश साम्राज्य के "स्वतन्त्र प्रदेश" (Self-

(Governing Dominions) कहलाते हैं। इन सबको स्वराज्य मिला हुआ है और इनका शासन ब्रिटेन की भाँति जनता के प्रतिनिधियों द्वारा होता है। केनेडा, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण-अफ्रिका के "प्रदेशों" में कई उपनिवेश सम्मिलित हैं। इन उपनिवेशों को पृथक् रूप से भी स्वराज्य मिला हुआ है और इनके निवासी अपना गृह्य प्रबन्ध स्वतन्त्रतापूर्वक करते हैं। प्रत्येक उपनिवेश में एक लेफ्टिनेंट गवर्नर होता है; परन्तु वह शासनकार्य में अधिक हस्तक्षेप नहीं कर सकता। शासनकार्य्य वास्तव में मन्त्रियों के हाथ में होता है जो चुने हुए सदस्यों की काउंसिल के सम्मुख उत्तरदायी होते हैं। समस्त "प्रदेश" के संयुक्त रूप से शासन के लिए एक पार्लिमेंट* होती है जिसमें "प्रदेश" के समस्त सम्मिलित उपनिवेशों से प्रतिनिधि बुलाये जाते हैं। यह पार्लिमेंट ऐसे प्रश्नों पर विचार करती है जिनसे सब सम्मिलित उपनिवेशों का सम्बन्ध हो। समस्त "प्रदेश" के शासन का संचालन भी मंत्रियों-द्वारा होता है, जो अपनी नीति के लिए "प्रदेश" की पार्लिमेंट के सम्मुख उत्तरदायी होते हैं†।

ब्रिटेन का आधिपत्य—"स्वतन्त्र प्रदेशों" पर ब्रिटेन का आधिपत्य निम्नलिखित बातों से समझना चाहिए।

(१) "स्वतन्त्र प्रदेशों" की शासन-प्रणाली ब्रिटिश पार्लिमेंट की निर्धारित की हुई है और बिना उसकी स्वीकृति के उसमें कोई परिवर्तन नहीं हो सकता।

(२) प्रत्येक "स्वतन्त्र प्रदेश" (Dominion) का गवर्नर जनरल तथा उसके अलग अलग उपनिवेशों के लेफ्टिनेंट गवनर ब्रिटिश सम्राट की ओर से नियुक्त करके भेजे जाते हैं। परन्तु ये उपनिवेश स्वतन्त्र

---

* ब्रिटेन की पार्लिमेंट की भाँति इसके भी दो भाग होते हैं।

† ऐसे "प्रदेशों" को, जिनमें कई उपनिवेश सम्मिलित हों और प्रत्येक उपनिवेश को पृथक् रूप से भी स्वराज्य मिला हुआ हो, अँगरेज़ी में Federal Dominion कहते हैं।

इसलिए समझे जाते हैं कि गवर्नर-जनरल तथा लेफ्टिनेंट गवर्नर स्वयं शासन-कार्य में अधिक हस्तक्षेप नहीं कर सकते। शासन-कार्य का सचालन मन्त्रियों-द्वारा होता है, जो अपनी नीति के लिए देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी होते हैं।

(३) "स्वतन्त्र प्रदेश" स्वयं अन्य राष्ट्रों से युद्ध तथा संधि नहीं कर सकते। उनकी पर-राष्ट्रनीति ब्रिटिश सरकार ही निर्धारित करती है।

(४) ब्रिटेन की प्रिवी काउन्सिल (Privy Council) ही समस्त ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तिम अपील की कचहरी है; और "स्वतन्त्र प्रदेशों" की अपीलें भी उसी के सम्मुख पेश होती हैं।

(५) "स्वतन्त्र प्रदेशों" के समस्त नियमों के लिए गवर्नर-जनरल द्वारा ब्रिटिश सम्राट् की अनुमति प्राप्त होना आवश्यक है, परन्तु ब्रिटेन की भाँति यहाँ की पार्लिमेंट के स्वीकृत किये हुए नियमों को भी सम्राट प्रायः कभी अस्वीकृत नहीं करता।

(६) "स्वतन्त्र प्रदेश" ब्रिटिश सम्राट् के अधीन समझे जाते हैं। वहाँ के झण्डों में ब्रिटेन के "यूनियन जैक" का सम्मिलित रहना आवश्यक है। वहाँ भी शासन-कार्य का संचालन ब्रिटिश सम्राट् ही के नाम से होता है; और वहाँ के लिए भी समस्त उपाधियाँ आदि उसी प्रकार सम्राट् की ओर से दी जाती हैं जिस प्रकार स्वयं ब्रिटिश द्वीपों में।

इम्पीरियल कान्फ़रेंस (१९२६)—ब्रिटिश साम्राज्य के समस्त भागों का पारस्परिक संगठन ठीक रखने के लिए समस्त "स्वतन्त्र प्रदेशों" तथा भारतवर्ष की सरकार के प्रतिनिधि तथा ब्रिटेन के "मन्त्रि-मण्डल" के प्रधान कर्मचारी इम्पीरियल कान्फ़रेन्स (Imperial Conference) में सम्मिलित होकर साम्राज्य-सम्बन्धी विषयों पर विचार करते हैं। १९२६ की इम्पीरियल कान्फ़रेन्स के निर्णय के अनुसार "स्वतन्त्र प्रदेशों" को और भी अधिक स्वतन्त्रता मिल गई है। इस निर्णय की पुष्टि अभी पिछले वर्ष (१९३०) की इम्पीरियल कान्फ़रेन्स ने की है।

अब "स्वतन्त्र प्रदेश" स्वयं अन्य राष्ट्रों से भी व्यवहार कर सकते हैं और ब्रिटेन का उन पर केवल नाम-मात्र ही आधिपत्य रह गया है। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य का रूप धीरे धीरे स्वतन्त्र राष्ट्रों के समूह (British Commonwealth of Nations) का-सा होता जा रहा है। उनके पारस्परिक संघटन का चिह्न यही है कि सबका सम्राट् एक ही होता है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १७९१ कैनेडा का दो भागों में विभक्त होना।
" १८१५—केप कालोनी का अँगरेज़ों के अधीन होना।
" १८४०—कैनेडा को स्वराज्य।
" " —ऑस्ट्रेलिया में क़ैदियों के भेजने की मनाही।
" १८६७—कैनेडा के वर्तमान "संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" की स्थापना।
" १८७७-१८८१—प्रथम बोअर-युद्ध।
" १८९९-१९०२—द्वितीय बोअर-युद्ध।
" १९००—ऑस्ट्रेलिया के वर्तमान "संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" की स्थापना।
" १९०९—दक्षिण-अफ़्रिका के वर्तमान "संयुक्त तथा स्वतन्त्र राज्य" की स्थापना।
" १९२६—"स्वतन्त्र" प्रदेशों को अधिक स्वतन्त्रता।

दसवाँ परिच्छेद

आयरलैंड में स्वतन्त्रता के लिए आन्दोलन

"संयोग" के पश्चात् आयरलैंड की दशा—हम बतला चुके हैं कि आयरलैंड-निवासियों को सन्तुष्ट करने के हेतु सन् १८०१ में आयरलैंड को "संयुक्तराज्य" (United Kingdom) में सम्मिलित कर लिया गया था। परन्तु आयरलैंड-निवासी इस "संयोग" (Union) से सन्तुष्ट न हो सके; क्योंकि उनकी असली कठिनाइयाँ दूर करने का अभी कोई उपाय नहीं किया गया था। आयरलैंड के अधिकांश निवासी कैथोलिक हैं; परन्तु देश के नियमानुसार कैथोलिक लोग राजनीतिक अधिकारों से वंचित थे, और उनमें से कोई पार्लिमेंट का सदस्य न हो सकता था। इसके अतिरिक्त किसानों की दशा भी बहुत असन्तोषजनक थी और वे बिलकुल भूमिपतियों के आश्रित होते थे। इन सब असुविधाओं के कारण "संयोग" के पश्चात् भी आयरलैंड की कैथोलिक जनता का आन्दोलन बराबर जारी रहा।

उन्नीसवीं शताब्दी भर आयरलैंड की समस्या का ब्रिटेन के राजनीतिक क्षेत्र पर बड़ा प्रभाव पड़ा। लॉर्ड सालिसबरी ने एक अवसर पर कहा था—"ब्रिटेन के राजनीतिज्ञ अधिकतर आयरलैंड ही की समस्या में उलझे रहते हैं।" आयरलैंड ही के कैथोलिकों के उद्धार के प्रश्न पर सन १८२९ में टोरी-दल में फूट शुरू हुई; आयरलैंड ही के आलू के अकाल के समय सन् १८४६ में कार्न लॉ के निषेध के कारण टोरी-दल पूर्णतया शक्तिहीन हुआ; और आगे चल कर आयरलैंड ही के स्वराज्य के प्रश्न पर सन् १८८६ में ग्लैडस्टन के लिबरल-दल की शक्ति का अन्त हुआ।

(१) ओकोनेल तथा "नरम दल" का आन्दोलन

ओकोनेल के सिद्धान्त—"संयोग" से लगभग चालीस वर्ष तक आयरलैंड के आन्दोलन का नेता डेनियल ओकोनेल (Daniel O'Connell) था। वह कैथोलिक था और उसने वकालत में बहुत नाम पैदा किया था। वह वक्तृता देने में भी बड़ा निपुण था और विराट सभाओं में श्रोताओं पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता था। वह "नियमानुमोदित आन्दोलन" (Constitutional Agitation) का पक्षपाती था और उसने विद्रोह आदि करने का सदा विरोध किया। उसके नेतृत्व में आयरलैंड में जो आन्दोलन हुआ, उसे "नरम दल" (Moderates) का आन्दोलन समझना चाहिए।

कैथोलिकों के उद्धार का आन्दोलन—बहुत दिनों तक ओकोनेल के आन्दोलन का प्रधान लक्ष्य यही रहा कि कैथोलिकों को राजनीतिक अधिकार मिलने चाहिएँ। इसी आशय से उसने "कैथोलिक-समाज" (Catholic Association) स्थापित किया और जैसा कि हम बतला चुके हैं (देखो पृष्ठ २४२) इस समाज के आन्दोलन ने इँगलैंड के प्रधान मन्त्री वेलिंग्टन (Duke of Wellington) को अपनी नीति बदलने पर बाध्य किया। सन् १८२९ में ओकोनेल के, कैथोलिक होने पर भी, पार्लिमेंट के सदस्य चुने जाने के समय इतनी उत्तेजना फैली कि "कैथोलिकों के उद्धार का नियम" (Catholic Emancipation Act) स्वीकृत हुआ, और कैथोलिकों को पार्लिमेंट के सदस्य तथा राज्य के प्रधान कर्मचारी होने की आज्ञा मिल गई।

"स्थापित" प्रोटेस्टेंट चर्च के विरुद्ध आन्दोलन—इसके पश्चात ओकोनेल ने आयरलैंड के "स्थापित प्रोटेस्टेंट चर्च" के विरुद्ध आन्दोलन आरम्भ किया। यह स्थापित चर्च सरकारी था और इसके संचालन का व्यय आयरलैंड-निवासियों से "धर्म-कर" (Tithe) के रूप में वसूल किया जाता था। इस चर्च से देश के गिने चुने प्रोटेस्टेंटों को ही लाभ

होता था; और अधिकांश कैथोलिक जनता इसको घृणा की दृष्टि से देखती थी; परन्तु इसके लिए "धर्म-कर" सबको देना पड़ता था। ओकोनेल का यही कहना था कि प्रोटेस्टेंट चर्च के संचालन का भार कैथोलिक जनता पर लादना सर्वथा अनुचित है; परन्तु इस आन्दोलन में उसे पूर्ण सफलता न हुई। केवल इतनी रिआयत हो गई कि "धर्म-कर" किसानों से न लेकर केवल भूमिपतियों ही से वसूल किया जाने लगा।

"संयोग" तोड़ने का आन्दोलन—धीरे-धीरे ओकोनेल का यह विचार दृढ़ होने लगा कि "संयुक्त राज्य" में रहने से आयरलैंड निवासियों की असुविधाओं का अन्त नहीं हो सकता। अब उसने "संयोग" तोड़ने तथा आयरलैंड की स्वतन्त्र पार्लिमेंट स्थापित करने के लिए आन्दोलन आरम्भ किया। उस समय सर रॉबर्ट पील इँगलैंड का प्रधान मन्त्री था। उसने कई प्रकार से आयरलैंड का आन्दोलन शान्त करना चाहा; परन्तु इस प्रयत्न में उसे सफलता न हुई। इसी समय आयरलैंड में एक "नवयुवक-दल" (Young Ireland Party) शक्तिमान् होने लगा जो ओकोनेल के "नरम" आन्दोलन को यथेष्ट न समझता था। पील ने इस अवसर से लाभ उठाकर ओकोनेल को बन्दी-गृह में भेजवा दिया; और इसके सात वर्ष बाद सन् १८४७ में आयरलैंड का यह प्रसिद्ध नेता परलोक सिधारा।

(२) पार्नेल तथा "गरम दल" का आन्दोलन

ग्लैडस्टन के प्रथम मन्त्रित्व-काल की अधूरी रिआयतें—ओकोनेल की मृत्यु के बाद आयरलैंड के "नवयुवक-दल" द्वारा देश के राजनीतिक सुधार का आन्दोलन बराबर जारी रहा। जैसा कि हम बता चुके हैं, प्रधान मन्त्री ग्लैडस्टन ने अपने प्रथम मन्त्रित्वकाल में कुछ और सुविधाएँ देकर आयरलैंड का आन्दोलन शान्त करना चाहा। सन् १८६९ में उसने "स्थापित प्रोटेस्टेंट चर्च" को सरकारी सहायता देना बन्द कर दिया* (Disestablishment of the Irish

* देखो पृष्ठ २९०।

Church); और इस प्रकार आयरलैंड की कैथोलिक जनता के सिर से प्रोटेस्टेंट चर्च के संचालन के लिए "धर्म-कर" देने का अनुचित भार उतर गया। इसके अतिरिक्त ग्लैडस्टन ने किसानों की शिकायतें दूर करने का भी प्रयत्न किया। परन्तु केवल इतनी ही सुविधाओं से आयरलैंड-निवासियों का सन्तुष्ट होना असम्भव था।

"पार्नेल तथा गरम दल"—अब आयरलैंड में एक "गरम दल" (Extremists) बनने लगा जिसका नेता पार्नेल (Parnell) था। पार्नेल का मत था कि केवल थोड़ी-सी राजनीतिक सुविधाओं के लिए "नरम" आन्दोलन करने से काम नहीं चल सकता। उसके "गरम दल" का यह लक्ष्य था कि आयरलैंड में पूर्णतया "स्वराज्य" (Home Rule) स्थापित किया जाय। इस उद्देश की सिद्धि के लिए उसने बड़े ज़ोरों से आन्दोलन आरम्भ किया। वह आयरलैंड की ओर से लन्दन की "संयुक्त पार्लिमेंट" का सदस्य था; और वह तथा उसके सहकारी पार्लिमेंट को तंग करने के आशय से आयरलैंड-सम्बन्धी विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर विचार होने के समय तरह-तरह से बाधा डालने का प्रयत्न करते थे।

आयरलैंड के मन्त्री का वध—इस समय आयरलैंड में क्रान्तिकारियों की भी कमी न थी। क्रान्तिकारियों ने "फ़ीनियन समाज" (Fenian Society) नामक एक संस्था स्थापित कर रखी थी, जिसका उद्देश्य ही यह था कि विद्रोह तथा रक्तप्रवाह करके, जिस तरह हो सके, देश के लिए स्वराज्य प्राप्त किया जाय। सन् १८८२ में इन क्रांतिकारियों ने लार्ड फ्रेडेरिक केवेंडिश (Lord Frederick Cavendish) को, जो अभी आयरलैंड के मन्त्री (Irish Secretary) नियुक्त हुए थे, फोनिक्स बाग़ (Phoenix Park) में मार डाला और जगह-जगह बम आदि बनाने के कारख़ाने खोल दिये।

ग्लैडस्टन का "स्वराज्य का प्रस्ताव"—ऐसी अवस्था में प्रधान मन्त्री ग्लैडस्टन को भी अपनी नीति बदलनी पड़ी। उसने समझ लिया

कि बिना स्वराज्य दिये आयरलैंड में शान्ति स्थापित करना असम्भव है। जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं (देखो पृष्ठ २९५), ग्लैडस्टन ने दो बार "आयरलैंड के स्वराज्य का प्रस्ताव" (Irish Home Rule Bill) उपस्थित किया; परन्तु दोनों बार वह अस्वीकृत हुआ। ग्लैडस्टन को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा और आयरलैंड की अशान्ति बराबर जारी रही

(३) "सिनफ़ियन दल"—क्रान्तिमय आन्दोलन

सिनफ़ियन दल तथा पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन—सन् १८९० में एक मुक़दमे के सम्बन्ध में बदनाम हो जाने के कारण पार्नेल शक्तिहीन हो गया; परन्तु आयरलैंड का आन्दोलन बन्द न हुआ; धीरे धीरे इस आन्दोलन ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। अब आयरलैंड-निवासी यह धमकी देने लगे कि हम ब्रिटेन की सरकार से समस्त सम्बन्ध त्याग कर अपने देश में स्वतन्त्र प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करेंगे। क्रान्तिकारियों की संख्या दिन पर दिन बढ़ती गई और देश में एक शक्तिशाली "सिनफ़ियन दल" (Sinn Fiens) स्थापित हो गया, जिसके क्रान्तिमय आन्दोलन के कारण आयरलैंड में ब्रिटिश सम्राट् का राज्य क़ायम रहना असम्भव-सा प्रतीत होने लगा।

सन् १९१४ का "स्वराज्य का प्रस्ताव"—आख़िर सन् १९१४ में "आयरलैंड को स्वराज्य" देने का प्रस्ताव पार्लिमेंट में उपस्थित किया गया। इस समय एक बड़ी कठिनाई यह प्रस्तुत हो गई कि उत्तरी आयरलैंड के प्रोटेस्टेंट-निवासियों ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। उनको यह भय था कि आयरलैंड में कैथोलिकों की संख्या अधिक है; इसलिए देश में स्वराज्य हो जाने पर उत्तरी प्रान्त के थोड़े से प्रोटेस्टेंटों की स्थिति बहुत विकट हो जायगी। इसी समय योरपीय महायुद्ध छिड़ गया। ऐसी आपत्ति के काल में स्वराज्य के प्रश्न पर वाद-विवाद करना अनुचित समझा गया। अतः पार्लिमेंट ने यह निश्चित किया कि आयरलैंड के स्वराज्य का प्रश्न युद्ध समाप्त होने के काल तक स्थगित रहना चाहिए।

गवर्नमेंट आफ़ आयरलैंड एक्ट (१९२०)—युद्ध समाप्त होने के बाद सन् १९२० में गवर्नमेंट आफ़ आयरलैंड एक्ट (Government of Ireland Act) द्वारा आयरलैंड की समस्या का निपटारा किया गया। आयरलैंड में कैथेलिकों की अधिक संख्या होने के भय से उत्तरी प्रान्त के प्रोटेस्टेंट-निवासी समस्त देश में एक ही स्वराज्य सरकार स्थापित होना कभी पसन्द न कर सकते थे। इसलिए यह निर्णय किया गया कि उत्तरी तथा दक्षिणी प्रान्तों को अलग-अलग स्वराज्य दिया जाय। उत्तरी भाग के लिए ५२ सदस्यों की पार्लिमेंट और दक्षिणी भाग के लिए १२८ सदस्यों की पार्लिमेंट स्थापित की गई। इन दोनों पार्लिमेंटों को अपने अपने प्रान्त में कर आदि लगाने का पूर्ण अधिकार मिल गया; परन्तु सार्वराष्ट्रीय प्रश्नों का निर्णय तथा सेना आदि की देखभाल का अधिकार लन्दन की "संयुक्त पार्लिमेंट" ही के हाथ में रहा। इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड के "संयुक्त राज्य" से आयरलैंड का "संयोग" नहीं तोड़ा गया; और "संयुक्त पार्लिमेंट" के लिए आयरलैंड के प्रतिनिधियों में ४६ सदस्य और बढ़ा दिये गये।

डी वेलेरा तथा वर्तमान "आयरिश फ़्री स्टेट" की स्थापना—दक्षिण-आयरलैंड के "सिनफ़ियन" दलवाले इस अधूरे स्वराज्य से सन्तुष्ट न हुए और उन्होंने अपनी पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन बराबर जारी रखा। उन्होंने "डेल आयरेन" (Dail Eireann) नामक एक अपनी स्वतन्त्र गवर्नमेंट बना ली और डी वेलेरा (De Valera) उसका प्रधान नियत हुआ। लगभग दो वर्ष तक दक्षिणी आयरलैंड में दो राज्य रहे; एक "डेल आयरेन" और दूसरा ब्रिटिश राज्य। सन् १९२२ में दोनों राज्यों में समझौता हो गया और आयरलैंड के शासन का निम्नलिखित प्रकार से निपटारा हुआ—

प्रोटेस्टेंटों के उत्तरी प्रान्त के लिए सन् १९२० का प्रबन्ध जारी रहा अर्थात् वह भाग "संयुक्त राज्य" (United Kingdom) में भी सम्मिलित रहा और उसकी पृथक पार्लिमेंट भी क़ायम रही, जिसकी

बैठक आजकल बेलफ़ास्ट (Belfast) नगर में होती है। कैथोलिकों का दक्षिणी भाग अब "संयुक्त राज्य" से बिलकुल पृथक कर दिया गया; और उसे आयरिश फ्री स्टेट (Irish Free State) का नाम देकर स्वराज्य दे दिया गया। आयरिश फ्री स्टेट का मुख्य नगर डब्लिन (Dublin) है और उसकी पार्लिमेंट को वही अधिकार दे दिये गये हैं जो ब्रिटिश साम्राज्य के कैनेडा आदि "स्वतन्त्र प्रदेशों" (Dominions) को प्राप्त हैं। आजकल लन्दन की "संयुक्त पार्लिमेंट" में इँगलैंड तथा स्कॉटलैंड के प्रतिनिधियों के साथ केवल उत्तरी आयरलैंड के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं। दक्षिणी भाग का इस "संयुक्त पार्लिमेंट" से अब कोई सम्बन्ध नहीं है; और इस भाग का शासन आजकल अपनी पृथक् स्वतन्त्र पार्लिमेंट ही के द्वारा होता है।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १८०१—आयरलैंड का "संयोग"।
" १८२९—कैथोलिकों का उद्धार।
" १८६९—आयरलैंड के "स्थापित प्रोटेस्टेंट चर्च" की सरकारी सहायता बंद होना।
" १८८२—"आयरलैंड" के मंत्री का वध।
" १८८६ और १८९४—ग्लैडस्टन के आयरलैंड को स्वराज्य देने के प्रस्तावों का अस्वीकृत होना।
" १९१४—आयरलैंड को स्वराज्य देने के प्रस्ताव का स्थगित होना।
" १९२०—"गवर्नमेंट आफ़ आयरलैंड एक्ट" (Government of Ireland Act)।
" १९२२—वर्तमान "आयरिश फ्री स्टेट" (Irish Free State) की स्थापना।

ग्यारहवाँ परिच्छेद

"शान्तिप्रिय" सम्राट् एडवर्ड सप्तम

१९०१-१९१०

एडवर्ड सप्तम

"शान्तिप्रिय" सम्राट् एडवर्ड सप्तम (फ्रांस तथा रूस से समझौता)—सन् १९०१ में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के पश्चात्

उसका बड़ा पुत्र "एडवर्ड सप्तम" (Edward VII) के नाम से राजा हुआ। इस समय एडवर्ड की अवस्था साठ वर्ष की थी और वह योरपीय महाद्वीप तथा ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों में ख़ूब यात्रा कर चुका था। उसका तथा उसकी पत्नी रानी एलेक्ज़ेंडरा (Queen Alexandra) का योरप के बहुत-से राजवंशों से सम्बन्ध था; इस कारण लन्दन में बहुत-से योरपीय राज्यों के शासक प्रायः आते रहते थे। एडवर्ड सदा उनका बड़े ठाट से स्वागत करता था। इस प्रकार उसने बहुत-से राजाओं को अपना परम मित्र बना लिया था।

इस समय फ़्रांस तथा रूस से कई राजनीतिक प्रश्नों पर ब्रिटेन का झगड़ा चल रहा था। हम बतला चुके हैं कि मिस्र देश से फ़्रांस तथा ब्रिटेन दोनों का एक साथ सम्बन्ध आरम्भ हुआ था। परन्तु धीरे-धीरे ब्रिटेन ने मिस्र पर अपना आधिपत्य जमा लिया था, इस कारण फ़्रांस-वाले ब्रिटेन से बहुत जलने लगे थे और दोनों देशों में युद्ध छिड़ने का भय हो रहा था। ऐसी स्थिति में एडवर्ड स्वयं पेरिस पहुँचा और उसने अपने प्रभाव से सन् १९०३ में दोनों देशों में समझौता (Entente Cordiale) करा दिया। इसके अनुसार फ़्रांस ने मिस्र देश पर ब्रिटेन का आधिपत्य (British Protectorate over Egypt) स्वीकृत कर लिया; और उसके बदले में ब्रिटेन ने अफ़्रिका के उत्तरी-पश्चिमी कोने के मोरक्को (Morocco) देश में फ़्रांस को स्वतन्त्रता-पूर्वक हस्तक्षेप करने की आज्ञा दे दी।

ब्रिटेन के तुर्कों को सहायता देने के कारण रूसवाले अँगरेज़ों को अपना वैरी समझने लगे थे। अभी रूस और जापान के युद्ध में अँगरेज़ों ने जापान का साथ दिया था; इस कारण रूस और ब्रिटेन का वैरभाव और भी बढ़ गया। इसके अतिरिक्त दोनों देश एशिया में अपना अधिकार बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे थे। रूसी लोग फ़ारस और अफ़ग़ानिस्तान को बराबर दबाते चले आते थे, जिससे अँगरेज़ों को भारतवर्ष की उत्तर-पश्चिमी सीमा की रक्षा के लिए बड़ा भय था। रूसियों और

अँगरेज़ों में युद्ध छिड़ जाने की सम्भावना थी। परन्तु एडवर्ड सप्तम के उद्योग से सन् १९०७ में रूस से भी समझौता (Anglo-Russian Agreement) हो गया, जिससे दोनों देशों के एशियाई प्रश्नो का भली भाँति निपटारा हो गया, फ़ारस के उत्तरी भाग पर रूस का और दक्षिणी भाग पर ब्रिटेन का प्रभाव रहा।

इस प्रकार एडवर्ड ने कई बार युद्ध छिड़ने से बचाया; और इसी लिए वह "शान्तिप्रिय एडवर्ड" (Edward the Peacemaker) कहलाने लगा।

बालफ़ोर का मंत्रित्व (१९०२-१९०५)—रानी विक्टोरिया के राजत्वकाल के पिछले भाग में लिबरल दल के टूटने पर "यूनियनिस्ट दल" (Unionists*) पार्लिमेंट में शक्तिमान् हो गया था। सन् १९०२ में इस दल के मुख्य नेता लार्ड सालिसबरी ने स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण अपने पद से त्यागपत्र दे दिया, और इसके बाद इस दल का दूसरा नेता बालफ़ोर (Balfour) प्रधान मन्त्री हुआ। बालफ़ोर के "मन्त्रि मंडल" में चेम्बरलेन (Joseph Chamberlain) "उपनिवेश मन्त्री" (Colonial Secretary) था जिसने ब्रिटेन की "स्वतन्त्र व्यापार" (Free Trade) नीति का विरोध शुरू किया। उसका मत था कि ब्रिटेन में विदेश का माल आकर इतना सस्ता बिकता है कि स्वदेशी माल उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता। स्वदेशी व्यापार की रक्षा करने के आशय से चेम्बरलेन ने "टेरिफ़ रिफ़ार्म" (Tariff Reform) का प्रस्ताव उपस्थित किया, जिसके अनुसार ब्रिटेन में बाहर से आनेवाले माल पर काफ़ी महसूल लगाया गया। परन्तु ब्रिटिश उपनिवेशों के माल पर महसूल की दर बहुत कम रखी गई (Colonial Preference)। इसका यह आशय था कि ब्रिटिश साम्राज्य के समस्त भागों में परस्पर सहानुभूति बढ़ने लगे। चेम्बरलेन के इस प्रस्ताव का

---

* देखो पृष्ठ २९६।

"यूनियनिस्ट दल" के कुछ लोगों ने समर्थन किया; परन्तु बहुत-से लोग उसके विरोधी हो गये। इस कारण "यूनियनिस्ट दल" में फूट पड़ गई; और ऐसी अवस्था में बालफ़ोर को प्रधान मन्त्री के पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

लिबरल-दल का पुनः शक्तिशाली होना (१९०६)— "यूनियनिस्ट दल" के टूटने पर लिबरल-दल (Liberals), जो पिछले बारह वर्ष के काल में शक्तिहीन रहा था, अब पुनः शक्तिशाली हो गया। सन् १९०६ में लिबरल दल का नेता कैम्बेल बैनरमेन (Campbell Bannerman) प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। उसके सहकारी एसक्विथ (Asquith) तथा लॉयड जॉर्ज (Lloyd George) जैसे प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ थे। शीघ्र ही लोक-सभा में उसके दल के समर्थकों की संख्या लगभग तीन चौथाई हो गई। सन् १९०८ में स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण बैनरमेन को त्यागपत्र देना पड़ा और उसके स्थान पर एसक्विथ प्रधान मन्त्री हो गया। एडवर्ड सप्तम के राजत्वकाल के शेष भाग में तथा जार्ज पञ्चम के राज्य के आरम्भिक काल में (सन् १९१६ तक) एसक्विथ (Asquith) ही प्रधान मन्त्री रहा और उसने लॉयड जॉर्ज (Lloyd George) को अपने "मन्त्रि-मंडल" का "कोषाध्यक्ष" (Chancellor of the Exchequer) नियुक्त किया।

लार्ड-सभा तथा लोक-सभा का संघर्ष—कोषाध्यक्ष की हैसियत से सन् १९०९ में लॉयड जॉर्ज ने पार्लिमेंट की लोक-सभा में एक नये ढंग का बजट* (Budget) पेश किया, जिसमें बहुत धनी नागरिकों पर "विशेष कर" (Super-Tax) लगाया गया। लार्ड-सभा ने इस बजट का प्रस्ताव अस्वीकृत किया; अतः इस सम्बन्ध में पार्लिमेंट की दोनों सभाओं में खूब झगड़ा चला। मन्त्रियों का कहना

* देश के साल भर के आय-व्यय का चिट्ठा।

था कि धन-सम्बन्धी प्रस्तावों पर लोक-सभा ही को पूर्ण अधिकार है; इसलिए लार्ड-सभा को बजट के विषय में हस्तक्षेप न करना चाहिए। इस झगड़े का निपटारा करने के हेतु पार्लिमेंट विसर्जित कर दी गई और अगले वर्ष नया चुनाव हुआ। नये चुनाव में लोक-सभा में लिबरलों की संख्या फिर अधिक रही और उन्होंने यह आन्दोलन प्रारम्भ किया कि लोक-सभा के स्वीकृत किये हुए प्रस्ताव लार्ड-सभा के विरोध करने पर भी "राजनियम" बन जाने चाहिएँ। अन्त में लार्ड-सभा ही को दबना पड़ा; और एडवर्ड सप्तम की मृत्यु के कुछ ही महीने बाद सन् १९११ में प्रसिद्ध "पार्लिमेंट एक्ट" (देखो पृष्ठ २६५ और २७०) स्वीकृत हुआ जिसने पार्लिमेंट की दोनों सभाओं के पारस्परिक सम्बन्ध का निपटारा कर दिया। धन-सम्बन्धी प्रस्तावों पर लोक-सभा को पूर्ण अधिकार मिल गया; और अन्य प्रस्तावों के विषय में यह निश्चित हुआ कि जिन प्रस्तावों को लोक सभा तीन बार स्वीकृत कर दे, वे लार्ड-सभा की अनुमति न होने पर भी राजा के हस्ताक्षर होने के बाद राज-नियम बन सकते हैं।

मुख्य मुख्य तिथियाँ

सन् १९०१—एडवर्ड सप्तम का राज्याभिषेक।
" १९०२–१९०६—बालफ़ोर का मन्त्रित्व।
" १९०३—फ्रांस और ब्रिटेन का समझौता (The Entente Cordiale)।
" १९०६–१९०८—कैम्पबेल बैनरमेन का मन्त्रित्व।
" १९०७—ब्रिटेन और रूस का समझौता (The Anglo-Russian Agreement)।
" १९०८–१९१६—एस्क्विथ का मन्त्रित्व।
" १९०९—लार्ड-सभा तथा लोक-सभा का संघर्ष।
" १९१०—एडवर्ड सप्तम की मृत्यु।

बारहवाँ परिच्छेद

सम्राट् जॉर्ज पञ्चम तथा योरपीय महायुद्ध

जॉर्ज पञ्चम तथा विंडसर-वंश—सन् १९१० में एडवर्ड सप्तम की मृत्यु के पश्चात् उसका दूसरा पुत्र "जॉर्ज पञ्चम" (George V) के नाम से राजा हुआ। एडवर्ड के बड़े पुत्र एलबर्ट का बहुत दिन पहले ही देहान्त हो चुका था। जॉर्ज पञ्चम की अवस्था उस समय ४५ वर्ष की थी और उसका विवाह राजकुमारी मेरी से हो चुका था। सन् १९१७ में जॉर्ज ने अपनी समस्त विदेशी उपाधियाँ त्याग दीं और यह घोषणा की कि अब से हमारा राजवंश "विंडसरवंश" (House of Windsor) के नाम से पुकारा जायगा।

जॉर्ज पञ्चम

(१) योरपीय महायुद्ध (१९१४-१९)

(The Great European War)

"त्रिविध संघ" तथा जर्मनी के विकट मन्सूबे—जॉर्ज पञ्चम

के राजत्वकाल में योरपीय महायुद्ध हुआ। इस युद्ध का ठीक-ठीक स्वरूप समझने के लिए योरपीय राष्ट्रों की दलबन्दी का परिचय दे देना अत्यन्त आवश्यक है। "फ्रांस तथा प्रशा के युद्ध" (Franco-Prussian War) में प्रशा की विजय हुई थी; और उसी समय से जर्मनी की इस रियासत का सितारा चमकने लगा था। सन् १८७१ में प्रशा के राजा ने दक्षिण जर्मनी की समस्त रियासतों पर अपना आधिपत्य जमाकर "जर्मन-साम्राज्य" (The German Empire) की स्थापना की थी; और स्वयं "जर्मन सम्राट् क़ैसर" की उपाधि धारण की थी। उस समय क़ैसर का प्रधान मन्त्री प्रिन्स बिस्मार्क (Prince Bismarck) था, जिसने जर्मनी की शक्ति बढ़ाने में कोई कसर न रखी। सार्व-राष्ट्रीय क्षेत्र में जर्मनी का प्रभाव बढ़ाने के आशय से बिस्मार्क ने सन् १८८२ में जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली का "त्रिविध संघ" (Triple Alliance) स्थापित किया। बिस्मार्क को आशा थी कि यह संघ योरप के अन्य राष्ट्रों का भली भाँति मुक़ाबला कर सकेगा। इसी समय से जर्मनी के बड़े विकट मन्सूबे बँधने लगे। उसने अपनी सेना बढ़ाई और बहुत बड़ा जहाज़ी बेड़ा तैयार किया। व्यवसाय, व्यापार, साहित्य, विज्ञान सभी बातों में जर्मनों ने खूब उन्नति की; और बहुत-से जर्मन प्रोफ़ेसरों का यह मत होने लगा

रानी मेरी

कि एक दिन समस्त भूमंडल को जर्मनी की शक्ति के सामने सिर झुकाना पड़ेगा।

"त्रिविध मित्रसंघ" की स्थापना—"त्रिविध संघ" का समाचार पाकर योरप के अन्य राष्ट्रों को अपनी रक्षा की चिन्ता हुई। विशेषतः फ्रांस को जर्मनी से सदा भय लगा रहता था; इस कारण उसके लिए कुछ राष्ट्रों को अपनी ओर मिलाना अत्यन्त आवश्यक हो गया। सन् १८९३ में फ्रांस ने रूस से मित्रता की; और इस प्रकार "त्रिविध संघ" का मुक़ाबला करने के लिए रूस तथा फ्रांस का "द्विविध संघ" (Dual Alliance) स्थापित हुआ।

योरपीय राष्ट्रों को इस प्रकार दलबन्दी करते देखकर ब्रिटेन ने सोचा कि ऐसी अवस्था में योरपीय सार्वराष्ट्रीय क्षेत्र से पृथक् रहने में बड़ी हानि है। यही सोचकर सम्राट् एडवर्ड सप्तम ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव का उपयोग करके ब्रिटेन का रूस तथा फ्रांस से समझौता कराया था, जिसके विषय में हम पिछले परिच्छेद में लिख आये हैं*। इस समझौते के बाद ब्रिटेन, रूस तथा फ्रांस अपने पुराने वैर-भाव का ध्यान छोड़कर परस्पर मित्र हो गये; और इन तीनों राष्ट्रों का संघ "त्रिविध मित्रसंघ" (Triple Entente) के नाम से पुकारा जाने लगा।

योरप में युद्ध की तैयारी—इस प्रकार योरपीय महायुद्ध के छिड़ने के कितने ही वर्ष पहले योरपीय राष्ट्र एक दूसरे के विरुद्ध दलबन्दी कर चुके थे। योरपीय इतिहास में १८७१ (जब कि जर्मन साम्राज्य की स्थापना हुई) से सन् १९१४ (जब कि योरपीय महायुद्ध आरम्भ हुआ) तक का काल "सशस्त्र शान्ति" (Armed Peace) का काल कहलाता है। इस काल में योरप में कोई बड़ा युद्ध नहीं हुआ; परन्तु सभी प्रधान राष्ट्र यह समझते थे कि शीघ्र ही एक बहुत बड़ा

---

* देखो पृष्ठ ३१५।

युद्ध छिड़नेवाला है, जिसकी प्रतीक्षा में सब राष्ट्र धीरे-धीरे सामान इकट्ठा करते रहे। विशेषतः जर्मनी ने युद्ध की पूरी तैयारी कर ली थी; उसने अपनी सेना और जहाज़ी बेड़ा खूब बढ़ा लिया था; और पूर्वीय देशों को जीतने के आशय से तुर्कों से मिलकर बग़दाद रेलवे-द्वारा भारतवर्ष का सीधा स्थलमार्ग निकालने का प्रयत्न किया था। योरपीय राष्ट्रों का मनमुटाव बराबर बढ़ता गया; और अन्त में सार्वराष्ट्रीय स्थिति इतनी विकट हो गई कि युद्ध छेड़ने के लिए केवल एक बहाने की आवश्यकता बाक़ी रह गई।

क़ैसर विलियम

युद्ध का प्रारम्भ (१९१४)–२८ जून १९१४ को युद्ध छेड़ने के लिए एक बहाना भी प्रस्तुत हो गया। आस्ट्रिया के युवराज फ़र्डिनेंड (Archduke Ferdinand) को बॉस्निया की राजधानी सेराजेवो (Serajevo) नगर में किसी ने मार डाला। बॉस्निया प्रान्त पर आस्ट्रिया का अधिकार हुए अभी थोड़े ही दिन हुए थे; और वहाँ के अधिकांश निवासी स्लव (Slav) जाति के लोग थे। बॉस्नियावाले आस्ट्रिया के आधिपत्य से निकलकर स्वतन्त्र होने का प्रयत्न कर रहे थे। सजातीय होने के कारण सर्विया (Servia) का स्लव राष्ट्र भी उनको कभी-कभी सहायता देता रहता था। युवराज के वध का

समाचार पाते ही आस्ट्रिया की सरकार ने समझा कि सर्विया ने ही बॉस्नियावालों को भड़काकर यह षड्यन्त्र रचा है। आस्ट्रिया ने तुरन्त सर्विया को ४८ घंटे की चेतावनी (Ultimatum) भेज दी जिसमें ऐसी कड़ी-कड़ी और अपमानजनक शर्तें थीं, जिन्हें कोई स्वतन्त्र राष्ट्र स्वीकृत न कर सकता था। इस प्रकार सर्विया और आस्ट्रिया का युद्ध आरम्भ हुआ। रूसवाले भी स्लव जाति के ही हैं; इसलिए सजातीयता के नाते रूस ने भी सर्विया का साथ दिया। यह देखकर जर्मनी ने आस्ट्रिया का पक्ष लेकर युद्धक्षेत्र में प्रवेश किया और रूस के मित्र फ़्रांस के विरुद्ध भी युद्ध की घोषणा कर दी।

अभी तक ब्रिटेन युद्ध में सम्मिलित न हुआ था। परन्तु शीघ्र ही कई कारणों से उसका भी युद्ध-क्षेत्र से अलग रहना असम्भव हो गया। जर्मनी ने फ़्रांस पर आक्रमण करने के लिए बेलजियम के मार्ग से अपनी सेनायें भेजने का विचार किया। समस्त योरपीय राष्ट्र कई सन्धियों में यह स्वीकृत कर चुके थे कि बेलजियम की स्वतन्त्रता पर कोई आघात न किया जायगा। परन्तु जर्मन क़ैसर विलियम द्वितीय के प्रधान मन्त्री ने स्पष्ट कह दिया कि ऐसी सन्धियों का हमारी दृष्टि में काग़ज़ के टुकड़े से अधिक मूल्य नहीं है। हम पहले कह आये हैं कि बेलजियम की रक्षा के हेतु इँगलैंड को कई बार युद्ध करना पड़ा था; क्योंकि यह राष्ट्र इँगलैंड के तट से इतना निकट है कि इस पर किसी प्रबल जाति का अधिकार होने से इँगलैंड के लिए एक स्थायी भय का कारण प्रस्तुत हो सकता है। इस बार भी बेलजियम में जर्मनों की सेना के पहुँचते ही ४ अगस्त १९१४ को ब्रिटेन ने भी रणक्षेत्र में प्रवेश किया।

इस प्रकार "सशस्त्र शान्तिकाल" की दलबन्दी के अनुसार "त्रिविध संघ" (Triple Alliance) के आस्ट्रिया और जर्मनी के विरुद्ध "त्रिविध मित्र-संघ" (Triple Entente) के रूस, फ़्रांस तथा ब्रिटेन का युद्ध आरम्भ हुआ। इटली ने त्रिविध संघ का साथ नहीं दिया; क्योंकि उससे केवल यह ठहरा था कि यदि कभी पहले आस्ट्रिया

या जर्मनी पर आक्रमण होगा, तो वह सहायता करेगा। कुछ काल पीछे इटली ने दूसरे पक्ष अर्थात् "त्रिविध मित्र-संघ" का साथ देना शुरू किया। अब से ब्रिटेन तथा उसके सहायक राष्ट्रों को हम "मित्र-राष्ट्र" (The Allies) के नाम से पुकारेंगे।

जर्मनों का फ्रांस पर आक्रमण—जर्मनों ने शीघ्र ही बेलजियम पर अपना अधिकार जमा लिया और इसके बाद फ्रांस पर उत्तर की ओर से आक्रमण किया। उनको आशा थी कि हम फ्रांस की शक्ति बड़ी सुगमता से नष्ट कर सकेंगे और फिर अपने अन्य वैरियों से भुगत लेंगे। प्रारम्भ में जर्मनों के विकट मन्सूबों के पूरे होने के ढंग दिखाई देने लगे। उनकी सेनायें फ्रास में बराबर बढ़ती चली गई और फ्रांस की राजधानी पैरिस कुल ४० मील रह गई। ऐसे संकट के समय फ्रांस के सेनापति फ़ॉश (Marshal Foch) ने बड़े धैर्य से काम लिया और मार्न (Marne) नदी के किनारे कई दिनों तक घोर युद्ध किया। अन्त में जर्मन-सेना को पीछे हटना पड़ा और फ्रांस तथा अन्य "मित्रराष्ट्रों" को अपनी स्थिति सँभालने का अवसर मिल गया।

खाइयों का युद्ध—अब दोनों ओर से खाइयों का युद्ध (Trench Warfare) शुरू हुआ। "उत्तरी सागर" (North Sea) से स्विट्ज़रलैंड की सीमा तक सहस्रों खाइयाँ खोदी गई। दोनों ओर की सेनायें उन्हीं खाइयों में छिपी रहती थीं और अवसर मिलने पर एक दूसरी पर छापा मारती थीं। इस प्रकार का युद्ध लगभग तीन वर्ष तक चलता रहा। कभी एक पक्ष और कभी दूसरे पक्ष का दाँव लग जाता था; और यह नहीं कहा जा सकता था कि अन्त में किस ओर की विजय होगी।

युद्ध का पूर्वीय क्षेत्र (१९१५–१६)—मिस्र तथा भारतवर्ष की ओर बढ़ने के लिए मार्ग प्राप्त करने के उद्देश्य से जर्मनी ने टर्की को अपनी ओर मिला लिया। तुर्कों का डार्डेनील्स (Dardanelles)

के जलडमरूमध्य पर अधिकार है; इस कारण रूस की जल-सेना के लिए अन्य "मित्रराष्ट्रों" से मिलने के मार्ग बन्द हो गये। ऐसी अवस्था में फ्रांस और ब्रिटेन के जहाज़ी बेड़ों ने डार्डेनील्स पर आक्रमण किया, परन्तु उनको सफलता न हुई। इसके बाद मित्रराष्ट्रों के बेड़े ने गेलीपोली (Gallipoli) के प्रायद्वीप में शरण लेना चाहा; परन्तु यह प्रयत्न भी विफल रहा और बहुत-से सैनिक तथा मल्लाह काम आये।

मित्रराष्ट्रों को हारते देखकर यूनान के राजा कान्सटेन्टाइन (Constantine) ने, जो जर्मन क़ैसर का बहनोई था, जर्मनी का साथ देना चाहा। परन्तु यूनान-निवासी अभी यह बात न भूले थे कि ब्रिटेन ही की सहायता के भरोसे हमें टर्की के आधिपत्य से स्वतन्त्रता मिली है। इस कारण देशवासियों ने एक बड़ी प्रबल राज्यक्रान्ति आरम्भ कर दी। परिणाम यह हुआ कि राजा कान्सटेन्टाइन को सिंहासन छोड़कर भागना पड़ा और समस्त अधिकार प्रधान मन्त्री वेनेज़ेलस (Venezuelus) के हाथ में आ गया। इससे कुछ ही दिन पहले मित्रराष्ट्रों के जहाज़ी बेड़े ने यूनानियों के बन्दरगाह सेलोनिका (Salonica) पर अपना अधिकार जमा लिया था। बालकन प्रायद्वीप के राज्यों में से बलगेरिया पहले ही जर्मनी का पक्ष लेकर युद्ध में सम्मिलित हो चुका था। अब यूनान और रोमानिया ने मित्रराष्ट्रों का पक्ष लेकर युद्ध-क्षेत्र में प्रवेश किया। इटली ने भी इसी समय जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की थी। इस प्रकार अब मित्रराष्ट्र-संघ के सदस्यों की संख्या यथेष्ट हो गई।

जल-युद्ध—जर्मनों ने मित्रराष्ट्रों का समुद्री व्यापार नष्ट करने का प्रयत्न किया; परन्तु सदा की भाँति ब्रिटेन की प्रबल जलशक्ति ने वैरियों के मन्सूबे पूरे न होने दिये। योरपीय महायुद्ध में सबसे प्रसिद्ध जल-युद्ध 'जटलैंड की लड़ाई" (Battle of Jutland, 1916) मानी जाती है। इस युद्ध में दोनों ओर की हानि बराबर रही; परन्तु अँगरेज़ों को बहुत बड़ा लाभ यह हुआ कि इसके बाद फिर कभी जर्मनों के जहाज़ी बेड़े ने "उत्तरी सागर" में आने का साहस न किया। जर्मनों को अब

अपने समुद्र-तट की रक्षा की चिन्ता रहने लगी; इस कारण वे अपने जहाज़ी बेड़े अपने उपनिवेशों की रक्षा के लिए न भेज सके। धीरे-धीरे अफ़्रिका तथा एशिया के समस्त जर्मन उपनिवेश अँगरेज़ों के हाथ में आ गये और योरप के बाहर इंच भर भूमि भी जर्मनों के अधिकार में न रह गई।

रूस की राज्यक्रान्ति (१९१७)—दूसरी ओर जर्मनों ने रूस पर चढ़ाई कर रखी थी। रूस में बहुत दिनों से राज्यक्रान्ति के अंकुर प्रस्तुत थे। जनता ज़ार के निरंकुश शासन से असंतुष्ट थी और साम्यवादियों (Socialists) के प्रचार ने देश के किसानों तथा मज़दूरों में बड़ी उत्तेजना फैला दी थी। जर्मनों के आक्रमण के समय क्रांतिकारियों को अच्छा अवसर मिल गया और मार्च १९१७ में उन्होंने ज़ार निकोलस द्वितीय (Czar Nicholas II) को राजसिंहासन छोड़ने पर बाध्य किया। ज़ार के वंशज चुन-चुनकर मार डाले गये और पूर्ण अधिकार साम्यवादी क्रांतिकारियों के हाथ में आ गया। रूस में प्रजातन्त्र राज्य (The Soviet Republic) स्थापित कर दिया गया, और शीघ्र ही जर्मनी से ब्रेस्ट लिटोव्स्क (Brest Litovsk) की सन्धि करके रूसी रणक्षेत्र से अलग हो बैठे।

जर्मनों के अत्याचार तथा अमेरिका का रणक्षेत्र में प्रवेश (१९१७)—रूसियों की ओर से निश्चिन्त होकर जर्मनों ने अब अन्य मित्रराष्ट्रों के विरुद्ध अपनी पूर्ण शक्ति का प्रयोग करना आरम्भ किया। अँगरेज़ों के जितने जहाज़ ब्रिटिश उपनिवेशों से सामान तथा सैनिक लेकर आते थे, उन सबको जर्मनों की पनडुब्बी नावें (Submarines) रास्ते ही में नष्ट कर देने का प्रयत्न करती थीं। जर्मनों ने सैकड़ों अँगरेज़ी जहाज़ों को समुद्र में डुबा दिया; यहाँ तक कि घायल सैनिकों तथा साधारण यात्रियों तक के जहाज़ों को भी न छोड़ा। वैरियों के देश के जितने यात्री जर्मनी में पाये गये, वे सब क़ैद कर लिये गये और कारागार में उनके साथ बहुत अनुचित व्यवहार किया गया। बड़े-बड़े हवाई

जहाज़ों द्वारा जर्मनों ने वैरियों के नगरों पर बम के गोले बरसाना शुरू किया। अपनी मतता के कारण उन्हें यह भी ध्यान न रहा कि ऐसा करने से बहुत-से पवित्र गिरजाघरों का ध्वंस हो रहा है।

जर्मनों के इन अत्याचारों के कारण संसार भर में सनसनी फैल गई। युद्धकाल में भी सभ्य जातियाँ कुछ नियमों का पालन करती हैं, जो सार्वराष्ट्रीय विधान (International Law) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इनके अनुसार साधारण यात्रियों को पकड़ना, युद्ध के क़ैदियों को सताना, व्यापारिक जहाज़ों को डुबाना, गिरजों को तोड़ना इत्यादि वर्जित है। परन्तु जर्मनों ने स्पष्ट रूप से कह दिया कि युद्धकाल में हमें उचित तथा अनुचित का लेशमात्र भी ध्यान नहीं है। "संयुक्त अमेरिकन राज्य" के अधिष्ठाता महाशय विल्सन (President Wilson) ने जर्मनों को अपने अत्याचारी ढङ्गों को छोड़ने के लिए बहुत कुछ समझाया; परन्तु उन्होने एक न सुनी। यह देखकर अमेरिका ने भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी; और इस प्रकार मित्रराष्ट्रों को रूस के स्थान पर अब एक दूसरा शक्तिशाली सहायक मिल गया।

ब्रिटेन में एस्क्विथ का "राष्ट्रीय मन्त्रि-मंडल"—ब्रिटेन के मन्त्रि-मंडल ने युद्धकाल में बड़े धैर्य से काम लिया। प्रधान मन्त्री एस्क्विथ (Asquith) ने लॉर्ड किचनर (Lord Kitchener) को, जो अपनी युद्ध-कुशलता का कई बार परिचय दे चुका था, "युद्ध-सचिव" (War Minister) बनाया। राजनीतिक दलबन्दी का ध्यान छोड़कर सन् १९१५ में कन्ज़रवेटिव-दल के नेता बालफ़ोर (Balfour) और बोनर लॉ (Bonar Law) भी लिबरल-नेता एस्क्विथ के मन्त्रि-मण्डल में सम्मिलित हो गये और इस "राष्ट्रीय मन्त्रि-मण्डल" (National Ministry) ने युद्ध का संचालन किया। १८ वर्ष से ४१ वर्ष तक के सब पुरुषों को सेना में भर्ती होने के लिए बाध्य किया गया; और स्त्रियों ने सहर्ष बड़े-बड़े दफ़्तरों में पुरुषों के स्थान पर काम

करना शुरू कर दिया। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश उपनिवेशों तथा भारतवर्ष से लाखों सैनिक रणक्षेत्र के लिए भेजे गये। इस प्रकार समस्त ब्रिटिश साम्राज्य की पूर्ण शक्ति युद्ध में लग गई।

लॉयड जॉर्ज का मन्त्रित्व तथा ब्रिटेन का पूर्ण प्रयत्न—थोड़े ही दिनों में वैरियों ने लॉर्ड किचनर का जहाज़ समुद्र में डुबा दिया। इस दुर्घटना के बाद "युद्ध-सचिव" के पद पर लॉयड जॉर्ज (Lloyd George) नियुक्त हुआ, जिसकी योग्यता के कारण यह शीघ्र ही विदित हो गया कि युद्ध-काल में ब्रिटिश जाति का उससे अच्छा कोई दूसरा नेता नहीं हो सकता। सन् १९१६ में एस्क्विथ के अपने पद से त्यागपत्र दे देने पर लॉयड जॉर्ज प्रधान मन्त्री हो गया। उसके मंत्रि मंडल में भी लिबरल तथा कन्ज़रवेटिव दोनों दलों ने, अपना विरोध भुलाकर, सहर्ष मिलकर कार्य करना स्वीकृत कर लिया। युद्ध के वास्ते सामग्री एकत्र करने के लिए नये-नये विभाग स्थापित किये गये; और बहुत बड़ी संख्या

लॉर्ड एस्क्विथ

में सैनिक भर्ती होने लगे। बड़े-बड़े हवाई जहाज़ तथा पनडुब्बी नावें

अँगरेज़ों ने भी बना डालीं। इस प्रकार ब्रिटेन ने वैरियों का मुक़ाबिला करने के लिए जी तोड़कर प्रयत्न आरम्भ कर दिया।

प्रधान सेनापति मार्शल फ़ॉस—लॉयड जॉर्ज ने मित्रराष्ट्रों को यह सुझाया कि प्रत्येक राष्ट्र के अलग-अलग सेनापति होने के कारण सब राष्ट्रों की सेनाओं का संयुक्त रूप से कार्य करना असम्भव है। उसने यह सम्मति दी कि समस्त मित्रराष्ट्रों की सेनाओं का एक प्रधान सेनापति होना चाहिए, जो भिन्न-भिन्न रणक्षेत्रों में युद्ध के संचालन का प्रबन्ध करे और जिसकी आज्ञा समस्त मित्रराष्ट्रों की सेनायें माना करें। इस सम्मति को सबने पसन्द किया और फ़्रांस का सेनापति मार्शल फ़ॉस (Marshal Foch) मित्रराष्ट्रों की सेनाओं का प्रधान सेनापति (Generalissimo) बनाया गया। अँगरेज़ी सेना के सेनापति जनरल हेग (General Haig) तथा अन्य राष्ट्रों के सेनापतियों ने सहर्ष नये प्रधान सेनापति के आज्ञानुसार कार्य करना स्वीकृत कर लिया। इस प्रकार समस्त रणक्षेत्रों में एक ही नीति के अनुसार युद्ध का संचालन होने लगा और मित्रराष्ट्रों की संयुक्त सेनाओं की शीघ्र ही विजय होने लगी।

मेसोपोटामिया में मित्रराष्ट्रों की विजय—तुर्कों के विरुद्ध युद्ध का क्षेत्र अधिकतर मेसोपोटामिया (Mesopotamia) में था। सन् १९१६ में तुर्कों ने अँगरेज़ी सेना को क़ुत-उल्-अमरा (Kut-el-Amara) के स्थान पर बुरी तरह परास्त किया था और बहुत-से अँगरेज़ी अफ़सर तथा सैनिक क़ैद हो गये थे। इस पराजय का बदला अगले वर्ष जनरल मॉड (General Maude) ने लिया; और अँगरेज़ी सेना ने मेसोपोटामिया के मुख्य नगर बग़दाद (Baghdad) पर अपना अधिकार जमा लिया। सन् १९१८ में अँगरेज़ी सेना को और भी आगे बढ़ने का अवसर मिल गया और समस्त मेसोपोटामिया तुर्कों के हाथ से निकल गया। इसी समय जनरल एलेन्बी (General Allenby) ने मिस्र की ओर से पैलेस्टाइन (Palestine) में प्रवेश किया और

जेरूसलम, डमास्कस (दमिश्क) आदि पर अपना अधिकार जमा लिया। शीघ्र ही सीरिया (Syria) भी अँगरेज़ों के हाथ आ गया और एशिया माइनर में तुर्कों की शक्ति का अन्त हो गया।

युद्ध का अन्त (१९१८)—इस पराजय के बाद तुर्कों को युद्ध बन्द करना पड़ा। इससे एक मास पहले बलगेरिया की शक्ति का अन्त हो चुका था और वह मित्रराष्ट्रों का आश्रय ले चुका था। इसी समय इटली के आस्ट्रिया पर चढ़ाई कर देने के कारण आस्ट्रिया को भी भयभीत होकर रणक्षेत्र से हटना पड़ा।

अब जर्मनी अकेला रह गया। इससे कुछ महीने पहले जर्मन-सेना अपनी रक्षा के लिए अपने प्रसिद्ध सेनापति हिंडनबर्ग की बनाई हुई खाइयों की श्रेणी (Hindenburg Line) से पीछे हट चुकी थी। अब अँगरेज़ी सेना ने धावा करके वह श्रेणी तोड़ दी। ऐसी अवस्था में जर्मनों को भी निराश होकर युद्ध बन्द करना पड़ा। सन् १९१८ के ग्यारहवें महीने में ग्यारहवें दिन के ग्यारहवें घंटे पर समस्त रणक्षेत्रों में युद्ध बन्द होने की* घोषणा (Armistice) कर दी गई और इस प्रकार योरपीय महायुद्ध का अन्त हुआ।

जर्मन कैसर का पद-त्याग—जर्मनों को आशा थी कि हम शीघ्र ही भूमंडल के अधिकांश भाग को अपने अधीन कर लेंगे। अब अपनी आशाओं पर इस बुरी तरह से पानी फिरते हुए देखकर जर्मनी के समस्त निवासी अपने सम्राट् क़ैसर विलियम द्वितीय के विरुद्ध हो गये। बेचारे क़ैसर को, जिसे कुछ ही काल पहले जर्मन जाति अवतार की तरह पूजती थी और जो विश्वविजयी होकर एक बहुत बड़े साम्राज्य के स्वामी होने

* इस घटना की स्मृति में प्रतिवर्ष ११ नवम्बर को ११ बजे के समय समस्त ब्रिटिश साम्राज्य में दो मिनट के लिए सब कार्य स्थगित करके लोग ईश्वर को धन्यवाद देते हैं, जिसकी कृपा से योरप का यह भीषण कांड समाप्त हुआ।

के सुख-स्वप्न देख रहा था, अपने देश से भागना पड़ा। उसने अपने परिवार-सहित हॉलैंड में शरण ली। आजकल वह हॉलैंड ही में अपना जीवन व्यतीत कर रहा है और जर्मनी की रियासतों में प्रजातन्त्र राज्य (The German Republic) स्थापित हो गया है।

वार्शेल्स की सन्धि (१९१९)— युद्ध के पश्चात् सन्धि की शर्तें निश्चित करने के लिए मित्रराष्ट्रों के प्रतिनिधियों की पेरिस नगर में कान्फ़रेन्स हुई। उसमें ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री लॉयड जॉर्ज (Lloyd George), अमेरिका के संयुक्त-राज्य के अधिष्ठाता विल्सन (President Wilson) और फ्रांस के प्रधान मन्त्री क्लेमेन्शो (Clemenceau) मुख्य थे। पूरे छः महीने के वाद-विवाद के उपरान्त वार्शेल्स की सन्धि (Peace of Versailles) हुई जिसके अनुसार निम्नलिखित निपटारा किया गया—

(१) जर्मनी को एल्सेस लोरेन (Alsace Lorraine), जिस पर उसने सन् १८७० में अधिकार जमा लिया था, फ्रांस को लौटा देना पड़ा। जर्मन राष्ट्र क उन प्रान्तों के विषय में, जिनमें अ-जर्मन जातियाँ बसी हुई थीं, यह निश्चित हुआ कि उन्हें जन-सम्मति लेकर स्वतन्त्र कर दिया जाय। जर्मनी की सेना तथा जहाज़ी बेड़ा बहुत कम कर दिया गया और मित्रराष्ट्रों को हानि पहुँचाने के बदले जर्मनी को बहुत-सा धन हरजाने के रूप में देना पड़ा। (२) आस्ट्रिया-हंगरी का साम्राज्य तोड़कर कई भागों में विभक्त कर दिया गया। बोहीमिया और उसके आस-पास के प्रान्तों को मिलाकर ज़ेकोस्लोवेकिया (Czeco-Slovakia) नामक एक नया राष्ट्र स्थापित किया गया। इसी तरह आस्ट्रिया के स्लव प्रान्तों को सर्विया के साथ मिलाकर युगो-स्लाविया (Yugo-Slavia) नामक नया राष्ट्र बनाया गया। आस्ट्रिया (Austria) और हंगरी (Hungary) अब छोटे-छोटे दो प्रजातन्त्र राज्य हो गये; और इस प्रकार मध्य योरप का राजनीतिक चित्र बिलकुल ही नये ढंग का हो गया। (३) टर्की

की शक्ति बहुत कम हो गई और तुर्कों के पास योरप में कान्सटेन्टीनोप्ल नगर के अतिरिक्त कुछ भी न रहा। टर्की का बहुत-सा भाग यूनानियों को दे दिया गया था; परन्तु कुछ समय पीछे तुर्कों ने मुस्तफ़ा कमाल पाशा (Mustafa Kamal Pasha) के नेतृत्व में यूनानियों से लड़कर अपने देश का बहुत सा भाग फिर प्राप्त कर लिया। (४) रूस में साम्यवादियों ने प्रजातन्त्र राज्य स्थापित कर लिया था। रूस का पश्चिमी भाग अब कई छोटे-छोटे स्वतन्त्र राष्ट्रों में विभक्त कर दिया गया। रूस, जर्मनी तथा आस्ट्रिया से थोड़ा-थोड़ा भाग लेकर पोलैंड (Poland) का एक पृथक् स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित किया गया और व्यापार करने के लिए उसे डेनज़िग (Danzig) का बन्दरगाह जर्मनी से लेकर दे दिया गया। (५) योरप के बाहर जो भाग अब तक टर्की और जर्मनी के अधीन थे, उनका शासन फ्रांस और ब्रिटेन के सुपुर्द कर दिया गया। इसके अनुसार ब्रिटेन को पैलेस्टाइन (Palestine), मेसोपोटामिया (Mesopotamia) और जर्मन पूर्वीय अफ्रिका (German East Africa) का और फ्रांस को सीरिया (Syria) तथा अफ्रिका के कुछ जर्मन उपनिवेशों का शासन सौंपा गया। इस प्रकार सौंपे हुए प्रान्तों को अँगरेज़ी में Mandates कहते हैं।

सन्धि की समालोचना—योरपीय महायुद्ध के काल में बहुत-सी राज्यक्रान्तियाँ हुईं, जिनके परिणाम-स्वरूप कई राष्ट्रों में निरंकुश शासन के स्थान पर प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो गया। रूस के ज़ार, जर्मनी के क़ैसर, आस्ट्रिया के सम्राट्, टर्की के सुलतान जैसे शक्तिशाली शासक राज-सिंहासन से हटा दिये गये, और योरप में निरंकुश शासन का अन्त हो गया। वार्सेल्स के निपटारे में "आत्म-निर्णय" (Self-determination) के सिद्धान्त का विशेष ध्यान रखा गया था; और योरप का नया राजनीतिक चित्र बनाने में यह प्रयत्न किया गया था कि जिन जातियों की भाषा तथा सभ्यता भिन्न है, उनके अलग-अलग स्वतन्त्र राष्ट्र स्थापित कर दिये जायँ। इसी सिद्धान्त के अनुसार

भूमण्डल में ब्रिटिश साम्राज्य

आस्ट्रिया-हंगरी के साम्राज्य को, जिसमें अब तक कई भिन्न-भिन्न जातियाँ सम्मिलित थीं, तोड़कर कई राष्ट्रों में विभक्त किया गया; सर्विया और उसकी पड़ोसी स्लव जातियों को मिलाकर युगोस्लाविया नामक राष्ट्र और बोहेमिया के आस-पास की जातियों को मिलाकर जेको-स्लोवेकिया नामक राष्ट्र बनाये गये; और पोल जाति के लिए पोलैंड नामक स्वाधीन राष्ट्र स्थापित कर दिया गया। परन्तु मेसोपोटामिया और सीरिया आदि का शासन ब्रिटेन और फ्रांस को सौंप देना इस 'आत्म-निर्णय" के सिद्धान्त के विरुद्ध रहा। कहने को तो ये देश भी स्वतंत्र कर दिये गये हैं, परन्तु पाश्चात्य राजनीतिज्ञों का यह कहना है कि जो सिद्धान्त योरप के लिए हैं, वे पूर्वीय देशों के लिए प्रयुक्त नहीं होते; और इसी लिए एशिया माइनर के इन राष्ट्रों को पूर्ण स्वतन्त्रता न देकर इनके शासन की देख-भाल का भार दो योरपीय जातियों के सुपुर्द किया गया है।

"वर्तमान राष्ट्र-संघ" की स्थापना—अनुमान किया जाता है कि यूरोपीय महायुद्ध में दो करोड़ से अधिक जानें नष्ट हुई और युद्धाग्नि में लगभग दस खरब रुपयों की आहुति दी गई। विजित और विजयी दोनों पक्षों के राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति को बड़ा धक्का पहुँचा; और अभी तक योरप इस भीषण युद्ध के धक्के से सँभल नहीं सका है। युद्ध के भयंकर परिणाम का विचार करके वार्सेल्स की सन्धि में सार्वराष्ट्रीय प्रश्नों का भविष्य में बिना युद्ध किये निपटारा करने का एक उपाय निकाला गया। मुख्य-मुख्य राष्ट्रों का एक "राष्ट्र-संघ" (League of Nations) स्थापित किया गया, जिसका यह उद्देश्य है कि भिन्न-भिन्न राष्ट्रों के पारस्परिक झगड़ों का आपस में मिलकर निपटारा कर लिया जाय; और जो राष्ट्र इस तरह निपटारा करने को तैयार न हो, उसे दंड देने के लिए उससे व्यापारिक सम्बन्ध बिलकुल त्याग दिया जाय। इस "राष्ट्र-संघ" की स्थापना से आशा की जाती है कि भविष्य में युद्ध होना असंभव हो जायगा। इसी लिए कहा जाता है कि

"राष्ट्र-संघ" की स्थापना की गणना संसार की इतनी बड़ी घटनाओं में होनी चाहिए जैसे ईसा मसीह द्वारा ईसाई-मत का प्रचार* ।

आजकल इस "राष्ट्र-संघ" में भूमंडल के प्रायः सभी मुख्य-मुख्य राष्ट्र सम्मिलित हैं। अभी कुछ दिन हुए, जर्मनी भी इसमें सम्मिलित हो गया है। इसके सदस्य राष्ट्र मिलकर एक कार्य-कारिणी समिति (League Council) चुन लेते हैं, जिसमें, मुख्य राष्ट्रों (Great Powers) के प्रतिनिधि सदा सम्मिलित रहते हैं। उनके अतिरिक्त अन्य राष्ट्रों के प्रतिनिधियों को भी बारी-बारी से इस समिति में कार्य करने का अवसर दिया जाता है। मनुष्य-जाति के उपकार के हेतु भी "राष्ट्र-संघ" बहुत-से कार्य करता रहता है। उसके अधीन "सार्वराष्ट्रीय मज़दूर-सम्मेलन," "सार्वराष्ट्रीय शिक्षक-सम्मेलन" आदि कई उपयोगी संस्थायें हैं जो भूमंडल भर के लिए सामाजिक सुधार के कार्य कर रही हैं।

(२) युद्ध के पश्चात् की राजनीतिक समस्यायें (१९१९-१९३४)

(The Post-War Problems)

लायड जार्ज का पद-त्याग (१९२२)—युद्ध-काल में एक जातीय आपत्ति का सामना करने के लिए कन्ज़रवेटिव और लिबरल दोनों दलों ने मिलकर मन्त्रि-मंडल में कार्य करना स्वीकृत कर लिया था; और इसी मेल के कारण प्रधान मंत्री लायड जॉर्ज (Lloyd George) युद्ध का सफलतापूर्वक संचालन कर सका था। युद्ध के समाप्त होते ही कन्ज़रवेटिव-दलवालों ने लिबरल-दल के नेता के सहकारी होना पसन्द न किया और वे सब मन्त्रि-मंडल से पृथक् हो बैठे। कन्ज़रवेटिव-दल की सहायता न रहने पर लायड जॉर्ज बड़े फेर में पड़ा; क्योंकि लोक-सभा

* युद्ध की सम्भावना को रोकने की अन्य सन्धियों के लिए देखो पृष्ठ ३३-३९।

में उसके अनुयायियों की संख्या अधिक न थी। इसी समय कई राज-नीतिक समस्याओं ने लायड जॉर्ज को परेशान कर रखा था। जर्मनी से युद्ध का हरजाना वसूल करने का कोई ढङ्ग दिखाई न देता था; और इस विषय में फ्रांस तथा ब्रिटेन का झगड़ा भी हो गया था। दूसरी ओर आयरलैंड में सिन-फयन दल का क्रान्तिमय आन्दोलन भय-कर रूप धारण कर रहा था। ऐसी अवस्था में लायड जॉर्ज ने सन् १९२२ में अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। इस प्रकार युद्ध-काल के इस प्रसिद्ध राजनीतिज्ञ का मन्त्रित्व-काल समाप्त हुआ।
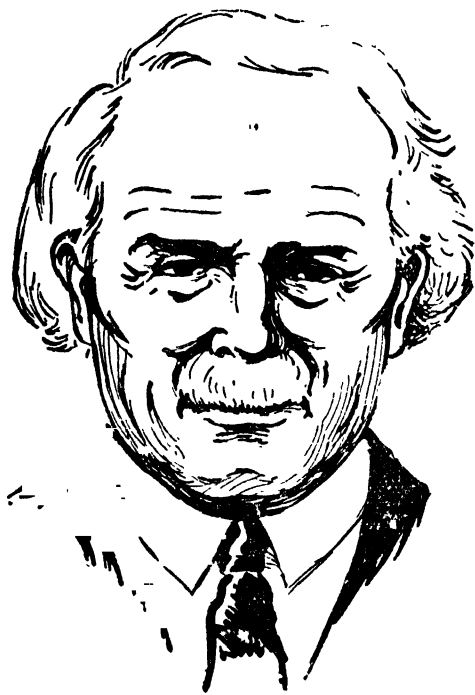
लायड जॉर्ज

कन्ज़रवेटिव-दल का शासन (बोनर लॉ और बाल्डविन)— लायड जॉर्ज के पद-त्याग के बाद कन्ज़रवेटिव-दल का नेता बोनर लॉ (Bonar Law) प्रधान मन्त्री हुआ; परन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उसे शीघ्र ही त्यागपत्र देना पड़ा। उसके बाद स्टेनली बाल्डविन (Stanley Baldwin) कन्ज़रवेटिव-दल का नेता बनकर प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। बाल्डविन ने फ्रांस के प्रधान मन्त्री पुआँ-कारे (Poincare) से मिलकर जर्मनी से युद्ध का हरजाना वसूल करने के

विषय में फ्रांस और ब्रिटन का समझौता कर दिया. और यह निश्चित हुआ कि दोनों राष्ट्र मिलकर धीरे-धीरे जर्मनी से अपना हरजाना वसूल कर लेंगे।

रैम्ज़े मैक्डॉनल्ड तथा मज़दूर-दल का पहला शासन---सन् १९२३ के पार्लिमेंट के चुनाव में कन्ज़रवेटिव दल की हार हुई और लोक-सभा में मज़दूर-दल तथा लिबरल-दल की अधिक संख्या रही। बाल्डविन को त्यागपत्र देना पड़ा और मज़दूर तथा लिबरल दोनों दलों की सहायता से मज़दूर-दल (Labour Party) का नेता रेम्ज़े मैक्डॉनल्ड (Ramsay Macdonald) प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। अभी थोड़े ही दिनों से मज़दूर-दल की गणना लोक-सभा के प्रधान राजनीतिक दलों में होने लगी थी और इस दल के शासन का यह पहला अवसर था। मैक्डॉनल्ड मज़दूरों के हितार्थ बहुत-से सुधार करना चाहता था; परन्तु अपने दल की पृथक् संख्या काफ़ी न होने के कारण उसे हर बार लिबरल-दल की सहायता के भरोसे पर रहना पड़ता था। इस समय बेकारी की समस्या बड़ी विकट हो रही थी; इसलिए मैक्डॉनल्ड को आशा थी कि देश की पूर्ण सहानुभूति अवश्य मज़दूर-दल ही के प्रति होगी, जिसका लक्ष्य ही यह है कि बेकारी आदि की आपत्तियों से मज़दूरों की रक्षा की जाय। मैकडॉनल्ड ने समझा कि
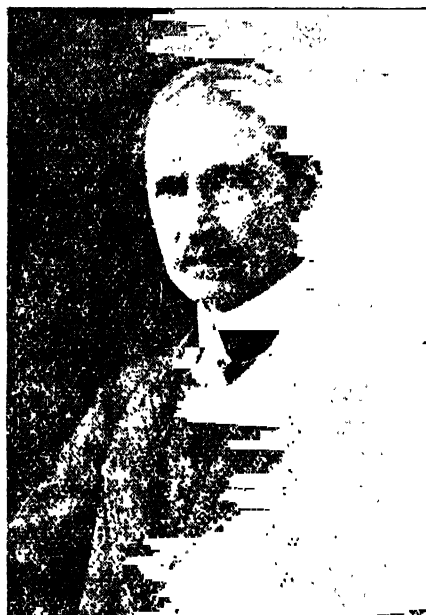
बोनर् ला

यदि पार्लिमेंट विसर्जित कर दी जाय, तो नये चुनाव में जनता मज़दूर-दलवालों ही को अधिक सख्या में चुनेगी; और इसके बाद हमारे दल को लिबरल-दल की सहायता के भरोसे न रहना पड़ेगा। यह सोचकर सन् १९२४ में उसने सम्राट् से कहकर पार्लिमेंट को विसर्जित करा दिया; परन्तु उसकी आशा पूरी न हुई। मज़दूर-दल के थोड़े से ही सदस्य चुने गये और इसलिए मैक्डॉनल्ड को अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

स्टेनली बाल्डविन

बाल्डविन का दूसरा मन्त्रित्व (सन् १९२५ - १९२९) – सन् १९२४ के चुनाव में कन्ज़रवेटिव-दल की संख्या अधिक रही, इसलिए इस दल का नेता बाल्डविन (Baldwin) पुनःप्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। बाल्डविन के दूसरे मन्त्रित्वकाल की मुख्य घटना* यह है कि भविष्य में युद्ध की सम्भावना को रोकने के लिए योरप के प्रधान राष्ट्रों ने

---

* सन् १९२६ की इम्पीरियल कान्फ़रेंस भी, जिसके परिणाम-स्वरूप "स्वतन्त्र प्रदेशों" (Dominions) को और भी अधिक स्वतन्त्रता मिल गई है, इसी काल में हुई (देखो पृष्ठ ३०५)। इसी काल में चुनाव के नियमों में स्त्री-पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त हुए (देखो पृष्ठ २६६)।

दो महत्त्व-पूर्ण सन्धियाँ कीं। पहली बार अक्टूबर सन् १९२५ में ब्रिटेन के "परराष्ट्र-विभाग के मन्त्री" (Foreign Minister) सर आस्टिन चेम्बरलेन (Sir Austin Chamberlain) ने योरप के अन्य राष्ट्रों से बातचीत करके लोकारनो (Locarno) की सन्धि कराई जिससे योरपीय राष्ट्रों के युद्धकाल के पारस्परिक द्वेषभाव का अन्त हुआ। जर्मनी और फ्रांस में बड़ा गहरा वैरभाव उत्पन्न हो गया था। यह वैरभाव हटाने के लिए फ्रांस को जर्मनी के और जर्मनी को फ्रांस के आक्रमण से बचाने का भार ब्रिटेन ने अपने ऊपर ले लिया। दूसरी बार २७ अगस्त सन् १९२८ को "संयुक्त अमेरिकन राज्य" के मन्त्री केलॉग (Kelogg) के अनुरोध से इसी प्रकार की एक दूसरी महत्त्वपूर्ण सन्धि पर हस्ताक्षर हुए जो Kelogg Pact के नाम से प्रसिद्ध है। इसके अनुसार अमेरिका, ब्रिटेन तथा योरप के अन्य प्रधान राष्ट्रों ने यह प्रण किया है कि वे यथाशक्ति यही प्रयत्न करेंगे कि सार्वराष्ट्रीय बखेड़ों का सन् १९१९ में स्थापित किये हुए "राष्ट्र-संघ" (League of Nations) के द्वारा ही निपटारा हो जाय जिससे युद्ध करने की आवश्यकता ही न पड़े। हमको ईश्वर से प्रार्थना करनी चाहिए कि वह इन शक्ति-शाली राष्ट्रों को ऐसी ही सुमति दे कि वे अपने युद्ध न करने के प्रण का हृदय से पालन करें और अपने साम्राज्य फैलाने तथा शक्ति-उपार्जन की स्वार्थ-नीति से भूमंडल को सुख और शान्ति के स्थान पर रक्तपात का केन्द्र बनाकर अपनी शक्ति का दुरुपयोग न करें।

प्रधान मन्त्री रैमज़े मैक्डॉनल्ड (१९२९ से)—मई १९२९ में पार्लिमेंट की पाँच वर्ष की अवधि समाप्त होने पर नया चुनाव हुआ जिसमें कन्ज़रवेटिव-दल की अपेक्षा मज़दूर-दल के अधिक सदस्य चुने गये। ऐसी स्थिति में बाल्डविन को त्याग-पत्र देना पड़ा और रैमज़े मैक्डॉनल्ड (Ramsay Macdonald) की पुनः प्रधान मन्त्री के पद पर नियुक्ति हुई है। आज-कल (१९३४) रैमज़े

मैकडॉनल्ड ही प्रधान मन्त्री हैं और नवम्बर १९३१ के चुनाव के बाद से उनके मन्त्रिमंडल में मज़दूर-दल के अतिरिक्त लिबरल और कन्ज़र्वेटिव दलवालों के भी सम्मिलित हो जाने के कारण उनकी शक्ति
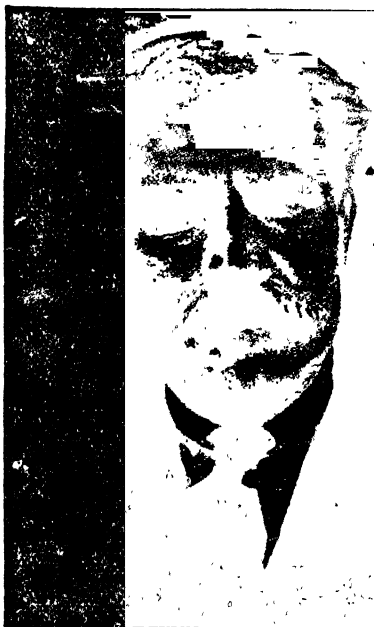
रैमज़ मैकडॉनल्ड

और भी बढ़ गई है। इन सब दलों के मिल जाने के कारण वर्तमान मन्त्रि-मंडल National Government के नाम से प्रसिद्ध है और उसके सब नेता इँगलैंड की आर्थिक दशा सुधारने के प्रयत्न में लगे हुए हैं।

मुख्य-मुख्य तिथियाँ

सन् १९१०—जॉर्ज पञ्चम का राज्याभिषेक।

„ १९१०-१५—एस्क्विथ (Asquith) का मन्त्रित्व।

„ १९१४-१८—योरपीय महायुद्ध (The Great European War)।

„ १९१६-२२—लायड जॉर्ज (Lloyd George) का मन्त्रित्व

„ १९१९—वार्सेल्स की सन्धि (Peace of Versailles)।

„ १९२२-२३—बोनर लॉ (Bonar Law) का मन्त्रित्व।

„ १९२३—बाल्डविन (Baldwin) का पहला मन्त्रित्व।

„ १९२४—रैमज़े मैकडानल्ड (Ramsay Macdonald) का पहला मन्त्रित्व।

„ १९२५-२९—बाल्डविन (Baldwin) का दूसरा मन्त्रित्व।

„ १९३५—लोकारनो (Locarno) की सन्धि।

„ १९२८—The Kelogg Pact

„ १९२९—रैमज़े मैकडॉनल्ड का दूसरा मन्त्रित्व।

„ १९३१—वर्तमान "जातीय मन्त्रि-मंडल" (The National Government)।

इति

Model Questions

(Hanoverian Period)

1. State clearly (with a genealogical table) how it was that the House of Hanover came to rule over England.

2. Give a brief account of Walpole's Ministry, with special reference to his Foreign Policy.

3. The 18th Century is called a period of colonisation by conquest. Illustrate this with reference to the struggle between France and England in America.

4. Who were the Jacobites? Trace the progress of the Jacobite movement in the 18th Century and account for its eventual failure.

5. Show clearly by means of map the stages in the growth of the British power in N. America marked by the following dates—1713, 1763, 1783.

6. Compare the Policy of the Elder Pitt in the Seven Years' War with that of the Younger Pitt in the War of the French Revolution and estimate their greatness as War Ministers.

7. What led to the loss of the American Colonies? How far was George III responsible for this loss?

(*Hint*—The Ministers of the period were the mere creatures of George III and so tbe responsibility for the failure to conciliate the colonists and the consequent loss of the colonies should be shouldered to a very large extent by the king.)

8. What was the attitude of England towards the French Revolution? How did the French Revolution affect the English domestic and foreign affairs?

(*Hint*—England at first sympathised with the French Revolution, but as it became bloody in its character English public opinion definitely turned against it.

The French Revolution arrested the progress of Reform in England and in foreign affairs it involved England in a long and strenuous war.)

9. Give a brief account of England's part in the overthrow of Napoleon. What territorial arrangements were made by the Congress of Vienna?

10. Show clearly the importance of the British naval victories in the French Revolutionary and Napoleonic Wars.

(*Hint*—Show how the English victories of the Nile, the Copenhagen, and the Trafalgar saved England

at critical junctures and at once turned the position in her favour.)

11. Write a brief account of the Peninsular War. What causes led to the failure of Napoleon's policy in the Iberian Peninsula ?

(*Hint*—Napoléon's failure in the Iberian Peninsula was due to (*a*) his pre-occupation in Europe, which prevented him from sending his best forces there; (*b*) the united efforts of the Spanish nation against the intrusion of the French ; (*c*) the brilliant guerilla warfare of the Spaniards ; and (*d*) the difficulties of communication owing to the peculiar physical configuration of Spain.)

12. What do you understand by the "Industrial Revolution ?" Point out its social and political effects.

(*Hint*—The "Industrial Revolution" brought to force several social problems, *e. g.*, unemployment, Factory Reform, struggle between capital and labour, etc. It also produced a consciousness for political rights in the country.)

13. Give a brief account of the social progress in England in the 19th Century.

(*Hint*—Refer to the important social laws of the period, *e.g.*, Factory Laws, Abolition of Slavery, Catholic Emancipation. Reform of Municipal Government, etc.)

14 Explain clearly what is meant by a "Self-Governing Dominion?" What are its relations with the mother country?

15. What do you know about the Union of South Africa? What are its component parts and how did each come into British hands?

(*Hint*—Cape Colony secured in 1815—Natal annexed in 1840—Orange Free State and Transvaal definitely annexed after the second Boer War—Federation of the South African Colonies in 1909.)

16. Give an account of the expansion of the British Empire in the 19th Century and trace the development of British Colonial Policy during this period.

(*Hint*—Pay special attention to the growth of Australia and South Africa and to the annexation of the various provinces in India.

The first stage in the new Colonial Policy was the grant of Self-Government to the Colonies. Next came the federation of colonies situated close together.)

17. What were the chief abuses in the Parliamentary system at the beginning of the 19th Century? Trace the various stages in the history of Parliamentary Reform.

(*Hint*—Reform Acts of 1832, 1867, and 1884. and the Acts of 1918 and 1928.)

18. What do you understand by "Cabinet Government ?" Give an account of the growth of "Cabinet Government" in England.

19. Describe the various stages through which a Bill passes before becoming an Act. What relations subsist between the two Houses of Parliament as modified by the Parliament Act of 1911 ?

20. Trace the events leading to the Irish Union. Why did the Union not prove to be a lasting solution of the Irish Problem ?

21. Trace the various stages of the Home Rule movement in Ireland. How has the Irish Problem been settled by the Treaty of 1922 ?

22. Give a brief account of the British connection with Egypt. Why is Great Britain so keenly interested in the Egyptian affairs ?

23. Describe the political career of Sir Robert Peel. Why has he been called "the most Liberal of the Conservatives and the most Conservative of the Liberals ?"

24. "Lord Palmerston was a Conservative at home and a Revolutionist abroad." Explain this statement and give an account of Palmerston's part in the Eastern Question.

25. Give an account of the character and statesmanship of Disraeli.

26. Give a critical estimate of Gladstone's Irish Policy. How did it affect the Party System in England ?

(*Hint*—Gladstone's Irish Home Rule Bill occasioned the break-up of the Liberal Party.)

27. Explain the term "Near Eastern Question." Draw out the main lines of British Policy in the Near East and point out the importance of the Treaties of Paris (1856) and Berlin (1878).

28. Why has King Edward VII been called "Edward the Peacemaker ?"

29. Why has the period from 1871 to 1914 been described as one of "Armed Peace ?" Give an outline survey of the International situation just before the outbreak of the Great European War.

30. Carefully describe the Political arrangements made at the Treaty of Versailles (1919). What were the guiding principles in this territorial reconstruction ?

(*Hint*—The chief guiding principle in this territorial reconstruction was that of "Self-Determination.")

31. With what object was the "League of Nations" established ? Give an account of its composition and functions at the present time.

32. Write short notes on :—

Septennial Act, Scuth Sea Bubble, Methodists, General Wolfe, George Washington, Lord North, Burke, Continental System, The Hundred Days Abolition of Slavery, Lord Nelson, Duke of Wellington, Catholic Emancipation Act, Penny Postage, Chartists, Franco Prussian War, Lloyd George, Sir Austin Chamberlain, Mandates, Irish Free State.